CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

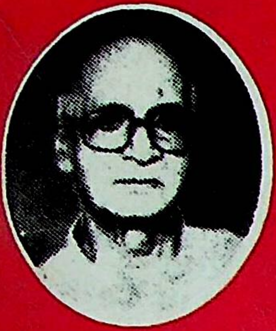

डॉ॰ विवेकी राय

भोजपुरी साहित्य : प्रगति की पहचान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परम श्रद्धेय
[illegible]
को सादर भेंट
[illegible]
14.2.03

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी साहित्य: प्रगति की पहचान

डॉ॰ विवेकी राय

भोजपुरी साहित्य संस्थान
महेन्द्रू, पटना-800 006

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी साहित्यः प्रगति की पहचान

स्वत्व : *डॉ॰ विवेकी राय*
संस्करण : पहला, नवम्बर 2002
मूल्य : एक सौ पचास रुपये मात्र ।
प्रकाशक :
भोजपुरी साहित्य संस्थान
श्रीभवन, महम्मदपुर लेन,
महेन्द्रू, पटना-800 006
फोन (0612) 2671180
अक्षर-संयोजन एवं मुद्रणः
जे॰ एम॰ कम्प्यूटर्स
पश्चिमी लोहानीपुर, कदमकुआँ,
पटना-800 003

Bhojpuri Sahitya: Pragati Ki Pahchan

By. Dr. Viveki Rai

Price Rs. 150=00 Only

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो शब्द

डॉ॰ विवेकी राय हिन्दी और भोजपुरी के एक बहुचर्चित, समादृत और सशक्त हस्ताक्षर हैं। उपन्यास, कहानी, निबन्ध, रिपोर्ताज, संस्मरण, रेखाचित्र, फीचर, डायरी, कविता, ललित निबन्ध, व्यंग्य और समीक्षा-साहित्य- इन सारी विधाओं में इनकी लेखनी चली है और जमकर चली है। भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और उन्हीं गाँवों को, ग्रामीण मूल्यों को, गाँवों के बदलते स्वरूप को डॉ॰ राय ने अपना विषय बनाया है। ग्रामीण संस्कृति का वैविध्य इनके लेखन में जीवन्त रूप में उजागर हुआ है और इसी ने हिन्दी-भोजपुरी साहित्य में इन्हें अकूत सम्मान भी दिलाया है। इन्होंने स्वयं स्वीकार किया है- **''समग्र रूप से मेरे लेखन की पृष्ठभूमि ग्राम-जीवन है। वास्तव में वही मेरा जीवन भी है।''** इनके व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों में गाँव साकार होकर विद्यमान है। आज के गाँवों को जिस व्यापकता और गहराई से विवेकी राय ने जाना है, वह अन्यत्र दुर्लभ है और यही विशेषता वस्तुतः इन्हें अप्रतिम बनाती है। डॉ॰ राय उस ग्रामजीवन को उसकी समग्रता में उरेहते हैं, जिसे उन्होंने सम्पूर्ण रूप से आत्मीयता और रागात्मकता के साथ जिया है। इसी गहन रागात्मकता ने डॉ॰ विवेकी राय को हिन्दी के साथ-साथ भोजपुरी से भी सक्रिय रूप से जुड़े रहने के लिये विवश किया है।

खड़ी बोली हिन्दी के इस यशस्वी लेखक ने भोजपुरी में भी काफी कुछ लिखा है और भोजपुरी साहित्य की विभिन्न विधाओं को समृद्ध कर उसे आधुनिक मानक पर स्तरीय बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। भोजपुरी भाषा के प्रति अपनी ममता, उत्कण्ठा, ललक और उद्वेलन को स्वीकारते हुए डॉ॰ राय ने लिखा है- **''अपना करइल अंचल जब स्वयं ही बोलने लगता है, तब मैं क्या करूँ? अपने अंचल की भाषा, संस्कृति, रहन-सहन और कृषि मानसिकता का मेरे ऊपर भरपूर प्रभाव है। उस प्रभाव को पूरी तरह अभिव्यक्ति देने के लिए बेहतर समझता हूँ कि कुछ चीजें सीधे लोकभाषा भोजपुरी में लिखूँ। काफी लिखा भी है।....इस भोजपुरी ने शुरू से ही मेरे लेखन को बल दिया है। जहाँ कहीं प्रभाव या मार्मिकता उत्पन्न करने की आवश्यकता महसूस होती है, अनायास मेरी लेखनी से भोजपुरी के शब्द उछल जाते हैं। पहले तो मैं सहमता था, परन्तु जब उन प्रयोगों को प्रशंसा मिलने लगी तो मेरी आँखें खुलीं। लोकजीवन और लोकभाषा में बहुत बल है। यह बल मुझे कुछ और दिनों तक मिलता रहे, यही इच्छा है ताकि अपने लेखन सम्बन्धी भविष्य की योजनाओं को पूर्णता तक पहुँचा सकूँ।''** ('आम रास्ता नहीं है', पृष्ठ 101)

भोजपुरी भाषा में प्रथम ललित निबन्ध संग्रह के रूप में डॉ॰ विवेकी राय जी की पुस्तक **'के कहल चुनरी रंगा ल'** को भोजपुरी संसद (वाराणसी) ने 1968 में प्रकाशित किया था। उसके बाद एक कविता-संग्रह **'जनता के पोखरा'**, कहानी संग्रह **'ओझइती'**, समीक्षा पुस्तक **'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास'**, फीचर-संग्रह **'राम झरोखा बइठि के'**, कहानी-निबन्ध -संस्मरण की त्रिवेणी **'गंगा यमुना सरस्वती'**, और एक उपन्यास **'अमंगलहारी'** प्रकाशित हुआ। **'कथुली गाँव'** से लघु लोककथाओं का एक नया क्षितिज भोजपुरी के साहित्याकाश में खुला है, एक नयी विधा का मार्ग निर्मित हुआ है।

भोजपुरी साहित्य की समृद्धि के साथ-साथ डॉ॰ विवेकी राय जी भोजपुरी आन्दोलन से भी साठ के दशक से ही सक्रिय रूप से जुड़े हुए रहे हैं और इस तरह भोजपुरी की प्रगति के प्रत्येक कदम पर उनकी दृष्टि रही है। भोजपुरी संस्थाओं की कोई भी गतिविधि उनकी पैनी निगाह से नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बची हैं। भोजपुरी क्षेत्र के कोने-कोने में आयोजित होने वाले समारोहों में वे स्वयं सम्मिलित हुए हैं, उन्होंने सैकड़ों लेखकों-कवियों को प्रेरित कर भोजपुरी साहित्य की श्रीवृद्धि में लगाया है और प्रकाशित होने वाली पुस्तकों पर अपनी बेबाक टिप्पणी और समीक्षा के द्वारा लेखकों-कवियों का मूल्यांकन कर प्रोत्साहन प्रदान किया है। इसलिए भोजपुरी साहित्य की प्रगति की पहचान कराते हुए जो साक्ष्य लेखक के द्वारा यहाँ उपस्थित किये गये हैं, वे सर्वथा मौलिक और प्रामाणिक हैं ।

डॉ॰ विवेकी राय जी की रचनाओं की भाषा के बारे में डॉ॰ **अनिल कुमार 'आंजनेय'** की कुछ पंक्तियों को उद्धृत करके उनसे सहमति प्रकट करने का जी चाह रहा है। आंजनेय जी लिखते हैं- **"स्वच्छन्द कवित्व शक्ति, बिम्बों को उभारने वाली रचनात्मक भाषा और व्यंजनात्मक शैली, उच्छल अभिव्यक्ति, जीवन्त शब्दचयन और कुशल वाक्य विन्यास विवेकी राय के लेखन को अद्भुत जीवन्तता प्रदान करते हैं। उनकी भोजपुरी रचनाओं में जो लालित्य है, व[illegible]ललित' गाढ़ा और चटकार है, किन्तु इस लालित्य में कोरी भावुकता ही नहीं, विवेक सम्मत सोच और समाधान भी हैं। खड़ी बोली हिन्दी की ही भाँति विवेकी राय का भोजपुरी रचना-संसार केवल मनोरंजन ही नहीं करता, वरन् रंजन के साथ मनन की निधि और पाथेय जैसा भी प्रतीत होता है। संक्षिप्तता, सांकेतिकता, कसाव, प्रभाव, प्रभविष्णुता और प्रेषणीयता उनकी शैली की विशिष्टता है। भाषा, लोकोक्तियों और मुहावरों में भोजपुरी माटी की गंध रची-पची है।"** और, आंजनेय जी की यह टिप्पणी डॉ॰ विवेकी राय जी की सभी विधाओं की रचनाओं की भाषा-शैली के बारे में सत्य है। इनके समीक्षात्मक निबन्धों और टिप्पणियों की भाषा में भी ऐसी ही जीवन्तता है ।

आज भोजपुरी साहित्य काफी समृद्ध हो चुका है। पिछले पचास वर्षों में सभी विधाओं का भंडार भरा है। पद्य और गद्य दोनों में काफी अच्छी-अच्छी सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। लेखकों की दृष्टि में क्षेत्रीयता की संकीर्णता नहीं होने से भोजपुरी आन्दोलन शुद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक और रचनात्मक रहा है जिसके फलस्वरूप घोर सरकारी उपेक्षा के बावजूद इसके साहित्य की श्रीवृद्धि काफी तीव्र गति से हुई है। साहित्यिक प्रगति की तीव्र गति के कारण लोकभाषा भोजपुरी आज एक विकसित भाषा के रूप में मान्य हो चुकी है और अपनी विविध विधाओं की रचनाओं में समस्त आधुनिक प्रवृत्तियों, शिल्पों और शैलियों को समेट कर किसी भी भारतीय भाषा के समक्ष सगर्व खड़ी हो सकती है। भोजपुरी साहित्य की प्रगति की इसी पहचान को रेखांकित करती है- डॉ॰ विवेकी राय की यह पुस्तक- **'भोजपुरी साहित्यः प्रगति की पहचान ।'**

इस पुस्तक के निबन्धों, टिप्पणियों और रिपोर्ताजों को डॉ॰ राय ने किसी योजना के तहत नहीं लिखा है। भोजपुरी साहित्य की विकास-यात्रा में साथ-साथ चलते हुए समय-समय पर जो कुछ डाक्टर साहब ने देखा, अनुभव किया उसे उन्होंने लिख डाला और वह सारा लेखन पत्र-पत्रिकाओं में छपता रहा। आज, धर्मयुग, जनसत्ता, प्रकर, समीक्षा, अँजोर, भोजपुरी कहानियाँ, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पुरवइया, दस्तावेज, आदि में अधिकांश निबन्ध प्रकाशित हुए। कुछ पुस्तकों की भूमिका के रूप में भी आलेख लिखे गये। ये सब के सब अपने मूलरूप में ही इस पुस्तक में संकलित हैं। इस प्रकार पैंतीस-सैंतीस वर्षों के भीतर जब-तब लिखे गये इन आलेखों और टिप्पणियों का अपना अलग आस्वाद है। अन्त में दो भाषण भी संकलित हैं। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (विलासपुर अधिवेशन) के अध्यक्षीय भाषण को अंतिम पहचान-साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन समीक्षात्मक मूल आकलनों में कोई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हेरफेर नहीं किया गया है ।

एक बात और महत्त्वपूर्ण है । इस संकलन में आलेख खड़ी बोली हिन्दी में भी हैं और भोजपुरी में भी । भोजपुरी आन्दोलन से जुड़े हुए रचनाकार राष्ट्रभाषा हिन्दी और भोजपुरी भाषा में कोई विरोध नहीं मानते और इस मान्यता में विश्वास करते हैं कि भोजपुरी भाषा और साहित्य के सम्यक् विकास से राष्ट्रभाषा हिन्दी और अधिक सबल, समृद्ध और धारदार होगी । अठारह करोड़ लोगों की भाषा भोजपुरी का, जो केवल भोजपुरी क्षेत्र में ही नहीं वरन् भारत के अनेक राज्यों में और अनेक अन्य देशों में भी बस गये भोजपुरीया लोगों की भाषा है, तथा एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रचलित है, विरोध यदि कोई करता है तो वह हिन्दी का ही अहित करता है । राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के मार्ग को प्रशस्त करने के लिए भी यह आवश्यक है कि भोजपुरी भाषा को सरकारी स्तर पर और संवैधानिक स्तर पर उसका वाजिब हक दिया जाय क्योंकि इसका साहित्य अब इतना समृद्ध हो चुका है कि उसकी उपेक्षा घातक सिद्ध होगी । भोजपुरी का साहित्य सरकारी मान्यता प्राप्त अनेक क्षेत्रीय भाषाओं से गुणात्मक गरिमा और परिणाम-विस्तार की दृष्टि से बहुत अधिक है । डॉ॰ विवेकी राय के ही शब्दों में – **''बहुत अल्प अवधि में ही इस भाषा ने विकास नहीं उछाल के उन चरणों को पूर्ण किया है जिनके आधार पर किसी भाषा को विकसित भाषा का दर्जा दिया जा सकता है । विविध विधाओं में मँजे हुए लेखकों की तपी लेखनी से उच्च कोटि का प्रभूत साहित्य-सृजन हो चुका है ।''**

भोजपुरी साहित्य के विकास के चरण निरन्तर आगे बढ़ते जा रहे हैं और गति इतनी तेज है कि उसका अद्यतन आकलन बहुत कठिन है । महाकाव्य **'महाभारत'** (गणेशदत्त किरण) का एक खण्ड प्रकाशित हुआ है । गजलों के कई संकलन इधर आये हैं जिनमें प्रमुख हैं- **कह ना सकलीं** (पाण्डेय कपिल), **नया सूरज चढ़ल जाता** (कृष्णानन्द कृष्ण), **अचके कहा गइल** (ब्रजभूषण मिश्र), और **'सुर ना सधे'** (नागेन्द्र प्रसाद सिंह) आदि । कुछ वैज्ञानिक उपन्यास भी प्रकाशित हुए हैं जैसे कम्प्यूटर के जंजाल (कुशवाहो)। **'हादसा'** (कृष्णानन्द कृष्ण), **'प्रश्न चिन्ह'** (पराग), **लायची** (उषा वर्मा), **जीये मरे के बेबसी** (पाण्डेय सुरेन्द्र), और चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के दो संग्रह तथा भोजपुरी **कहानी हाल साल** के आदि कहानी-संकलन भी काफी चर्चा में रहे हैं । डॉ॰ अशोक द्विवेदी के दो कहानी-संग्रहों के प्रकाशन से भी भोजपुरी कहानी को समृद्धि मिली है । पी॰ चन्द्रविनोद और सुभद्रा वीरेन्द्र के गीतों के संकलन से भोजपुरी गीति-काव्य का भंडार भरा है तो **'बूंद भर सावन'** (प्रो॰ ब्रजकिशोर) और डॉ॰ रिपुसूदन श्रीवास्तव के कविता-संकलन ने भोजपुरी काव्य में चिन्तन का नया आयाम जोड़ा है । भोजपुरी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रकाशित **'धार के खिलाफ'** (गीत-संग्रह), **'भोजपुरी सतसई'** (दोहा-संग्रह) और **हाईकू** का संग्रह भी काफी महत्त्वपूर्ण है । चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' के एक हजार दोहों का संकलन **'आरोही हजारा'** और हीरा प्रसाद ठाकुर के सात सौ दोहों का संकलन **'हीरा सतसई'** भी भोजपुरी काव्य के विकास को रेखांकित करते हैं ।

हिन्दी में ही नहीं भोजपुरी में भी लघुकथा एक विधा के रूप में मान्य हो चुकी है । पत्र-पत्रिकाओं में लघुकथाएँ छप रही हैं और उनमें वर्त्तमान समय की विसंगतियों और जीवन की जटिलताओं को केन्द्र में रखा जा रहा है । इनके कई संकलन प्रकाशित हुए हैं । एकल संकलनों में **'धरती जोहत डेग'** (रामनारायण उपाध्याय) और **थाती** (भगवती प्रसाद द्विवेदी) चर्चा में रहे हैं तो **'टुकी टुकी जिनगी'** (सं॰ प्रो ब्रजकिशोर एवं द्विवेदी), **एक मुट्ठी लाई** (सं॰ पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और कृष्णानन्द कृष्ण) तथा **तिरमिरी** (सं॰ पराग) लघुकथाओं के महत्त्वपूर्ण संग्रह हैं। इनसे पता चलता है कि लगभग सौ से अधिक सक्षम लघुकथाकार इस विधा को समृद्ध करने में लगे हैं।

नाटकों और एकांकियों की विधा में भी रचनाकारों ने काफी योगदान किया है। **'जंजीर'** (पराग) और **'हाथी के दाँत'** (सुरेश कांटक) नाटकों की धूम रही है। प्रेमचन्द्र की कहानियों के नाट्य रूपान्तर भी लोकप्रिय रहे हैं जैसे **पंचपरमेश्वर** (प्रो ब्रजकिशोर) **कफन** और **अमावस के रात**, आदि। श्री निवास तिवारी और विमलेश के दर्जन भर नाटक मंच पर काफी सफल रहे हैं।

अनुवाद के क्षेत्र में भी काफी काम हुआ है। कई संस्कृत नाटकों के आधार पर लिखे भोजपुरी नाटकों की चर्चा इस पुस्तक में हुई है। श्री मद्‌भगवद्‌गीता के कई काव्यानुवाद प्रकाशित हैं जैसे **गीता माई, भगवान गीता** (भास्कर), **हरि-अर्जुन के बात** (अमृतपुत्र) आदि। **हंस गीता, मंकिगीता, बोध्यगीता, पराशरगीता** आदि के छायानुवाद भी प्रकाशित हैं। बंगला, अँग्रेजी और तमिल से भी कुछ अनुवाद हुआ है। पत्र-साहित्य में **'चिट्‌ठी आइल बा'** (कृष्णानन्द कृष्ण) और निर्भीक जी की पुस्तक आई है। यात्रा-वृत्तान्त में भगवान सिंह 'भास्कर' और श्री रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' की कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। कई जीवनियाँ भी आई हैं जैसे राजेन्द्र बाबू की जीवनी, **'बचपन मोराजी देसाई के'** (राजवल्लभ सिंह) आदि। आत्मकथापरक संस्मरणों में **'सुरता के पथार'** (शारदानन्द प्रसाद) और **'हमार रामकहानी'** (पं॰ चन्द्रदीप पाण्डेय) उल्लेखनीय हैं। बाल-साहित्य की कमी अवश्य है। **'बतरस बीरबल के'** (रंजन कुमार) इस दिशा में एक कदम है। भोजपुरी के साहित्यकारों के व्यक्तित्व-कृतित्व पर केंद्रित समीक्षात्मक पुस्तकें भी आई हैं जैसे **कथाकार कृष्णानन्द कृष्ण** (सं॰ प्रो॰ ब्रजकिशोर), **सोच-विचार पर बात-विचार** (सं॰ जगन्नाथ), **पराग के रचना-संसार** (सं॰ प्रो॰ ब्रजकिशोर, जीतेन्द्र वर्मा) आदि। इस प्रकार हर विधा और हर क्षेत्र में भोजपुरी साहित्य के विपुल भंडार में कुछ-न-कुछ उत्कृष्ट चीजें हर महीने जुटती-बटुराती जा रही हैं। **'कारगिल के सबक'** (सं॰ रूपश्री) और **एकइसवीं सदी में भोजपुरी** जैसी पुस्तकें राष्ट्रीय चिन्तन-धारा में भोजपुरी की सहभागिता सिद्ध करती हैं।

भोजपुरी साहित्य की प्रगति की पहचान कराने वाली डॉ॰ राय की यह पुस्तक बहुत ही उचित समय पर प्रकाशित हो रही है। इसे पढ़ लेने के बाद उन लोगों की आँखें खुल जायेंगी जो भ्रमवश या अज्ञानतावश भोजपुरी को गँवारू भाषा मानकर ओठ बिजकाते रहे हैं। डॉ॰ राय जी ने पाठकों को न केवल भोजपुरी की प्रगति और उसकी विशिष्टताओं में परिचित कराया है, वरन हिन्दी-भोजपुरी के सम्बन्ध में प्रचलित अनेक भ्रामक आशंकाओं का भी निराकरण किया है।

निस्सन्देह भोजपुरी साहित्य का पद्य और गद्य दोनों पक्ष बहुत समृद्ध हो चुका है। स्वयं डॉ॰ विवेकी राय ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं (उपन्यास, कहानी, संस्मरण, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, कविता, समीक्षा आदि) से भोजपुरी का भंडार भरा है। डॉ॰ विवेकी राय की भोजपुरी गद्य साहित्य को सबसे बड़ी देन समीक्षा की भाषा और समीक्षा की शैली का आदर्श प्रस्तुत करना है। इस पुस्तक की प्रौढ़ रचनायें, बेबाक टिप्पणियाँ इस तथ्य से पाठकों को स्वयं अवगत करा देंगी। भोजपुरी का साहित्य-संसार अभी डॉ॰ विवेकी राय से अनेक विशिष्ट अवदान पाने के लिए उत्सुक है।

—ब्रजकिशोर

पटना
19 नवम्बर, 2002

संपादक: 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'
'भोजपुरी कथा-कहानी' और 'योगिराज'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी साहित्य : प्रगति की पहचान

1. भोजपुरी साहित्य की प्रगति/1
2. 'भोजपुरी काव्यकुंज' ..... कारवाँ चलता गया/4
3. भोजपुरी का अप्रतिम काव्य : 'बउधायन'/19
4. 'श्रद्धा सुमन' बनाम भोजपुरी विनयपत्रिका/23
5. 'जुलुम भइले राम' (सुन्दर):
   युग चारण का विक्षुब्ध जागरण आह्वान/31
6. कवि प्रभुनाथ सिंह का काव्य संसार/33
7. 'मन' सघन आध्यात्मिक अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति/39
8. हृदयेश जी की भोजपुरी सतसई/42
9. भोजपुरी कथा-साहित्य/46
10. विशिष्ट भोजपुरी कृति (1979): 'घर टोला गाँव'/70
11. 'सुन्नर काका' एक भारतीय परम्परा का भोजपुरी उपन्यास/75
12. ईश्वरचन्द्र सिन्हा की 'गहरेबाजी'/80
13. परम्परा अउर आधुनिकता का टक्कर में उभरल कथा संसार:
    'केरा के टुकी टुकी पतई'/86
14. नरेन्द्र शास्त्री का उपन्यास 'ऊसर के फूल'/91
15. निबन्ध और भोजपुरी निबन्ध/93
16. 'बात क बात' आ भोजपुरी निबन्ध साहित्य की स्थिति/103
17. निबन्ध क्षेत्र का मानक कृतित्व; 'विचारबन्ध'/111
18. भोजपुरी निबन्ध की नागर मुद्रा: 'गूलर के फूल'/114
19. 'आखिरी गीत' की पहली पहचान/120
20. भोजपुरी का महत्वपूर्ण साहित्य : 1978/124
    1. 'भोर मुसकाइल' (उपन्यास): विक्रमा प्रसाद/124

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2. 'भइंसि के दूध' (कहानी संग्रह): डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध'/126
3. 'सकदम' (कहानी संग्रह): ब्रजकिशोर दूबे/129
4. 'धुँआ' (कहानी संग्रह): प्रो० ब्रजकिशोर/130
5. 'सतहवा' (कहानी संग्रह): अक्षयवर दीक्षित/133
6. शकुन्तला और अन्य नाटक: शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी/134
7. भोजपुरी मेघदूत (अनुवाद): हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'/136

21. भोजपुरी का महत्वपूर्ण साहित्य 1977
1. 'फुलसुंघी' (उपन्यास): पाण्डेय कपिल/138
2. 'परशुराम' (उपन्यास): अरुण मोहन भारवि/141
3. 'दरबा' (कहानी संग्रह): वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय/142
4. 'माया मिललि, न राम' (कहानी संग्रह): प्राध्यापक 'अचल'/143
5. 'हम कुन्ती ना हंई (कहानी संग्रह): पी० चन्द्रविनोद/143
6. 'अमरावती' (कहानी संग्रह): घनश्याम मिश्र एडवोकेट/144
7. 'सतवंती' (कहानी संग्रह): रामनाथ पाण्डेय/144
8. ढिबरी (कहानी संग्रह): शुकदेव सिंह स्नेही/145
9. 'प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के':
सम्पादक: सिपाही सिंह श्रीमन्त और कृष्णानन्द कृष्ण/145
10. 'शुरूआत' (नाटक): केदारनाथ पाण्डेय/145
11. 'जोत कुहासा के' (काव्य): ब्रजकिशोर/146
12. 'अरघ' (काव्य): आचार्य कुलदीप नारायण 'झड़प'/147
13. 'सनेहिया' (काव्य): रघुनाथ चौबे/147
14. 'लर मोतिन के' (गजल-संग्रह): जगन्नाथ/148
15. 'उर्वशी' (काव्य): सत्यनारायण सौरभ/148
16. 'रेखा पर रेखा' (रेखाचित्र): लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी/148
17. 'कलमिया नाहीं बस में' (निबन्ध): सत्यवादी छपरहिया/150
18. 'बात क बात' (निबन्ध): आचार्य कुलदीप नारायण 'झड़प'/151
19. भोजपुरी निबन्ध निकुंज
सम्पादक : विवेकी राय और सिपाही सिंह श्रीमन्त/151

22. भोजपुरी का महत्वपूर्ण साहित्य: कुछ टिप्पणियाँ/152
1. बयार पुरवइया (भोलानाथ गहमरी)/152
2. लहलह पात (डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी)/153
3. डागा बाजि गइल (अविनाशचन्द्र विद्यार्थी)/154
4. महतारी (विन्ध्याचल राय अचल)/155
5. लोकधर्म (भगवान सिंह भास्कर)/155

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6. मंगलगीत (भगवान सिंह भास्कर)/155
7. रउआ राजा बाबू हउअ (रामजिआवन दास बावला)/156
8. नयकी पीढ़ी (डॉ० शिवमूर्ति सिंह)/158
9. हम गीत गाँव के गाईलाँ, (पद्मदेव प्रसाद पद्म)/159
10. बिहान होई कहिया (विनय राय बबुरंग)/160
11. चन्द्रशेखर मिश्र के दो प्रबन्ध काव्यः
'कुंअर सिंह' और 'द्रौपदी'/161
12. 'सोच विचार' और 'नवरंग' (श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह)/163
13. गाँव बहुते गरम बा (कृष्णानन्द कृष्ण)/165

23. अ० भा० भोजपुरी सा० सम्मेलन : अधिवेशन-रिपोर्ताज
(क) प्रथम अधिवेशन (1975) इलाहाबाद :
भोजपुरी साहित्य के अगहुड़ डेग/168
(ख) दूसरा अधिवेशन (1975) पटना :
सवाल भोजपुरी की स्वीकृति का/175
(ग) सातवाँ अधिवेशन (1983) अमनौर (सारण) :
सवाल भोजपुरी की मान्यता का/177
(घ) नवाँ अधिवेशन (1985) राँची :
उत्कर्ष रेखांकित हुआ/179
(ङ) दसवाँ अधिवेशन (1986) बोकारो :
भोजपुरी विशाल संभावना वाली भाषा/182
(च) ग्यारहवाँ अधिवेशन (1990) रेणुकूटः
संस्था का आन्दोलनात्मक रूप उभरना चाहिए/184
(छ) भोजपुरी के बढ़न्ती भइलि :
सोंहाँव, बलिया की इकाई का अधिवेशन/187

24. 'जलधारा में दिअना' (प्रो० सतीश) : लोकार्पण भाषण/191

25. भोजपुरी साहित्य का शुक्ल पक्षः
अ० भा० भो० सा० स०, आठवाँ अधिवेशन (विलासपुर)
अध्यक्षीय भाषण/193

✪

● (परिचयः डॉ० विवेकी राय/200-204)

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी साहित्य: प्रगति की पहचान

डॉ॰ विवेकी राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1 भोजपुरी साहित्य की प्रगति

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का पहला अधिवेशन 8-9 मार्च 1975 ई० को प्रयाग में डा० उदय नारायण तिवारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था। अध्यक्षीय भाषण में प्रेरित किया गया था कि अब मिलजुल कर इस भाषा को आगे बढ़ाने में जुट जाना चाहिए। तब से निरन्तर भोजपुरी भाषा और साहित्य का बहुआयामी विकास होता आया है। 6-7 अप्रैल सन् 1996 को जब उक्त संस्था का पन्द्रहवां अधिवेशन गाजीपुर (उ०प्र०) में आचार्य पाण्डेय कपिल (पटना) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ तब निश्चित रूप से, संविधान की अष्टम सूची में स्थान और साहित्य अकादमी की मान्यता न मिलने की स्थिति में भी, भोजपुरी भाषा और उसके साहित्य की बीस वर्षीय प्रगति पर सन्तोष व्यक्त किया जा सकता है। 'स्थान' और 'मान्यता' को साहित्यिक या भाषिक समृद्धि की कसौटी नहीं माना जा सकता है। वास्तविक अर्थ में यह कसौटी होती है स्तरीय और स्थायी प्रकाशन-सम्पदा। भोजपुरी की इस सम्पदा पर दृष्टि दौड़ाते ही कुछ विस्मयकारी तथ्य हमारे सामने आ जाते हैं।

प्रथम तो यह कि इस भाषा में जो पत्र-पत्रिकाओं और ग्रन्थों का प्रकाशन हो रहा है वह अव्यवसायिक स्तर पर विशुद्ध सेवा-भाव से हो रहा है। दूसरे यह कि यह अनेक सरकारी मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय भाषाओं से गुणात्मक गरिमा और परिमाण-विस्तार की दृष्टि से बहुत अधिक है। विविध विषयों और विधाओं के एक हजार से ऊपर प्रकाशित पुस्तकें और एक दर्जन से ऊपर स्तरीय पत्रिकायें भोजपुरी भाषा की किसी अन्तरवर्ती जीवनी शक्ति को प्रमाणित करती हैं। इसी शक्ति को लक्ष्य कर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे 'सोगहग' भाषा और डा० शिवप्रसाद सिंह ने 'कड़ेर' भाषा कहा है। डा० भोलानाथ तिवारी ने इसे पूर्ण वैज्ञानिक भाषा और डा० रामविलास शर्मा ने इसे सीधे वैदिक भाषा से जुड़ी हुई समृद्ध भाषा कहा है। सबसे पहले 1868 ई० में प्रसिद्ध भाषा शास्त्री जान बीम्स ने रायल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल भाग तीन में इस बोली के लिए भोजपुरी नाम का प्रयोग किया और उसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस बोली (अब भाषा) ने ध्यानाकर्षक उछाल लिया है।

भोजपुरी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने का गौरव प्राप्त है। दुनिया के कोने-कोने में इसके बोलने वाले फैले हैं। मारीशस, फीजी, गयाना, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रिका, ट्रिनीडाड और नेपाल जैसे देशों में सम्पर्क भाषा से लेकर राष्ट्र भाषा तक के रूप में यह प्रतिष्ठित है। विदेशी विद्वानों में बीम्स के अतिरिक्त इसे जार्ज ग्रियर्सन, विलियम क्रुक, फ्रेजर और ए० जी० शिरेफ आदि ने पूरी रूचि के साथ उठाया है। अपने देश भारत में इस पन्द्रह करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा को मध्यकाल से ही सम्मान मिलता आया है। सरहपा से लेकर गुरू गोरख नाथ आदि के सिद्ध साहित्य में, कबीर से लेकर भीखा-गुलाल आदि तक सन्त साहित्य में, जायसी आदि सूफियों के साहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में इस भाषा को सम्मान मिला है। लोक साहित्य, संस्कार गीत, सोहर-फगुआ से लेकर सोहनी-रोपनी में, जन-जीवन-यात्रा के मोड़-मोड़ पर इसका झंडा बुलन्द है। आल्हा, नयका, सोरठी, बिहुली, व्रत कथा में, विजयमल, गोपीचन्द और बनजरवा आदि अमर कथागीतों से लेकर भिखारी ठाकुर के बिदेशिया, बिसराम के बिरहों और कृषि-वैज्ञानिक घाघ कवि की कहावतों में जो भोजपुरी भाषा पुष्ट जनचेतना की संवाहिका बनकर प्रतिष्ठित है वह एक ऐतिहासिक सत्य है।

उक्त तथ्यों से यह सिद्ध है कि भोजपुरी भाषा के आधुनिक साहित्य की नींव बहुत गहरी और सुदृढ़ है। सांस्कृतिक चेतना-सम्पन्न स्वतन्त्र अस्तित्व वाली इस भाषा के साहित्य का इतिहास भारतीय स्वाधीनता प्राप्ति की कालावधि से शुरू होता है और कुल आधी शताब्दी के अन्तर्गत इसने विकास नहीं उछाल के उन चरणों को पूर्ण किया है जिनके आधार पर किसी भाषा को विकसित भाषा का दर्जा दिया जा सकता है। इसमें लगभग आधे दर्जन शब्दकोष और इतने ही व्याकरण ग्रन्थ हैं। 'बटोहिया' जैसा रोमांचक राष्ट्रगान है। 'फुलसुंघी', 'महेन्दर मिसिर', 'भोर मुसकाइल', 'रावन उवाच', और 'परशुराम' जैसे कालजयी उपन्यास तथा 'बौद्धायन', 'कौशिकायन', 'प्रेमायन' और 'कालजयी कुंअर सिंह' जैसे महान महाकाव्य हैं। उपन्यास और काव्य साहित्य के अतिरिक्त कहानी, निबन्ध, शोध, समीक्षा, ललित निबन्ध, रेखाचित्र, डायरी, रिपोर्ताज और फीचर आदि विविध विधाओं में मंजे हुए लेखकों की तपी लेखनी से उच्च कोटि का प्रभूत साहित्य सृजन हो चुका है। भोजपुरी के समर्पित लेखक इस भाषा को संवारने और प्रतिष्ठित करने में अपनी सम्पूर्ण निष्ठा के साथ जुड़े हुए हैं और कुल मिलाकर ऐसा लग रहा है कि एक मिशन के रूप में कार्य हो रहा है।

भोजपुरी भाषा और साहित्य की नयी प्रगति की समीक्षा करने वाले इसमें कुछ गिरावट की रेखांकित करते हुए कहते हैं कि सातवें-आठवें दशक में इसमें जो उत्साह था, महत्वाकांक्षा भरे समारोहों की भीड़ भाड़ थी, प्रचार का हल्ला गुल्ला था, अब वह न रहा और संगठनों में बिखराव के रोग उभरने लगे हैं। इस प्रकार की निराशावादी शिकायतें सत्य हैं परन्तु वास्तव में वे अर्द्धसत्य हैं। प्रगति की कसौटी मूल्यवान सृजन है जिसकी धारा अटूट रूप से आगे बढ़ रही है। भोजपुरी से जुड़ी स्वयंसेवी संस्थाओं की बढ़ोत्तरी चिन्ता नहीं सन्तोष का विषय है। बिहार सरकार की भोजपुरी अकादमी (पटना) सरकारी तंत्र की चपेट में निष्क्रिय है परन्तु उत्तर प्रदेश की स्वयंसेवी भोजपुरी अकादमी (वाराणसी) की प्रकाशन-सक्रियता बढ़न्ती पर है। भोजपुरी आन्दोलन को सर्वप्रथम अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना) ने हाथ में लेकर सफलताओं के शिखर पर पहुंचाया और इस कार्य में अब अन्यान्य संस्थायें भी जुट गयी हैं। देवरिया (उ०प्र०) और मुजफ्फरपुर, पटना (बिहार) में विश्व स्तर के भोजपुरी साहित्य सम्मेलन सक्रिय हैं। विश्वभोजपुरी सम्मेलन देवरिया (उत्तर प्रदेश) के महामंत्री डॉ० अरूणेश नीरन हैं। इसके बड़े-बड़े भव्य अधिवेशन देवरिया, दिल्ली और मारिशस आदि में हो चुके हैं। भोजपुरी के रचनाकारों को विविध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मानों से सम्मानित करने वाली इस संस्था के कर्णधार श्री सतीश त्रिपाठी आई० ए० एस० हैं। दूसरे विश्व भोजपुरी सम्मेलन के समायोजक डॉ० प्रभुनाथ सिंह हैं। इसके अध्यक्ष सुश्री सुचित्रा रामदीन (मारिशस) तथा सम्मेलन अध्यक्ष डॉ० केदारनाथ सिंह (दिल्ली) हैं। इसका केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली में हैं। इसके अधिवेशनों में भोजपुरी सेवियों को व्यापक स्तर पर सम्मानित किया जाता है। इसे भोजपुरी के समर्पित रचनाकारों का सहयोग प्राप्त है। ये संस्थायें भोजपुरी के विकास के स्वयंसिद्ध प्रमाण हैं। लखनऊ में अ० भा० भोजपुरी साहित्य परिषद ने अपनी ठोस कार्य प्रणाली और उपलब्धियों के कारण विशिष्ट पहचान बना ली है। कालेजों और विश्वविद्यालयों के शिक्षक भोजपुरी साहित्यकारों का राष्ट्रीय संगठन भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद (मुजफ्फरपुर) का गठन सन् 95 में हुआ। जमशेदपुर, पटना, सीवान, वाराणसी और बलिया आदि में अन्यान्य संस्थायें हैं जो भोजपुरी साहित्य के प्रकाशनों के लिए प्रख्यात हैं।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना) की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उसने अपने आन्दोलनों की दस्तक से विभिन्न विश्वविद्यालयों के द्वार भोजपुरी के लिए खोलवा दिये। सम्प्रति उनमें निचली कक्षाओं से लेकर एम०ए० स्तर की भोजपुरी शिक्षा हो रही है। इतना ही नहीं, सर्वत्र भोजपुरी विभाग हैं और उनमें शोध कार्य भी हो रहा है। ऐसे विश्वविद्यालयों में बिहार विश्वविद्यालय, मगध विश्वविद्यालय (गया), वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय (आरा), और जे०पी० विश्वविद्यालय छपरा प्रमुख हैं। म० गां० काशी विद्यापीठ और सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी में भी भोजपुरी को सम्मान मिला है।

यह आशंका कि भोजपुरी आन्दोलन से हिन्दी का अहित होगा, निर्मूल है। हिन्दी का अहित जब ब्रजभाषा, अवधी और मैथिली से नहीं होता है तो भोजपुरी से क्यों होगा ? उक्त क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य से जैसे हिन्दी साहित्य का शृंगार होता है और उसकी गरिमा बढ़ती है उसी प्रकार इस सशक्त क्षेत्रीय भाषा भोजपुरी के साहित्य से भी हिन्दी साहित्य की महिमा बढ़ेगी। अब भोजपुरी भाषा का सृजन इतनी ऊँचाई पर पहुंच गया है कि उसकी मूल्यवत्ता की अनदेखी करने पर हिन्दी साहित्य का इतिहास अधूरा रहेगा। अवधी और ब्रजभाषा में तो मात्र काव्य साहित्य है परन्तु भोजपुरी में विविध विधाओं का विशाल गद्य साहित्य भी है जो उसकी शक्ति का प्रमाण है। हिन्दी साहित्य का इतिहास अपने इस शक्तिशाली अंग की उपेक्षा अब अधिक समय तक नहीं कर सकता।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2 'भोजपुरी कविता-कुंज' .... कारवाँ चलता गया

'भोजपुरी कविता-कुंज' श्री ईश्वरचन्द्र सिन्हा और डॉ० स्वामीनाथ सिंह की अनमोल देन है। इन लोगों के प्रयास से सन् 1963 में वाराणसी में **'भोजपुरी संसद'** की स्थापना हुई। इस संस्था की ओर से 11, 12, तथा 13 अप्रैल 1964 को एक ऐतिहासिक 'भोजपुरी सांस्कृतिक सम्मेलन' टाउन हॉल में हुआ। इस सम्मेलन का उदघाटन केन्द्रीय मंत्री श्री जगजीवन राम ने किया था तथा इसकी अध्यक्षता केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री त्रिभुवन नारायण सिंह ने किया था। इस सांस्कृतिक सम्मेलन में एक विराट् कवि सम्मेलन हुआ था। इसमें भोजपुरी के समस्त कवियों ने देश के कोने-कोने से जुटकर काव्य पाठ किया था। इस ऐतिहासिक अवसर पर जिन एक्यावन कवियों ने अपनी चुनी हुई कविताओं का पाठ किया था उसी का संकलन **'भोजपुरी कविता कुंज'** के रूप में ज्ञान मंडल से प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक पर एक रिपोर्ताज मैंने लिखी थी जो 23 नवम्बर 1964 के 'आज' में छपी थी। यह रिपोर्ताज नीचे प्रस्तुत की जा रही है जिससे भोजपुरी काव्य के आरंभिक विकासशील स्वरूप का आकलन हो जाय और यह स्पष्ट रूप से दिख जाय कि किसकी प्राणवत्ता लेकर भोजपुरी भारतीय भाषा के प्रांगण में खड़ी हुई है।

भोजपुरी-संसद वाराणसी को स्थापित हुए एक वर्ष भी नहीं हुए और उसने होनहार बिरवे की भांति चिकने पात की अनेक आशाएं बांध दी। उसने भाषण-प्रस्ताव वाली शैली छोड़कर ठोस कार्य को हाथ में लेकर पूर्ण करते चलने की पद्धति अपनायी। स्थापना के साथ ही 'तेगअली और काशिका' तथा 'खैरा पीपर कबो ना डोले' नामक पुस्तकों के प्रकाशन के साथ भोजपुरी मुहावरों के कोष पर कार्य आरम्भ कर देना उसकी क्षमता का द्योतक था।

'भोजपुरी कहानियाँ' नामक मासिक-पत्रिका उसी भव्यता के साथ प्रकाश में आ गयी है, जिस विशाल सफलता के साथ अप्रैल में 'भोजपुरी सांस्कृतिक-सम्मेलन' सम्पन्न हुआ था। उस ऐतिहासिक-सम्मेलन का अमर स्मारक हमारे सामने है। **'भोजपुरी कविता-कुंज'** नामक भोजपुरी काव्य का पहला व्यवस्थित संकलन जो भोजपुरी संसद के लिए ज्ञानमंडल से प्रकाशित हुआ। इसमें वे समस्त कविताएँ संकलित हैं जो भोजपुरी सांस्कृतिक-सम्मेलन के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में पढ़ी गयीं। इस प्रकार यह प्रस्तुत पुस्तक एक अभूतपूर्व साहित्यिक घटना की उपज होकर स्वयं में भी एक अपूर्व साहित्यिक घटना है। अनायास ही इसमें ऐसे स्वर-स्तर की रचनाओं का संकलन हो गया है जो सायास नहीं होता और इससे सहज ही समग्र भोजपुरी काव्य साहित्य की सम्भावनाओं के बारे में अनुमान हो जाता है। यहां प्रस्तुत 'भोजपुरी कविता कुंज' के भीतर प्रवेश करने का प्रयास किया जा रहा है।

आरम्भ में ही सरस्वती माता के द्वार पर वाणी को विमल करने के लिए रामविचार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पांडेय द्वारा जिस भावपूर्ण शब्दावली में गुहार की गयी हैं वह काफी आकर्षक हैं । यह सहज शैली का कौशल है कि भोजपुरी के अपरिचयजन्य अटपटेपन का यहां कहीं भान भी नहीं होता है । कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'बेढब' की विनोदधारा में अवगाहन कर जब बाद में ज्ञात होता है कि आपने अपनी लेखनी से भोजपुरी भाषा को कृतार्थ किया है तब चित्त को एक भारी समाधान मिलता है ।

वास्तव में कोई भाषा महान अथवा हीन नहीं होती । समर्थ साहित्यकार की आत्मा का रस ही भाषा को सशक्त और प्रभावशाली बनाने में कारणभूत होता है । यह भोजपुरी का सौभाग्य ही है कि श्री जगदीश ओझा 'सुन्दर' जैसा हिन्दी का रससिद्ध गीतकार भोजपुरी क्षेत्र में खिंच आया । 'सुन्दर' का गीत भोजपुरी गीत का प्रतिनिधि रूप है । कसे हुए वाक्य, मार्मिकता, सादगी, गम्भीरता, मार्दव, प्रवाह और संगीतात्मकता सब आते हैं और अन्त में 'जबै ले सनेहिया बा तबै ले अंजोर बा' पढ़ते हैं तो श्लेष की अलंकृत मस्ती में श्रोता झूम उठते हैं । अनिरूद्ध, सतीश, उमाशंकर तिवारी और चंचल आदि कवियों के गीत भी उत्कृष्ट हैं ।

भोजपुरी भाषा की प्रकृति गीत प्रकृति है । इसकी सहज मिठास और लोच में नैसर्गिक संगीतात्मकता है । ग्राम संस्कृति के विस्तृत चित्र फलक के साथ, त्योहार-बहार के साथ, लोकगीतों की सहज स्वाभाविक भाव धारा के साथ इसमें संगीतात्मकता स्वाभाविक रूप में उतरती है । भोजपुरी शब्द-निर्माण की विशेषता भी कम सहायक नहीं होती । अन्त्यानुप्रास की कठिनाई के कारण कहीं कृत्रिमता आने की गुंजायश नहीं है । 'इया' लगाकर शब्द बनाते जाइये । कोई परेशानी नहीं । असंख्य शब्द बनाने की क्षमता, शब्द को हलका और भारी बना देने की क्षमता । भोजपुरी की शक्ति असीम है ।

'भोजपुरी कविता कुंज' लोक संस्कृति का सांस्कृतिक मण्डप है । बिरहा-कजली की धुन में सरसता बरस रही है । ग्राम-सुन्दरता पर रीझकर कहीं कोई शहर छोड़कर गाँव में आ रहा है । कहीं कोई आम के बगीचे में पड़ी नन्हकी मड़ई पर लहालोट हो रहा है । कहीं कोई भैंस पर बैठा बिरहा गा रहा है । ग्राम-सुषमा का वर्णन खड़ी बोली में कहां है ? भोजपुरी में तो मानो यह सब कुछ है ही और बहुत कुछ और भी है ।

खड़ी बोली नगर-वैभव लेकर आयी । भोजपुरी नीचे जमीन से उठी है । इसमें जनभावना और लोकचेतना अधिक है । इसमें जनजीवन का निष्कपट भाव-बोध है । बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव की कविता पढ़कर इस तथ्य का साक्षात्कार किया जा सकता है । माधुर्य और प्रसाद गुण जैसे भोजपुरी के भाग्य के साथ बँधे हैं । चन्द्रशेखर मिश्र जैसे कवियों की कविता में ओज और प्रसाद गुण अधिक मात्रा में है । अधिक प्रसाद गुण आलोचकों की दृष्टि में कविता की शैशवावस्था का द्योतक है । यहां यह स्वीकारने में कोई संकोच नहीं कि भोजपुरी कविता का यह आरम्भ है अतः वर्णनात्मकता अधिक है । शनैः शनैः भावनात्मकता, व्यंजनात्मकता, अलंकरण, वचनवक्रता और भावभंगिमा आयेगी । हां बीज रूप में इन प्रवृत्तियों को 'भोजपुरी कविता कुंज' में देख सकते हैं । चन्द्रशेखर मिश्र की कविता में यह सब कुछ है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी में लिखे व्यंग्य खूब चुभते से दृष्टिगोचर हो रहे हैं । इसका कारण यह है कि यह जीवन से एकदम सटी हुई भाषा है । अतः जब रसावेश में कुछ कथन किया जाता है तो जैसे जीवन के तार-तार झंकृत हो उठते हैं । प्रसिद्ध नारायण सिंह की कविता इस बात की साक्षिणी है । खड़ी बोली का उच्च काव्य आज जब बौद्धिकता से आक्रान्त हो गया है, अत्यन्त भोलेपन के साथ भोजपुरी का हृदय की प्राणधारा लेकर काव्य क्षेत्र में अवतीर्ण होना एक हर्ष का विषय है ।

ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि भोजपुरी में बिरहा - कजली क़ो छोड़कर और कुछ नहीं है । यहां आधुनिकता बोध की समस्त दिशायें खुली हैं । एक बात अवश्य है । कवि चाहे संकटबोध अथवा यथार्थबोध की व्यञ्जना करता हो, चाहे वह नैतिक वैज्ञानिक संकट से लेकर अन्तरराष्ट्रीय मूल्यों के ह्रास का संकेत कर रहा हो, सर्वत्र वह अपनी परम्परा को नहीं छोड़ता है । भोजपुरी साहित्य परम्परावादी साहित्य है । वह अन्तर्विरोध की घुटन की व्यञ्जना करते समय भी किसी लोक-ध्वनि की लीक पर रहता है । मन का रिश्ता मन से लगने (किरण) से लेकर बालू रेत पर प्रड़ी अपनी एकांत पलानी के सौन्दर्य (प्रभुनाथ) तक के गीतों में और कौन-कौन चांद पर चलने के लिए तैयार हैं ? (चितरंजन) आदि उद्‌गारों में सर्वत्र भोजपुरी कवि शैली, शिल्प और विषय वस्तु की दृष्टि से इतिवृत्तात्मक मार्मिकता से आक्रान्त रहता है । यह अवश्य है कि अब वह शनैः शनैः बदरिया- चुनरिया के पिटे - पिटाये गीतों से ऊपर उठ रहा है । विषय वस्तु के नये-नये धरातल को वे स्पर्श करने लगे हैं । कोमलकान्त पदावली (मदन मोहन सिन्हा और श्रीकृष्ण तिवारी आदि), प्रकृति वर्णन (प्रणयी), निर्गुन (उदय) और विरह गीत (मंजुल एवं मधुकर) आदि तो भोजपुरी के अपने क्षेत्र हैं । इनमें भी नयी संवेदनशीलता का स्पर्श कवि देने लगे हैं ।

नजीर बनारसी भोजपुरी के 'भिनसहरे' में 'गरे में डाल के किरनन कै हार' रंगमंच पर आये तो मजा आ गया और वही मजा काव्य में उतर आया । भोजपुरी शब्दों में गंगा की निर्मलता, मलयानिल की सुरभि और जीवन की मस्ती जैसे साकार हो उठी । वैसे तो भोजपुरी कविता कुंज का ऐसा कोई कोना नहीं ज़ो मधुर-मुखर न हो, किन्तु कुछ अधिक महमहानेवाले और कुछ अधिक चहचहानेवाले कोने अनायास ही ध्यान आकर्षित कर लेते हैं । भोजपुरी में निखरने वाले विशिष्ट व्यक्तित्व पर दृष्टि अनायास चली जाती है ।

श्री चन्द्रशेखर मिश्र ओजस्वी वीर-काव्य का सर्जन कर रहे हैं तो श्री मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' हास्य-व्यंग्य की धारा भोजपुरी में बहा रहे हैं । ये काव्य-क्षेत्र के 'बेसुध' ही भोजपुरी गद्य के विशिष्ट शैलीकार 'चतुरी चाचा' हैं । इस भाषा के शब्द, वाक्य, मुहावरे और विशेष प्रयोग चाचा के संकेत पर नाच उठते हैं । भोजपुरी कविता कुंज का पहरूआ यह नवीन चाचा अपनी प्रकृति से विनोदी जीव है, पर यहां बिरहा गाता दिखायी पड़ रहा है ।

भोजपुरी का परिष्कार बड़ी तेजी के साथ हो रहा है । वर्ण्य-विषयों के विस्तार के साथ शैली-शिल्प में भी नयी विधा और नये प्रयोग शनैः शनैः उभर रहे हैं । लोक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन की सरसता को कवि नये आकर्षक ढंग से पेश करने लगे हैं (शलभ और विधुर), लगता है कि यह जो भोर में कोयल कूक रही है (लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी) यह और कोई नहीं, भोजपुरी की कोयल है और नवसन्देश सुना रही है, जिसकी कूक के साथ ही सुधि के बादल उमड़ आते हैं (विनोद)। आंगन में झुरझुर बयार बहने लगती है (हरीराम द्विवेदी)। आंचर फरफराने लगता है (उमाकांत वर्मा)। मगर इस रमणीयता के नशे में भोजपुरी काव्य झूमकर मदाहोश नहीं हो जाता है। वह चीनी हमले के प्रसंग को लेकर हुंकार भरता है (रामायण सिंह)। रणविजय बहादुर सिंह भोजपुरी भाषा और भोजपुरी लोगों का ठीक ही स्वभाव चित्रण करते हैं और कहते हैं कि वह भीतर से सरस और बाहर से कठोर है। सरसता और कठोरता का यह संगम राहगीर में देखिये। भोजपुरी कुंज के मतवाले कोकिल इस राहगीर की चर्चा छूट न जाय। लोकगीत की माधुरी, सहज सरल बंधान, तन्मयता और स्वाभाविक मस्ती यही राहगीर का काव्य है। मगर इतना ही नहीं, भोजपुरी के लिए अलख जगानेवाले इस मतवाले फकीर का बहुविधि योगदान इसकी समृद्धि के लिए मिल रहा है।

'भोजपुरी कविता कुंज' वास्तव में भोजपुरी काव्य की समस्त उपलब्धियों का प्रतीक है। सुन्दर, अनिरूद्ध, सतीश, विधुर, मंजुल, नीलम, उमाशंकर, नगेन्द्र, चंचल और प्रभुनाथ जैसे गीतकार यदि हैं तो कथाकाव्य की मनोहर प्रवृत्तियों को लेकर चलनेवाले रामविचार, श्याम, कुंज, तरल और दुर्गाशंकर प्रसाद जैसे समर्थ कवि हैं। लोकगीत तो इसका अपना क्षेत्र है। शतानन्द, सरोजेश, शलभ, दिनेश भ्रमर और दीक्षित जैसे युवक कवियों में नये प्रयोग, नयी कविता, मुक्तक, गजल आदि नवीनतम विधाओं की ओर नवीन भावबोध की प्रवृत्ति पाते हैं।

भोलानाथ गहमरी जैसे कवियों में ग्राम माधुरी के साथ राष्ट्रीय चेतना भी भरपूर है। परमानन्द शुक्ल के व्यंग्य सरल होने के साथ तीखे हैं। श्री चन्द्रशेखर मिश्र की चर्चा हो चुकी है। वीररस के क्षेत्र में उनका साथ यहाँ विश्वनाथ लाल "शैदा" दे रहे हैं। मानव और महेन्द्र शास्त्री का प्रकृति चित्रण चटक होने के साथ गम्भीर हैं। सब मिलाकर ऐसा लगता है कि भोजपुरी काव्य बड़ी आकुलता के साथ राह बना रहा है।

लेकिन इन सबके बाद भी एक कमी स्पष्ट दिखाई पड़ रही है। जैसा कि कहा गया है- भोजपुरी कविताओं में वर्णनात्मकता का ही साम्राज्य है। उनमें वचनवक्रता कहीं नहीं दिखाई पड़ती। समस्त काव्य अभिधा काव्य है। सरलता, सिधाई और भोलापन साहित्य का एक गुण है किन्तु मूल रूप में साहित्य वक्र व्यापार है। लाक्षणिकता, चमत्कार और उक्तिवैचित्र्य का अपना मूल्य है। भोजपुरी के कवि अपनी भावुकता को कोई काव्योचित मोड़ न देकर सीधे- सीधे व्यक्त कर देते हैं। प्रकृति, जीवन, सौन्दर्य, वस्तु, विचार और जीवन-जगत के नाना क्षेत्रों का वे स्पर्श तो करते हैं परन्तु ऐसा लगता है कि भाषा की नवीनता से इस प्रकार प्रभावित रहते हैं कि भावों को ज्यों का त्यों रख देना भी एक बड़ी वस्तु मानकर सन्तुष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार भोजपुरी काव्य अभी द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता, गद्यात्मकता, सरलता-सिधायी और प्रकृति चित्रण आदि की प्रवृति भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्य में प्रधान रूप से परिलक्षित होती है । प्रसन्नता की बात है कि बड़ी तेजी से रामविचार, सुन्दर, चन्द्रशेखर, प्रणयी, प्रभुनाथ और राहगीर जैसे सशक्त कवि उसे आधुनिक बोध की भावभूमि पर प्रतिष्ठित करने के लिए साधनारत हैं । भोजपुरी भाषा हिन्दी की एक ग्रामीण सखी है । हिन्दी में जिन वाद-स्तरों को पार करने में 50 वर्ष लगे भोजपुरी कुछ ही वर्षों में उनका अतिक्रमण कर जाय तो आश्चर्य नहीं । इस सम्बन्ध में रामविचार पाण्डेय की एक चर्चा अन्त में समीचीन होगी ।

भोजपुरी रत्न डाक्टर रामविचार पाण्डेय भोजपुरी काव्य के जन्मदाताओं में से एक हैं और इधर लगता है कि नये स्वर की साधना भी उन्हीं में विशेष रूप से पल्लवित-पुष्पित हो रही है । इस प्रस्तुत कुंज की रचना 'नागनथैया' काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से अपूर्व है । पौराणिक कथानक के भीतर नवयुग के नये विचारों की योजना, व्यंग्य ध्वनि के साथ लाक्षणिक प्रयोग तथा प्रतीक योजना सब पर्याप्त चामत्कारिक है । उसमें युगध्वनि की गूँज है । नयी मानवता की पुकार है और है ज्वलन्त वास्तविकता ! उसका प्रवाह भोजपुरी का मौलिक प्रवाह है । वास्तव में भोजपुरी वहीं खटकती है जहां वह खड़ी बोली के अनुवाद सी प्रतीत होने लगती है । हम जगदीश ओझा 'सुन्दर' के गीतों की प्रशंसा इसी सन्दर्भ में अधिक करते हैं कि उसमें भोजपुरी की मौलिक आकृति-प्रकृति परिलक्षित होती है । वास्तव में कुछ चुभती-रसवन्ती काव्योचित पंक्तियाँ जो शुष्क वर्णनात्मकता से ऊपर उठी हैं, गिने-चुने कवियों में ही मिली हैं ।

कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं –

डाक्टर रामविचार पांडेय –

'ऊ देखले बिहाने गउरा अंगना में ठाढ़ी,
पानी का किछार में फूलल जइसे राढ़ी ।'

(उत्प्रेक्षा)

'केतने धमोइयो तुलसी होइ गइले ।'

(वक्रोक्ति)

श्री जगदीश ओझा 'सुन्दर' –

'जबे ले सनेहिया बा,
तबे ले अंजोर बा ।'

(श्लेष)

'प्यारी-प्यारी अंखिया में –
कारी-कारी पुतरी हो,
पलक का खोंता जइसे
झांकेली कबूतरी हो ।'

(रूपकानुप्राणित उत्प्रेक्षा)

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

3 भोजपुरी का अप्रतिम महाकाव्य 'बउधायन' और उसकी भूमिका

'बउधायन' महाकाव्य, जिसे दंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती ने अपनी जीवनव्यापी गम्भीर साधना के बाद प्रस्तुत किया है, भोजपुरी भाषा का देदीप्यमान शिखर ग्रन्थ है। इसके प्रकाशन से भोजपुरी साहित्य ने खड़ी बोली, हिन्दी, ब्रज, अवधी और मैथिली के साहित्य के समकक्ष अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। इस कालजयी महाकाव्य के इकतीस सर्गों में खपी लगभग चालीस हजार पंक्तियों में काव्य, धर्म-दर्शन और इतिहास का घुलामिला स्वाद तो है ही, अद्‌भुत और अपूर्व है बौद्धकालीन विश्व के सांस्कृतिक वैभव की विस्तृत और कवित्वमय अवतारणा। ऐतिहासिक घटना चक्रों को इतने विशाल पैमाने पर अन्तर्भुक्त कर चलनेवाला यह अन्यतम महाकाव्य है। महात्मा गौतम बुद्ध के जीवन और दर्शन को पृष्ठभूमि बनाकर भारतीय साहित्य में संस्कृत के कवि अश्वघोष ने कलम उठायी थी। उनके महाकाव्य **'बुद्धचरित'** के पश्चात् तो फिर भोजपुरी का 'बउधायन' ही उस प्रज्ञा पुरुष के विस्तृत चरित्र और सिद्धान्त आदि को समेटते सामने आता है। इसका अवतरण भी ऐसे असामान्य रूप में होता है कि आलोचक एक ओर इस महान ग्रन्थ को बौद्ध धर्म का विश्वकोष घोषित करते हैं तो दूसरी ओर इसके अन्तरंग कवि-कर्म को देखते इसके रचयिता को भोजपुरी का इलियड कहकर सम्मान देते हैं।

इस महाकाव्य में मुख्य और प्रचलित कहानी को कवि ने तोड़ा नहीं है और न ही उसे युगीन अर्थ देने के लिये कहीं से मोड़ा है। सम्भवतः इसका कारण यह रहा है कि महाकाव्य के समानान्तर इसे पुराण महागाथा के रूप में प्रस्तुत करने का आग्रह रहा है। कहीं कहीं राष्ट्रीय भाव अवश्य ही नयी दीप्ति के साथ अभिव्यक्ति पाते हैं। ऐसे स्थल पृ० सं० 133, 310 और 379 में हैं। दूसरी बात यह है कि संन्यासी होने के कारण इसे 'बूझ विचार' के काव्य के रूप में भी उन्हें प्रस्तुत करना था। कहते हैं : **'बूझ विचार करे के चाहीं।'** (पृ० 130) इस प्रकार की प्रवृतियों के कारण कृति में आदि से अन्त तक सहजता और सिधाई की प्रधानता हो गयी है। लगता है, महाकाव्योचित पांडित्य प्रदर्शन से कवि को अत्यधिक परहेज है। इन कारणों से ऐसा भी लगता है कि यह साधुता से प्रभावित पवित्र बोध का काव्य है। स्थान-स्थान पर परमार्थोपदेश की योजनाएँ इसीलिए प्रचुर मात्रा में है।

वास्तव में 'बउधायन' का रचयिता जहाँ अपने आरम्भिक जीवन में क्रान्तिकारी समाजवादी विचारधारा से सम्पन्न एक प्रखर राजनीतिक कार्यकर्त्ता और स्वतन्त्रता संग्राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का जुझारू सेनानी रहा वहाँ बाद वाला उसका जीवन सरबस त्यागी संन्यासी का हो गया। उसके साधु और संन्यासी-जीवन का प्रभाव तो काव्य पर पड़ेगा ही। इसके साथ एक बात और है। वह काव्यशास्त्र का प्रायः आग्रही नहीं है। इसका परिणाम यह हुआ है कि महाकाव्य की शास्त्रसम्मत रूढ़ियों और परम्पराओं का पूरी तरह पालन नहीं हुआ है। किसी इतिवृत्त के भीतर कितना ग्राह्य है, कितना त्याज्य है तथा कहाँ किस सीमा तक कल्पना का प्रयोग अपेक्षित है, इस प्रकार की वस्तुसंगठन सम्बन्धी तकनीक से वह कुछ उदासीन लगता है। ऐसा लगता है कि कवि की दृष्टि मुख्य रूप से कथा पर रहती है जो इतनी लम्बी है कि कल्पनात्मक वर्णनों में जमने पर उसके बहुत बोझिल हो जाने की आशंका रहती है। कवि सम्भवतः इसी कारण वर्णनात्मकता की भटकनों को बेरहमी से झटक कर मुख्य कथा को समेट आगे बढ़ जाता है। हाँ, वह अपनी कविता को प्रवाह, सहजता, हार्दिकता और रसात्मकता के रोमांच से पूर्ण करने में कोई कसर उठा नहीं रखता है। कवि का रसावेश मुख्य रूप से वैराग्य से जुड़ा होता है। वास्तव में कोई सौन्दर्य-वर्णन इस महाकाव्य में समाविष्ट है तो वह है वैराग्य-सौन्दर्य-वर्णन। कहीं कहीं तो वह अत्यन्त ही मार्मिक और हृदयावर्जक हो गया है। जैसे 'बिम्बिसार से भेंट' प्रकरण की आरम्भवाली 35 पंक्तियाँ। फिर ये पंक्तियाँ ही क्यों? पंक्ति-पंक्ति में विराग का गहरा अभिनिवेश झलकता है। आधुनिक नागरिक बुद्धिजीविता और उससे प्रभावित चौकन्ने चिन्तन का अभाव कृति के भीतर एक विशेष प्रकार के वातावरण की सृष्टि करता है और यह होता है अरण्य-सभ्यता के मानसिक विराग का वातावरण!

'बउधायन' में विराग के वातावरण की सृष्टि एक महान उपलब्धि के रूप में हुई है। 'मउअति, रोग, बुढ़ापा' को बारबार दुहराकर जो एक गहन वैचारिक गूँज पैदा की गयी है उससे ऐसा लगता है कि यही इसका केन्द्रीय तत्त्व है। 28, 29, 30, 89, 93, 94, 118, 120, 129, 130, 136, 138, 157, 166, 170, 171, 175, 176, 191, 197, 200, 205, 216, 217, 218, 221, 235 आदि पृष्ठों को उलटते जाइये, उत्तरार्द्ध में प्रचार वाले प्रकरणों को छोड़कर सर्वत्र मौत, रोग और बुढ़ापे की संवेदनीय चर्चा मिलती जाएगी। तुलसी के 'मानस' में जैसे मूल प्रेरणा भक्ति है उसी प्रकार आलोच्य ग्रन्थ की मूल प्रेरणा विराग है। कवि इसके गम्भीर और प्रभावशाली वातावरण के निर्माण में सफल होता है और इस प्रकार शान्त रस का प्रभाव भी इसके साथ गहराता जाता है। इस जगत के दुखमय रूप का वर्णन (पृष्ठ 129), राजकुँअर द्वारा मुर्दा देख लेने पर सारथी द्वारा की गयी उसकी विवेचना (पृष्ठ 30-31), 'तिरिया पछार' प्रकरण में उदायी और राजकुँअर के बीच का संवाद (पृष्ठ 35), दुख के कारणों के विस्तृत वर्णन, (पृष्ठ 129-130) तथा चार आर्य सत्यों को बताने के बाद गौतम बुद्ध द्वारा यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहना कि 'जेतना दुख-कलेस दुनिया में, सभकर जदि टिसुना बा' और फिर पृष्ठ 144-145 में उसका विस्तृत, भावात्मक और अलंकृत वर्णन, टिसुना (तृष्णा) को हाथी, काली नागिन, नयी गुजरिया, छापामार सेना की मालकिन, गहरी जड़वाली विषवेलि और मोहिनी माया आदि के सांगरूपकों में प्रस्तुत करना इस बात को प्रमाणित करता है कि वैराग्य ही इस महाकाव्य का केन्द्रीय तत्त्व है । इसमें विचार संवेदना का हर स्वर-संगीत वैराग्य के सम पर ही गिरता है । **'धरम अक्षयवट कंचन'** शीर्षक अध्याय का आरम्भ ही वैराग्य से हुआ है -

'आजु सामने लउके वाली,
दुनिया कल्हि रही ना ।
एहिजा सब कुछ
छन छन बदले वाला' । - (पृष्ठ 251)

जेतवन वन में प्रसेनजित दर्शनार्थ पहुँचकर पूछता है, 'बहुत दुखी बेकल हम बानी' और उत्तर में वही विस्तृत वैराग्य गाथा ! इसी प्रकार पिना और बिम्बिसार के सामने किये गये विस्तृत उपदेशों में भी यही मूल तत्त्व है । ऐसा लगता है कि 'बउधायन' वैराग्योपदेश का खजाना हो गया है । इससे न तो कहीं काव्य तत्त्व आहत होता अनुभव होता है और न ही इसका महाकाव्यत्व कहीं से बाधित होता है । वास्तव में धीर प्रशान्त नायक गौतम के अतिरिक्त शुद्धोदन, छन्दक, बिम्बिसार, प्रसेनजित, आम्रपाली, सुजाता और यशोधरा आदि के चरित्र का निखार भी विराग के एक विशेष वृत्त के भीतर बहुत जीवन्त रूप में होता है । प्रतिपक्ष के रूप में देवदत्त का सृजन भी बहुत प्रभावशाली है ।

काव्य तत्त्व का सवाल **'बउधायन'** के सन्दर्भ में उठाया जाना उचित ही है । रसात्मकता, कल्पना की उड़ान, चरित्र-चित्रण, अप्रस्तुत योजना और प्रकृति-वर्णन आदि की कसौटी पर प्रस्तुत काव्य कितना सटीक और खरा उतरता है ? क्या इसमें पात्रों की भावनाओं, विचारों, स्थितियों और व्यक्तित्व की विशिष्टताओं के अनुसार कल्पना-विस्तार की अनुरंजक भंगिमाएँ हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर कृति के बीच से गुजरने के बाद कोई भी सहृदय पाठक स्वीकारात्मक रूप में देगा । इतना अवश्य है कि जितना सघन संवेदनीय काव्य-प्रयोग पूर्वार्द्ध में है उतना उत्तरार्द्ध में नहीं है । इसका कारण यह है कि उत्तरार्द्ध भारत के बाहर बौद्ध धर्म के प्रचार-विस्तार की कहानी है और प्राय: वर्णन प्रधान है । इतने पर भी बीच-बीच में और सन्धि स्थलों पर उत्कृष्ट कोटि का कवित्व है । कनिष्क- काल जब इतिहास के क्षितिज पर उगता है तो बौद्ध धर्म के सन्दर्भ में कवि की अत्यन्त भावाकुल दृष्टि उस काल पर पड़ती है । वह समय की परिवर्तनशीलता को जिस प्रकार संवेदित करता है उसे पृष्ठ 261 पर देखा जा सकता है । इसी प्रकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्वार्द्ध में विरागी राजकुँअर को अपनी अटारी से देख राजा बिम्बिसार अत्यन्त भावाच्छन्न और प्रश्नाकुल हो उठते हैं तथा कवि उसका भावभीना चित्रण भोजपुरी के चिपकनशील शिल्प में करता चलता है। (पृष्ठ 80)

इस महाकाव्य से भोजपुरी की स्तरीय, परिनिष्ठित और सर्वमान्य साहित्यिक भाषा की समस्या हल होती प्रतीत होती है। पंक्ति-पंक्ति में मुहावरे, व्यंजना, बिम्ब और अलंकार भरे इस कृति के धीर, गम्भीर और ललित शिल्प में एक एक शब्द इस प्रकार सुन्दर रीति से पिरोये प्रतीत होते हैं कि बिना किसी अवरोध के रससिक्त शब्दावली की लहरों में कहानी छलछलाती हुई आगे बढ़ती चलती है। भोजपुरी भाषा की सहज-सरल और सीधी-सादी शब्दावली में कहीं कहीं अत्यन्त कसावट के साथ गम्भीर बातें कहकर कवि चमत्कृत कर देता है। वह तुलसी की भाँति कहीं प्रसंग के अनुरूप खाँटी वर्णनात्मक वृति का सहारा लेता है तो कहीं अत्यन्त धैर्य से निर्वाह किये जाते हुए लम्बे लम्बे रूपकों आदि से अपनी भोजपुरी को सजा देता है। भाषा प्रयोग के सन्दर्भ में यह कहना उचित होगा कि उसकी भोजपुरी में जायसी की परम्परा वाली अवधी की भाँति तद्भव शब्दों की ही बहुलता है। कवि ने इन शब्दों को माँज कर नयी शक्ति पैदा करने के साथ ही उसके काव्योपयोगी सहज स्वरूप को निखार दिया है। इससे भाषा स्तरीय होकर गँवारू बोलचाल की भाषा से ऊपर उठ गयी है। उसमें अनुकूल ध्वनि और सम्प्रेषण शक्ति पैदा हो गयी है। भाषा की यह शक्ति और उसके सौन्दर्य का प्रतिनिधि रूप पाठकों को पृष्ठ सं० 104 में भली भाँति विस्तारपूर्वक दृष्टिगोचर हो सकता है जहाँ कलियुग के नकली साधुओं का चित्रण किया गया है। वास्तव में विमलानन्द जी की भाषा और उसकी भंगिमा में व्यावहारिकता और कलात्मकता का अद्भुत समन्वय है।

किन्तु इतने पर भी कवि की भाषा नीति से शतप्रतिशत सहमत होना कठिन है। संस्कृत के व्यावहारिक तत्सम शब्दों को भी तोड़ने-मरोड़ने की प्रवृत्ति की अति खटकती है। शाकिय (शाक्य), कलयान (कल्याण), इनरिन (इन्द्रियों), बतुस (वस्तु), परकिरिती (प्रकृति), कउशाँबी (कौशाम्बी), तामर परनी (ताम्रपर्णी), वोग ए रह (वगैरह), सरवास्तिवाद (सर्वास्तिवाद), मोरिय राजा (मौर्य राजा) जैसी तोड़फोड़ उचित नहीं प्रतीत होती है। कम से कम इतिहास-प्रसिद्ध संज्ञाओं को तो बख्शना चाहिए था? ऐसा भी नहीं है कि संस्कृत की शब्दावली से कवि का एकान्त परहेज है। वह संन्यासी के लिए सनियासी नहीं प्रयुक्त करता है। उसमें परिनिष्ठित भोजपुरी की पुष्ट पहचान है। कवि ने अँटकर, कुतुआ, सवतुक, चुहलगर, चुरुगल, सतधरवा, बरगत्ता, पनदूदुर, नेवरतक, अरदुवाइ, कगदही, खेमाता, सुबहित, हबसा, हिगरल, अनगुतहाँ, कुरुबारन, जबून, अनघा, चहेटि, कूह, सकदम, किरंट, बहेंगवा, माकलि, लबदा, गोबरगर, लासालूसी, कबाहटि, निबुकाँव, तिखारल, समचि के जुटल जैसे भोजपुरी के सैकड़ों तलवर्ती मार्मिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्दों का प्रयोग कर गहरी सरसता पैदा की हैं। इसी प्रकार पृष्ठ 60 में 'कुरुवारन' शब्द का प्रयोग पृष्ठ 117 में 'सारिल' तथा 119 में 'शउरि' का प्रयोग बहुत मार्मिक है। लेकिन 'सरहँग' शब्द के प्रयोग में कवि उलझ गया है।

'सरहँग' शब्द का प्रयोग पहली बार पृष्ठ 57 में हुआ है। इसका प्रयोग कवि ने श्रेष्ठ सरदार के अर्थ में किया है जबकि व्यावहारिक रूप में लोग इसे श्रेष्ठ दुष्ट नंगे के रूप में प्रयुक्त करते हैं। दूसरी बार इसका प्रयोग पृष्ठ 108 में हुआ है और इस रूप में कि शंकर की सेना में सरहँग लोग हैं। यह प्रयोग प्रथम प्रयोग से भिन्न और कुछ उपयुक्त है। इसी प्रकार शब्दों के कुछ और चिन्त्य प्रयोग कृति में दृष्टिगोचर होते हैं। बिम्बिसार गौतम को पलग्गी करते हैं (पृ॰ 137) जो खटकता है। पृष्ठ 143 में 'गइलि भरसाईं' का प्रयोग है। इसकी जगह 'परलि भरसाईं' स्ही होता है। इसी पृष्ठ में इसका दूसरा सही प्रयोग भी है। गौतम की वापसी पर जो कुछ यशोधरा सोचती है उसमें एक जगह आता है कि 'भिखमंगा बन लवटि नगर के अइलन।' इसमें भिखमंगा प्रयोग खटकता है। संस्कृति से जुड़े संस्कृत शब्दों का अपभ्रंश प्रयोग करने पर असंस्कृत हो ही जायेगा। विमलानन्द जी में इस प्रकार की त्रुटियाँ नहीं के बराबर हैं। उनकी भोजपुरी बहुत साफ-सुथरी और जीवन्त है। भाषा की ही भाँति भोजपुरी मुहावरों के प्रयोग में भी उन्हें असाधारण सफलता मिली है।

खून बोकरना (पृष्ठ 115), सोरि उपारना (121) जैसे इस बोली के विशिष्ट मुहावरों के साथ कृषि संस्कृति के मुहावरे जैसे 'पंजिआना' अथवा 'परिकल चोर भुसहुले दउरी' (107) पर्याप्त रूप में प्रयुक्त हैं। नाव में धूल उड़ाना, भूआ की नदी में तैरना, दाँते-माथे लगाना जैसे प्रयोग भी यथास्थान बहुत चमत्कृत करते हैं। 'धरते झाँपी उठल बवंडर' और 'चउपट करे हेंगावे वाला' जैसे भोजपुर प्रदेश के बहु-प्रचलित मुहावरों की भरमार है। कहीं-कहीं तो जैसे कवि मुहावरों की बौछार करने लगता है। जैसे पृष्ठ 112 में-

'झुकल डाढ़ि के बानर 'मार'
मुँहवा दोबर, मन मधुआइल
मारे लाजन ढिढ़की टोवत
चाटत ओठ माथ खजुआवत
कल से पोंछि दबाई घसकलन।'

कुछ शब्दों को व्यापक रूप में व्यंजक बनाकर कवि बारम्बार सामने लाता है। ऐसे ही शब्दों में एक शब्द है 'नगद'। उत्तरार्द्ध में इसका प्रयोग अधिक है। 'नगद तीसरी सभा' (368), 'नगद सबूत' (369), 'नगद नीक सुघराई'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(270), 'रउरे नगद धरम के' (271), 'महल नगद फल एक' (274) इत्यादि । कवि का प्रयोग कौशल यह है कि इस सामान्य से 'नगद' शब्द ने एक मुहावरे का रूप धारण कर लिया है। यही स्थिति 'सिजिल' और 'सवतुक' शब्दों की है । कवि सहज भाव से इनका प्रयोग करता है और किसी वस्तु अथवा स्थिति के लिए अपने भीतर स्थापित वैशिष्टय-बिम्ब को अभिव्यक्ति देता है । कुल मिलाकर 'बउधायन' की भाषा का जो सहज स्तरीय रूप निखरता है उसे नीचे के उदाहरणों में परखा जा सकता है-

(क) 'पूत जगत में
मात पिता का मधुर प्रेम के
तप के विमल पताका
कुल के सुबरन दीप जोतिमय,
पारिजात चन्दन के गाँछी ।'

(ख) 'मनवा बिगड़ल पाजी घोड़ा
तोरि लगाम पछाड़ी पगहा
विसयन के रस चीखे खातिर
सरपट दउरल चाहेला ।'

(ग) 'विद्या ग्यान तेज रस बल के
जहाँ भरल भंडार हिमालय ।
रस रस झरत ग्यान के अमिरित
बहति जुगन से / लगन नेह सरधा से
मधुर मन्द मन्दाकिनि गंगा ।

कवि की सहज भाषा जब अलंकृत होती है तब भी वह अपनी सहजता को नहीं छोड़ती है । सबसे पहले कवि के रूपक-प्रयोग की चर्चा की जाय ।

'बउधायन' में 'रामचरित मानस' की भाँति लम्बे-लम्बे सांगरूपकों का आयोजन किया गया है। इन रूपकों में **'ज्ञान वृक्ष'** (पृष्ठ 112), **'देहरथ'** (पृष्ठ 114), **'बौद्ध कथा लेखन'** (पृ॰ 122) और **'ज्ञान फुलवारी कासी'** (पृष्ठ 125) **'धरम ग्यान के गाय'** (पृष्ठ 143), **'धरमोपदेश दीप'** (पृष्ठ 200) **'धरम अछयवट कंचन'** (पृष्ठ 251), आदि बहुत ही प्रभावशाली हैं । ये सभी सांगरुपक बहुत ही विस्तृत, कसे हुए, सुसंगत और विषय के स्पष्ट बोध से परिपूर्ण हैं । इनके अतिरिक्त छोटे मोटे रूपकों से तो समूचा महाकाव्य ही भरा हुआ है । **'धरम ग्यान की गाय'** वाले रूपक में कवि ने ऐसी सहज लोकभाषा का प्रयोग किया है जो बरबस चित को खींच लेती है । **'धरम-ग्यान के बिसुखलि गइया, / लेरू सुघर बियाइलि !/ लेहना सुरस**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाई ऊ अनघा, / तुरते भइलि बहाल जतन से; सेबक भगत चतुर चरवाहा, / बउधदेव के निगरानी से / भंडा भरलसि, / दूध-दही से !'

रूपक के अतिरिक्त उपमा, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, दीपक और अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का प्रयोग भी बहुत सफाई से हुआ है । राजकुँवर के शोक की प्रथम लहर में यशोधरा का मुँह किस प्रकार उतर गया है । कवि एक अलंकृत चित्र दे रहा है-

'बड़हन फूल कमल के भींजल;
बरखा से झकभोरल पीटल ।'

कहीं तो ऐसा लगता है कि वह उत्प्रेक्षाओं की बौछार कर रहा है । कामदेव की हार वाले प्रकरण में कामदेव की पराजित मुद्रा और स्थिति को चित्रांकित करने के लिए कवि लगभग एक दर्जन प्रभावशाली उत्प्रेक्षाओं का आयोजन करता है । एक उत्प्रेक्षा द्रष्टव्य है : **'केतने भूत झनकि के, / पत्थल फेंड़ उठवलन, / मुनि का ऊपर छोड़े के, / बाकी पत्थल फेंड़ संहित हीं, / गिरलन मुँह का भरे अपन हीं ! / फूटि बज्र से छितिराइल हो, / मानो विन्ध्याचल क चोटी !'** (पृष्ठ 110) । पौराणिक अप्रस्तुतों और अतिमानवीय उपमाओं को प्रस्तुत करने में भी कवि को सफलता मिली है । **'राजकुँवर की खोज'** में जब मन्त्री और पुरोहित दोनों अराड़ मुनि के आश्रम में पहुँचे और राजकुँवर के पास उनकी आज्ञा से विराजित हुए तो कवि इसका चित्र प्रस्तुत करता है, **''जइसे विमल चनरमा संगे सोहे पूख पुनरवस जोड़ा ।''** इस अवसर पर इस स्थिति के लिए कवि ने इसी प्रकार के लगभग आधा दर्जन और अप्रस्तुतों का प्रयोग किया है (पृष्ठ 68-69) । कहीं-कहीं भोजपुरी मुहावरों को भी उपमान के रूप में प्रस्तुत किया गया है । जैसे-**''कब पड़ऊँस के डोरि बराइलि, / चलनी में जल कहाँ भराइल ?''** (पृष्ठ 104) । बिम्ब, प्रतीक और व्यंग्य के प्रयोग में भी कवि को सफलता मिली है । पृष्ठ 243 में महामोह के अन्धड़ तूफान का विस्तृत, सारगर्भित और सटीक प्रतीकात्मक चित्रण हुआ है । पृष्ठ 24 में एक स्थान पर संख्यावाची प्रतीकों का बहुत ही ढब से प्रस्तुतीकरण हुआ है और कहा गया है कि **'एगो के वश कइलन/ सातो राखि सात के छोड़लन; / पाँच बचवलन, / पवलन तीनि; / दूगो समुझि,/ दूइ के तेजलन !'**

अलंकारों की ही भाँति रस की योजना भी महाकाव्योचित स्तर पर हुई है । शान्त रस प्रधान इस महाकाव्य में संन्यासी कवि की कलम से श्रृंगार रस का जो चित्र अंकित किया गया है वह भारतीय परम्परा के अनुकूल है । राजकुँवर के वैराग्य भाव को रोकने के लिए राजमहल को रंगमहल में परिवर्तित करके प्रेम, श्रृंगार, कामकला और रागरंग का जो अति अनुरंजक आयोजन होता है उसका तो चित्रण कवि ने किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही है साथ ही साथ राजकुँवर को रिझा कर मोड़ने में असफल सुन्दरियों का भी चटक चित्रण कवि ने किया है। इसी प्रकार वन-विहार के लिए जाते समय राजकुँवर को नगर की कुलवधुएँ अपनी अटारी से जिस प्रकार देख रही हैं उसका विस्तृत वर्णन सरस श्रृंगार प्रयोग का नमूना है। वीर और रौद्र रस का प्रयोग महाकाव्य के उत्तरार्ध में योजित जनपदीय युद्धों के सन्दर्भ में हुआ है। पृष्ठ 115 में रौरव और कुम्भीपाक आदि नरकों के वर्णन में आया वीभत्स रस है। कामदेव और तपस्वी राजकुँवर के संघर्ष में भयानक, अद्भूत और हास्य रस की व्यंजना है। शेष बचा करुण रस तो 'महात्याग' तथा 'छन्दक के लवटल' नामक दो प्रारम्भिक अध्यायों में तो जैसे करुण रस का सोता ही बह रहा है। प्रकृति का वर्णन कृति में इस प्रकार हुआ है कि वह रसावेश-सृजन में सहयोगी होता है। पृष्ठ 8 और 47 के चटक वसन्त वर्णन को इसी रूप में देखा जा सकता है। कवि प्राय: कथा-प्रवाह में ही प्रकृति के चित्रों को योजित करता है। पृष्ठ 56 में सन्ध्या समय आश्रम की जैसी शोभा होती है उसे कवि इस रूप में देख रहा है।

'बन के सुख शोभा बटुराइल,
थकलन सुरुज अँजोर पराइल;
हवन धुँआ से वन गँउजाइल,
गाँछ-बिरिछ के रूप ढँकाइल !'

इसी प्रकार पृष्ट 100 में नीरांजना नदी के तट पर स्थित वेला तीर्थ में ऋषियों और तपस्वियों के आश्रम का जो विस्तृत वर्णन है उसमें भी प्रकृति का वर्णन यत्र-तत्र आ जाता है। यह प्रकृति वर्णन सर्वत्र स्थिति सापेक्ष होता है। सारा बल वैराग्य पर होने के कारण कवि की वृत्ति वस्तु वर्णन में कम रमती है और इसीलिए प्रकृति का विस्तृत, रमणीय चित्रण कम है। उत्तरार्ध में अवश्य ही वस्तु वर्णन की प्रवृत्ति अधिक विकसित दृष्टिगोचर होती है। विशेष राजधानियों, जैसे राजगृह, नालन्दा, लासा, भोट, तिब्बत, मंगोलिया, जावा, हिन्दचीन और जापान आदि का बौद्ध धर्म प्रभावित वर्णन, फाह्यान का वृत्त (पृष्ठ 325), नानकिंग के 700 से अधिक बौद्ध मठों का वर्णन, सन्-संवत् के साथ तत्कालीन बौद्ध विश्व का, बौद्ध भिक्षुओं की साहसिकता का वर्णन, भिक्षु कुमार जीव के चीन में जाने का वर्णन (पृष्ठ 319), चीन के अनेक बौद्ध धर्म प्रभावित तीर्थों और नगरों का वर्णन, मध्य एशिया में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार का वर्णन, जावा के बौद्ध राजाओं का वर्णन, बर्मा में बौद्ध धर्म के विस्तार का वर्णन, दक्षिण के पल्लववंशी राजाओं और उनके राज्य के बौद्ध मन्दिरों की कलात्मक विशेषताओं का वर्णन, बर्मा की राजधानी पगान का वर्णन, दक्षिण के विज्ञानवादियों का वर्णन (पृष्ठ 267), हीनयान, महायान तथा शून्यवादी नागार्जुन का वर्णन (पृष्ठ 265-66), समुद्रगुप्त और कनिष्क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के समय का वर्णन, सर्वास्तिवाद का वर्णन, लंका के राजनीतिक परिवर्तन का वर्णन, अशोक द्वारा बौद्ध धर्म ग्रहण करने का विस्तृत वर्णन तथा लंका में बोधिवृक्ष की टहनी भेजने का वर्णन बहुत ही रुचि के साथ कृति में हुआ है। मल्ल महाजनपद का वर्णन तथा धातु के बँटवारे के प्रश्न पर मगध, वैशाली आदि जनपदों के बीच का युद्ध-वर्णन भी बहुत प्रभावी रूप में प्रस्तुत हुआ है। इस प्रकार उत्तरार्ध में वर्णनों की ही प्रधानता हो गयी है और अन्तिम भाग सपाट, काव्यात्मक रिपोर्ताज बन गया है। 'अब आगे के सुनीं बयान' (पृष्ठ 268), 'अब बाली के कथा सुनीं कुछु' (पृष्ठ 285) और 'आलस छोड़ी चलीं बोर्नियों' (पृष्ठ 286) जैसे पद इसी तथ्य की ओर इंगित करते हैं। उसमें धर्म, दर्शन, विचार, ज्ञान और बोध के ही प्रचार-प्रसार चित्रण की प्रधानता हो गयी है। किन्तु कवि अपनी चिपकनशील भाषा और अनुरंजनकारी शिल्प की शक्ति से काव्य के पाठकों को कहीं ऊबने नहीं देता है ।

प्राचीन भारतीय महाकाव्यों की भाँति इस कृति में भी स्थान-स्थान पर अतिमानवीयता का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। इस काव्य में भी समय समय पर देवता लोग मन की स्थितियों में परिवर्तन कर देते हैं। तुलसी में वनगमन की स्थितियाँ पैदा करने के लिए जैसे देवता लोग प्रेरक बन जाते हैं वैसे यहाँ राजकुँवर के सन्दर्भ में भी आता है कि 'देवता लोग घुमावल नाव' (पृष्ठ 43)। कथा में एक जगह आता है कि राजकुँवर ने मुकुट तोड़कर फेंका तो उसे देवताओं ने लोक लिया और उसकी पूजा की। राजकुँवर के गृहत्याग के सन्दर्भ में छन्दक कहता है कि घोड़ा इस प्रकार निःशब्द चलने लगा जैसे वह आकाश में चल रहा हो, फाटक अपने आप खुल गया और कोई जगा नहीं और देवताओं ने वस्त्र दिया। पाटलिपुत्र से योगबल से गंगा पार होने का चित्रण भी कुछ ऐसा ही है। किन्तु कुछ स्थानों में आई इस प्रकार की परम्परित अतिमानवीय वर्णन की प्रवृत्तियों को छोड़कर 'बउधायन' में महत्त्वपूर्ण, रोमांचक तथा कवित्वमय स्थितियों की चित्रणवृत्ति जो समय समय पर लक्षित होती है वही मूलतः इस कृति का प्राण-तत्व है। कल्पना, संवाद, संवेदना और रसात्मक बोध लेकर कवि ने ऐसी स्थितियों के चित्रण की योजना की है। उसकी व्यावहारिक काव्यभाषा, जिसे सहज सुसंस्कृत, साधु भाषा कहना अधिक उपयुक्त होगा, इस कार्य में सार्थक सहयोगिनी होती है।

महाभिनिष्क्रमण में मददगार सारथी छन्दक द्वारा, वापसी में, राजकुँवर का पिता को जो सन्देश दिया गया है वह अत्यन्त सहज संवेदनीय, रोमांचक और कवित्व कल्पना से परिपूर्ण है। (पृष्ठ 48) इस छन्दक संदेश में, तथा इस स्थल पर योजित संवाद में, समूचा चित्रण अन्तरंग मनः स्थितियों का है। यह प्रकरण 'रामचरितमानस' में चित्रांकित रामवनगमन में सुमन्त की भूमिका से मिलता-जुलता है। वैसी ही रसवत्ता तथा वैसी ही मार्मिकता, जैसी तुलसी में है, 'बउधायन' के कवि में इस स्थल पर दृष्टिगोचर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होती है। राम को खोकर जैसे अयोध्या वहाँ उदास है वैसे ही गौतम को खोकर कपिलवस्तु यहाँ सन्तप्त है। (पृष्ठ 60) छन्दक सन्देश में यदि तुलसी की मार्मिकता की छाप है तो छन्दक के आन्तरिक पश्चाताप, विषाद और ग्लानि में मैथिलीशरण गुप्त की वह मार्मिकता है जिसे साकेत में सुमन्त की वापसी के समय उनके भीतर चित्रित की गयी है। कन्थक घोड़े को, उसकी मनःस्थिति को लेकर, सचेतन रूप दिया गया है। वास्तव में छन्दक की वापसी और यशोधरा विलाप वाले प्रकरण में जो रसमग्नता और विह्वलता है वह भोजपुरी काव्य का शृंगार है। कुछ ऐसी ही रस-मग्नता 'सुजाता के खीर' वाले प्रकरण और 'मार की हार' वाले प्रकरण में भी है। विस्तृत, स्पष्ट और ओजस्वी चित्रण की दृष्टि से यह मार विजय वाला प्रकरण कृति में सर्वोपरि है ।

जहाँ कहीं, अवसर आता है विमलानन्द जी कल्पना प्रयोग में चूकते नहीं हैं । कपिलवस्तु की वापसी में पिता और घर की नारियों को नये सन्दर्भ में देखना और यशोधरा से मिलन आदि ऐसे अवसर हैं जब कवि भरपूर रूप से अपनी कल्पना का प्रयोग करता है। यशोधरा और गौतम के संवाद में प्रचलित आधुनिक फैशन के अनुरूप कवि ने आधुनिकता का आरोपण नहीं किया है। यहाँ जो नारी के प्रति सम्मान भाव चित्रित किया गया है वह परम्परित भारतीय संस्कृति के अनुरूप है। कवि समूचे काव्य में अपनी महाकाव्योचित सृजन गरिमा को सावधानी से बनाये रखता है। कृति में नये अध्यायों का आरम्भ भी इसी गरिमा के साथ होता है। 'राजकुँवर के खोज' नामक अध्याय का आरम्भ कितनी गत्वर मार्मिकता से भरा हुआ है।

राजा का आँसू-कोड़ा से,
घाही होके ओही घरिए ;

घोड़ा तेज नियर अफनाइल,
कान खड़ा कइ पनपनाइ के;

मन्त्री आ उपरोहित दूनो,
नेह मिताई बश मन-चित से;

जोर लगाके बन के गइलन,
धइले सुबहित डहरि समय से;

रही बात प्रस्तुत महाकाव्य में वर्णित नीति, उपदेश, धर्म, ज्ञान, दर्शन और बोध आदि की तो यह कृति तो इन सब वस्तुओं का जैसे महान कोश ही है । इन सन्दर्भों में स्थान-स्थान पर विस्तृत वर्णन, बहस और संवाद की योजनाएँ की गयी हैं। ऐसा लगता है कि इस महाकाव्य का आरम्भ राजकुँवर के शब्द 'हम दुनिया के विषय सरूपे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जानी लाँ' (पृष्ठ 35) से होता है। राजकुँवर ने इसे उदायी से उस समय कहा है जब वह गृहस्थ जीवन के सन्दर्भ में विषय भोग की सहज अनिवार्यता का समर्थन करता होता है। इसका विकास विविध लोगों से हुए राजकुँवर के संवादों में होता है। बीच में पाठकों को कवि गौतम के मुँह से यह कहलवा कर कि घोर तपस्या के बाद भी "मनवा के ना बोध भेंटाइल" एक झटका देता है। बाद में तर्क शृंखला के द्वारा क्रमिक रूप से बोध ज्ञान का उपजना कवि द्वारा बहुत धैर्य से चित्रित किया गया है। गौतम बुद्ध की अन्तिम शिक्षा, (पृष्ठ 213), समाधि स्वरूप का वर्णन, (पृष्ठ 216) जगत के रहस्य का कथन और आम्रपाली को उपदेश (पृष्ठ 191) तथा प्रसेनजित को दिया गया बोध बहुत ही विस्तृत और प्रभावशाली है। किन्तु इस कृति का मान सम्मान इन उपदेशों के कारण नहीं, बल्कि उन काव्योपयोगी विशेषताओं के कारण होगा जो इस कृति में निहित हैं तथा जिनके सहित लोकभाषा में, अतुकान्त संगीतात्मक लोकछन्द में, इस अद्वितीय भोजपुरी महाकाव्य का सृजन सम्पन्न हो गया है। ✪

'बउधायन की भूमिका' की भूमिका

परम्परानुसार ग्रंथ की भूमिका होती है परन्तु भूमिका की भूमिका तो अत्यन्त असामान्य विषय है। मुझे जब दण्डिस्वामी श्रीविमलानन्द सरस्वती के विशाल भोजपुरी महाकाव्य की स्वयं कवि द्वारा लिखित भूमिका **'बउधायन बोध दीपक'** की भूमिका लिखने के लिए आदेश हुआ है तो मैं बहुत चक्कर में पड़ गया हूँ। सोचता हूँ, यह सब असाधारण व्यापार चक्र है। **'बउधायन'** निश्चित रूप से एक असाधारण महाकाव्य है और उसकी भूमिका भी उसी के अनुरूप आश्वर्यचकितकारी है। ग्रन्थ में लगभग चालीस हजार पंक्तियाँ हैं तो भूमिका में लगभग इसके सवा गुना शब्दों का प्रयोग हुआ है। अति विस्तृत भूमिकाओं में आचार्य शुक्ल की 'जायसी ग्रंथावली' की भूमिका का नाम लिया जाता है पर इस महाकाव्य में स्वामीजी का लेखन-धैर्य उससे भी बढ़ गया है। अपना ही काव्य ग्रंथ होने के कारण भूमिका में उसके साहित्यिक वैशिष्ट्य पर वे कैसे क्या लिखते ? बहुत सुचिन्तित रूप में उन्होंने महात्मा गौतम बुद्ध के युग, जीवन और धर्म-दर्शन के विश्लेषण में महाकाव्य के सृजन से बची अपनी सारी शक्ति झोक दी है तथा भूमिका ही भूमिका में एक महान कार्य कर दिया है। हिन्दी और संस्कृत की सैकड़ों पुस्तकों की सामग्री को एकत्र कर जिस सहज शैली में विश्लेषित किया है वह अद्वितीय तथा अपूर्व है। स्वामीजी के भाषा-प्रयोग पर मतभेद हो सकता है क्योंकि उन्होंने एक विशेष प्रकार की टकसाली, भोजपुरी का प्रयोग किया है जिसमें आध्यात्मिक का रूप 'अधियातमिक' और शक्ति का रूप 'शकती' हो जाता है। किन्तु ऐसी 'विशालकाय' भूमिका में आदि से अन्त तक जिस रूप में भोजपुरी गद्य प्रयोग की एकरूपता के सधे हुए ठोस रूप का दर्शन होता है वह निश्चित रूप से उसके समूचे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गद्य साहित्य को प्रभावित करने वाला सिद्ध हो सकता है। टीका, टिप्पणी, अन्वेषण, समीक्षा, बहस, तुलना और संश्लेषण-विश्लेषण की गद्य शैली का भोजपुरी गद्य में निखरा और परिनिष्ठित रूप अभी स्थिर नहीं हुआ है। भोजपुरी गद्य के ऊपर आज भी उसकी काव्य भाषा छायी हुई है । उसे विचार-चिन्तन की वैज्ञानिक भाषा का रूप देने की दिशा में महाकाव्य की यह विशाल भूमिका एक मानक प्रकाशस्तम्भ का कार्य करेगी । इस भूमिका को पढ़कर ऐसे प्रश्नों का उत्तर मिल जाएगा कि मूल ग्रन्थ और भूमिका का यदि एक ही विषय है तो क्या कुछ ऐसा भी है जो मूल काव्य ग्रन्थ में कहने के लिए शेष रह गया है और अनिवार्य होने के कारण उसके लिए इतने श्रम से भूमिका का सृजन करना पड़ा ? सहृदय और विचारवान पाठकों के मन को छूने वाली इस भूमिका से जुड़े मूल ग्रंथ के बारे में यहाँ कुछ विचार प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत होता है।

भारतीय स्वाधीनता और लोकतन्त्र के उदय के साथ भोजपुरी हिन्दी में जो सृजनात्मक साहित्य की प्रवृत्ति का जोरदार उभार आया उसमें छिट-पुट सामान्य सृजन के बीच से एक ऐसे असामान्य और महान कृतित्व का प्रादुर्भाव जिसे उक्त कालावधि की समग्र रचनाधर्मिता की महत्तम उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है तथा जिसे लेकर अब सहज ही भाषा अवधी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली और मैथिली के सामने सगर्व खड़ी हो सकेगी। भोजपुरी के पास बोलने वालों की संख्या, भाषा वैज्ञानिक सामर्थ्य और अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता का जो बल रहा है अब इस प्रातिभ और बौद्धिक सृजन से निस्सन्देह चमक उठेगा। लगभग चालीस हजार पंक्तियों के इस विस्मयजनक महाकाव्य का नाम **'बउधायन'** है जिसके रचनाकार **दण्डिस्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती** हैं। स्वामी जी को भोजपुरी साहित्य के इतिहास में प्रथम कहानी-लेखक के रूप में स्मरण किया गया है। उनकी **जेहल क सनद'** सन् 1948 में प्रकाशित हुई। तब से भोजपुरी साहित्य की समृद्धि के लिए सतत् प्रयत्नशील विमलानन्द जी ने अपनी मौन साधना के बीच में भोजपुरी काव्य के सर्वोच्च जगमगाते शिखर को 'बउधायन' के रूप में विश्व-साहित्य के सामने उपस्थित किया है। कहते हैं, अनवरत रूप से दस घण्टे रोज सृजन समर्पित हो स्वामी जी ने इस महाकाव्य को दस वर्षो में पूर्ण किया है ।

पहले-पहल जून सन् 1973 में इस महाकाव्य की पाण्डुलिपि को हमने देखा था और डेढ़ हजार पृष्ठों की सुसज्जित पाण्डुलिपि के अंतरंग में प्रवेश कर कुछ ही समय में जान लिया था कि महात्मा गौतम बुद्ध के अछूते पवित्र चरित्र पर आधारित यह महाकाव्य सही अर्थो में भोजपुरी का पहला परिनिष्ठित और शास्त्रीय महाकाव्य होगा। उसके पूर्व **'अँजोर'** और **भोजपुरी'** आदि पत्र-पत्रिकाओं में इसके अंश प्रकाशित और लाखों पाठकों द्वारा प्रशंसित भी हो चुके थे। तब से बीतते समय के साथ स्वामीजी ने उसे नये-नये अनुभवों के प्रकाश में काफी परिमार्जित और परिवर्द्धित किया है। सन्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1980 में इस विशालकाय महाकाव्य की पाण्डुलिपि भोजपुरी अकादमी (पटना) के कार्यालय में देखकर एकदम चकित रह जाना पड़ा । ऐसा नहीं लगता है कि किसी ऐसे साधु व्यक्तित्व का यह सृजन है जिसका समूचा बोध प्राचीन और मध्यकालीन है । स्वामीजी के कवि ने बहुत कुशलता से समकालीन बोध और आधुनिक संवेदनाओं को पकड़ा है । अपने समस्त वस्तुतत्व के साथ यह महाकाव्य बौद्ध धर्म का विश्व कोश तो है ही, अपनी भाव सम्पदा के बल पर अन्तर्राष्ट्रीय महाकाव्य की सीमा में प्रवेश करता है । रसात्मकता और दर्शन की समगतिक समन्वय वृत्ति में चीन, जापान, लंका, वर्मा, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया और तिब्बत की विचार भूमियों को ही नहीं ठोस जीवन भूमियों को स्पर्श करनेवाला यह महाकाव्य निस्सन्देह भोजपुरी भाषा को बढ़ानेवाला है ।

बुद्ध भगवान के धर्मचक्रप्रवर्तन के साथ और उसी की भांति भोजपुरी के साहित्य-चक्र-प्रवर्तन का यह ध्यानाकर्षक काव्य अपने भीतर इतिहास, दर्शन और काव्य की ही नहीं रस, छन्द, अलंकार, लक्षणा, व्यंजना, व्यंग्य-वक्रोक्ति, प्रतीक-बिम्ब, संकेत और मिथक आदि सूक्ष्म शिल्प-प्रयोगों को भी बहुत सफाई से समेटकर आगे बढ़ता है । रूपवादी शिल्प और पूर्ण कलात्मक सज्जा की प्रवृत्ति स्वामी जी में बहुत प्रगाढ़ है परन्तु सहजता की युगीन मांग पर बारम्बार ऐसा लगता है कि उन्हें अपने नयी काव्यभाषा और नाटकीय संवादभंगिमा मुक्त छन्द में इस प्रकार योजित होता है कि सहज प्रवाह इस महाकाव्य का विशेष गुण बन जाता है । स्वयं संन्यासी होने के कारण जहाँ गृहत्यागी गौतम के साथ तादात्म्य के अनेक अन्तरंग आयाम कवि में सहज संभव थे वहीं यह देखकर सन्तोष होता है कि मानव जीवन की अनेक गूढ़ और व्यावहारिक स्थितियाँ स्वामी जी में साक्षात्कृत होकर अभिव्यक्त हुई हैं । प्रकृति-वर्णन में ध्वनि और रंगों के चित्रबिम्बों को उन्होंने पकड़ा है । लोक-जीवन के तलवर्ती मुहावरों का प्रयोग पंक्तियों को जीवन्त बनाता है । एक-एक पंक्ति में कहीं-कहीं दोहरे-तेहरे मुहावरे टँके मिलते हैं । 'भेड़ि बनाई मूड़ि लोगन के' जैसे प्रयोगों की कमी नहीं दृष्टिगोचर होती है । खुनखुने और खनहन छन्दों के ताल पर वर्णन के अनुरूप शब्द-अर्थ कहीं नाच उठते हैं तो कहीं अंतरंग ऐंठन छन्दों में आकार ग्रहण कर पाठकों के मानस में मरोड़ बन जाती है । वास्तव में **'बउधायन'** का पाठ भोजपुरी की नयी काव्य-भाषा के साथ एक सर्वथा नये भावों और नयी संवेदनाओं के बीच से सुखद यात्रा है ।

क्या कारण है कि अवधी, ब्रजभाषा और खड़ी बोली में महात्मा गौतम बुद्ध के उदात्त चरित्र पर महाकाव्य नहीं लिखे गये और स्वातंत्र्योत्तर काल में जाकर भोजपुरी में उसका सृजन हुआ है ? ले-देकर अंग्रेजी में **'लाइट ऑफ एशिया'** और संस्कृत में अश्वघोष का **बुद्ध चरित** जैसे कुछ काव्य ही गौतम बुद्ध पर उपलब्ध हैं तथा नये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँधीवादी प्रभाव में गुप्त ने उस चरित्र को छुआ भी तो 'यशोधरा' के कोण से। उस समग्र चरित्र से मध्यकालीन साहित्य को परहेज क्यों ? बौद्ध धर्म को देश से बाहर करने की प्रक्रिया के अवशिष्ट अंतरंग संस्कार तो नहीं प्रभावी रहे ? जो हो, समाजशास्त्रियों को इस पर विचार करना चाहिए। इस दृष्टि से विमलानन्द जी के, जो स्वयं स्वतंत्रता-संग्राम-सेनानी रहे हैं, इस कृतित्व को लोकतांत्रिक प्रभाव के प्रतिफल के रूप में रेखांकित किया जाना उचित होगा। विदेशों में धर्म-प्रचार और भारतीय गौरव को जिस उत्साह के साथ महाकाव्य में चित्रांकित किया गया है उसे देखते कवि के राष्ट्रीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का यह महाकाव्य समूचे भारतीय साहित्य में विशिष्ट स्थान का अधिकारी है। डॉ॰ उदय नारायण तिवारी इसे भोजपुरी का **'इलियड'** कहते हैं पर मेरी दृष्टि में तो यह अप्रतिम है, बेजोड़ है ।

ऐसे बेजोड़ महाकाव्य की भूमिका भी यदि बेजोड़ है तो क्या आश्चर्य ? जिन मूल पाँच ग्रन्थों के आधार पर यह भूमिका तैयार हुई है वे हैं महावस्तु, ललितविस्तर, अथिनिसकरमणसुत्त, जातकट्ठकथा, बुद्ध चरित। इनके अतिरिक्त पूरब-पश्चिम के अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थों का भी सहारा लिया गया है। मूलतः इस भूमिका को स्वामी जी ने विश्लेषणपरक बनाया है। युग-समीक्षा के भीतर उन्होंने तत्कालीन छह धर्म-प्रचारकों की विस्तारपूर्वक चर्चा की है जिनकी पृष्ठभूमि बुद्ध धर्म के प्रादुर्भाव में महत्वपूर्ण है। भोजपुरी भाषा-भाषियों को अतितकेश कंबल (जड़वादी), संजय बेलट्ठिपुत्त (अनिश्चिततावादी), पकुथ कच्चायन (अन्योन्यवादी), पूरणकस्सप (अक्रियावादी) और मक्खलि गोशाल (नियतिवादी) जैसे नास्तिक दार्शनिकों और निग्गंठ नाथपुत्त जैसे चार संयमों के प्रर्वतक दार्शनिक के दर्शन पहली बार होंगे। बौद्ध दर्शन, तत्वज्ञान, शून्यवादी कारणवाद और अन्य क्लिष्ट दार्शनिक बहसों को सरलता से समझाने के साथ लेखक ने कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों को सीधे ढंग से उठाकर व्याख्यायित किया है, जैसे 'ईश्वर के बारे में बुद्ध के विचार', 'बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म दर्शन'। उनके अतिरिक्त अन्त में तत्कालीन चित्र, मूर्ति, स्तूप आदि कलाओं के साथ चीन और भारत के बीच दूतों, यात्रियों और बौद्ध भिक्षुओं के आने-जाने का विवरण प्रस्तुत कर विषय को पूर्णता तक पहुँचा दिया है।

इस भूमिका को देखकर पाठक सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि इसकी स्वतंत्र महत्ता भी निर्विवाद है। मूल महाकाव्य से जैसे भोजपुरी काव्य गौरवान्वित हुआ है उसी प्रकार उसकी भूमिका से इस विकासशील भाषा की गद्य-शैली को एक प्रौढ़ लेखनी का प्रभावशाली प्रसाद प्राप्त हुआ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

4 'श्रद्धा-सुमन' बनाम भोजपुरी विनयपत्रिका

कुछ वर्ष पहले **''महाविश्व''** नामक एक पुस्तक, भोजपुरी में मैंने पढ़ी । विषयवस्तु और उसके प्रतिपादन का शैलीशिल्प एक विशेष प्रकार का था । जीव-जगत् से युक्त चिन्तन की जटिलता को, भोजपुरी की सरलता में ढाल कर; ऐसे आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया था कि उसके लेखक आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत की ओर भोजपुरी-प्रेमी लोगों का ध्यान सहसा आकर्षित हो गया । इसके बाद **'आनन्दमार्ग का परिचय'**, **'मणिमाला'** (भाग 1 और 2) तथा **'आदर्श भोजपुरी व्याकरण'** के प्रकाशन के पश्चात् वे भोजपुरी साहित्य जगत् में प्रतिष्ठित हो गये । सन् 1992 में जब पटना में आनन्दमार्ग के धर्ममहासम्मेलन का समारोह हुआ था, तो इस संस्था के पुरोधाप्रमुख के रूप में उनका पदार्पण हुआ था । इस सुअवसर पर एक दिन उनके आमंत्रण पर भोजपुरी आन्दोलन से जुड़े लोगों में से पाण्डेय कपिल, व्रजकिशोर, अनिल कुमार आंजनेय, विवेकी राय तथा दशरथ तिवारी आदि इकट्ठे हुये ।

आशा थी कि वे धर्म-दर्शन विषय पर चर्चा करेंगे । परन्तु, जब डेढ़ घण्टे तक भोजपुरी व्याकरण तथा भाषा-साहित्य पर गंभीर चर्चा हुई तब समझ में आया कि श्रद्धानन्द जी के व्यक्तित्व-कृतित्व में साहित्यिक चेतना अधिक प्रभावशाली है । उसी गहरी-गंभीर साहित्यिक चेतना के सहारे उनकी सद्यः रचना **'श्रद्धासुमन'** मुद्रित हुई है, तब उसकी ओर ध्यान आकृष्ट होना स्वाभाविक है । भोजपुरी साहित्य, सन् 1993 में, इस ग्रन्थ के प्रकाशन से समृद्ध हुआ है ।

''श्रद्धा-सुमन'' में कवि द्वारा रचित तीन सौ से अधिक कवितायें, संकलित हैं । प्रत्येक रचना के साथ उसका रचनाकाल तथा स्थान का उल्लेख है, जिसको देखने से यह ज्ञात होता है कि सन 1992 के नववर्ष से आरम्भ कर आगे के आठ महीने के अन्दर ही, ये सभी रचनाएँ हुई हैं । इतने अल्पकाल में, एक ही स्वर-गन्ध वाला इतना अधिक सन्तुलित सृजन, इसके सृजनकर्त्ता के चिन्तनधारावाली समाहित-शान्त पराभूमिका की ओर संकेत कर रहा है । बिना इस तरह की उच्चभूमिका में गये, इस तरह की प्रभावशाली भोजपुरी 'विनयपत्रिका' की रचना होती ही नहीं ।

सचमुच में यह **'श्रद्धा-सुमन'** यदि सही सटीक किसी विशेषण से भूषित होता है, तो यह **'भोजपुरी विनयपत्रिका'**, समर्पित आत्मनिवेदन के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है ? किसी तरह का आडम्बर या प्रदर्शन कहीं नहीं है । क्या भाषा, क्या विषयवस्तु, प्रत्येक पहलू में साधु सरलता-सहजता, विनय, समर्पण, योग, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, भजन-भाव, व्याकुलता, भवबन्धन से मुक्ति की व्याकुलता, साध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना-आराधना तथा लीला-वर्णन अथवा गुण-गान आदि जिन पुरातन विषयों की प्रस्तुति हुई है, वह आधुनिक मन को, अपने शैली-शिल्प के बल पर स्पर्श कर रही है । वह मात्र शब्दाडम्बर नहीं है, उसमें साहित्य है । इसीसे वह साधारण और नजरअन्दाज करने योग्य नहीं है ।

भोजपुरी काव्य-साहित्य की वर्त्तमान लीक से हटकर, रची इस कृति को हम अनेक कारणों से महत्वपूर्ण मानते हैं । खड़ीबोली हिन्दी काव्य के आंशिक अनुकरण से भोजपुरी काव्य में कुछ कृत्रिमता आ गई है या आ रही है । इस तरह की कृत्रिमता 'श्रद्धा-सुमन' में अल्पमात्रा में भी नहीं है । इसमें भोजपुरी भाषा की अपनी प्रकृति के अनुरूप मौलिकभूमि के अनुसंधान की प्रवृति है । अपनी इस शक्ति के बल पर यह ध्यान आकृष्ट करती है । आधुनिक काल में जीते कुछ क्षेत्र में परमपुरुष की सर्वव्यापकता, उनके साथ सम्बन्ध स्थापना, उनके प्रति उत्कट विरह व्याकुलता का प्रदर्शन, उनके साथ विविध लीला तथा विश्व के कण-कण में, चराचर जीव-जगत में उनकी सत्ता को देखकर आभास जैसी रहस्यवादी भावना-उद्‌भावना व्यापकरूप में स्वागत योग्य रह नहीं गई है ! राजनीति-धंधी लोगों के हो-होल्ला में, सामान्य मनुष्य की मति ऐसी जड़ हो गई है कि शाश्वत श्रेष्ठ मानवमूल्यों के प्रति प्रासंगिकत्ता का प्रश्न उठा दिया जाता है । इतने पर भी यह पुस्तक सृजनात्मक साधुभाषा के सहज अन्तर्बल से सब प्रकार के पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट करेगी, यह बात विश्वास के साथ कही जा सकती है । इसका कारण यह है कि इसका कवि नव्य मानवतावाद के आधुनिक दर्शन को रचनाओं में फोकस देता है ।

धर्म, दर्शन, भक्ति, ईश्वरवाद, नैतिकता, पवित्रता, सत्य, अहिंसा और साधना आदि से ओत-प्रोत इस काव्य-ग्रन्थ में साम्प्रदायिक सद्‌भाव, आशावाद-आस्थावाद, विश्वप्रेम, प्रकृति-प्रेम, उच्च उद्देश्यों के प्रति निष्ठा, सर्वे भवन्तु सुखिन: और मनुष्य जीवन की सार्थकता - जैसे विषयों पर उत्कृष्ट रचनाएँ हैं । कई रचनाएँ पर्यावरण सम्बन्धी हैं, जिनमें अपने इस वर्त्तमान संसार को बनाने-सजाने के लिये प्रेरित किया गया है :

ई दुनियाँ हमनी के घर हऽ
एकरा के सुघर बनाईं जा
एकरा के खूब सजाईं जा — *पृष्ठ 4*

ऐसा लगता है कि कविताओं की पंक्ति-पंक्ति में, सुगठित और अगठित भाषा से आगे बढ़ कर कोई और अन्तर की सुघराई है । कवित्व में रूढ़िवाद से कवि को घनघोर परहेज है । इसको देखकर अभिधा को उत्तम काव्य कहने वाले आचार्य, भाषा को बहता नीर-कहने वाले सन्त और "तुम वहन कर सको जन मन में मेरे विचार, वाणी मेरी, चाहिये तुझे क्या अलंकार" कहनेवाले महाकवि की आत्मा, श्रद्धानन्दजी के कवित्व को देख कर अति तृप्त हो जायेगी । एक तरफ सहज भाव उर्दू, फारसी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अरबी के शब्दों का स्वागत है, तो दूसरी ओर प्रोग्राम, रिलीफ, हैण्डिल, गियर और प्रॉपर्टी जैसे अँग्रजी के शब्दों को ऊँचा पीढ़ा दिया गया है। भोजपुरी कविताओं के इस विशाल सागर में दो-चार खड़ी बोली की कविताएँ द्वीपं की तरह किसी भाव-प्रवाह में निकल आई हैं। श्रद्धानन्द जी हिन्दी, अँग्रजी तथा भोजपुरी में समान रूप से कलम चलाते हैं। उनकी अँग्रजी के तीन, हिन्दी की चार किताबें प्रकाशित हुई हैं, तो भोजपुरी में प्रकाशित पुस्तकों की संख्या पाँच है। (आजकल तेरह हो गयो है - लेखक) भोजपुरी में अधिक लगाव का यह प्रमाण है।

'श्रद्धा सुमन' में प्रयुक्त शब्द सम्भार बहुत थाह-थाहकर, बिना हड़बड़ी के, शान्त-धीर-गम्भीर भाव से, आह्लाद हुलास भरे स्वर में, बातचीत या संवाद शैली में बहुत आकर्षित करते हैं। कहीं-कहीं जबर्दस्त तर्क की भाषा दृष्टिगोचर होती है। परन्तु, सर्वत्र परमार्थ कथन को बिना उहापोह के सहज भाव से प्रस्तुत किया गया है। सर्वात्मवाद, 'नव्यमानवतावाद, वसुधैव कुटुम्बकम् तथा सामाजिकता-राष्ट्रीयता से सम्बन्धित रचनाओं का अभाव नहीं है। हृदयस्थ ब्रह्म का सौन्दर्यबोध, अहोभाव और धन्यता-कृतज्ञता, अन्तर्मुख अनुभूति तथा ब्रह्मविहार कवि का प्रिय विषय है। अनेक कविताओं में विभिन्न तरह से सृष्टि, मनुष्य तथा प्रकृति के सौन्दर्यबोध का चित्रण हुआ है। योग, भक्ति, समर्पण, विरह, रहस्यवाद तथा पाखण्ड-विरोध की अभिव्यक्ति में कदम-कदम पर, सूर-तुलसी कबीर की याद आ जाती है। पाठकों को, कथ्य का वैविध्य ऊबने नहीं देता है। कवि की दृष्टि में ईश्वर ही साहित्य के प्रेरक हैं (166)। जर्मनी की लिखी कविता में अपने देश के उत्थान की प्रबल अभिलाषा दीख पड़ती है (269)। कुछ पदों में वार्तालाप शैली है (177) तो कहीं-कहीं, लोक-गीत की सुगन्ध है (286)। वास्तव में आवश्यकता है कि इस पुस्तक का विस्तृत मूल्यांकन हो। आलोचक लोगों की एक शिकायत हो सकती है कि कुछ कविताओं में आनन्दमार्ग का प्रचार किया गया है। परन्तु, हमारे यहाँ तो परम्परा रही है कि विभिन्न मार्गी कवि लोग अपनी कविताओं में अन्य विषयों के साथ-साथ अपने मार्ग का प्रचार करते आए हैं। कविताओं में जो सहज सम्प्रेषणीय काव्य-भाषा में उदात्त तथा लोकोत्तर भाव प्रकट होता है वह व्यापक मानवीय चेतना से सम्पृक्त साहित्य बन जाता है। उसका अवश्य स्वागत होना चाहिये।

'श्रद्धा-सुमन' के प्राक्कथन में साहित्य के बारे में कवि श्रद्धानन्दजी ने लिखा है - 'सिर्फ अक्षरों को केन्द्र करके शिल्प शैली तैयार करने से वह साहित्य न होगा। साहित्य होने के लिये उसमें हित की भावना होनी ही पड़ेगी। 'हितेन सह इत्यर्थे साहित्यः' । कवि की, साहित्य की इस परिभाषा पर प्रस्तुत काव्य ग्रन्थ सर्वथा खरा उतरता है। इसका अनुभव पाठक स्वयं कर सकते हैं। अब 'सहित' को आदर्श रख कर कुछ कविताओं की बानगी दिखा कर यह विश्लेषण आगे बढ़ाता हूँ -

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(1)

'सभे ह आपन देस
देस-देस के लोगन से मीलऽ
सभ के प्रभु का भेष में देखऽ
सभके अपने नियर बुझऽ
सभके अपने गरे लगावऽ
तबे होई कल्याण ।'

(2)

'आँखि त बटले बा, राति में ना सूझेला
जब दिन होला तबे देखाला ।
लउके खातिर सूरज के उगल जरूरी हऽ
एहितरे दुनिया में, ईश्वर का प्रकाश में,
सभ किछु साफ-साफ सुझाई देला ।'

(3)

'ए सागर के कुल्ही लहरिया
आकाश के छूअत बाड़ी सऽ
ए पोखरिया के कुल्हीं गगरिया
पानी से भरल बाड़ी सऽ
तहरे लगे जाली सऽ ।'

(4)

'रूप में अरूप के देखऽ
सभ में तूँ स्वरूप के देखऽ
दृष्टि जब बदल जाई तऽ
सभ किछु पवित्र हो जाई ।

ईश्वरवाद सहित जीवन के ऊँचे मूल्यों का जबरदस्त प्रचार करने वाली पुस्तक 'श्रद्धासुमन' अब बहुत विस्तार पा गयी है । सन् 82 से आरम्भ होकर जून सन् 2001 तक इस पुस्तक के 20 भाग प्रकाशित हो चुके हैं । इसके कुल पदों की संख्या 9312 तक पहुँच गयी है । यह लगभग दस हजार को छूती संख्या ध्यानाकर्षक है और कवि की सृजन-क्षमता की ओर ध्यान आकर्षित कराती है । सभी कविताओं में रस-गंध की समानता है और सबका स्वरस्तर भी एकसा है । ऐसे विराट् सृजन-सन्तुलन को देख कर उसके सर्जक के बारे में सहज ही सोचा जा सकता है । बिना चित्त-धारा की समाहित-शान्त पराभूमिका के ऐसा होना संभव नहीं होगा । कवि में तन्मयता है, तद्रूपता है, साधना-सातत्य है, ईश्वर में रमकर पाठकों को भी उसमें ला देने की क्षमता है और इसीलिए उसकी विनयपत्रिका इतनी प्रभावशाली हो गयी है । पुरी पुस्तक में साहित्यिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बनने' अथवा 'कहलाने' का लोभ नहीं झलकता है। इसीलिए सोचे-समझे बुद्धि विलास का अभाव है। जो कुछ भी है वह अत्यन्त सहज है, स्वतः स्फूर्त्त है और साधुभावधारा है। कवि को अपनी धाक जमाने से परहेज है। 'श्रद्धासुमन' की पंक्ति-पंक्ति में ऐसा लगता है कि कवि खुले मन से अपने पाठकों से उच्च जीवन के विषय में बातचीत कर रहा है।

इस ग्रन्थ में एक ध्यानाकर्षक विशेषता है, संवाद-गुणसम्पन्नता। इस संवाद-संयोजन में कई-कई आयाम लक्षित होते हैं। कवि अपने गुरु से, प्रभु से, अपने से (आत्म-सम्बोधन), पाठकों से, प्रकृति से और विश्व-मानव से संवादरत है। इसके अतिरिक्त गुरु का संवाद साधक से है, प्रभु का संवाद भक्तों से और भृत्यजन प्रभु के साथ संवाद में जुटे हैं। कहीं-कहीं ये संवाद प्रश्न और उत्तर के रूप में उभरे हुए हैं। इसी क्रम में प्रभु और जीव के बीच अनेक प्रकार के सम्बन्ध उभरते हैं। आश्चर्य है कि हर कविता की भूमि और भूमिका बदल जाती है। देश-विदेश के विविध स्थानों पर बैठकर ये कवितायें नित्य के भाव-चिन्तन के रूप में स्पष्ट हैं। यही कारण है कि इनकी संवेदनाओं में हवा-पानी के बदलाव की मार्मिक छुअन होती है। अति गंभीर तथा संश्लिष्ट विचार-भावों से पूर्ण यह साधुवाणी जब लोक-भाषा की ओर सहजता में ढलकर किसी विदेशी महानगर में बैठकर लिखी गयी होती है तो उसे पढ़कर रस-गंध सम्बन्धी एक नये प्रकार की फुरफुरी भीतर उठती है। बीस खण्डों में विस्तार पाती 'श्रद्धासुमन' की ढेर-ढेर कवितायें जर्मनी, इटली, स्वीटजरलैण्ड, फ्रांस, इंगलैंड और आष्ट्रेलिया आदि के महानगरों में लिखी गयी हैं। जर्मनी में लिखी एक कविता में प्रभु-वाणी फूटती है -

'हरेक साधक हमार एक-एक गो मोहर हऽ,
ऊहे हमार सबसे बड़ सम्पत्ति हऽ,
ओकरा के हम हरदम बचावत रही लाँ
हरदम निगरानी करत रहीला।'

कवि आज के जीवन-संघर्ष में टूटे-उखड़े लोगों को अनेक तरह से आश्वस्त करता चलता है। तुमुल-कोलाहल-कलह भरे जीवन को जीते लोगों को वह सम्बोधित कर कहता है कि कुछ समय निकाल कर इधर भी देखिये, देखने की वास्तविक कला कैसी है ? -

'रूप में अरूप के देखऽ,
तू सभमें स्वरूप के देखऽ,
दृष्टि जब बदल जाई तब,
सब कुछ पवित्र हो जाई।'

'श्रद्धासुमन' के चतुर्थ खण्ड में प्रकाशित अंतिम पाँच रचनायें बगोटा, कोलम्बिया, दक्षिणी अमेरिका में लिखी गयी हैं। इसके बाद के खण्डों की रचनायें प्रायः स्वदेश में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही लिखी गयी हैं । अंतिम बीसवें खण्ड की रचनायें आनन्दनगर और तिलजला में लिखी गयी हैं । अंतिम रचना 'तोहार प्रेम निराला ऐ प्रभुजी' 25 जून सन् 2001 की है और तिलजला (कलिकाता) की लिखी हुई है । इसकी संख्या 9312 है ।

'श्रद्धासुमन' के रचित पदों की असाधारण संख्या देखकर एक तथ्य याद आता है कि किसी वस्तु की अधिकता उससे अरूचि पैदा कर देती है । मगर यह तथ्य-नियम 'श्रद्धासुमन' पर नहीं लागू हो पाता है और कहीं से भी अनाकर्षण पैदा नहीं होता है । यहाँ तक कि पुनरावृत्तियों में भी एक अन्तरनिहित रसवत्ता की अनुभूति होती है और आकर्षित करती है ।

'श्रद्धासुमन' के वाह्य विस्तार के साथ-साथ उसका आन्तरिक गांभीर्य भी बढ़ता जाता है । आश्चर्य है कि यह आकर्षक गांभीर्य पुनरावृत्तियों में भी मिलता है । भौतिक जगत और आध्यात्मिक भावभूमि पर उभरी यह सृजनात्मक पुनरावृति भावमग्नता, विचारोत्तेजना और अन्त: प्रेरणा को बढ़ाने वाली सिद्ध हो रही है । वास्तव में 'श्रद्धासुमन' की समूची अभिव्यक्ति स्वरूपसत्ता से जुड़ी हुई है । वह सत्ता परमपुरूष की सत्ता है । स्थूल नाम-रूप में वह श्रीगुरुदेव प्रभात रंजन सरकार अथवा 'बाबा' के रूप में अभिव्यक्त होती है तो इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है । वह समूची अभिव्यक्ति भोजपुरी भाषा की महान वाङ्मय ऐश्वर्य बन जाती है । आध्यात्मिक ऊर्जा-सम्पादन के लिए 'श्रद्धासुमन' एक सम्पूर्ण सत्संग-सुयोग है ।

'श्रद्धासुमन' के पद सन् 1992 से आरंभ होकर 2001 तक निरन्तर लिखते आ रहे हैं । ये नित्य प्रात: चिन्तन के रूप में रचनात्क रूप लेते हैं । इसकी प्रक्रिया के विषय में कवि आनन्दनगर पुरूलिया में 30 दिसम्बर सन् 2001 को लिखे 9099 संख्या वाले पद में घोषित करता है -

'शारीरिक भूख त सभ जानेला,
मानसिक भूख के के जानेला ?
साहित्य मन के विषय हऽ,
एक से एक भाव आवेला ।
ई भाव अनमोल रहेला,
तुरन्त एके लिखि लेबे के परेला ।
फेरू कहँवा चलि जाला, ना मालुम होला ।
मानो ऊ रूठि गइल हऽ,
जब ओकरा सत्कार में देरी हो गइलि ह ।'

इस प्रक्रिया को पीछे खंडों में भी कवि द्वारा प्रस्तुत किया गया है । इसी बीसवें खण्ड के एक और पद में (9107) में कवि कहता है -

'केहू ऊपर से भाव फेंकेला,
मन हमार ओके लोकि लेला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुरन्त ओकरा के हम लिखि लेईलें,
ओकरा के पूरा करी लें ।'
तनिको देर हो जाले ,
कोहना के ऊ चलि जाला ।'

इस पद से स्पष्ट है कि इन पदों की प्रेरणा अज्ञात से आती है, यह ईश्वरीय होती है और कवि इनको बहुत आदर देता है । इसे 'कोहनाने' (रूठने) नहीं देता है । निर्मल हृदय में उतरी ये प्रात: चिन्तन की भावलहरियाँ अपनी सहजता से बहुत आकर्षित करती हैं । सच पूछा जाय तो निर्मल हृदय ही काव्य का स्रोत है और यहीं से निकले भाव-विचार जो शब्द रूप लेते हैं, पाठकों के चित्त को रमा देने में समर्थ होते हैं ।

हृदय की निष्कलुष निर्मलता के प्रतिमान के रूप में श्रद्धानन्द जी एक शिशु का संदर्भ उठाते हैं । किलकारी भरता शिशु जितना स्वयं निर्मल है उतना ही निर्मल, अपने सम्पर्क से, क्षण भर के लिए प्यार के साथ उसे लेकर खेलाने वाले को भी बना देता है –

'सभ से निष्कपट हँसी केकर होले ?
गोद में जेकरा लइका बा, ओकर होले ।
ओकर हृदय केतना निर्मल बा,
दोसरो के ऊ निर्मल बना देत बा ।'

ठीक ऐसे ही एक शिशु की भाँति कवि का भी हृदय अत्यन्त ही निर्मल है । वह भी मानो शिशु की ही भाँति अपने इष्ट देव (बाबा) की गोद में खेल रहा है और उसकी हर भावोच्छवसित किलकारी 'श्रद्धासुमन' का छन्द बनकर अभिव्यक्त हो जाती है । यही कारण है कि यह अभिव्यक्ति अपनी स्वच्छन्दता में अनूठी होती है । कहाँ-कहाँ की बातें कैसी सहजता में ढालकर कह दी जाती हैं –

'भूकम्प के एतना आतंक बा
लोग राति बितावत बा सड़कन पर,
नींद ठीक से केहू के लागत नइखे
केहू तेरे राति बितावत बा ।
सबेरे काल्हि का होई
केहू अनुमान ना लगावत बा ।
1934 में बलिया, बक्सर आदि में
भूडोल आइल रहे ।
जवना जगह हम दुआर पर रहलीं,
देखलीं, सुनलीं, मानो केहू मृदंग बजावत बा ।

इस प्रकार की प्राकृतिक घटनाओं को, पर्य्यावरण सम्बन्धी समस्याओं को, जागतिक व्यवहार की सहज सामान्य लगने वाली बातों को कवि प्रकाश में लाता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा की सरलता और कवि-हृदय की सहज छुअन पाकर ये विषय मर्मस्पर्शी हो जाते हैं। कभी-कभी पुरानी स्मृतियों में डूबता है, गाँवों में किसानों द्वारा कऊड़ तापने के आलस में पड़े रहने के चित्र को उभारता है तो कभी गाँव के अखाड़ों की सुधि लेता है-

'इ देश रहे पहलवानन के,
दंड-बइठक करे वालन के,
लंगोटा-जांघिया पहिरेवालन के,
ऊढ़ा फाने वालन के, कसरत करे वालन के,
दर्शक देखत रहेला, जब कवनो त्यौहार आवेला।
देखे वालन के भीड़ लागेला,
के जीतल के हारल, प्रतीक्षा करेला।
दृश्य केतना मनोहर होला,
वीर-भाव के जगावेला।

इस प्रकार अष्टांग योग से लेकर जन-जीवन की गरीबी तक और पूर्ण समर्पणपूर्वक प्रभु-भक्ति से लेकर अपनी संस्था के प्रचार-प्रसार तक तथा विविध जागतिक जीवन के जागरूकतापूर्ण आयामों से लेकर समय की परिवर्तनशीलता आदि विषयों को, मनुष्य को वास्तविक अर्थ में कर्तव्यनिष्ठ बनाने वाले सदुपोदेशों को, पूरी निष्ठा के साथ रचनाकार उठाता चलता है। कभी-कभी वह साहित्य से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्यों की ओर इंगित करता है -

'युग आवेला, आ बदलत रहेला,
तदनुसार चले के परेला।
इतिहास ओकर बदानि करेला,
छुटि गइला पर साहित्य भार उठावेला।'

इसी भार को अपनी भोजपुरी काव्य-रचनाओं में आचार्य श्री श्रद्धाननद जी ने उठाया है। उन्होंने 'श्रद्धासुमन' की रचना भक्ति साहित्य के रूप में की है किन्तु मध्यकालीन भक्ति साहित्य से इसमें अन्तर है। इसमें बदले हुए युग की अपेक्षाओं-आकांक्षाओं को देखते हुए मार्ग निर्देशन तथा व्यवस्था दी गयी है । अध्यात्म, धर्म-दर्शन, योग, प्रभु, भक्ति, साधना, शरणागति और सेवा-सत्संग आदि के बीच नये मानव समाज की रचना और समाज के सड़ेगले ढाँचे को बदलने के संकल्प भी इनमें मिलते हैं। इस समाज और युग-सापेक्षता के कारण इनकी उपयोगिता बढ़ जाती है। इस प्रकार लगभग दस हजार पदों की यह नयी विनयपत्रिका भोजपुरी साहित्य की बहुत ही मूल्यवान धरोहर के रूप में प्रतिष्ठित है।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

5 'जुलुम भइले राम' में भोजपुरी युग-चारण का विक्षुब्ध जागरण आह्वान

भोजपुरी भाषा के मौलिक रूप और उसके काव्य-शिल्प की मानक भंगिमा के संदर्भ में जगदीश ओझा 'सुन्दर' का नाम कृतिकारों की शीर्षस्थ पंक्ति में रहेगा । अपने कवि जीवन के आरंभ से ही कवि में सर्वहारा वर्ग की पक्षधरता रही है और वह विकसित होते-होते समसामयिक स्थितियों में विद्रोह-चेतना बन गयी है । विगत चार-पांच दशक से अपने मूल विद्रोही स्वर की अनाहत चोट से समाज और शासन की विसंगतियों की कड़ी परतों और जकड़ी विरोधाभासी स्थितियों को तोड़ने में कवि को जितना भाव-संघर्ष करना पड़ा है वह चिरस्मरणीय है । एक जीवन्त जनपद को जगाने के बहाने उसने सम्पूर्ण देश को जगाया है, एक विशिष्ट भोजपुरी प्रदेश को अन्तरान्दोलित करने के बहाने उसने राष्ट्रीय, प्रगतिशील और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के प्रश्न पर बुद्धिजीवियों को झकझोरने में कोई कोर-कसर उठा नहीं रखी है । वास्तव में 'उत्तिष्ठत् जाग्रत' समस्या हमारे देश में सनातन समस्या है । बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में विविध सुधारवादी आन्दोलन से लेकर साहित्य-साधकों में भी मूलतः पुनरूत्थान अथवा पुनर्जागरण की मुद्रा ही प्रमुख थी । छाया युग में हिमालय के बहाने 'दिनकर' ने देश को जगाया । मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद और पंत आदि ने विविध स्तर पर जगाया। भगत सिंह, गांधी और अरविन्द आदि ने अपने ढंग से इस देश को जगाया । परन्तु लगता है, नींद का क्रम अभी टूटा नहीं है । इस दृष्टि से वरेण्यं और अभिनन्दनीय हैं वे कवि जिनके भीतर देश की जड़ता तोड़ने की चुनौतियां निरन्तर कसमसाती चली आयी हैं और मोहभंग की व्यापक स्थितियों के होते या कुंठा, निराशा और संत्रास आदि की स्थितियों का दबाव होते हुए भी जागरण की प्रेरणा के परिप्रेक्ष्य में जिन्होंने आस्थावादी डाल को नहीं छोड़ा । कवि सुन्दर में ऐसी ही अद्भुत जन-आस्था है और यह आस्था की स्थिर जमीन नहीं होती तो आज की स्थितियों में उसके कंठ से अंकुठ जागरण के नये गीत नहीं फूटते । निश्चित रूप से जागरण गीतों के पीछे एकनिष्ठ धधकता विद्रोही स्वर है और कुल मिलाकर विषम स्थितियों में कंठावरोध न होना एक बहुत भारी उपलब्धि है ।

यह देखकर प्रसन्नता होती है कि कवि 'सुन्दर जी' के ताजे कविता संग्रह 'जुलुम भइले राम' में पुरानी आग बुझी नहीं है, बल्कि नये प्रश्नों की आहुति पाकर और अधिक लहक उठी है । लोकचेतना को सीधे-सीधे स्पर्श करने के लिए इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देश की सर्वसाधारण जनता से सीधे संवाद की आवश्यकता कवि को अनुभूत हुई है । **'होस कर बुद्धू अब हो गइल सबेरा'** में ऐसा ही सीधा संवाद है । एक सुदीर्घ से काव्य सृजन में अनवरत रत रहने के कारण कवि की भाषा-शैली मंज गयी है और उसमें भी मर्मस्पर्शी सहजता आ गयी है । भोजपुरी की भाषागत सहजता ही नहीं, भावभंगिमा और व्यंग्य की सहजता के कारण सुन्दर जी की नयी रचनायें गंभीर हो गयी हैं । **'के के चली सुराज बोलावे'** जैसे गीतों में और उसकी पंक्तियों में कितने-कितने भावों का संगम होता है, सोचकर अद्भुत तृप्ति होती है । पीड़ा, व्यथा, आक्रोश, चुनौती, छटपटाहट, ललकार, उपालम्भ और व्यंग्य आदि की तरंगों से मानस में जो अभिव्यक्ति-चित्र बनता है वह बहुत प्रभावशाली होता है । काव्य शास्त्री ऐसे ही स्थलों के लिए भाव सौकर्य जैसे गुण निर्धारित करते हैं । गहरी निष्ठा और विचारों-भावों की परिपक्वता के बिना ऐसी दो टूक अभिव्यक्तियां संभव नहीं । शब्दों में शक्ति तभी संक्रमित होती है जब वह पहले कवि के भीतर उसके व्यक्तित्व का सुदृढ़ अंग बनकर निहित होती है । इस तरह की ओजस्वी रचनाओं का संसार **'चली ना घुरहुआ त देश नाहीं चली हो'** जैसी पंक्तियों में देखा जा सकता है ।

कवि सुन्दर जी की नये काव्य संग्रह की रचनाओं को देखते हुए उन्हें भोजपुरी का युगचारण कहा जा सकता है । यह उबलता-उफनता युगचारण बदलाव के बिन्दुओं को कला की कलम से प्रतिष्ठित करता कभी शासन के सामने होता है तो कभी जनता के । वह जन-समाज के सामने अपने को बेलाग ईमानदारी के साथ खोलता जाता है । समाजवाद, मंहगाई, नेता, खेत, खलिहान; जवान; जवानी, सैनिक, शहीद, गुंडाशाही, किसान और मजदूर जैसे बिन्दुओं को बिना स्वर-स्तर को कुंठित किये बारम्बार छूने का कुछ अर्थ होता है और यही अर्थ प्रस्तुत कृति **'जुलुम भइले राम'** की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति बन ध्यानाकर्षक बन जाता है । अन्तर्मुखी वैयक्तिक पीड़ा अथवा जटिल अहं-विस्फोट जैसी देशकाल निरपेक्ष अभिव्यक्तियां बहुत खोजने पर भी संग्रह में नहीं मिलेंगी । अपनी सम्पूर्ण पहचान और पीड़ा को देश और आहत जनता की पहचान और पीड़ा में ढालकर सचमुच सुन्दर जी का कवि बहुत अभिनन्दनीय हो उठा है ।

अपने ही देश में विदेशी बने आज के परम्पराच्युत भारतीय काव्य के बीच कम से कम एक भोजपुरी का कवि तो बचा है जो पूछ सकता है, **'कहां धरम बा, कहां करम बा, कवनी ओर ईमान बा ? ई कुल्हि नइखे त बतलावऽ कहंवा हिन्दुस्तान बा ?'**

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6 कवि प्रभुनाथ सिंह का भोजपुरी काव्य-संसार

कोई व्यक्ति जो एक साथ अध्यापन, प्रशासन, नेतृत्व, साहित्यिक संगठन, चित्रपटकला, अर्थशास्त्र और सक्रिय राजनीति के अनुभवों से जुड़ा होकर यदि सहृदय कवि भी है तथा सरस रचनाएँ करता है तो निश्चित रूप से उसका कवि-कर्म ध्यानाकर्षक, मूल्यवान और विस्तृत जीवनानुभवों से सम्पृक्त है। इस दृष्टि से कवि प्रभुनाथ सिंह की नयी-पुरानी इक्कीस भोजपुरी रचनाओं का संकलन **'इ हमार गीत'** का प्रकाशन एक आकर्षण बन गया है। अति जटिल और घोर अभावुक राजनीतिकर्म की आपाधापी के भीतर किस प्रकार एक संवेदनशील कवि का कोना सुरक्षित रहा तथा कैसे समय-समय पर उसके दबाव से प्राणवान कविताओं का सोता फूटता रहा यह अत्यंत कुतूहल का विषय है। प्रभुनाथ सिंह ने कविताओं की रचना अपने छात्र-जीवन में ही प्रारम्भ कर दी थी। पहली कविता जिसका शीर्षक था 'लहर लहर पुरवइया' राजेन्द्र महाविद्यालय, छपरा की पत्रिका 'राका' में सन् 1958 ई० में प्रकाशित हुई थी। उनके काव्य-संग्रह में यही कविता प्रथम स्थान पर दीख रही है।

प्राय: देखने में आता है कि कवि-गण अपनी फुटकल रचनाओं के संकलन में प्रथम स्थान पर अपनी सर्वोत्तम रचनाओं को स्थान देते हैं अथवा कम-से-कम उस रचना को रखते हैं जिसमें उनके श्रेष्ठ सृजन का औसत रूप निखरा हुआ होता है। इस दृष्टि से यह एक ध्यानाकर्षक स्थिति हो जाती है कि प्रभुनाथ जी ढाई दशक पूर्व रचित अपनी पहली रचना को अत्यंत विश्वासपूर्वक अपने संकलन के देहरी-द्वार पर प्रतिष्ठित कर रहे हैं। जिस समय इस कविता का सृजन हुआ वह भोजपुरी काव्य का अरुणोदय काल था और क्षितिज पर मनोरंजन बाबू चमक रहे थे। उस समय भोजपुरी कविता की वह स्थिति नहीं थी जो आज है। उस प्रारंभिक लहर में ही एक प्रातिभ छात्र कवि की कलम से 'लहर-लहर पुरवइया' जैसी फड़कती हुई प्राणवान रचना का उछल आना उसकी अन्तर्निहित उस काव्य ऊर्जा का चिन्ह रहा जो अपनी संपूर्णता में विकसित हुआ होता तो भोजपुरी काव्य साहित्य की समृद्धि में गुणात्मक बढ़ोतरी हो गई होती किन्तु कुछ संयोग ऐसा हुआ कि भोजपुरी के एक ऊपर उठते हुए भविष्णु कवि को सक्रिय भारतीय राजनीति ने लोक लिया। इस सक्रिय राजनीति का आज जो स्वरूप सामने आया है उसे देखते हुए निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि साहित्यिक जीवन के लिए वह शुभावह नहीं होती है। संभावना यह होती है कि उसके चंगुल में फँसा व्यक्ति और चाहे जो हो जाय सहृदय कवि नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बना रह सकता है । विपरीत इस तथ्य के जब यह देखते हैं कि राजनीतिक जीवन की सफलता के साथ-साथ प्रभुनाथ सिंह का पुराना कवि भी पूर्ण अनाहत और विकसित रूप में विद्यमान है तथा उसके प्रभाव से ऐसा भी लगता है कि यह व्यक्ति राजनीति से अधिक भोजपुरी भाषा और साहित्य के लिए समर्पित है तो इसमें सन्देह नहीं रह जाता कि साहित्यिक मूल का एक व्यक्ति भटककर राजनीति में चला तो गया लेकिन भटका नहीं । आज भी देखते हैं कि यह कर्त्तव्यनिष्ठ और लोकप्रिय जननेता अपनी जनता के पास पहुँचने के लिए साहित्यिक माध्यमों को चुनता है । छपरा जनपद के ग्रामांचलों में अभूतपूर्व साहित्यिक जागृति इसका प्रमाण है ।

राजनीतिकर्मी और सर्जक साहित्यकार के विरोधाभास के साथ एक और विरोधाभास, कवि और अर्थशास्त्री का विरोध प्रभुनाथ सिंह के संदर्भ में दृष्टिगोचर होता है । उनका काव्य संकलन तो अब प्रकाशित हुआ है किन्तु अंग्रेजी भाषा में लिखी अर्थशास्त्र विषयक उनकी अनेक मूल्यवान और प्रामाणिक पुस्तकें पर्याप्त चर्चित हो चुकी हैं । समय-समय पर विदेश में भी वे अर्थशास्त्र विषयक भाषण के लिए आमंत्रित किये जाते हैं । तत्संबंधी अपने गंभीर अध्ययन और व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग वे अपनी प्रशासन सेवा को चुस्त बनाने में करते हैं । बहुत कठिन लगता है कि कैसे अपने उस शुष्क अर्थशास्त्री व्यक्तित्व को अपनी कविताओं में वे पूर्णतः विसर्जित कर पाते हैं । निस्सन्देह यह कठिन कार्य उनकी कविता की रस और भावभरी दुनिया में बहुत सहज ढंग से हो जाता है । वहाँ जीवन का नपा-तुला, ठोस, लेखा-जोखा पूर्ण और निष्कर्षात्मक रूप कहीं नहीं होता है और न ही होती है पड़ताल सापेक्ष जीवन की सूखी जमीन । वहाँ एक दूसरा ही सरस फैलाववाला भावाकुल और संवेदनशील संसार होता है । वहाँ तरल व्यक्तित्व के रंग में धुले, खट्टे-मीठे जीवनानुभव की ऐसी मस्ती है जो अर्थशास्त्री की भाँति बचाती नहीं है, बाँटती है, बेहिसाब !

तो, हमारा विवेच्य कवि क्या बाँटता है ? पुलक अथवा पीड़ा ? बेशक, वह हमें पुलकित अधिक करता है । उसके काव्य में उतरी बहुआयामी पीड़ा भी रसरूप में भीतर पचकर पुलक बन जाती है । एक तो भोजपुरी भाषा की सहज मिठास दूसरे हमारे सांस्कृतिक जातीय जीवन के मिथक, मुहावरों और प्रत्ययों को लेकर वह एक ऐसे वातावरण का सृजन अपनी कविताओं में कर देता है कि पाठक अथवा श्रोता अभिभूत हो जाता है । प्रभुनाथ सिंह की कविता की इस जादुई दुनिया में ठूँठी पकड़िया, तुलसी का चौरा, जटा बढ़ाये भस्म रमाये योगी रूप में स्वप्न में आने वाला प्रियतम, नाना प्रकार के शकुन-अपशकुन, अँगना में उतरता कागा, विरहिन का फड़कता बायाँ अंग, गंगा मइया की गोद, बाबा का पोखरा और 'के घाट बन्हावल' की प्रश्नाकुलता, बचपन की यादें, सुपली-मउनिया के खेल, चुनरी, पाग और लहँगा का रागबोध,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पनघटू गगरी, नदिया के पार का बालम, परदेश जाते प्रिय के संदर्भ और जेवना ना जेइबे का ठनगन करती गोरिया आदि चित्र जो सहज सौन्दर्याभूति की जातीय अनुभूति बन कर आते हैं, एक सम्पूर्ण अनुरंजनकारी वातावरण बन जाते हैं । किन्तु ऐसा नहीं है कि कवि में जो कुछ भी है बीता बोध और भोली भावुकता का अनागर संदर्भ है । वास्तव में कवि की युगीन जीवन की आधुनिक संवेदना, समस्याशील सोच भी कम नहीं है । जय बँगला के उदय से लेकर हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्ध तक, मुजीब, गाँधी और रामराज से लेकर समाजवाद तक तथा ग्राम जीवन की व्यापक गिरावट से लेकर गाँव की जमीन पर खड़ी इन्क्रोचमेंट की भीषण समस्या तक की तहों में अत्यन्त दिलचस्प ढंग से प्रभुनाथ जी सैर करा देते हैं । जब वे युगीन होते हैं तो राजनीति के दबाव से कहीं से भुलकर अपने को प्रचारक नहीं होने देते हैं । सर्वत्र गंभीरता और संयम की स्थिति बनी रहती है । यही कारण है कि उन्होंने कवितायें कम लिखीं हैं और जो भी लिखी हैं बाहर की किसी माँग पर नहीं बल्कि भीतर की अदम्य प्रेरणावश !

कवि की यह प्रेरणा ऐसा भी नहीं कि सीमित भाव-विभाव भूमियों का स्पर्श कर रह जाती है । इस छोटे से कविता संग्रह में शृंगार रस के संयोग-वियोग प्रसंग, लोकगीतों की रसगंधवता, राष्ट्रीय भावना, नखशिख, गाँधी-चिन्तन, रूपसौन्दर्य चित्रण, व्यंग्य और गजल आदि के साथ पीड़ा के विविधरूप, मानवीय पीड़ा, वैयक्तिक पीड़ा और गाँव के जन की पीड़ा, नाना रूप में उत्कीर्ण प्राकृतिक सौन्दर्य के चित्र संगीत की विविध लय भंगिमा में प्रस्तुत मिलते हैं । इनमें से एक प्रसंग की चर्चा कुछ विस्तार की माँग कर रही है । इन कविताओं के बीच से गुजरते हुए कोई भी सहृदय पाठक यह अनुभव कर सकता है कि कवि यद्यपि पीड़ा और पुलक के धूपछाँही ताने-बाने बुनावट में समवेत भाव से डालता चलता है तथापि उसका केन्द्रीय व्यक्तित्व पीड़ा से ही सम्पृक्त है और इसके ही विविध रूप उसके काव्य को सशक्त बनाते हैं अथवा यों कहें कि वे ही कवि को कवि बनाते हैं । कवि की पहली कविता 'लहर-लहर पुरवइया' में भी **'बिन गरजे बरसल ई अँखिया'** की स्थिति में **'बीच भँवर में छोड़ अकेला डूबल कहीं खेवइया'** का एक संदर्भ है । **'भोर हो गइल'** शीर्षक कविता में पीड़ा का एक बहुत करुण बिम्ब है । यह पीड़ा अन्तर्मन की पीड़ा है जो आँसुओं में अभिव्यक्त हो रही है लेकिन इस अभिव्यक्ति में जो एक प्राकृतिक स्थिति का बिम्ब माध्यम के रूप में प्रयुक्त हुआ है उसकी विशालता पीड़ा को असाध ारण बना देती है । कवि का कथन है -

'सुसुकत छछनत मन के
बोधि सकल ना केहू
हरिअर दूबि के फुलंगी पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अटकल ओस के बून,
लोर छितरा गइल।' – **(भोर हो गइल)**

कवि की 'भिखइन' शीर्षक कविता पढ़कर निराला की पंक्ति, **'वह आता दो टूक कलेजे को करता'**, के साथ पूरी कविता याद आ जाती है। किन्तु प्रभुनाथ सिंह की 'भिखइन' की पीड़ा की द्रावकता कुछ और तरह की है। रेखाचित्र के साथ यहाँ निराशा की स्थितियों की घनी बुनावट है। कविता की चार पंक्तियाँ इस संदर्भ में द्रष्टव्य हैं ;

'काँपे भीख के दउरिया
घूमों घर-घर दुअरिया
सूनीं काटल-काटल गरिया,
ना बाटे आसरा'

इस प्रकार वैयक्तिक पीड़ा, सामाजिक पीड़ा के साथ ही **'गाँधीजी के इयाद'** शीर्षक रचना में कवि के भीतर राष्ट्रीय पीड़ा का उत्कर्ष दिखायी पड़ता है। इन कविताओं के अतिरिक्त **'एहवात'**, **'बैरी भइले बँसिया के तान रे'**, **'नइया ले आओ किनार'**, **'पीच सड़क पर'** और **'फागुनी बेअरिया'** शीर्षक कविताओं की केन्द्रवर्ती संवेदना भी पीड़ा ही है। इस संग्रह में एक गजल भी है। कहते हैं कि गजल शब्द गजाल से बना है जिसका अर्थ होता है हिरनी। बधिक जब हिरनी के गले पर छुरी चलाने लगता है तो उसकी आँखों में जो करुण कातर तरलता की पीड़ा होती है अथवा जो अवश यन्त्रणा की मार्मिक कचोट झिलमिलाती है वही पीड़ा कसक और कचोट कवि जब कविता में ढाल देता है तो वह कविता गजल बन जाती है। इस प्रकार गजल एक छन्द होने के साथ-साथ पीड़ा का एक अर्थ है। कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रभुनाथ सिंह का गजल भी इस पीड़ा से खाली नहीं है। पीड़ा का एक रूप द्रष्टव्य है –

'छिपके चुपके से पी-पी के आँसू
प्यास दिल के बुझावल करीले
केहू तड़पे ना हालत पै मोरा
चोट खा-खा हँसावल करीले'।

प्रभुनाथ सिंह की काव्य रचना प्रक्रिया में सबसे अधिक सहायक संगीत तत्व सिद्ध हो रहा है। यह संगीत एक ओर भोजपुरी भाषा और साहित्य की प्रकृति और वातावरण के साथ उसकी मौलिक संगीत से जुड़ा है, दूसरी ओर लोकधुनों से अनुप्राणित लोकसंगीत से जुड़ा है तथा तीसरी ओर उसमें आधुनिक स्वच्छन्द संगीत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और चौथी ओर प्रयोगधर्मी काव्य का संगीत दृष्टिगोचर होता है । कवि ने किसी लय अथवा धुन को दुहराया नहीं है । मँजी हुई मिठास संयुक्त भाषा पर थिरकती भावस्वर लहरियों में मुक्त और खुले मन का भरपूर उभार, आरोह–अवरोह का उचित निर्वाह, ध्वन्यात्मकता और चित्रात्मकता का संयोजन तथा गीत के वातावरण के अनुरूप लचीले शब्दों की पकड़ कवि की विशेषता है । संगीत की ये विशेषताएँ कवि कीं पहली कविता 'सिहिरि–सिहिरी झींसी का नीचे', 'लहर–लहर पुरवइया' में देखी जा सकती हैं । 'भिखइन' में जो करुण संगीत है उसमें **'नाहीं बाटे आसरा'** के एक छोटे से टुकड़े की एक चोट का कमाल है । संग्रह में एक सोहर की लोकधुन तो है ही **'काहे के चुनरी रंगवलू'** में चहका के ढंग का एक प्रयोग भी है । इसी प्रकार **'केकर पोखरा खनावल'** में केवल लोकसंगीत ही नहीं सांस्कृतिक लोकजीवन का एक विशेष भावचित्र भी है । वास्तव में संगीत की इस पुष्ट स्थिति के कारण ही इस छोटे से काव्य संग्रह का महत्व बढ़ जाता है । यह भी कम संयम की बात नहीं है कि चित्रपट कला से सीधे जुड़े होने पर भी इस संकलन में कवि ने सिने संगीत के प्रभाव को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया है ।

प्रभुनाथ सिंह की भोजपुरी कविताओं में आध्यात्मिक रंगों का अभाव है और यह बात सम्भवत: उसके पक्ष में पड़ती है । ये रंग हिन्दी काव्य में सस्ते होने के साथ ही अब घिसकर प्रभावहीन जैसे लगने लगे हैं । यदि ज्ञान–भक्ति की तन्मयता नहीं है तो खोखली आध्यात्मिक अभिव्यक्तियाँ किसलिए ! युगजीवन से जुड़कर अपने को सहज ढंग से अभिव्यक्त करना ही आज के किसी कवि का सच्चा अध्यात्म है । भोजपुरी साहित्य की नींव भक्ति–काल की गहराई में स्थित है । सिद्धकवि, सरहपा, कण्हपा, से लेकर नाथ कवि, गोरखनाथ तक में, संतकवि कबीरदास, धर्मदास, पलटूदास से लेकर बावरी सम्प्रदाय के गुलाब साहब और भीखा साहब तक में भोजपुरी पदों का प्रयोग अथवा काव्यसृजन मिलता है । बुलाकी दास के घाँटो भोजपुरी में ही हैं । इसी प्रकार बाबा कीनाराम की कविताएँ भी इसी भाषा में हैं । इस प्रकार निर्गुण, सगुण आदि सभी सम्प्रदाय के पूर्वी उत्तर प्रदेश के कवियों में स्वाभाविक है कि भोजपुरी काव्य में आध्यात्मिक रंग घुल–मिलकर अपना प्रभाव दिखायें किन्तु 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से भोजपुरी कविता का जो स्वतन्त्र अस्तित्व सामने आया है उसमें ऐसा लगता है कि शनैः शनैः आध्यात्मिक रंगों का स्थान अन्यान्य रंगों ने लेना आरम्भ कर दिया है । भिखारी ठाकुर में यह रंग भरपूर है किन्तु रघुवीर नारायण की कविता **'बटोहिया'** में तथा प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद की कविता **'फिरंगिया'** में राष्ट्रीय भावों के उत्कर्ष ने भोजपुरी कविता के विस्तृत होते भाव–क्षितिज का उद्घाटन किया है । सन् 1950 के बाद काव्य सृजन करने वालों में रामनाथ पाठक 'प्रणयी',

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'रामविचार पाण्डेय', जगदीश ओझा 'सुन्दर', 'अनिरूद्ध', 'राहगीर', 'उमाकान्त वर्मा', 'भोलानाथ गहमरी' और गणेशदत्त किरण आदि कवियों में जो भोजपुरी भाषा और साहित्य का मौलिक गीत-संगीत तंत्व जो जिये जानेवाले जीवन को आमने सामने रखकर उसकी सम्पूर्ण आन्तरिक वाह्य संवेदना के साथ निखरता है उसी की कड़ी में प्रभुनाथ सिंह का यह काव्य-संग्रह उगकर सामने आया है।

कुछ बातें और संक्षेप में। इस कृति के शिल्प के विषय में कही जानी शेष प्रतीत होती हैं। संगीत, चित्र, ध्वनि, लोकगीत और लौकिक-जीवन के मिथकों और मुहावरों के साथ कुछ आधुनिकतम प्रयोग चित्र भी इस काव्य संग्रह में बिखरे हुए हैं। **'अमावस के रात के करिया कुच-कुच लट फहरा गइल'** में जैसा फड़कता हुआ स्पष्ट बिंब चित्र है वैसा बिंब 'भोर' शीर्षक समूची कविता में है। 'भिखइन' शीर्षक कविता में जो एक प्रयोग कवि ने किया है ; **'काँपे भीख के दउरिया'** उसमें एक अंग्रजी अलंकार का प्रयोग हुआ है जिसे 'ट्रान्सफर्ड एपीथेट' कहते हैं। हिन्दी में इसे विशेषण-विपर्यय के नाम से जानते हैं जो सुमित्रानन्दन पन्त की कविताओं में अधिकांश रूप में मिलता है। एक कविता जिसका शीर्षक **'लुगरी ओढ़ले सगरे गाँव'** है में लगभग डेढ़ दर्जन मुहावरों का स्वाभाविक रूप से प्रयोग करके कवि ने अतिरिक्त अनुरंजनकारी स्थिति उत्पन्न कर दी है। मुहावरों के प्रयोग का ऐसा ही चमत्कार **'बुधना कइसे लड़ी'** शीर्षक कविता में दृष्टिगोचर होता है। **'लाल गवरइया पीयर लागे माटी'** में जैसी प्रतीकात्मकता है तथा जिस प्रकार सूरज को गौरैया और उसकी किरणों को मिट्टी पर चढ़ते पीले रंग के रूप में चित्रांकित किया गया है वह कवि की मौलिक सूझ का उदाहरण है। शिल्प की ऐसी अनेकानेक विशेषताओं के कारण ही प्रभुनाथ सिंह की कविताएँ प्रौढ़ साहित्यिक स्वाद उत्पन्न करती हैं। उनमें भोजपुरी काव्य की गंभीरता और मौलिकता के साथ उसकी अपनी प्रकृति अपने सम्पूर्ण रसगंधों के साथ विद्यमान है।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

7 'मन' : सघन आध्यात्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति

'मन' नवोदित कवयित्री **दीप्ति** की चकितकारी सफलताओं को रेखांकित करती हुई भोजपुरी काव्य साहित्य की मूल्यवान उपलब्धि है। अनुभूतियों की सघनता और अभिव्यक्ति की प्रौढ़ता को देखते कवयित्री की बड़े प्रभावों वाली इस छोटी कृति को देखकर भोजपुरी के साहित्यप्रेमी उसके उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त हो सकेंगे। मन जैसे एक दार्शनिक, आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक विषय को एक दर्जन बड़ी-छोटी कविताओं में उठाना, उसे सावकाश धैर्य के साथ सूक्ष्मता पूर्वक चित्रांकित करना, चिन्तन क्षेत्र के रूखे-सूखे विषय को उठा कर उसे सहज और प्रसन्न प्रवाहपूर्ण रसात्मक रूप में प्रस्तुत करना और इस प्रकार भोजपुरी काव्य साहित्य के लिए सर्वथा नयी जमीन को खोजना तथा नये अनुरंजनकारी क्षितिज का उद्घाटन करना सरल बात नहीं है।

इन पंक्तियों के लेखक को प्रस्तुत काव्य पुस्तक **'मन'** को देखकर प्रो० राजाराम शास्त्री की कृति जिसका नाम भी **'मन'** है स्मरण आ जाती है। सम्भवत: हिन्दी में वह इस विषय की पहली पुस्तक है। उस दर्शन, चिन्तन, विश्लेषण और अन्वेषण की वैज्ञानिक ज्ञान-गूढ़ता से पूर्ण गंभीर पुस्तक को पढ़कर मन की जटिलंता की ओर ध्यान गया। इसके बाद इस विषय पर पुराने आचार्यों के साथ सम्पूर्णानन्द, भगवानदास, अरविन्द और राधाकृष्णन आदि से लेकर कृष्णमूर्ति और आचार्य रजनीश के लेख पढ़ने को मिले। सबको पढ़कर ऐसा लगा कि मन सबसे बड़ा रहस्य है और इसकी गूढ़ता-जटिलता की थाह दुष्कर है। इसका चिन्तन सबसे बड़ा रहस्यवादी चिन्तन है। मोटे रूप में कहते हैं कि काव्य में ईश्वर का वर्णन रहस्यवाद है। यहाँ यह बात जान लेने योग्य है कि, 'सत्ता रूप में ईश्वर तो है' और वह रहस्यवाद का विषय हो जाता है और इधर मन है जिसकी सत्ता **'है ही नहीं'** और तब वह कितने संश्लिष्ट रूप में रहस्यावेष्टित है. ? ऐसे मायावी मन को काव्य का विषय बनाना वास्तव में एक ओर कठिन है और दूसरी ओर कुतूहलवर्धक है। काव्य की एक विशेषता इस रूप में होती भी है कि उसमें चिन्तन और ज्ञान की अति दुरुह और गूढ़ बातें चित्ताकर्षक और अनुरंजनकारी 'कान्ता सम्मित' निर्देश-उपदेश के रूप में प्रस्तुत होकर सहज बोधगम्य बन जाती हैं।

कवयित्री दीप्ति की कृति **मन** में चिन्तनानुभूति को रसानुभूति में ढालने की कुछ ऐसी ही प्रक्रिया दृष्टिगोचर होती है। इसमें सारा कमाल कल्पना-वैभव का है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसके प्रयोग से प्रत्येक कविता में उभरते चित्र-बिम्बों में कथा प्रवाह जैसा स्वाद मिलता है। उपमा, रूपक और प्रतीक आदि के सहज अलंकृत प्रयोगों में जो चित्र-बिम्ब उभरते हैं और जिस रूप में उनमें मन को छूने वाले अप्रस्तुतों की बौछार होती चलती है वह सधे हुए शिल्प-प्रयोग का उदाहरण है जो पढ़ने वाले को ऊबने नहीं देता है। ये अप्रस्तुत जीवन, जगत, काव्य, इतिहास, पुराण, भूगोल, लोककथा, गाँव, शहर, देश, परम्परा, आधुनिकता, देवता-देवी, नदी-पहाड़ और अपनी सारी-सारी सांस्कृतिक सम्पदा के भीतर से चुने गये हैं।

संकलन की पहली कविता **'मन के नजदीक से निहारल'** में मरघट में टँगा पीपल-घट, लासा से सटा जाला, नट, खूँटी पर टँगा कैलेंडर, गंगाजल, अबोध लड़की, भोर की किरण, दर्पण, काँटा, बरसात का कन्दोर पानी, दूब पर टँगी ओस बूँद, इन्द्रधनुष, आकाश, नदी की धार, इच्छा की मछली, पूजा के फूल, रेंगनी के काँटा, धूल, शैतान और भगवान, ये बीस अप्रस्तुत आये हैं और यही स्थिति कुछ और संगतियों के साथ प्रत्येक कविता में है। ऐसे रूपवादी प्रयोगों से अन्तरमुख दर्शन-चिन्तन प्रधान कविता चित्ताकर्षक ही होकर पठनीयता के गुण से सम्पन्न हो जाती है। इस प्रकार भोजपुरी की नयी ज़मीन पर उमड़ जैसी आयी इस कविता की छोटी-सी क्यारी की फसल को देखकर बहुत प्रसन्नता होती है।

इतने पर भी इस वैचारिक काव्य को देखकर यह कहना उचित प्रतीत होता है कि यह काव्यगत सौन्दर्यवाद के साम्राज्य के प्रति एक मैत्रीपूर्ण बगावत है। इस संकलन की कविताओं में जो कुछ भी रसात्मकता है वह वस्तुगत नहीं है, वह शिल्पगत है और यह शिल्प-प्रयोग संगति और संगठन नामक गुणों से सम्पन्न है। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि सौन्दर्यवाद के विरोधी छोर जनवाद को ये कवितायें स्पर्श करती हैं। अंतिम कविता **'टुकी भर उजास'** में छानी-छप्पर वाले शोषित सर्वहारा गाँव का चित्रण अवश्य है पर यह राजनैतिक अथवा फैशनेबुल 'जनवाद' नहीं है। कविता में नित्य की भाँति भटक गया प्रकाश का टुकड़ा कहीं से न कहीं से अभी आस्था से जुड़ा है। वैसे प्रस्तुत संकलन में गाँव के खंडित मन के इर्द-गिर्द अपनी अनुभूतियों का जाल बुनती कवयित्री उसका एक प्रातः कालीन 'दर्शन' प्रस्तुत करती है तो उस सजीव चित्र-बिम्ब को सुहावना कहने का साहस हम नहीं कर सकते हैं –

'ठेहुना में मूँड़ी अटकवले
गुमसुम बहुत उदास
सूनापन के लोर आँखि में
उखड़ल-उखड़ल साँस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पपनी पर सपना ना झलके
ना लोरन के ठाँव।
भिनुसहरे लउकल हमार गाँव।' (पृष्ठ - 46)

उक्त पंक्तियों वाली '**नवगीत**' शीर्षक कविता में 'बेचारे' गाँव को देखकर और उसके मनहूस, हारे-थके और खंडित मन का सहभोक्ता बनकर दीप्ति का जो उदास कवि-रूप दिखायी पड़ता है वह शेष अन्य कविताओं में नहीं है। वह सर्वत्र अति प्रसन्न और उल्लसित मुद्रा में मन के चतुर्दिक भावमयी कल्पनाओं को बुनावट डालती और विचारोत्तेजक सम्वेदओं को पाठकों तक पहुँचाती चलती दृष्टिगोचर होती है। आस्थावाद और परम्परागत नैतिक मूल्यपरकता उसे अपने भोजपुरी के सिद्ध रचनाकार माता-पिता से वंश परम्परागत रूप में मिली है और उसने इनको सार्थक अभिव्यक्तियाँ दी हैं।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

8 'हृदयेश' जी की 'भोजपुरी सतसई'

भोजपुरी साहित्य के इतिहास की जड़ें तो कई सौ वर्ष पीछे की गहराई में हैं परन्तु उसके आधुनिक लिखित साहित्य का इतिहास लगभग एक सौ वर्षों का है। इस अवधि में इस लोक भाषा ने द्रुत गति से अपने विकास के विविध चरणों को पूर्ण कर भाषा की गरिमा प्राप्त कर ली है। इसमें विविध विधाओं की लगभग चार-पाँच सौ स्तरीय पुस्तकों का सृजन हो चुका है। सबसे अधिक संख्या काव्य ग्रन्थों की है। महाकाव्य, खण्ड काव्य, गीत काव्य, नयी कविता और नवगीत से लेकर विविध मुक्तक काव्य, नई पुरानी विधाओं की रचनायें इस भाषा को समृद्ध बना रही हैं। जो भी न्यूनतायें हैं वे पूर्ण होती जा रही हैं। एक ऐसी ही पूर्ति का ऐतिहासिक कार्य **'भोजपुरी सतसई'** लिखकर **श्री कृष्ण राय 'हृदयेश'** ने किया है।

इस सतसई में विशुद्ध मुक्तक के रूप में 700 दोहों के ताजे भोजपुरी गुलदस्ते हैं। उनके अतिरिक्त आरंभ में पाँच दोहों की प्रस्तावना और अन्त में बारह दोहों का उपसंहार है। प्रस्तावना के पहले दोहे में हृदयेश जी लिखते हैं :-

"बोली बानी के कबों, हम ना रहलीं मेंठ।
हम जानी लाँ भोजपुरी, बबुआ ! बोली ठेंठ ॥

आश्चर्य है कि खड़ी बोली के सिद्ध काव्य-स्रष्टा और हिन्दी में महाकाव्य, खण्ड काव्य, गीत काव्य और अन्य भाषाओं के काव्यों के भावानुवाद आदि के रूप में लगभग एक दर्जन ग्रन्थों के प्रणेता की प्रथम भोजपुरी काव्य कृति होने पर भी 'हृदयेश' जी की सतसई प्रौढ़ता की चोटियों को छूती हुई दृष्टिगोचर हो रही है। इसकी सहज भाषा तथा सूक्ष्म भाव संवेदनाओं की मार्मिक पकड़ से युक्त शिल्प का परिचय दोहों की पंक्ति-पंक्ति से पाठकों को अनायास मिलता चलता है। प्रसाद गुण के इस चमत्कार के कारण इन भाषा बहता नीर का अवगाहन-आस्वाद क्षणों की उपलब्धि बन जाता है।

'भोजपुरी सतसई' के कवि को वर्णन वृत्ति से परहेज है। उसके हर दोहे में भाव अथवा चिन्तन स्वर की या तो व्यंजना है या फिर युगीन विसंगतियों अथवा समकालीन समाज के अन्तरविरोधों को लक्ष्य कर व्यंग्य है। ये व्यंग्य बहुत चुस्त, तीखे, सटीक, किन्तु साफ-सुथरे हैं। जैसे -

मंदिर पर मस्जिद बनी, जे के बा मंजूर।
ओके अब इक्कीसवीं, सदी न तनिको दूर ॥ (168)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनिगी में अइसन कबों, देखली बाढ़ न भाय, ।
सुखला सावन से इहे, कहलसि भादो जाय ॥ (255)

वास्तव में व्यंग्य, बक्रोक्ति, चमत्कार और अनुरंजन ही इस सतसई के प्रमुख रचनात्मक आयाम हैं जो इसकी रचनाओं को स्वचछन्द मुक्तक बनाते हैं । आधुनिक काल के मुक्तकों से यह आशा प्रायः नहीं की जा सकती कि वे रीति, मुक्ति, प्रेम, नीति या वीर आदि किसी भेंदक कोटि में अँट जायेंगे । इनकी पहचान स्वच्छन्दता के भीतर ही उभर सकेगी । इसके अन्तर्गत इस कृति में एक ओर अन्तरमुख सघन संवेदनायें हैं तो दूसरी ओर व्यावहारिक ज़ीवन के मुक्त अनुभव भी हैं । जैसे-

बहुते ऊँचा हो गइल, बइसाखी के भाव ।
अब बड़को की जीभ पर, छोट हीत के नाँव ।। (140)
आजो कोठिला पुरनका, बा घर के सनमान ।
बाकिर एमे रहि गइल, चाउर कहाँ पुरान ।। (688)

इस प्रकार ये छोटे-छोटे मुक्तक अपनी अभिव्यक्ति की सहज सम्प्रेषणीयता के बल पर पाठकों के चित्त को चमत्कृत और अनुरंजित कर देने की सहज क्षमता से सम्पन्न हैं । यह स्थिति रस-मग्न होने की स्थिति भले नहीं है परन्तु इसके छींटे से अनुप्राणित-उत्फुल्ल कर देने वाली शक्ति का मूल्य भी कम नहीं है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने महाकवि बिहारी के सन्दर्भ में इसके छींटो को ही प्रतिष्ठित किया है ।

'**हृदयेश**' जी की '**भोजपुरी सतसई** पढ़ते समय आचार्य शुक्ल की शब्दावली कानों में गूँजती रहती है । उन्होंने कहा, मुक्तक में इसके ऐसे छींटे होते हैं कि हृदय-कलिका थोड़ी देर के लिये खिल उठती है । मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है । इसी से सभा-समाजों के लिये अधिक उपयुक्त होता है । उसमें कोई एक रमणीय खण्ड दृश्य इस प्रकार सामने लाया जाता है कि पाठक या श्रोता कुछ क्षणों के लिए मंत्रमुग्ध हो जाता है । इसमें कवि मनोरम वस्तुओं और व्यापारों का एक छोटा सा स्तवक कल्पित कर उसे संक्षिप्त-सशक्त भाषा में प्रदर्शित करता है । मुक्तक की ये विशेषतायें कुछ अतिरिक्त विशेषताओं के साथ '**भोजपुरी सतसई**' में मिलती हैं । इसमें रूपवाद और अलंकारवाद से उत्पन्न किंचित कृत्रिमता अथवा असहजता के स्थान पर कथ्य और शिल्प की प्रसन्न सहजता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है । इसीलिए इसके प्रवाह में चित्त रमता है तो फिर भाषा और लोक भाषा का भेद कहाँ बह जाता है, पता नहीं चलता है ।

'आँधी-अँधड़ झकोर में, बुझल न जेकर आग ।
हम अइसन बरले हवीं, अपना घरे चिराग ।। (96)
छाँह मान के देह दर, ओढ़ले रहली घाम ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घाम घाम अब हो गइल, जरत हवे अब चाम ।। (690)

अभिव्यक्ति की यह सहजता सरस्वती का वरदान है । वाणी के ऐसे वरद पुत्रों की कतार लम्बी है । कबीर, तुलसी, रहीम, बृन्द और गिरधर से लेकर आधुनिक काल में हरिवंश राय बच्चन, सोहनलाल द्विवेदी और भवानी प्रसाद मिश्र आदि की सहजता के बीच से गुजरते हुए लोक भाषा भोजपुरी की काव्य गत सहजता पर जब हम उतरते हैं तो भिखारी ठाकुर, प्रो० मनोरंजन प्रसाद सिंह, मोती बी०ए० और भोलानाथ गहमरी आदि को रेखांकित करना नहीं भूलते हैं । भोजपुरी साहित्य के इतिहास में श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश' का अबतक नामोल्लेख नहीं रहा है । हिन्दी काव्य जगत में वे पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं और कवियों के काव्यगुरु के रूप में प्रख्यात हैं । अति प्रौढ़ावस्था में अपनी सतसई लेकर उनका अचानक भोजपुरी जगत में उतरना एक घटना है और यह भोजपुरी काव्य साहित्य के सौभाग्य का सूचक है । अपनी खड़ी बोली हिन्दी की रचनाओं में जैसी साफ सुथरी परिनिष्ठित किन्तु लचीली भाषा का प्रयोग वे करते हैं वैसी ही विशेषताओं से सम्पन्न मानक रूप में भोजपुरी काव्य-भाषा को भी प्रस्तुत कर वे ध्यान आकर्षित कर रहे हैं ।

'भोजपुरी सतसई' का सबसे महत्वपूर्ण ध्यानाकर्षक पक्ष यह है कि इसमें भोजपुरी काव्य का नागरतेवर पूरे ओज के साथ उभरा है । बहुत दिनों से यह महसूस किया जाता रहा है कि भोजपुरी काव्य से कोरी ग्राम्य मुद्रा विसर्जित होनी चाहिये । अब उसे गाँव की बोली की कविताई से ऊपर उठकर भाषा की व्यापक संवेदनाओं की अभिव्यक्ति क्षमता अर्जित करनी चाहिये । साधन-सम्पन्न भोजपुरी के कुछ कवियों ने इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान किया है । 'हृदयेश' जी का यह नया योगदान उसे और समृद्धि प्रदान करेगा । कवि के दो गाँव सतसई में इस प्रकार उभरे हैं ।

'के ना जानी आप क, ह मशहूर दुआर ।
रोजे इहँवा गाँव क, होला गोत्रोचार ।। (259)
उनका आँगन में लगल, गुलमोहर क पेड़ ।
तहरे सदर दुआर पर, उहें पुरनका रेंड़ ।। (142)

दोहों की व्यंग्य-वक्रोक्ति और चमत्कारी अनुरंजन-वृत्ति को देख कर इन पर उर्दू गजलों का प्रभाव स्पष्ट रूप से लक्षित होता है । सीधे-सादे कम शब्दों में व्यापक भावों की कसावट, सूक्ष्म रूप से इतिवृत्त की स्थिति, और पहली पंक्ति में तेजी से उठी जिज्ञासा और कुतूहल का दूसरी में समाधान वाली स्थिति प्रायः प्रत्येक दोहे में है । तुक के लिये भोजपुरी को कहीं भी मनमाने ढंग से तोड़ा नहीं गया है और उसके सहज प्रवाह को बराबर सुरक्षित रखा गया है । गति, स्तरीयता, मौलिकता, छन्द शुद्धि, चित्र-बिम्बों की स्पष्टता, प्रतीक और अन्योक्तियों में भी सहज बोधगम्यता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा रचनाओं की सघन संवेदनीयता सतसई की अतिरिक्त विशेषतायें हैं। इस '**भोजपुरी सतसई**' में पुरानी पीढ़ी का कवि पुरानी बोली का नया कवि बनकर सामने आया है परन्तु अपनी पुरातनता को न छोड़ने के लिये ही संभवत: कुछ दोहों में अपने नाम का प्रयोग उसने कर दिया है -

'जे के धूँवा-धूप में, रखल तूँ उजियार ।
तोहरे के 'हृदयेश' अब, ऊ हो भइल अन्हार ।। (88)

लेखक ने इस भोजपुरी सतसई नाम को सीधे विषय-वस्तु से जोड़ा है। जैसा कि ऊपर कहा गया है, यह भोजपुरी भाषा में पहला सतसई-ग्रन्थ है। इसकी पुष्टि भोजपुरी के महान इतिहासज्ञ विद्वान पं० गणेश चौबे ने की है। प्रमाणित जानकारी के लिये इस सन्दर्भ में मैंने उन्हें पत्र लिखा था। उन्होंने अपने 19 सितम्बर, 94 को लिखे गये पत्र में उत्तर दिया।

'भोजपुरी' में किसी नये या पुराने कवि की सतसई मुझे न तो देखने को मिली है और न सुनने में आया है। लेकिन पं० **दीप नारायण मिश्र** (केसम कोठी, बीरगंज, नेपाल) की एक पुस्तक है जिसमें 878 दोहे हैं। उस ग्रन्थ में दोहों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ग्रन्थ का नाम है '**दोहा नीति सार**'। कवि ने कहीं भी इसके सतसई होने की चर्चा नहीं की है। पुस्तक सम्वत् 2049 वि० में प्रकाशित हुई।

पं० गणेश चौबे के इस पत्र से एक मात्र दोहे में रचित '**भोजपुरी सतसई**' की ऐतिहासिक प्राथमिकता पर मुहर लग जाती है। इसके साथ ही श्री कृष्ण राय '**हृदयेश**' का एक नाम महत्वपूर्ण होकर प्रथम बार भोजपुरी साहित्य-संसार से जुड़ रहा है। किसी खड़ी बोली हिन्दी के समर्पित सिद्ध महाकवि की अंतिम खेप की रचनाओं में से एक यदि भोजपुरी की कोई मानक कृति निकलती है तो यह भोजपुरी की विजय मुद्रा के साथ उसके व्यापक प्रचार-प्रसार और प्रभाव को व्यंजित करती है।

✪

---

*इधर भोजपुरी में दोहे खूब लिखे गये हैं। **कविता** (त्रयमासिक, पटना), **भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका** (पटना), और **खोंइछा** (आरा) के दोहा-विशेषांक निकले हैं। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन ने '**भोजपुरी सतसई**' नाम से 88 कवियों के 722 दोहों का एक संकलन 2001 में निकाला है। इसी साल हीरा प्रसाद ठाकुर की '**हीरा सतसई**' छपी है। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' के एक हजार दोहों का संकलन 2002 में 'आरोही हजारा' के नाम से छपा है। '**भोजपुरी सतसई**' नाम से ही श्री ब्रजभूषण शर्मा 'मुखियाजी' के सात सौ दोहों का संग्रह 1985-86 में छपकर आया।*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

9 भोजपुरी कथा-साहित्य

सन् 1947 में अपना देश विदेशी दासता की जकड़न से छटपटाकर स्वतंत्र हो गया। स्वतन्त्रता का सर्वाधिक प्रभाव हिन्दी भाषा और साहित्य पर पड़ा। स्वतन्त्रता का सम्पूर्ण हर्षोल्लास और नवोन्मेष मिलकर आंचलिक कथा-साहित्य के रूप में प्रकाशित होने लगा। उपेक्षित अंचलों के जीवन के साथ उपेक्षित भाषाओं के दिन लौट गये। बोलियों के दिन भी लौटे। सर्वाधिक प्रभाव भोजपुरी पर पड़ा। स्वातन्त्र्योत्तर लोकतान्त्रिक प्रभाव इतना गहरा रहा कि कथा-साहित्य में भोजपुरी अपनी अलग और स्वतन्त्र पहचान बनाने के लिए छटपटा उठी। अतिशीघ्र ठीक द्वितीय वर्ष में अर्थात् 1948 में उसका प्रथम कथा-संग्रह प्रकाशित होकर जगमगा गया। लोगों ने देखा, भोजपुरी के हाथों में **'जेहल के सनदि'** था।

एक ओर स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कथा-साहित्य में बुद्धिवादी दार्शनिकता, अहंमूलक मनोवैज्ञानिकता और गैरसाहित्यिक राजनीतिक दबावों की शुष्कता से उसे बचाने के लिए आंचलिकता की प्रवृत्ति का ऐसा विकास हुआ कि लोकजीवन, धरती के जीवन और लोकभाषा के ताजे रसगंध से उसका शृंगार हुआ और दूसरी ओर सीधे भोजपुरी अपने 'सोगहग'-भाव के चलते कथा - साहित्य में अलग पहचान के साथ रेखांकित हुई। शीघ्र ही हिन्दी कथा साहित्य के तीसरे-चौथे उत्थान से अपने को सीधे जोड़ते हुए अगले दस वर्षों में भोजपुरी कथा-साहित्य में एक जबर्दस्त चमत्कार दृष्टिगोचर हुआ। ऐसा प्रतीत हुआ, कि वह हिन्दी कहानी के विकास की समग्र उपलब्धियों को चटपट आधुनिक शिल्प-विकास के मेल में रख देगा। भोजपुरी में उपन्यास तो कुछ बाद में लिखा गया और प्रथम उपन्यास रामनाथ पांडेय कृत **'बिंदिया'** सन् 1956 में प्रकाशित होकर चर्चित-प्रशंसित हुआ। इसके पूर्व सन् 1948 से 1956 के बीच भोजपुरी कहानी-साहित्य पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अपना मार्ग प्रशस्त करता रहा।

आचार्य शिवपूजन सहाय, राहुल सांकृत्यायन और प्रिंसिपल मनोरंजन की पसन्दगी की छाप लिए प्रथम भोजपुरी उपन्यास **'बिंदिया'** में प्रेमचन्द के आदर्शवाद का झंडा बुलन्द रहा। यही कारण था कि इसको बहुत सम्मान प्राप्त हुआ।

भोजपुरी के प्रथम उपन्यास **'बिंदिया'** की कथा बहुत सशक्त है। कोदई किसान की गँवई बिटिया गाँव में अद्वितीय है। जिस साहस से वह वृद्ध पिता की कृषि सँभालती है उसी साहस से अपनी जवानी के चलते बदनामी से लड़ते अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेमी को पति के रूप में प्राप्त कर लेती है। खलनायक के रूप में गाँव के एक धनी व्यक्ति के पुत्र झमन का चित्र खींचा गया है। अपने धन, बल, बुद्धि और तिकड़म से बिंदिया से वह झपटकर विवाह करना चाहता है और चतुर्दिक् संयोग जुटा लेता है। पाठक दिल थाम लेता है। यह कितनी उत्साहवर्धक बात है कि भोजपुरी उपन्यास की परम्परा में लिखी प्रथम रचना वस्तु और शिल्प की दृष्टि से कमजोर नहीं है। यह उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। 'बिंदिया' के पश्चात् वाले इस भाषा के प्रकाशित उपन्यासों को देखकर इस अनुमान को सत्य समझना समीचीन होगा। श्री गणेश चौबे **भोजपुरी के प्रकाशित 'ग्रन्थ'** में सन् 1976 तक की अवधि में 10 उपन्यासों की चर्चा करते हैं। सन् 1972 में प्रकाशित 'भोजपुरी साहित्य का इतिहास' में डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय ने छः उपन्यासों की चर्चा की है। सम्प्रति रामनाथ पांडेय, बच्चन पाठक 'सलिल', जगदीश ओझा 'सुन्दर', विजेन्द्र अनिल, राम प्रसाद राय, राम नगीना सिंह 'विकल', अरुण मोहन भारवि, बालेश्वर राम, राधामोहन राधेश, रमेशचन्द्र झा, अंगद मिश्र, नरेन्द्र शास्त्री, प्राध्यापक अचल, पांडेय कपिल, विक्रमा प्रसाद, पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह, कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' और किरण जी आदि भोजपुरी के उपन्यासकार लोग अपनी रचनाओं के साथ प्रस्तुत हुए हैं।

भोजपुरी कथा-साहित्य के विकास के भीतर पिछले दशकों में जो उपन्यास लिखे गये, उन पर दृष्टिपात किया जाय तो यह बात स्पष्ट होती है कि इतने कम समय के अन्दर आदर्श से प्रारम्भ कर यथार्थ की ओर बढ़ जाने की प्रवृति भोजपुरी में कम नहीं है। गहराई से विचार करने पर एक तरह का आधुनिक सामाजिक यथार्थ 'बिंदिया' में दृष्टिगोचर होता है। मूलतः इस उपन्यास में विवाह-विद्रोह उभरता है। रामनाथ पांडेय के अगले नये उपन्यास **'जिनिगी के राह'** का रास्ता भी परिवर्तित नहीं है और वह पुराने मार्ग पर चल रहा है। आदर्शवाद छूटा नहीं है। आश्चर्य तो यह है कि इस कृति में गाँधीवाद आया तो मार्क्सवाद पर हावी होकर। अर्थात् कम्युनिस्ट पार्टी के एक कार्यकर्त्ता के प्रभाव से मिलमालिक और प्रेमिका का हृदयपरिवर्तन हुआ है।

भोजपुरी उपन्यासों पर शुद्ध आदर्शवादी रंग खूब चटक है। **सुन्दर** जी के उपन्यास **'रहनिदार बेटी'** के नाम से ही आदर्शवाद की झलक दिखायी पड़ती है। **राधामोहन 'राधेश'** की कृति **'सेनुर के लाज'** में सपाट भोलापन और भावुकता वाला आदर्शवाद पति-पत्नी के बीच में रेखांकित है। **'सेमर के फूल'** (बच्चन पाठक 'सलिल'), **'एगो सुबहः एगो साँझि'** (विजेन्द्र अनिल), **'डँहकत पुरवइया'** (अरुण मोहन भारवि) और **'गाँव के माटी'** (बालेश्वर राम यादव) में आदर्शवाद नाना प्रकार के रंगों में झाँक रहा है। आंचलिक उपन्यासों में इसकी प्रस्तुति और प्रौढ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूप में है । भोजपुरी अंचल की मिट्टी में पता नहीं कौन विशिष्टता है कि इसके साहित्य में आदर्श, आस्था, मूल्यनिष्ठा और मानवता की फसलें बहुत जोरदार रूप में उगती जाती हैं । यथार्थ के संघर्ष और टकराहट पर पिछले कथाकार न जाने क्यों जोर नहीं देते हें । यह आश्चर्य ही है कि एक ओर सन् 1942 के आन्दोलन में भोजपुरी के लोग बलिदानियों की अग्रणी भूमिका में रहे और उससे पूर्व राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में इस क्षेत्र ने नेतृत्व किया और दूसरी ओर स्वातन्त्र्योत्तर भोजपुरी-भाषा-भाषी अपनी पृथक् पहचान बनाने हेतु जुट गये । फिर उस भाषा के कथा-साहित्य में धुआधार रचनाएँ होने लगीं तो राष्ट्रीय आन्दोलन या संग्राम उसमें से अदृश्य होने लगा ।

भोजपुरी में प्रथम आंचलिक उपन्यास **'थरूहट के बउवा और बहुरिया'** सन् 1962 में प्रकाशित हुआ । इसके लेखक **रामप्रसाद राय** ने कृति में नेपाल की तराई में बसने वाली थारू जाति को एक कोण से उठाया और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया । इसी वर्ष हिन्दी में शैलेश मटियानी के कुमायूँ अंचल के जीवन पर कई आंचलिक उपन्यास प्रकाशित हुए । बलभद्र ठाकुर और रामदरश मिश्र के आंचलिक उपन्यास चर्चित हुए । हिन्दी आंचलिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड, बस्तर, राजस्थान, संथाल परगना और असम की जनजातियों पर तो उपन्यास लिखा गया किन्तु थारू जाति पर लिखा उपन्यास तो पूर्णतया नवीन है ।

रामप्रसाद राय की कृति के पश्चात् भोजपुरी में आंचलिक उपन्यासों के लिखने की परम्परा चल पड़ी । ब्रह्मपुर (बरहपुर) के तीर्थस्थान और मेले की पृष्ठभूमि पर (डॉ०) **बच्चन पाठक 'सलिल'** के उपन्यास **'सेमर के फूल'** (65), एक प्रसिद्ध लोककथा पर आधारित **रमेशचन्द्र झा** की कृति **'सूरमा सगुन विचारे ना'** (सन् 1972), छपरा अंचल के महेन्द्र मिश्र वाली लोकगाथा पर आधारित **पांडेय कपिल** की कृति **'फुलसुंधी'** (सन्77) और सारन के शीतलपुर गाँव पर आधारित **पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह** के उपन्यास **'घर टोला गाँव'** (1979) इत्यादि रचनाओं में आंचलिक रंग बहुत चटक हैं । यह कितना अच्छा है कि हिन्दी की ही भाँति भोजपुरी में आंचलिक उपन्यास और ग्राम कथानक के भेद बहुत स्पष्ट रूप में उभरे हैं । ऐसा लगता है कि **'फुलसुंघी'** भोजपुरी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास है और **'भोर मुसुकाइल'** सबसे चुस्त ग्राम कथानक से जुड़ा श्रेष्ठ उपन्यास है । आंचलिकता के इर्दगिर्द हिन्दी और भोजपुरी में एक और समानता दृष्टिगोचर होती है । लोककथा और लोकगीतों के रस में बसी कथाभूमि दोनों में भरपूर रूप से निखरकर उभरी है । **'सूरमा सगुन बिचारे ना'** (72) एक इसी पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास है । इस उपन्यास में बेतिया के राजा दिलीप सिंह के समय और अमलदारी को बाँधा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया है । इनके राज्य में एक रक्खन मियाँ थे जिनका पँवारा प्रसिद्ध था । इस पँवारा में बाबू चैना सिंह की बीरता का वर्णन है । इसी पँवारा वाले सूरमा को इस उपन्यास में नये ढंग से उछाला गया है । एक समय, एक स्थान और एक विशेष व्यक्ति के त्रिकोण में यह रचना जुझारूपन का अतिरिक्त स्वाद भर देती है । यही कारण है कि यह रचना पाठकों को तृप्ति प्रदान करती है । इस उपन्यास को पढ़कर हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार शैलेश मटियानी का स्मरण होना स्वाभाविक है । आपका प्रसिद्ध उपन्यास **'मानसरोवर के हंस'** (1962) कुमायूँ प्रदेश के प्रसिद्ध गीत लोकगाथा पर आधारित है और चम्पावत के वफौल-वंशी वीरों की गाथा प्रस्तुत की गयी है ।

भोजपुरी कथा-साहित्य के विकास में इतिहास, कल्पना और लोकगाथा के मिश्रण से बनी **'फुलसुंघी'** मानक उपलब्धि वाली है और मील के पत्थर जैसी दीख पड़ती है । अत्यन्त असरदार इस लघु उपन्यास में आंचलिकता के साथ-साथ मध्यकालीन आदर्शवादी जीवनमूल्यों की जबर्दस्त वकालत है । इसका रोमैन्टिक रूप पाठकों को मुग्ध कर देता है । छपरा अंचल में ढेला, महेन्द्र मिश्र, हलिवन्त सहाय और रिबेल साहब का नाम आज भी इतिहास-पुरुषों जैसा लिया जाता है । जनमानस में आज भी इनके प्रति लोकनायक की-सी प्रतिष्ठा है । उपन्यासकार ने इन्हीं लोगों की कथा को इसमें उपन्यस्त किया है । इस उपन्यास की कहानी वहाँ से शुरू होती है जब बाबू हलिवन्त सहाय ढेलाबाई का बुलकना डोम द्वारा अपहरण करा देते हैं । बाई बेचारी का यही दोष है कि वह बाबू साहब को हाथ नहीं रखने देती है । अब ढेलाबाई लाल कोठी वाले सोने के पिंजरे में फुलसुंघी बनकर प्रस्तुत होती है । इस उपन्यास में ऐसी घटना फूटती है कि बाबू साहब की ओर आँख उठाकर न देखने वाली वह फुलसुंघी महेन्द्र मिश्र पर अपनी नथुनी ही सौंप देती है । प्रेम का मजेदार झमेला यहाँ प्रस्तुत है । इस झमेले में प्रेम, विरह और मिलन का मनोहारी चित्र उभरता है । इसकी प्रमुख विशिष्टता यह है कि इस प्रेम-कहानी के इर्द-गिर्द कुछ और घटनाएँ तथा चरित्र उभार लेते दृष्टिगोचर होते हैं और वे उससे तनिक भी पृथक् न होकर मुख्य कथा को आगे बढ़ाते हैं । ऐसा नहीं है कि ये सीधे-सीधे हलिवन्त सहाय और महेन्द्र मिश्र बनाम ढेलाबाई के प्रेम की कथा कही गयी है । इतिहास से अधिक यह एक समय की कहानी बन गया है । एक-एक कथा के चतुर्दिक् अनेक आकर्षक कथायें फूटती हैं । पलटू-जिरिया का विवाह, रिवेल साहब का त्याग, मुकदमेबाजी, लाल कोठी और सफेद कोठी का संघर्ष, विद्याधरी और केसरबाई की प्रतिस्पर्द्धा, महेन्द्र मिश्र के अन्तर्द्वन्द्व, शास्त्रीय और लोकसंगीत की टक्कर, क्लैसिकल व्यक्तित्व वाले लोगों का जमाव और कुल मिलाकर उपन्यास वास्तव में क्लैसिकल बन गया है ।

'फुलसुंघी' के सन्दर्भ में भोजपुरी में उतरती आंचलिकता की प्रवृति के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय में कुछ विचार आवश्यक हैं। चरित्र-प्रधान उपन्यास 'फुलसुंघी' में एक अंचल और आंचलिकता की शर्तें ऐसी सघन बुनावट में उतरती हैं कि विवश होकर इसे आंचलिक उपन्यास मानना पड़ता है। लेकिन भोजपुरी में अभी तक नदी, पहाड़, और समुद्र के जीवन के आंचलिक उपन्यास नहीं हैं। भोजपुर, नेपाल और छपरा अंचल को ही प्रायः कथाकारों ने अपनी पृष्ठभूमि बनायी है।

'घर टोला गाँव' में **पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह** बिहार के सारन जिले वाले अपने गाँव शीतलपुर को पृष्ठभूमि बनाकर समग्र पुरजनों-परिजनों का रेखाचित्र उपस्थित करते हैं। इस गाँव को प्रथमतः आबाद करने वाले बाबू शीतल सिंह हैं। वे मुगल-दरबार से जागीर पाये थे और बड़ी दूर कहीं चिरैयाकोट से शंखपुष्पी नदी के रास्ते से आये थे। जब गाँव बस गया तो वह एक से इक्कीस हुए। पूरब-पश्चिम पट्टी के रूप में फैल गये। संयुक्त परिवार का अनुशासन वाला वह सनातन सांस्कृतिक गाँव उपन्यास में पूरे मिठास और प्यार के साथ स्मरण किया जाता है। उसका इतिहास एक समय का आंचलिक इतिहास हो जाता है और एक नवीन स्वाद का सृजन होता है। उपन्यास में शीतलपुर गाँव अचेतन नायक हो गया है। यह वैसे ही है जैसे हिन्दी के कुछ आंचलिक उपन्यासों में हुआ है। राही मासूम रजा के उपन्यास **'आधा गाँव'** में लेखक का गाँव गंगौली नायक है; नागार्जुन की कृति **'बाबा बटेसरनाथ'** में वटवृक्ष नायक है और शिवप्रसाद मिश्र 'रूद्र' की कृति में माँ गंगा नायकत्व का भार वहन करती दृष्टिगोचर होती हैं।

आंचलिक उपन्यासों की विकास-चर्चा के बाद अब भोजपुरी के आधुनिक यथार्थवादी उपन्यासों की चर्चा आवश्यक हो गयी है। इस भाषा में इस रूप वाले उपन्यासों की पंक्ति में प्रथम स्थान है **विक्रमा प्रसाद** की कृति **'भोर मुसुकाइल'** का। कथाकार इसमें आधुनिक जीवन और उसकी विसंगतियों का सटीक चित्रण प्रस्तुत करता है। क्या गाँव, क्या शहर, सभी को आज अर्थव्यवस्था झकझोर रही है। गाँव पर उसका प्रभाव सर्वाधिक है। आर्थिक आघात से गाँव संवेदनशून्य हो गये हैं। गाँव में गरीबी के साथ-साथ नये-नये धनिकवर्ग के लोगों की बाढ़-सी आ गयी है। ऐसा लगता है कि अब गाँव में नैतिकता मजाक हो गयी है। शहरी चकाचौंध और मौज-मस्ती के भाव गाँव में प्रवेश कर हुड़दंग मचा रहे हैं। गाँव के इस बदलते और तेजी से परिवर्तित रूप को विक्रमा प्रसाद ने अपने उपन्यास में भरपूर रूप में उरेहा है। उनके मुख्य पात्र सिबरन हैं जो गाँव की मिट्टी के प्रतीक हैं। आधुनिक स्थितियों के चित्र प्रस्तुत करते विक्रमा प्रसाद थोड़ा-सा बहक जाते हैं और समस्या का समाधान प्रस्तुत करने लगते हैं। यह प्रेमचन्दी प्रयास आजकल बेमानी-सा हो गया है। बावजूद इसके भोजपुरी उपन्यासों में यह प्रथम उपन्यास है जिसमें यथार्थ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्तर पर स्थितियों से जूझने की दिशा में नायक नेतृत्व करता है और लेखक पूर्णतया बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण करता है। भोजपुरी के अगले उपन्यासों पर इसका असर स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है।

'भोर मुसुकाइल' के साथ-साथ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास **प्राध्यापक 'अचल'** लिखित **'सुन्नर काका'** की चर्चा यहाँ प्रासंगिक होगी। भोजपुरी कथा-साहित्य के विकास में इस कृति का महत्त्व निर्विवाद है। इसमें रेखाचित्रात्कता की प्रवृति है। मुख्य पात्र सुन्नर काका सम्पूर्ण उपन्यास की घटनाओं के केन्द्र में होकर प्रकाशित हुए हैं। पृथक्-पृथक् शीर्षकों में ललित निबन्ध जैसी रूचि का आभास देता लेखक मुख्य कथा से सुन्नर काका की भूमिका को जोड़कर आगे बढ़ता है और श्रृंखलित कथा के साथ-साथ स्वतन्त्र कथा का-सा स्वाद प्रदान करता है। कुल मिलाकर वास्तविक कथा के केन्द्र में बहुत भारी राष्ट्रीय समस्या है और यह समस्या है गरीबी हटाने की समस्या। अपने एक तेजस्वी ग्रामीण पात्र के साथ कथाकार इस समस्या से जूझता है।

भोजपुरी कथा-साहित्य के विकास में बलिया के **नरेन्द्र शास्त्री** के उपन्यास **'ऊसर के फूल'** का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें आदर्शवादी और आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कृतियों के बीच एक ठोस यथार्थवादी कृति दृष्टिगोचर होती है। मात्र अस्सी पृष्ठों के आकार वाला यह लघु उपन्यास बलिया जनपद के तीन गाँवों की पृष्ठभूमि से जुड़ा है – मुड़ियारी, खरौनी और बाँसडीह। इन तीनों गाँवों से जुड़े एक मुख्य पात्र हैं शमशेर बाबू, जिनके समक्ष दोनों मार्ग अस्पष्ट से हैं। एक मार्ग है नैतिकता, सच्चाई, ईमानदारी और पसीने की कमाई वाला और दूसरा मार्ग है- अवैध काली कमाई वाला तथा पापभरी लूटपाट और बिना हर्रे -फिटिकरी लगे चोखे रंग देने वाला। एक मार्ग का परिणाम है कि आजन्म भूखों मरें और दूसरे का फल है शीघ्र वैभवशाली होकर मौज-मस्ती करें। एक मार्ग में जीवन-भर गरीबी से संघर्ष है तो दूसरे में अमीरी को अपनाना है। जैसे-जैसे उपन्यास का पाठक आगे बढ़ता है समाधान भी उसे स्वयमेव मिल जाता है। इस लघु उपन्यास में एक बड़ा प्रयोग हुआ है जिस देखकर भोजपुरी कथा-साहित्य की शक्ति पर विश्वास जमने लगता है। सिद्ध कथाकार अमृतलाल नागर अपने उपन्यास **'अमृत और विष'** में एक प्रयोग करते हैं। एक पात्र अरविन्द शंकर के माध्यम से इस कृति की रचना-प्रक्रिया चिन्तन में उभरती चली जाती है। वैसे ही नरेन्द्र शास्त्री के इस लघु उपन्यास में राजेन्द्र के भीतर परिवेश की चोट से विद्रोह हो जाने की जो प्रक्रिया कथा के साथ-साथ चलती है, वह उपन्यास को बहुत मनोवैज्ञानिक और आधुनिक बनाती है। आधुनिकता की एक पहचान अनपेक्षित पीड़ाभोग भी इस उपन्यास के नारी पात्रों में उभरती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी उपन्यास की शेष प्रवृतियों के विचार से **अरुणमोहन भारवि** का उपन्यास '**परशुराम**' ध्यानाकर्षक है । छप्पन पृष्ठों के इस उपन्यास में कुल एक दर्जन अध्याय हैं, जिनमें सहस्त्रबाहु, यमदग्नि, रेणुका और परशुराम के इर्द-गिर्द कहानी घूमती है । मातावध वाली घटना इसमें बहुत विस्तारपूर्वक रेखांकित है । एक ऐसे नये क्षितिज का उद्घाटन '**जीअन साह**' में हुआ । यह एक चुनौती है कि रामनगीना सिंह विकल के स्वैरविधा (फन्तासी) में लिखित और परलोक के जीवन पर आधारित 'जीअन साह' (1964) जैसा उपन्यास भोजपुरी में दूसरा नहीं लिखा जा सका है ।

सन् 1975 में **अङ्गद मिश्र** ने एक उपन्यास लिखा जिसका एक पात्र हिन्दी बोलता है और एक भोजपुरी । अर्थात् यह '**भगजोगनी**' नामक उपन्यास मिश्रित भाषा वाला उपन्यास है । ऐसा मिश्रणयुक्त भाषा-प्रयोग मध्यकाल के नाटकों में मिलता है, जिनमें उच्च वर्ग के पात्र संस्कृत बोलते हैं और निम्नवर्ग के प्राकृत । हिन्दी के प्रमुख कथाकार डॉ० रामदरश मिश्र ने एक बड़ा उपन्यास लिखा है- '**अपने लोग**' (1976) । इस उपन्यास में पण्डित के० लाल और इमिरितिया चमाइनि की प्रेम-लीला विस्तार से चित्रित है और कुल मिलाकर यह चित्रण शुद्ध भोजपुरी भाषा में है । पण्डित जी ताल में भैंस चराने जाते हैं और उधर से गोबर-लकड़ी बीनने के बहाने इमिरितिया आ जाती है और खूब जमकर रोमांस होता है । इस भोजपुरी प्रयोग से कृति की मूल्यवत्ता बढ़ जाती है । मैं अपने उपन्यासों में भोजपुरी शब्दों का प्रयोग विशेष स्थानों पर करता हूँ और यही बात शिवप्रसाद सिंह की है । राही मासूम रजा भोजपुरी उर्दू का रूप प्रस्तुत करते हैं ।

हिन्दी में उपन्यास और लघु उपन्यास में भेद बहुत स्पष्ट है । भोजपुरी में ऐसा भेद नहीं है । एक '**भोर मुसुकाइल**' को छोड़कर आकार में सभी उपन्यास ऐसे हैं कि वे मोटे रूप में लघु उपन्यास कहे जा सकते हैं । किन्तु जब भोजपुरी में लघु उपन्यास घोषित कर रूप प्रकाशन से **योगेन्द्र प्रसाद सिन्हा** का उपन्यास '**फुलमतिया**' छपा तो ऐसा लगा कि भोजपुरी साहित्य अब आकारवाले मोटामोटी रूप को छोड़कर उपन्यास और लघु उपन्यास का सूक्ष्म भेद करने लगा है । यह शुभ लक्षण है और भोजपुरी साहित्य की प्रगति का चिन्ह है ।

उसकी इस प्रगति में भोजपुरी की पत्र-पत्रिकाओं ने भरपूर सहयोग किया है । इस अवसर पर कलकत्ता से प्रकाशित '**भोजपुरी माटी**' की चर्चा आवश्यक है । यह वही पत्रिका है जा नियम से धारावाहिक उपन्यासों को प्रकाशित करती है । सन् 1981 ई० में नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक' का उपन्यास '**कमली**' इस पत्रिका में धारावाहिक रूप में छपा और सन् 1982 में '**बदमिया** (ले० वैदेहीशरण) निरन्तर प्रकाति होता रहा । ये दोनों सामाजिक उपन्यास हैं । '**भोजपुरी आकादमी पत्रिका**' मधुकर सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के उपन्यास **'रेवती'** को सन् 1980 में प्रकाशित करती रही। नरेन्द्र शास्त्री का समग्र उपन्यास **'ऊसर के फूल'** वाराणसी से प्रकाशित **'भोजपुरी कहानियाँ'** में विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ था। **'सुन्नर काका'** (प्राध्यापक अचल) को **'भोजपुरी कथा-कहानी'** (पटना) ने विशेषांक के रूप में सर्वप्रथम प्रकाशित किया था। इस तरह से भोजपुरी उपन्यासों में चतुर्दिक् भराव के चिन्ह उभरते हैं किन्तु जिसे भरपूर छलाँग कहा जाता है, वह अभी कहीं भविष्य के गर्भ में है। जिसे आधुनिकता कहा जाता है, जिसमें विद्रोह के बाहर-भीतर वाला ताना-बाना होता है वह अभी भोजपुरी में नहीं उभर पा रही है। आंचलिकता का स्वागत करने वाले और आदर्शमूलक सामाजिकता के सपने में डूबे भोजपुरी उपन्यास साहित्य से यह आशा की जा सकती है कि शीघ्र बिंदिया, भगजोगनी, फुलमतिया, बदमिया, कमली और रेवती जैसी नारियों के शीर्षकों में झाँकती रोमानी कमजोरी से वह मुक्ति पा लेगा। सम्प्रति उपन्यास साहित्य के आन्दोलनों की खींच-तान से मुक्त भोजपुरी उपन्यास साहित्य अपना मार्ग स्वयं बना रहा है।

भोजपुरी कहानी-साहित्य

उपन्यास के पश्चात् अब भोजपुरी कहानी-साहित्य पर एक नजर डालें। लगता है उसमें विकास नहीं, उछाल आया है। यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि भोजपुरी का कहानी-साहित्य थोड़े समय में ही अधिक समृद्ध हो गया है। उसके बीच से गुजरते किसी तरह की हीनता का भाव नहीं आ पाता है। प्रथम मौलिक कहानियों का संग्रह **'जेहलि के सनदि'** (1948) जिसके लेखक अवधबिहारी सुमन जी हैं, जिन्हें अब **स्वामी विमलानन्द सरस्वती** कहा जाता है; आप दस मौलिक सामाजिक कहानियों को लेकर मैदान में आ गये और उसके पश्चात् जो संग्रह प्रकाशित हुए तो अब तक लगभग चार दर्जन सशक्त संग्रह आये। इसी तरह से सम्पादित भोजपुरी कहानियों का प्रथम संग्रह **'भोजपुरी कहानी संग्रह'** नाम से सन् 1962 में प्रकाशित हुआ जिसके सम्पादक थे प्रो० चन्द्रभूषण सिन्हा। उसकी पन्द्रह रचनाएँ जाने-माने भोजपुरी कथाकारों की थीं। उसके पश्चात् सन् 1981 तक की अवधि में लगभग एक दर्जन संपादित संग्रह सामने आये। अन्तिम संग्रह **'सेसर कहानी भोजपुरी के'** (1981) सचमुच सेसर हो गया और उसके भीतर भोजपुरी के इक्यावन स्थापित कथाकारों की श्रेष्ठ रचनाएँ प्रस्तुत हुईं। इससे पूर्व सन् 1967 में रामबली पाण्डेय के संपादकत्व में बहुत ठाट-बाट से एक संकलन 'भोजपुरी संसद' से छपा **'भैरवी क साज'** और इसका प्रकाशन इतना स्तरीय हुआ कि समीक्षकों ने एक स्वर से स्वीकारा, किसी भाषा के उच्च कोटि के कथा-संग्रहों के मुकाबले में इसे प्रस्तुत किया जा सकता है। इसमें उन्नीस कहानियाँ संकलित हैं। इसके दस वर्षों पश्चात्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

28 श्रेष्ठ भोजपुरी कहानियों का संग्रह **भोजपुरी संस्थान** पटना से सिपाही सिंह श्रीमन्त और कृष्णानन्द कृष्ण के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ और चर्चित-प्रशंसित हुआ।

मौलिक कथा-संग्रहों में सुमन जी के पश्चात् रामवृक्ष राय विधुर के **'खैरा पीपर कबो ना डोले** (64), गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' के **'बैरिन बाँसुरिया'** (68), कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' के **'चिटुकी भर सेनुर'** (69), ईश्वर चन्द्र सिन्हा के **'गहरेबाजी'**, डॉ० विजय नारायण सिंह (विजय बलियाटिक) के **'जै जजमान'** (72), तैयब हुसैन पीड़ित के **'बिछउँतिया'** (74), वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय के **'दरबा'** (74), कृष्णानन्द कृष्ण के **'एह देश में'** (75), कन्हैया सिंह सदय के **'मनसा'** (76), शुकदेव सिंह 'स्नेही' के **'ढिबरी'** (76), प्राध्यापक अचल के **'माया मिलिल न राम'** (77), पी० चन्द्र विनोद के **'हम कुन्ती ना हँई'** (77), घनयाम मिश्र के **'अमरावती'** (77), रामनाथ पाण्डेय के **'सतवन्ती'** (77), डॉ० मुक्तेवर तिवारी बेसुध (चतुरी चाचा) के **'भँइसि के दूध'** (79), ब्रजकिशोर दूबे के **'सकदम'** (79), ब्रजकिशोर के **'धुँआ'** (79), रूपश्री के **'खोंता से बिछुड़ल पंछी'** (90), अक्षयवर दीक्षित के **'सतहवा'** (91), और विवेकी राय के **'ओझइती'** (92) आदि भोजपुरी के मौलिक कथा-संग्रह के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हुए हैं। राधामोहन राधेश, राय सच्चिदानन्द, राधिका देवी, सत्यव्रत, अरविन्द कुमार, डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी और डॉ० रसिकविहारी ओझा 'निर्भीक' आदि लेखकों से अधिक उत्साह महिला कथालेखकों में मिला, जो विकासशील भाषा का शुभ लक्षण है। **रूपश्री** का प्रथम मौलिक संग्रह **'जिनिगी के परछाही'** सन् 1971 में छपा था। भोजपुरी उपन्यास में जैसे पिता-पुत्र (पाण्डेय कपिल और पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह) दो पीढ़ी लगी है वैसे भोजपुरी कथा क्षेत्र में पति-पत्नी (**ब्रजकिशोर** और **रूपश्री**) की जोड़ी साधना में लगी है। भोजपुरी के श्रेष्ठ कथाकारों में एक कथाकार ऐसे हैं जो बावन वर्ष की परिपक्व उम्र में प्रथम मानक संग्रह **'गहरेबाजी'** (ईश्वरचन्द्र सिन्हा) के साथ प्रस्तुत हुए हैं। समर्पित और सिद्ध पत्रकार ईश्वरचन्द्र सिन्हा की इस साधना के पीछे भोजपुरी के भगीरथ डॉ० स्वामीनाथ सिंह ने वाराणसी में अखिल भारतीय भोजपुरी संसद की अलख जगाई थी। उनकी प्रबल आकांक्षा थी कि भोजपुरी में सम्पूर्ण विधाओं की समृद्धि एक साथ हो। उनकी ललकार पर सन् 1965 ई० में सिन्हा जी ने **'भैरवी क साज'** शीर्षक कहानी लिखी जो भोजपुरी की गिनी-चुनी कुछ श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। पटना में रूप प्रकाशन, लोग प्रकाशन, भोजपुरी संस्थान, भोजपुरी साहित्य संस्थान व्यक्तिगत रूप से भोजपुरी को आगे बढ़ा रहे हैं। भोजपुरी अकादमी का कदम भी बढ़ रहा है। जमशेदपुर का भोजपुरी साहित्य परिषद सीवान का भोजपुरी साहित्य सदन और कलकत्ता का पश्चिम बंग भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिषद् आदि प्रकाशन संस्थाएँ भोजपुरी कथा–साहित्य के विकास में अपना–अपना योगदान लेकर आगे बढ़ रही हैं और एक प्रभावशाली वातावरण का निर्माण हो रहा है ।

भोजपुरी उपन्यास ने तो जन्म लेते ही नवीन शरीर धारण कर लिया किन्तु भोजपुरी कहानी के साथ–साथ परम्परागत लोक–कथा, बोध–कथा और व्रत–कथा आदि का प्राचीन भाव लगा रहा । यद्यपि भोजपुरी में लोककथा को कहानियों से पृथक् करके समझने की परम्परा है और लोककथा का अलग साहित्य रचा गया है किन्तु भोजपुरी कथा में वह इधर–उधर से पैठकर अपना रंग जमाती है । नन्दकिशोर झा का दो भागों में लिखा गया **'चालाक चौखड़ी'** और कई भागों में **'बुड़िबक बहार'** को उपदेशात्मक कथा–संग्रह कहा जा सकता है । इस तरह का साहित्य शुद्ध रचनात्मक कोटि में नहीं आता और न उसका मूल्यांकन कथा के साथ हो सकता है । इसी तरह रामबली पाण्डेय के सम्पादन में प्रकाशित **'व्रत–कथा'** और कामता प्रसाद ओझा **'दिव्य'** रचित **'भोजपुरी हितोपदेश'** आदि कहानी की कसौटी पर खरी नहीं उतर सकती है । डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी ने **'सोना के ओधी'** में अलबत्ते शुद्ध लोककथाओं को कहानी–रूप देने का प्रयास किया है । भोजपुरी में लोक साहित्य, विशेष रूप से लोक–कथाओं के ऊपर खूब जमकर और विशेष रूप से विद्वतापूर्ण अनुसन्धान हो गया है । डॉ० रसिकबिहारी ओझा निर्भीक का यह अनुसन्धान उपने ढंग का अकेला और प्रथम है । उसमें परिनिष्ठित आधुनिक कहानी–साहित्य और लोककथा साहित्य का गंभीर विवेचन है ।

सन् 1950 के पश्चात् वाली हिन्दी कहानी में जो बदलाव आया, उसे सम्पूर्ण जीवन–मूल्यों के संदर्भ में समझना चाहिए । अब प्रेमचन्द, जैनेन्द्र या अज्ञेय जैसे लोगों वाला शाश्वत जीवनमूल्य–चिन्तन नहीं रहा । मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद और मनोविश्लेषण के प्रभाव को लेकर नयी कहानी आगे बढ़ी है । उस पर भारतीय स्वाध ीनता, लोकतंत्र, लोकतंत्र से पैदा मोहभंग, समाजवाद, औद्योगिक उलझाव, व्यक्तिवाद, विघटन, बेकारी आदि का दबाव पड़ा । संयुक्त परिवार की कड़ियाँ चरमराकर टूट गयीं । रचनाकारों में क्षोभ, असन्तोष और विद्रोह की लहरें उठने लगीं । वैयक्तिक और नैतिक मूल्यों में, मर्यादा में दरार पड़ने लगा, देश विभाजन और साम्प्रदायिकता संत्रास और मूल्य विघटन से प्रभावित होने लगा । कड़वाहट, तीखापन और नियति–व्यंग्य की नाना प्रकार की चुनौतियाँ पैदा होने लगीं । सन् साठ के पश्चात् 'साठोत्तरी पीढ़ी' के कथाकारों में और भी तीखापन और तुर्शी आ गयी । खेमा, शिविर, गोष्ठी, भाषण, चर्चा, विवाद और संवाद तथा परिसंवाद की लहरें आ गयीं । इस साठोत्तरी पीढ़ी में 'अकहानी' और 'सचेतन कहानी' की दो शाखाएँ प्रस्फुटित हुई । 'अकहानी' पेरिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में जनमी, एन्टी स्टोरी की छाया से उतरी । 'सचेतन कहानी' में अनास्था, अस्वीकार, कुंठा, संत्रास इत्यादि को फैशन कहकर उसका विरोध किया गया और लगभग उसे नये आस्थावादी रूप में प्रस्तुत किया गया । कहा गया, यह अपनी जमीन से जुड़ी है । इसी समय हिन्दी में भूखी पीढ़ी, क्रुद्ध पीढ़ी, बीट पीढ़ी, श्मशानी पीढ़ी का नारा उछला । सन् 1975 से 'समानान्तर कहानी' लेखकों का एक गोल बना । प्रचार, बहस, नारा और घोषणा की हवा तेजी से फैली । इसी समय आम आदमी का नारा भी उछला । अच्छी कहानी, जनवादी कहानी और सन् 1980 तक आते-आते हिन्दी में 'सक्रिय कहानी' का भी नारा आ गया । इसमें जीवन के कुछ जुझारू मूल्यों पर जोड़ दिया गया और इस तरह खूब गहमा-गहमी में हिन्दी कहानी के तीन दशक व्यतीत हुए । भोजपुरी के संवेदनशील कथाकारों पर भी इसका प्रभाव भरपूर रूप में पड़ा ।

सन् 1971 ई० में ईश्वरचन्द्र सिन्हा का कहानी-संग्रह **'गहरेबाजी'** छपा । इस संग्रह की कथा-यात्रा से गुजरते मुझे ऐसा लगता है कि इस संग्रह की कहानियों में प्राचीन और आधुनिक सभी प्रकार के प्रभाव और प्रवृत्तियों वाली कहानियाँ आ गयी हैं। उसमें कहानी के आदि रूप, प्रेमचन्दपूर्व रूप, प्रेमचन्दयुगीन रूप और प्रेमचन्दोत्तर कहानी के रूप के साथ-साथ आधुनिक कहानी का रूप है । इस संग्रह के **'राधा गावत हौ'** में **'नयी कहानी'** और **'दसखत'** शीर्षक कहानी में **'अकहानी'** की मुद्रा उभरी ।.

भोजपुरी कहानी पर मात्र अकहानी का ही नहीं, कई तरह के नये कथान्दोलनों का प्रभाव खोजा जा सकता है । इसका कारण यह है कि भोजपुरी की ग्रहणशक्ति बहुत तगड़ी है । वह समसामयिक हवा में से अपने अनुकूल रस खींचने में कभी चूकती नहीं है । यह प्रश्न किया जा सकता है कि भोजपुरी कहानी का रचना-विधान ठीक वही है, जो हिन्दी में चला आ रहा है अथवा भोजपुरी ने कहीं कोई अपना पृथक् मार्ग बना लिया है ? वैसे तो हिन्दी कहानी की शैली और उसके रचना-विधान पर हम भरपूर रूप से पश्चिम का प्रभाव स्पष्ट देख रहे हैं और वह अपनी भारतीय कथा-परम्परा से पृथक् हो गयी है, किन्तु यह कोई आवश्यक नहीं है कि भोजपुरी में भी ठीक उसी का अनुकरण हो । कहानी का यह पश्चिमी ढाँचा आज तक हिन्दी कहानी में वैसे ही अपनाया जाता रहा जैसे वह अपना है । किन्तु सन् 1950 के पश्चात् इस ढाँचे पर झटका लगा और वह टूटने लगा । अब हाल यह है कि वह ओ हेनरी वाला ढाँचा हिन्दी में ही नहीं, भोजपुरी में भी टूट गया । इस ढाँचे में पंचतत्व की प्रधानता रही । आरंभ, द्वंद्व या विकास, चरमबिन्दु (क्लाइमेक्स), उतार और अन्त । यह पंचतत्व जैसे **'इन्दुमती'** (किशोरीलाल गोस्वामी) **'उसने कहा**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था' (गुलेरी), **'आकाशदीप'** (प्रसाद) और **'ईदगाह'** (प्रेमचन्द) में है, वैसे ही उसका अस्तित्व भोजपुरी कहानी **'परमपद'** (विमलानन्द सरस्वती) **'मछरी'** (रामेश्वर सिंह काश्यप), **'अब ना'** (अनिल कुमार आंजनेय) और **'भैरवी क साज'** (ईवरचन्द्र सिन्हा) में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। किन्तु यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि इस पश्चिमी ढाँचे को भोजपुरी कहानियों में उतना नहीं उतारा गया है जितना हिन्दी कहानी में।

यह आश्चर्य है कि जिस ढंग की स्वच्छंदता खड़ी बोली हिन्दी में सन् 50 के पश्चात् वाली कहानियों में आयी, उस ढंग का सहज स्वच्छन्द रंग भोजपुरी कथा-साहित्य पर जन्म लेते ही दिखायी पड़ने लगा। भोजपुरी के कुछ विद्वान् कहानी-लेखक रचना करते हुए उसके शास्त्रीय विधान या ढाँचे के बारे में सजग थे, किन्तु सामान्यत: उन्होंने उसकी उपेक्षा की। भोजपुरी की कहानियों की जन्मवाली अवधि ऐसी है कि ठीक उसी समय हिन्दी के कथा-साहित्य में भरपूर बदलाव आया। यह कहा गया कि जैसे आदमी अपने जीवन में उखड़ गया है, उसी प्रकार कहानी का कहानीपन भी उखड़ गया है।

वैसे तो भोजपुरी कहानी में आदर्शवाद ऐसा जम गया है कि सन् 1982 तक प्रकाशित कहानियों में उसका रंग उभर जाता है, किन्तु वास्तविकता यह है कि यथार्थवाद अपने समग्र परिवार के साथ पूरे विश्व भर के साहित्य पर अपना सिक्का जमा चुका है। भोजपुरी साहित्य उसके प्रभाव से कैसे बच सकता है? लोकजीवन, लोक-संस्कृति, लोक-चेतना, गाँव और कृषि से थोड़ा अधिक लगाव होने के कारण इस भाषा की कहानियों में आदर्शवाद का थोड़ा अधिक प्रभाव अवश्य मानना पड़ेगा। किन्तु इसी के साथ पिछड़ापन, गरीबी, बेकारी, असुविधा, रोग, पीड़ा, शोषण, अनादर, बेहाली और अनेकमुखी दुर्भाग्य का काफिला है, जिसने भोजपुरी क्षेत्र में स्थायी रूप से अपना निवास बना लिया है और ऐसा ठोस, मजबूत यथार्थवादी धरातल बन गया है कि भोजपुरी कथालेखक उसकी उपेक्षा करना चाहें तो भी नहीं कर सकते हैं। प्रत्यक्ष रूप से यही लगता है कि भोजपुरी भाषा बोलने वालों के जीवन की सिधाई और सरलता ने बहुत दूर तक भीतर से इसकी कथा-रचना को प्रभावित किया है और बहुत जटिल बनावट वाली कहानियों का भोजपुरी में अभाव है। इसमें दोहरे-तिहरे कथानक प्राय: नहीं मिलते हैं। इसमें आदि-अन्त पर सरल इतिवृत्तात्मकता की छाप है। मध्यवर्गीय तनाव आधुनिक सभ्यता के अभिशाप के साथ आया तो तो भी मनोवैज्ञानिक संघर्ष और द्वन्द्व वाली प्रवृति भोजपुरी कहानियों में कम दिखायी दी।

क्या कारण है कि सामान्यत: हिन्दी कहानी के समान चुस्त-दुरुस्त नागरिक तेवर और संश्लिष्ट बनावट भोजपुरी कहानियों में नहीं दिखायी देती है? कारण सब स्पष्ट हैं। किसी भाषा के साहित्य-विधान पर उसके बोलने वालों के परिवेश और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन-शैली की स्पष्ट रूप से छाप होती है। अंग्रजी स्टोरी पर उभरा इंगलिश जीवन का कटा-छँटा, टीपटाप और चुस्त-दुरूस्त रंग बाद में छनकर अंग्रेजी राज में खड़ी बोली हिन्दी पर उतरा और उसकी कहानियों में चरमबिन्दु (क्लाइमेक्स) के इधर-उधर उतार होने लगा। लोकजीवन के तेवर से भरी-पूरी भोजपुरी जीवन-शैली में कोई आधुनिकता वाला गंभीर और चौकस उतार-चढाव नहीं होता है, तब वह उसकी कहानियों में कैसे आयेगा ?

अंग्रेजी-हिन्दी के इस ढाँचे में यह विशेषता है कि कभी-कभी क्लाइमेक्स (चरमबिन्दु) से आगे न बढ़कर ठीक उसी पर जाकर तत्काल समाप्त हो जाती है। भोजपुरी की कहानियों में भी कहीं-कहीं यही विशेषता दिखायी देती है। पी० चन्द्रविनोद की कहानी **'हम कुन्ती ना हईं'** में एक बहुत तेज, झपट्टामार, सनाका और कौतूहलभरा आरम्भ है और ऐसे ही चरमबिन्दु पर कहांनी समाप्त भी हो जाती है।

भोजपुरी कहानियों की अपनी प्रकृति जो इसकी कहानियों में जोरदार रूप से दिखायीं पड़ती है, यह है कि वह अंग्रेजी-हिन्दी कहानी-रचना-विधान वाले पंचमेल ढाँचे को अनिवार्य नहीं मानती है। भोजपुरी कहानी की निजी प्रकृति फ्लैश बैक को भी उच्च सिंहासन नहीं प्रदान करती है। एक और विशिष्टता इन कहानियों में विकसित हुई है। 'चतुरी चाचा' की प्रसिद्ध कहानी **'भँइसि के दूध'** एक नीतिभरे इतिवृत्त से प्रारम्भ होकर परिणाम पर जाकर अन्त हो जाती है।

ब्रजकिशोर जी की कहानी **'बालू के भीति'** में बहुत स्पष्ट रूप से आरम्भ, तनाव और अन्त का क्रम होता है। रामवृक्ष राय 'विधुर' की कहानी **'चकरोड'** और रामनाथ पाण्डेय की कहानी **'अन्हरिया छटपटात रहे'** और वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय के **'दरबा'** में ऐसा ही ढाँचा खड़ा है। 'दरबा' कहानी में आदि-अन्त में बहुत गहरा ताल-मेल है।

इस पाँच और त्रिस्तरीय ढाँचे को देखते हुए इसके विषय में कुछ और विचार करना समीचीन होगा। हिन्दी की ढाँचावादी विद्रोह की प्रवृत्ति भोजपुरी कहानियों में विरल है। अविनाशचन्द्र विद्यार्थी की कहानी **'मूंड़ी गड़ाइल रही'** और पी० चन्द्र विनोद की कहानी **'तरक्की'** में आधुनिक ढाँचा-तोड़ नयी कहानी का स्वाद मिलता है। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह की कहानी **'बड़प्पन'** में कुछ ऐसा ही शिल्प उभरकर सामने आता है। उसके शिल्प में नयी कथा की भरपूर संवेदना है। यह रेखाचित्रात्मक कहानी हिन्दी नयी कहानी की प्रसिद्ध **'लघुमानवोन्मेष'** वाली प्रवृत्ति से भरी है। ऐसा **'लघुमानवोन्मेष'** ब्रजकिशोर जी की कहानी **'खनतलाशी'** में है। हिन्दी की प्रथम 'नयी कहानी' शिवप्रसाद सिंह की **'दादी माँ'** रेखाचित्र है। वह कहानी इस कथाकार के प्रथम कहानी-संग्रह **'आर-पार की माला'** (1955) में प्रकाशित हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसमें अन्य अधिकांश कहानियाँ भी रेखाचित्र के रूप में उरेही गयी हैं। भोजपुरी के प्रथम कहानी-संग्रह **'जेहल क सनदि'** में रेखाचित्रों की दुन्दुभि बज रही है। सन् 81 में प्रकाशित **'सेसर कहानी भोजपुरी के'** को उठाकर देखें तो सुखिया, सिकरिया, पगला तिवारी, कुन्दन सिंह और केसर बाई, चिखुरा, बैजुआ और हरीश जैसे शीर्षक रेखाचित्रों का पता बिना अध्ययन किए बता देते हैं। वास्तव में रेखाचित्रों का उत्साह भोजपुरी में बहुत तेज है। जैसे प्रेमचन्द ने 'दो बैलों की कथा' लिखी और नयी कहानी में मार्कण्डेय ने 'सरबइया' में एक बैल की कथा और रेणु ने 'तबे एकला चलो रे' में एक पाड़ा का वर्णन किया, वैसे ही प्राध्यापक अचल अपनी कहानी **'सिकरिया'** में एक कुत्ते का रेखाचित्र उभारते हैं।

भोजपुरी भाषा की कहानियों के तीन संग्रहों (भिन्न-भिन्न लेखकों की रचनाओं) के प्रकाशित होने के पश्चात् चतुर्थ प्रतिनिधि संग्रह **'भैरवी क साज'** (सन् 1967 में) प्रकाशित हुआ। इसका प्रकाशन भोजपुरी कहानी-साहित्य के इतिहास में एक घटना है। इसके प्रकाशन के साथ-साथ विकास का एक चरण पूर्ण हो गया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भूमिका में लिखते हैं कि 'कुछ कथा-लेखकों ने कदाचित् यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि यह भाषा ठेठ गँवारू भाषा है।' सच पूछा जाय तो यह एक दोष रहा है जो महादोष बनकर भोजपुरी कथा-साहित्य के पीछे जन्म से ही पड़ गया और बहुत धक्का देने के पश्चात् भी इधर-उधर 'भैरवी क साज' में लगा रहा। सचमुच भोजपुरी ठेठ गँवारू भाषा नहीं है। उसमें किसी भी विकसित भाषा के मुकाबले में जीवन-संघर्ष और संवेदना सफलता के साथ उतारी जा सकती है। साहित्यिक माध्यम बनने के लिए भोजपुरी में भी नागर तेवर का समावेश आवश्यक है। वैसे काश्यप जी, चतुरी चाचा, उमाकान्त वर्मा, रामनाथ पाण्डेय, 'गिरिजेश' और ईश्वचन्द्र सिनहा आदि की कहानियों में व्यक्त यह तेवर भोजपुरी की क्षमता को संकेतित करता है। भविष्य में कथा-विकास के लिए 'भैरवी क साज' इसका प्रकाशस्तंभ है।

'भैरवी क साज' के प्रकाशन के दस वर्ष पश्चात् भोजपुरी संस्थान पटना से **'प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के'** प्रकाशित हुई, जिसके सम्पादक थे – सिपाही सिंह श्रीमन्त और कृष्णानन्द कृष्ण। इस संग्रह में छपी नौ कहानियाँ 'भैरवी क साज' से और बाकी उन्नीस नवीन हैं। उसमें प्रारम्भ में बेढब बनारसी हैं तो इसमें आचार्य शिवपूजन सहाय। उमाकान्त वर्मा की कहानी 'सुखिया' दोनों कथा-संग्रहों में है। यह कहानी शुद्ध आधुनिक भावबोध और नये जीवन संदर्भों को लेकर चलती है। इसमें एक ओर जैनेन्द्र कुमार की प्रवृत्तिमूलक दार्शनिकता और आत्मपीड़ा का भाव है तो दूसरी ओर नयी कहानी की अन्तर्मुख आधुनिक मुद्रा भी समाविष्ट है।

सन् 1981 भोजपुरी कथा-साहित्य की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण वर्ष माना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा सकता है। इस वर्ष एक मानक संकलन प्रकाशित हुआ। इसका नाम रखा गया **'सेसर कहानी भोजपुरी के।'** इसकी भूमिका वाली **'बतकही'** में इसके सम्पादक **ब्रजकिशोर** जी का दावा है कि इक्यावन स्थापित कथाकारों का ऐसा समग्र जमावड़ा पहली बार हुआ है। आचार्य शिवपूजन सहाय, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, रामेश्वर सिंह काश्यप, उमाकान्त वर्मा, रामनाथ पाण्डेय, अविनाशचन्द्र विद्यार्थी, जगन्नाथ, सिपाही सिंह श्रीमन्त, प्राध्यापक अचल, ईश्वरचन्द सिन्हा, विक्रमा प्रसाद, रसिक-बिहारी ओझा 'निर्भीक', मुक्तेवर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा), गिरिजाशंकर राय गिरिजेश, कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य', रामवृक्ष राय 'विधुर', विवेकी राय, पाण्डेय चन्द्रविनोद, अनिल कुमार 'आंजनेय', जितराम पाठक, सुधा वर्मा, विन्दु सिन्हा, हरिकिशोर पाण्डेय, अरुणमोहन भारवि, कन्हैया सिंह 'सदय', अशोक द्विवेदी, प्रियरंजन, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा, ब्रजकिशोर, मधुकर सिंह, तैयब हुसैन पीड़ित, लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी, रूपश्री, विश्वनाथ श्रीकृष्ण, घनश्याम मिश्र, भगवती प्रसाद द्विवेदी, मिथिलेश्वर, पाण्डेय सुरेन्द्र, बच्चन पाठक सलिल, ऋषीश्वर, मुक्तेश्वर नाथ सिन्हा, ब्रजकिशोर सिंह, दुर्गाशंकर सिंह नाथ, गुलाबचन्द्र प्रसाद 'अभय', राजबल्लभ सिंह और दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती जैसे नामों में नये-पुराने सभी कथाकार समाहित हो गये हैं।

भोजपुरी कथा-साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि मात्र प्रेमचन्द की परम्परा को इसने नहीं अपनाया है, इसने प्रसाद की आदर्शवादी परम्परा को भी निभाया है और उसके शिल्प पर रूपवादी रोमैन्टिक असर भी है। ऐसी कहानियों में **'कुन्दन सिंह और केशर बाई'** (आचार्य शिवपूजन सहाय), **'भैरवी क साज'** (ईश्वरचन्द्र सिनहा), **'वरमाला'** (कामता प्रसाद ओझाा 'दिव्य'), **'ऊ कारीगर रहे'** (दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ') को रखा जा सकता है। विपरीत इसके अतिनवीन पीढ़ी में तीव्र आक्रोश और विद्रोह दृष्टिगोचर होता है। **'मछरी'** (रामेश्वर सिंह काश्यप), **'सुखिया'** (उमाकान्त वर्मा), **'दरबा'** (वीरेन्द्र नारायण), **'तरक्की'** (पाण्डेय चन्द्र विनोद), **'अब ना'** (अनिल कुमार राय 'आंजनेय'), **'लीला : एक खण्ड'** (जितराम पाठक), **'देवाल'** (सुधा वर्मा) **'लाल निशान'** (विन्दु सिन्हा), **'भोर ना भइल'** (अरुणमोहन 'भारवि'), **'अलबम'** (ऋषीश्वर), **'भुतहा पीपर'** (वसन्त कुमार) आ **चिखुरा** (अशोक द्विवेदी) आदि कहानियों को नयी कहानी के अन्दर रेखांकित किया जा सकता है।

ऐसा लगता है कि भोजपुरी कहानियाँ पीड़ा-प्रधान हो गयी हैं। पीड़ा में नारी मन की पीड़ा को लेखकों ने बहुत मनोयोग से उभारा है। इस सम्बन्ध में एक बात और द्रष्टव्य है। भोजपुरी में नारी के अन्तर्मन की मनोवैज्ञानिक पीड़ा बहुत कम चित्रित हुई है। **'मछरी'** और **'लाल निशान'** में यह पीड़ा है किन्तु सामाजिक जीवन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की नारी-पीड़ा से ही लगता है कि सम्पूर्ण भोजपुरी कहानी-साहित्य भरा है । **'सुखिया'**, **'दरबा'**, **'सतवन्ती'**, **'देवाल'**, **'बैजुआ'**, **'खोंता से बिछुड़ल पंछी'** और **'तिरिया जनम जनि दीह विधाता'** आदि कहानियाँ जैसे आँखों के अश्रु से लिखी गयी हैं । हिन्दी कथा-लेखकों में नारी पीड़ा को उरेहने वाले जैनेन्द्र जी एक खास तरह की आत्मपीड़ा के चित्र प्रस्तुत करते हैं । भोजपुरी में कुछ वैसी ही मुद्रा में **'सुखिया'** और **'सतवन्ती'** कहानियों की रचना हुई है ।

भोजपुरी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति खुलकर आई है । किन्तु भोजपुरी कहानियों में तो लगता है कि लेखकों ने उसे कम स्पर्श किया है । जिसे शुद्ध आंचलिकता कहा जाता है वह भोजपुरी कहानी **'जेहल क सनदि'** के पश्चात् प्रायः लुप्त है । यह भी एक सच्चाई है कि लोक-कथाओं का प्रयोग भोजपुरी कहानियों में कम होता है । लोकगीतो की कड़ियों को अलबत्ते प्रयोग कर कोई-कोई झनझना देता है । 'गिरिजेश', सिन्हा जी और 'सलिल' जी की कहानियाँ इस दृष्टि से देखी जा सकती हैं । भोजपुरी कहानी रोमान्स, कल्पना, भावुकता और आदर्शवाद को छोड़कर यथार्थ की कठोर जमीन पर शनैः शनैः बढ़ती रही है । इस प्रकार के कठोर यथार्थ की दृष्टि से **'राजपाट'** (जगन्नाथ) और **'सतवन्ती'** (रामनाथ पाण्डेय) की चर्चा की जाती है । दोनों में शोषणमूलक अर्थव्यवस्था की विभीषिका पाठकों को दहला देती है । **'तरक्की'**, **'बैजुआ'**, **'एगो आउर अभिमन्यु'**, 'सपना टूटि गइल' में विविध स्तर के यथार्थ झलक रहे हैं । **'बैजुआ'** और **'एक और अभिमन्यु'** में राजनीतिक यथार्थ है तो **'देवाल'** में सामाजिक यथार्थ है । यथार्थ की पूर्ण सिद्धि व्यंग्य में निहित है । भोजपुरी कथाकारों में तीखी व्यंग्य रचनाओं की कोई ठोस परम्परा तो नहीं उभरती है किन्तु चुटीले और तीक्ष्ण व्यंग्य में वह चूकती भी नहीं है । **'मछरी'**, **'दरबा'**, **'बड़प्पन'**, **'राजपाट'**, **'सब चलेला'** और **'परमपद'** में मार्मिक व्यंग्य की तेज धार है । व्यंग्य का पड़ोसी हास्य का अभाव यहाँ स्पष्ट रूप से खटकता है । ऐसा क्या है कि भोजपुरी में हास्य का अभाव है ? पुरानी पीढ़ी कलम डुबोकर समाज को सुधारने की कोशिश में दीख पड़ती है तो भोजपुरी कथाकारों की नयी पंक्ति का विद्रोही तेवर चोट करके उसे तोड़ना प्रारम्भ करता है । **'मछरी'**, **'सुखिया'**, **'दरबा'**, **'बड़प्पन'**, **'राजपाट'**, **'तरक्की'**, **'देवाल'**, **'लाल निशान'** आदि कहानियों में स्पष्ट रूप से आधुनिकता बोध की मुद्रा है । खुला विद्रोह तो कम है किन्तु नैतिकता के प्रति जैसा विद्रोह **'सतवन्ती'** में है, वह अन्यत्र दुर्लभ है । विद्रोही स्वर **'मछरी'**, **'पगला तिवारी'**, **'भोर ना भइल'**, **'बैजुआ'** और **'एगो आउर अभिमन्यु'** शीर्षक कहानियों में भी है । यह विद्रोही वाली चेतना हीन, उपेक्षित, अदेख, अनगराहित, तुच्छ और नाचीज जैसे जीवन से जुड़ती चलती है । भोजपुरी कहानी ऐसे जीवन की अपनी भरपूर संवेदना बाँटती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चलती है। उक्त कहानियों को **'सेसर कहानियाँ भोजपुरी के'** में देख सकते हैं।

विकास-क्रम में भोजपुरी कहानी-साहित्य में जो विविधता आई है उस पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। लम्बी कहानियों के साथ-साथ भोजपुरी में लघु-कथा जैसी रचनाएँ भी हुई हैं। इस लघु-कथा में छोटे आकार के भीतर ऐसी चुस्ती है कि उस पर अनायास ध्यान आकर्षित हो जाता है। **'खैरा पीपर कबहूँ ना डोले'** (रामवृक्ष राय 'विधुर'), **'बन्द केवाड़ी'** (रामेश्वर प्रसाद सिन्हा), **'करेज के घाव'** (विश्वनाथ श्रीकृष्ण), **'पसेवा के पइसा'** (घनश्याम मिश्र), **'सारंगा'** (पाण्डेय सुरेन्द्र) और **'चरवाही के दाग'** (अरविन्द कुमार) रचनाएँ लघु-कथा के रूप में हैं। इतने पर भी इनमें सघन संवेदनीयता है। जब तक कोई संवेदना नहीं ढाली जाती है तब तक कोई घटना कहानी कैसे हो सकती है ? अब एक तरह की कहानी नयी कहानी के भीतर चल रही है जिसमें घटनाएँ तो नहीं हैं और हैं भी तो बहुत सूक्ष्म और विरल, जिसे अन्तरमुख चिन्तन से लेखक परिपूर्ण कर देते हैं। इस तरह कहानी में कभी ललित निबन्ध की विधा का संक्रमण हो जाता है तो कभी रिपोर्ताज और संस्मरण का। ऐसी निबन्धात्मक कहानियों का रूप **'पगला तिवारी'** और **'भोर ना भइल'** में देखा जा सकता है। **'तरक्की'** कहानी में अकहानी, **'टूटल आदमी'** में समकालीन कहानी, **'एगो अउर अभिमन्यु'** में जनवादी कहानी, **'पहिला पाठ'** में समान्तर कहानी का रूप देखा जा सकता है। **'कोढ़'** में वर्ग-वैषम्य उभर कर सामने आता है। **'मरजादा'** में ऐतिहासिक कहानी का रूप है तो 'वरमाला' में पौराणिक कहानी का। **'देवाल'** प्रतीकात्मक कहानी है। 'मूड़ी गड़ाइले रही', **'सपना टूटी गइल'** और **'भेजल'** में गाँव और नगर का अन्तराल उभर कर आता है। यह आश्चर्य की बात है कि भोजपुरी कहानियों में गाँव की ही पृष्ठभूमि छायी है। हर क्षेत्र में भोजपुरी कहानी हिन्दी कहानी के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलती दिखाई देती है किन्तु इस क्षेत्र में यह उसका साथ नहीं देती है। हिन्दी कहानी में सन् 60 के बाद गाँव जीवन लगभग उखड़ गया और आधुनिक नगरबोध की चकाचौंध छा गयी किन्तु भोजपुरी कहानियों में गाँव की प्रतिष्ठा प्रायः ज्यों-की-त्यों बनी रही।

उपन्यास के क्षेत्र में तो अभी देर है किन्तु भोजपुरी कहानियों के क्षेत्र में उपलब्धियों की चर्चा करना समीचीन है। 'मछरी', 'सुखिया', 'दरबा', 'बड़प्पन', 'सतवन्ती', 'राजपाट', 'भैरवी क साज', 'बाजलि बैरिनि रे बाँसुरिया', 'एगो अउर अभिमन्यु' और 'भुतहा पीपर' कहानियों की उपलब्धियाँ गिनाना आवश्यक है।

अन्त में यह भी आवश्यक लगता है कि भोजपुरी कहानी लेखकों के कुछ मौलिक संग्रहों की व्यवस्थित रूप में चर्चा की जाय। इस रूप में सर्वप्रथम **'जेहल क सनदि'** (1948) की चर्चा की जाय। प्रस्तुत कहानी भोजपुरी कहानी का श्रीगणेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। यह देखकर परम आश्चर्य होता है कि इस नींव जैसे प्रथम संग्रह की तीन विशेषतायें हैं और तीनों में से एक भी बाद वाले संग्रहों में पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित नहीं हो पायी हैं-

(1) एक भी कहानी में आदर्शवाद नहीं है और पूरे संग्रह में यथार्थवाद का तीखा तेवर है।

(2) समग्र कहानियों में भोजपुरी अंचल की कृषि और कृषक संस्कृति, खान-पान, विवाह-बारात, देवी-देवता, रोजी-रोजगार, गाँव, घर, नदी, टोला, ढोर, तीर्थ, पहाड़, भोज-भात आदि का बहुत धैर्यपूर्ण चित्रण है और आंचलिकता रस-गंध से परिपूर्ण है।

(3) समग्र कहानियों में प्रचाररहित साम्यवादी रंग (आज की भाषा का जनवादी) है, शोषण के विरूद्ध शोषित वर्ग की पक्षधरता है। पूँजीवाद और उसके पायक साधु-संत, महन्थ, जमींदार, कांग्रेसी नेता और व्यापारियों पर जमकर प्रहार है और 'कमाने वाला खायेगा' के रंग और नीतियों को प्रतिष्ठित किया गया है। बिहार के ऐतिहासिक किसान आन्दोलन की भरपूर छाप कहानियों पर है।

'जेहल क सनदि' के कथाकार सुमन जी अर्थात् दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती में मूल स्वर विद्रोह है। **'मवनी बाबा'** में साधुता की आड़ में भ्रष्टाचार फैलाने वाले बाबा लोगों का पर्दाफाश हुआ है और ऐसे भ्रष्टाचार के शिकंजे में कसकर नष्ट होते गाँव के शील और सदाचार की पीड़ा को उभारा गया है। **'कतवारू दादा'** में सामाजिक भ्रष्टाचार के विरूद्ध, आवाज बुलन्द हुई है। आश्चर्यचकित कर देनेवाली कहानी **'चउर की पूजा'** है जिसमें एक समय के पापी कहलाने वाले प्रेमी-प्रेमिका बाद में बकलू बाबा और देवकाली सती के नाम से पुजे जाने लगे। इस कहानी को पढ़ने के पश्चात् यशपाल की कहानी 'शिव-पार्वती' का स्मरण हो जाता है, जिसमें प्रेमी-प्रेमिका चित्रकार मन्दिर में एक-दूसरे की मूर्ति बनाकर तथा पापी घोषित होकर प्राणदण्ड पाते हैं और बाद में वे ही मूर्तियाँ शिव-पार्वती के रूप में पूजित होती हैं। कहानी में साम्यवादी दृष्टि से निष्कर्ष निकलता है कि मूर्ति के बहाने आदमी अपनी वासना की पूजा करता है। **'गुलाब'** कहानी में वैयक्तिक यथार्थ है तो **'दफा 302'** पूँजीवादी सभ्यता पर करारा तमाचा है। कीड़े-मकोड़ों जैसे जीवन बिताने वाला रामनाथ नोनिया गरीबी से ऊबकर अपनी पुत्रवधू और नाती की अपने हाथों से हत्या कर देता है। **'कफन'** से अधिक कडुवाहट से युक्त प्रस्तुत कथा के बीच से गुजरने पर प्रतिक्षण पाठकों के हृदय की धड़कनें बढ़ती जाती हैं और भीतर से हिला देने वाली यह विद्रोहधर्मी कहानी एक कठिन चुनौती हो जाती है। अन्तिम कहानी **'कवि कयलास'** शीर्षक कहानी एक सतेज पत्रकार और कर्मठ कार्यकर्त्ता की मौत की कहानी है। वह कविता और मार्क्स-लेनिन के साथ अपने समाचार-पत्र 'किसान' के लिए समर्पित बुद्धिजीवी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवान भूख से तड़प-तड़प कर मरता चित्रांकित हुआ है । उसकी मौत आधुनिक बुद्धिजीवी की तेजस्विता की मौत हो गयी है । पता चला है कि लेखक के उपन्यास **'जिनिगी के टेढ़-मेढ़ राह'** में, जो सन् 1973 में 'भोजपुरी कहानियाँ' में धारावाहिक रूप से छपा और अब पुस्तकाकार रूप में पाठकों के समक्ष आया है, इतिहास, राजनीति, यात्रा, किसान आन्दोलन, गाँधीवाद, पुरातत्त्व, अंग्रेजी-राज, जेल-यात्रा, फरारी, जमीदार युग, संधिकाल की मानसिकता, स्वतन्त्रता संग्राम, आजादहिन्द सेना और सुभाषचन्द्र बोस के संघर्ष आदि सब कुछ उसी धीर-ललित आकर्षक जनवादी शिल्प में चित्रांकित हैं, जिसका परिचय पीछे 'जेहल क सनदि' में मिलता है ।

एक दर्जन से ऊपर कथा-संग्रहों के पश्चात् जो एक बहुत मानक ढंग का संग्रह **'गहरेबाजी'** (ईश्वरचन्द्र सिन्हा) सन् 1971 में छपा उसके अध्ययन से यह पता चलता है कि किसी एक दिशा में नहीं बल्कि विभिन्न दिशाओं के प्रभाव को समेटकर आगे बढ़ने वाली प्रवृति भोजपुरी कहानियों में विकसित हुई है । सिन्हा जी अपनी चौदह कहानियों में आश्चर्यजनक रीति से लोककथा और पौराणिक बोध-कथा से लेकर नयी कहानी और अकहानी तक की प्रवृत्त्यात्मक कथा-यात्रा कर डालते हैं । लेखक की पुस्तक की भूमिका (कथा-यात्रा) में मैंने जो कहानियों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, वह इस रूप में है -

(क) कहानी का आदि रूप

1. लोक-कथा	'बनिया क बेटा'
2. पौराणिक बोध-कथा	'वासना'

(ख) प्रेमचन्द पूर्व

3. सामाजिक नीति-कथा	'गाँव के पैंड़ा में'
4. जासूसी कहानी	'छात्रनेता क हत्या'

(ग) प्रेमचन्द युग

5. आदर्शवादी कहानी	'बहिन क हक'
6. आदर्शोन्मुख यथार्थवादी	'कहाउत पुरान हो गइलि'
7. रोमैन्टिक	'भैरवी क साज'
8. ऐतिहासिक	'अब्दुल हमीद'
9. हास्य-व्यंग्य	'चेयरमैनों क चुनाव'

(घ) प्रेमचन्दोत्तरी कहानी

10. यथार्थवादी	'बासमती चाउर'
11. आंचलिक	'गहरेबाजी'
12. रेखाचित्रात्मक	'पुरुषारथ'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ङ) आधुनिक कहानी

13. नयी कहानी — 'राधा गावत हौ'
14. अकहानी — 'दसखत'

रामवृक्ष राय 'विधुर', तैयब हुसैन 'पीड़ित', कृष्णानन्द कृष्ण और कन्हैया सिंह सदय की कहानियों में लगभग यही स्थिति है। सन् 1970 और सन् 1980 ई० के बीच भोजपुरी कहानी अपना परिनिष्ठित मार्ग बनाने के लिए छटपटाती दिखाई देती है। सन् 1973 में वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय का कहानी-संग्रह **'दरबा'** नाम से प्रकाशित हुआ। ऐसा लगा कि इस संग्रह की सम्पूर्ण कहानियों पर आधुनिकता की छाप स्पष्ट है। लेखक जीवन की गहराई में प्रवेश करने का प्रयास करता है और सामाजिक यथार्थ का धरातल जो उभरता है, बहुत कठोर होता है।

पाण्डेय चन्द्रविनोद के संग्रह में जैसे शिल्पगत कला-धर्मिता केन्द्र में है, वैसे ही प्राध्यापक अचल के कहानी-संग्रह **'माया मिललि न राम'** (77) में वस्तुगत समाज-धर्मिता, घनश्याम मिश्र के संग्रह **'अमरावती'** में भाषा की बनावट, कसावट और अभिव्यक्ति-भंगिमा है।

सन् 1977 में साधारण कहानी शिल्प से हटकर कुछ असाधारण शिल्प का दमदार उद्घाटन हुआ है। हिन्दी के प्रसिद्ध हास्य रस के कवि 'विजय बलियाटिक' (डॉ० विजय नारायण सिंह) की हास्य रस की भोजपुरी कहानियों का संग्रह **'जै जजमान'** और शुकदेव सिंह स्नेही की पन्द्रह हास्य कहानियों का संकलन **'ढिबरी'** प्रकाश में आये। दोनों कथाकार पाठकों को हँसाने में पूर्णरूपेण समर्थ हैं। हास्य-व्यंग की नौ कहानियों का एक संग्रह **'लहर के बोल'** (संपादक -प्रो. ब्रजकिशोर) प्रकाशित हुआ -भोजपुरी साहित्य संस्थान (पटना) से। सभी कहानीकार पाठकों को हँसाने और चोट से तिलमिला देने में समर्थ हैं। इन संग्रहों को देखकर यह आरोप मिथ्या और निराधार है कि भोजपुरी वाले लोग मनहूस हैं और हँसने-हँसाने की कला से रहित हैं।

भोजपुरी के सिद्ध गद्यकार चतुरी चाचा (डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध') का कहानी-संग्रह **'भँइसि के दूध'** सन् 1978 में छपा है। छठें-सातवें दशक में भोजपुरी गद्य को चतुरी चाचा एकनिष्ठ समर्पित भाव से सँवारते रहे। आपका मुख्य क्षेत्र कहानी से पृथक् भोजपुरी गद्य में निबन्ध, ललित निबन्ध, रिपोर्ताज, डायरी, संस्मरण, फीचर और हास्य-रचनाएँ हैं। भोजपुरी भाषा के प्रेमियों को चतुरी चाचा का शिल्प-वैभव और भाषा-प्रयोग आकर्षित करता है।

ब्रजकिशोर दूबे के कहानी-संग्रह **'सकदम'** की कहानियों में वैयक्तिक यथार्थ है। प्रो० ब्रजकिशोर के कहानी-संग्रह **'धुँआ'** में सहजता है। इनकी कहानियों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीसवीं शताब्दी के आदमी के संकट को मुख्य विषय बनाया गया है। लेखक बिना जनवादी हुए रचना में जनवाद को उतार देता है।

कथाकार **अक्षयवर दीक्षित** का संग्रह **'सतहवा'** सन् 1980 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की सातों कहानियों पर गाँधीवाद की स्पष्ट रूप से छाप है। दीक्षित जी कहानी क्षेत्र में प्रेमचन्द को अपना आदर्श मानकर कलम उठाते हैं और परम्परागत पारिवारिक समरसता के आदर्शों को कहानियों में भरपूर निष्ठा के साथ उतारते हैं। सामाजिक और पारिवारिक जीवनमूल्यों के सम्बन्ध में उनकी कथा-दृष्टि आस्थावादी है। आधुनिकता की लहरों के बीच साहित्य-सागर में 'सतहवा' एक साफ-सुथरे गाँधीवादी द्वीप जैसा उतरता हुआ दृष्टिगत होता है।

समर्पित भोजपुरी-सेवी और विशिष्ट शैलीकार **अविनाशचन्द्र विद्यार्थी** की सात कहानियों के संग्रह **'डागा बाजि गइल'** (1988) ने कथा-प्रेमियों को बहुत आश्वस्त किया है। विद्यार्थी जी भोजपुरी गद्य-पद्य की लगभग समस्त विधाओं पर समान अधिकार रखने वाले हैं और सब में स्तरीय साहित्य का सृजन किया है। गंगा की भाँति पवित्र विद्यार्थी जी के विचार, भाव और कथा-धारा में अवगाहन करने वाला साहित्यमर्मज्ञ उनकी मौलिकता का लोहा मानता है। उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व क्या है ? ललित निबन्ध है और इसीलिए अटूट प्रवाह वाली तथा व्यक्तित्व की छाप से रंजित अपनी कहानियों में वे कवित्वमय भावुकता को विसर्जित नहीं कर पाते हैं। अतः चिपकनशील भाषा के योग से निखरी विद्यार्थी जी की कहानियाँ पाठकीय चित्त को बाँधने में पूर्ण समर्थ होती हैं। लोकजीवन और लोक-रंग से पूर्ण 'डागा बाजि गइल' में **'गरमहट'**, **'सुरुता'**, **'भगरू और भाई'** आदि कहानियाँ कहानीपन की कसौटी पर खरी उतरती हैं।

कथाकार पी॰ चन्द्र विनोद के भोजपुरी कहानी-संग्रह **'केरा के टूकी-टूकी पात'** में परम्परा और आधुनिकता की टकराहट में उभरा हुआ कथा-संसार चित्रांकित है। लेखक के प्रथम संग्रह **'हम कुन्ती ना हँईं'** को इस कारण से अत्यधिक ख्याति मिली कि उसमें सहज सामान्य कथ्य के भीतर से जटिल असामान्य व्यंग्य को व्यंजित कर देने वाले शिल्प का सफल प्रयोग लक्षित हुआ और इस शिल्प के और अधिक निखरे प्रयोग के कारण प्रस्तुत संकलन का वजन बढ़ जाता है। लेखक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ललित कला-संकाय में सेवारत है और उसके हाथों में अनगढ़ पत्थरों पर छेनी चलाकर उनके भीतर प्राण फूँकने का जादू है। उन्हीं हाथों में जब खाँटी गँवई रंग में रँगी लेखनी होती है तो वह उसकी उस नागरिक चेतना को अभिव्यक्ति देती है जो आधुनिक राजनीति-धुन्ध-ग्रस्त जीवन के अन्तविरोधों से पनपनाई हुई होती है। इस संकलन की कहानी **'जिन्दा बाघ'** में एक कम्यूनिस्ट नेता के माध्यम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से जो व्यंग्य-बाण छूटता है उसकी चोट सीधे लोकतात्रंतिक व्यवस्था पर पड़ती है । **'सर्वहारा'** में सर्वहारा नेता फूलगेंदा सिंह में जो पूँजी-वादी बड़प्पन निहित है, उसका चित्रण एक तीखा व्यंग्य है और इसी प्रकार **'दलिद्दर ना खेदाई'** में सांस्कृतिक रंग उभाड़कर उसके भीतर से राजनीतिक व्यंग्य का विस्फोट किया गया है । संकलन की सभी नौ कहानियों में कसे हुए मार्मिक व्यंग्य की यही स्थिति है और ये कहानियाँ कथाकार को भोजपुरी कथा-लेखकों की कतार में आगे खड़ा कर देती हैं ।

सन् 1982 से 94 तक की बारह-वर्षीय कालावधि में भोजपुरी में प्रकाशित अच्छे उपन्यासों और कहानी-संग्रहों की संख्या पं॰ गणेश चौबे के सर्वेक्षण के अनुसार लगभग चार दर्जन है । काव्य-पुस्तकों की संख्या इससे बहुत अधिक है । पं॰ चौबे ने सम्पूर्ण भोजपुरी साहित्य की सौ-सवा सौ वर्षीय प्रगति का ऐतिहासिक सर्वेक्षण किया है और इस सम्बन्ध में उनकी एक पुस्तक भी प्रकाशित है । भोजपुरी भाषा की स्थिति देखते हुए प्रतिवर्ष कथा-साहित्य से जुड़ी औसत के रूप में उक्त उपलब्धियों की संख्या का चार होना कम नहीं है । कारण यह है कि भोजपुरी का कलमकार शुद्ध रूप में 'यज्ञ' करता है । वह लिखता है, पैसे खर्च कर छपवाता है और फिर बाँटता है । वह यदि बेचना चाहे तो भोजपुरी का मार्केट कहाँ है ? इतनी 'कड़ेर' (सशक्त) भाषा को मान्यता तो मिली नहीं ! यह तो भोजपुरी वालों की अटूट निष्ठा है कि हर विधा की पुस्तकें छपती हैं, पत्र-पत्रिकायें निकलती हैं और एक उत्साहप्रद वातावरण बना है और बनी हैं विश्व और अखिल भारतीय स्तर की संस्थायें, जो इसकी सार्थक-सेवा में लगी हैं ।

उक्त अवधि के उपन्यासों में **'धूमिल चुनरी'** और **'रावन उवाच'** (गणेशदत्त किरण), **'जिनिगी के राह'** (रामनाथ पाण्डेय), **'खैरात'** (चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह), **'दरद के डहर'** (भगवती प्रसाद द्विवेदी), **'कवाछ'** (नर्मदेश्वर राय), **'राख भउर आग'** और **'करेजा के काँट'** (अरुणमोहन भारवि), **'अछूत'** (सूर्यदेव पाठक पराग), **'परिणाम'** (जगन्नाथ पाण्डेय विधुर), **'सती के सराप'** और **'तोहरे खातिर'** (गणेशदत्त किरण), **'मुण्डदान'** (कमला प्रसाद मिश्र विप्र), **'जहाजी भाई'** (रासबिहारी पाण्डेय), **'कचोट'** (धर्मनाथ तिवारी), **'जगरम'** (राजगुप्त), **'अर्जुन'** (चन्द्रधर पाण्डेय), **'महेन्दर मिसिर'** (रामनाथ पाण्डेय) और **'पपिहरा'** (नगेन्द्र प्रसाद कानू) आदि प्रमुख हैं । इन उपन्यासों में सबसे अधिक ध्यानाकर्षक तथ्य है ऐतिहासिक उपन्यासों के सृजन की गंभीरता । नये दौर के भोजपुरी उपन्यासकारों में डॉ॰ रामदेव शुक्ल ने **'ग्रामदेवता'** प्रस्तुत कर बहुत ख्याति अर्जित की है । रामनाथ पाण्डेय के दो उपन्यास **'इमरितिया काकी'** और **'आधे आध'** प्रकाशित हुए और चर्चा में रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्ध कवि और कथाकार गणेशदत्त किरण के चार उपन्यासों में से **'धूमिल चुनरी'**, **'तोहरे खातिर'** और **'सती के सराप'** ऐतिहासिक हैं तथा **'रावन उवाच'** पौराणिक है । **'सती के सराप'** में शाहजहाँ के कार्यकाल को और **'धूमिल चुनरी'** में शेरशाह सूरी के शासनकाल को पृष्ठभूमि बनाया गया है । **'रावन उवाच'** में जैसा कि नाम से स्पष्ट है आत्मकथात्मक शिल्प में लंकापति रावण के इर्दगिर्द बुनावट डाली गयी है । इसी प्रकार कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के उपन्यास **'मुण्डदान'** में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को पृष्ठभूमि बनाया गया है । यह उपन्यास न केवल आकार-प्रकार में विशाल है अपितु शैली-शिल्प की गहराइयों और ऐतिहासिक तथ्य की प्रामाणिकताओं की दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है । अरुणमोहन भारवि के उपन्यासों में सर्वहारा पक्षधरता का उभार है । शेष उपन्यास प्रायः सामाजिक जीवन की पृष्ठभूमि पर खड़े हैं ।

इस दौर के ध्यानाकर्षक भोजपुरी कहानी-संग्रहों में से **'रेत के समुन्दर'** (उमाकान्त वर्मा), **'लोढ़ा'** (रामजी पाण्डेय अकला), **'जमीन जोहत डेग'** (रामनारायण उपाध्याय), **'खरोंच'** (पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह), **'चहर दिवारी'** (स्वर्ण किरण), **'बड़प्पन'** (चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह), **'मुट्ठीभर माटी'** (नरेन्द्र शास्त्री), **'स्नेह के बन्धन'** (विष्णु कमल डेका), **'प्रतीक्षा'** (अवधेश), **'उरिन'** और **'सोन मछरिया'** (राजगुप्त), **'सही मंजिल'** (चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह), **'वसीयत'** (भोला प्रसाद आग्नेय), और **'साँझ'** (रवीन्द्र रवि) उल्लेखनीय हैं । **'डागा बाजि गइल'** (अविनाश चन्द्र विद्यार्थी), **'केरा के टूकी टूकी पात'** (पी॰ चन्द्र विनोद), और **'सतहवा'** (अक्षयवर दीक्षित) भी इसी अंतिम दौर की उपलब्धियाँ हैं, जिनकी कुछ विस्तृत चर्चा पीछे हो चुकी है ।

'रावन अबहीं मरल नइखें', और **'हादसा'** (कृष्णानन्द कृष्ण) तथा उमाकान्त वर्मा और पी॰ चन्द्र विनोद की कहानियों में शिल्प और कथ्य दोनों ही दृष्टियों से आधुनिकता की मार्मिक छुवन भरपूर है । उमाकान्त वर्मा में वैयक्तिक यथार्थ का धरातल बहुत पुष्ट है । प्रो॰ ब्रजकिशोर, कृष्णानन्द कृष्ण, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, स्वर्ण किरण और भोला प्रसाद आग्नेय में सामाजिक यथार्थ की कसमकस है । कथाकार रामनाथ पाण्डेय के कहानी संकलन **'देश की पुकार पर'** में पिछले सीमायुद्ध को विषयवस्तु के रूप में उठाया गया है । कृष्णानन्द कृष्ण का संकलन **'हादसा'** नये युगीन यथार्थ को शिल्पगत कसावट के साथ बखूबी चित्रित करता है । **ब्रजकिशोर** की कई कहानियों में उग्रवाद, आतंकवाद और अलगाववाद की पृष्ठभूमि में उपजे सामाजिक सरोकारों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों से जनमी जटिलताओं को कथ्य बनाया गया है । सामाजिक समरसता के बाधक तत्त्वों की ओर इंगित करते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवती प्रसाद द्विवेदी और **बरमेश्वर सिंह** जैसे कई कहानीकारों ने कहानियाँ लिखी हैं। भोजपुरी कहानी कथ्य और शिल्प की दृष्टि से निस्सन्देह समय के साथ मँजती-सँवरती जा रही है और उसमें युग के हृदय की धड़कन सुनी जा सकती है।

भोजपुरी कथा-साहित्य के विकास की रूप-रेखा और उसके विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि इसका भविष्य उज्जवल है। इतने पर भी कुछ न्यूनताओं की ओर ध्यान जाना आवश्यक है। मात्र परिवेश अथवा स्थितियों की इकाइयों का वर्णन साहित्य नहीं होता है। भोजपुरी कथा-साहित्य जिये जाते हुए जीवन की सम्पूर्ण स्थितियों को पचा लेने के बाद ही प्रभावशाली साहित्य के रूप में रेखांकित होगा। सम्पूर्ण स्थितियों में गाँव, अंचल, कस्बा, नगर और महा-नगर आदि सब आ जायेगा। अब तक अधिकांश रूप में इसमें ग्रामांचल के इर्द-गिर्द ही अधिकांश बुनावट डाली गयी है। इससे एक लाभ यह हुआ है कि हिन्दी-साहित्य में घुसपैठ किये हुए विदेशी फार्मूले भोजपुरी कथा-साहित्य में प्रायः प्रवेश नहीं पा सके हैं। यहाँ अजनबीपन, व्यर्थताबोध और कामू-सार्त्र के अस्तित्ववादी फार्मूले आधुनिकबोध के नाम पर प्रदूषण नहीं फैला पाये हैं। यहाँ भीड़ में आदमी अभी अकेला नहीं हो पाया है। अभी आदमी आदमी को पहचान रहा है और उसकी परवा कर रहा है। देहवादी फूहड़ विद्रोह यहाँ प्रायः नहीं है और न ही भोजपुरी का कथाकार देश-दुनिया के बिगड़ते इतिहास की पीड़ा से भागकर नारी-शरीर के भूगोल के ही इर्दगिर्द चक्कर करने लगा है।

भोजपुरी कथा-साहित्य सम्प्रति राजनीति से अभी कुछ दूरी बनाकर रहता है। जो कुछ भी राजनीतिक प्रभाव उसमें आ रहा है वह घरेलू प्रभाव से टकराकर छितरा जाता है। इसमें उभरी खेतिहर मानसिकता को जब तक मध्यमवर्गीय मानसिकता झकझोरेगी नहीं और कृषि-संस्कृति के प्रभावों पर जब तक औद्योगिक सभ्यता के प्रभाव प्रभावी नहीं होंगे, तब तक भोजपुरी कथा-साहित्य में क्रांतिकारी चेतना का सम्यक् विकास नहीं होगा। सीधी, सरल, सपाट, बिना गाँठ की और दाव-पेच रहित अभिव्यक्ति निन्दनीय नहीं होती है परन्तु अपेक्षित आकर्षण-गुण से वंचित अवश्य होती है। साहित्य-सृजन एक प्रकार का वक्र-व्यापार है और साहित्यिक घी बिना कला की टेढ़ी अंगुलियों के नहीं निकलता है। भोजपुरी भाषा की असाधारण क्षमता को देखते हुए उसके साहित्य में असामान्य साहित्यिक अभिव्यक्ति और पूर्णरूप से निखरी कला-भंगिमा के विकास की आशा स्वाभाविक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

10 विशिष्ट भोजपुरी कृतिः (1979) घर टोला गाँव

स्वातंत्र्योत्तर लोकतांत्रिक चेतनाके विकास का परिणाम हिन्दी कथा-साहित्य में आंचलिकता की प्रवृत्ति का उदय है। इस लोकोन्मुखी चेतना में पहली बार अत्यन्त रागाकुल मार्मिकता के साथ गांव-घर, टोले-टीले और खेत-खलिहान के साथ सामान्यजन अपनी सम्पूर्ण यथार्थता के साथ उभरे। ऐसा लगा कि स्वतंत्र देश की सरकार विकास योजनाओं को लेकर एक ओर गाँवों को अभूतपूर्व सम्मान देने लगी है और दूसरी ओर इस देश का साहित्यकार भारतीय जीवन के मूल स्रोत और उसकी आत्मा गाँवों तथा अविकसित अंचलों को पूरी हार्दिकता से छू-छूकर उजागर करने लगा है। सन् 50 के बाद और आस-पास **'मैला आंचल'**, **'बलचनमा'** आदि कृतियाँ इसी उत्साह में उछल आयीं। इस आंचलिकता की प्रवृत्ति का अनेकमुखी विकास सघन आंचलिकता के एक सर्वथा नूतन और आकर्षक प्रयोग तक पहुंचा और राही मासूम रजा ने गाजीपुर जिले के अपने पैतृक गाँव गंगौली और अपने परिवार के गांव-घर के लोगों की गाथा को अपनी प्रख्यात कृति **'आधा गाँव'** (सन् 1966) में उपन्यस्त किया। 'आधा गाँव' सचमुच आधे गाँव का ही चित्र है क्योंकि कथाकार ने अपने मुसलिम समाज पर ही कथा को केन्द्रित किया है। उसके 13 वर्ष बाद पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह ने बिहार के सारन जनपद स्थित अपने पूरे शीतलपुर गाँव को, मय पुरजन-परिजन समेत भोजपुरी भाषा में उपन्यस्त कर एक ऐतिहासिक कार्य किया है और उनकी मूल्यावान् कृति **'घर टोला गाँव'** हमारे सामने है।

किसी देश का इतिहास जो वहां के राजा-रानियों, उनकी लड़ाइयों और राजधानियों के परिवर्तनों, आदि का शुष्क विवरण होता है उस देश के वास्तविक जन-जीवन, उसके सुख-दुख और सांस्कृतिक-प्रवाह में उभरते उत्कर्ष-अपकर्ष के बिन्दुओं को प्रकाशित करने में सर्वथा अक्षम होता है। पूरक रूप में यह कार्यभार आ जाता है साहित्य के कन्धे पर। बीसवीं शताब्दी में संसार भरके साहित्य में, विशेष रूप से कथा-साहित्य में लोकोन्मुखी चेतना का विकास हुआ था और ग्रामांचलों के जन-सामान्य के जिये जाते जीवन का ऐतिहासिक सत्य साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। भारत की आत्मा हमारे गाँव है तो यह आत्मसाक्षात्कार की साहित्यिक प्रक्रिया अत्यधिक समादृत हुई है। जीवन के समग्र मूल्यांकन के मानदण्ड का आधार देश की राजधानी और महानगर नहीं, उसका एक सामान्य गाँव हो, यही जनतांत्रिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न्याय है । इसीलिए आंचलिक साहित्य की महत्ता बढ़ जाती है । हिन्दी कथा-साहित्य में स्वराज्य के बाद जो इस प्रवृति का समारोहवत् उभार सन् 50 के पास हुआ, एक दशक तक बना रहा । सन् 60 के बाद का दौर व्यापक मोहभंग का रहा और राजनीतिक दिग्भ्रम के धुंध में अंचल खोने लगे तो कथा-साहित्य में आधुनिकता की प्रवृत्ति लेकर नगरबोध उमड़ आया । गंवई जीवन की चुनौतियां पड़ी रह गयीं । अब इस चुनौती को स्वीकारने के लिए जन-भाषा भोजपुरी का आगे बढ़ आना सहज-स्वाभाविक है ।

आलोच्य भोजपुरी लघु उपन्यास **'घर टोला गाँव'** शाहजहाँ काल से लेकर सन् 25-30 तक की कालावधि में एक गाँव शीतलपुर के बसने, विकसित होने और जीवन की गहमा-गहमी से पूर्ण होने तक का दस्तावेज होने के साथ ही आज के बदलते गाँव-जीवन और उसकी मानसिकता के संदर्भ में अनेक मूल्यवान् संकेत देता है । राजनीतिकि जटिलताएँ, स्वातंत्र्योत्तर भ्रष्टाचार, चुनाव, विकास, आर्थिक दबाव, बेकारी-बेरोजगारी आदि के साथ आधुनिकता के प्रभावों ने परम्परित ग्राम-जीवन, उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक और नैतिक भावना को किस सीमा तक तोड़ा है इसका ठीक-ठीक आकलन करने के लिए 'घर टोला गाँव' को पढ़ा जायेगा । आधुनिक ग्राम-जीवन की अनेक जटिल समस्याओं के उलझे छोरों को सुलझाने के लिए प्रस्तुत उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन उपयोगी सिद्ध हो सकता है क्योंकि पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह का गाँव शीतलपुर हमारे नैतिक-मर्यादित पारिवारिक जीवन के मीठे मुग्धकारी संस्कारों को उत्तेजित करता है ।

मुगल-दरबार से जागीर पाकर सुदूर चिरैयाकोट से पाण्डेय शीतल सिंह और नन्द सिंह बिहार के इस इलाके में शंखपुष्पी नदी के राह से प्रवेश करते हैं और गाँव बसाते हैं । गाँव एक से इक्सीस होता है । पश्चिम पट्टी-पूरब पट्टी में फैलता है । उसमें भयवद्दी का अनुशासन है, बड़े-बूढ़ों का अनुशासन है, समय की लीला का शुद्ध दर्शन है, सम्बन्धों की हार्दिकता और मधुरता है, अंकुठ जीवन की पृष्ठभूमि में मानवीयता है, संयुक्त परिवार का सुख है. रामलीला और ताजिया का उल्लास है, लोग अपने हक-हिस्से से भी निरपेक्ष हैं, सद्भाव और विश्वास है, हठीला नहीं गाँव का नैतिक मन भी काफी लचीला है, लोग नगरों में जीविका के लिए जाते हैं परन्तु छुट्टियों में आने पर वे अपने को अजनबी या कटा नहीं महसूस करते हैं, अदालती कागजात के बस्ते-बेठन से **'सुदामा चरित'** की पाँडुलिपि निकल आती है, मुकदमाबाजी होने पर भी शत्रुता नहीं होती है और शत्रुता होनेपर भी संवाद बना रहता है, शील का सौन्दर्य बना रहता है, भाईचारे में अन्तर नहीं आता है, बड़े-बूढ़े परस्पर मुकद्दमा लड़ते हैं तो उसका किंचित् मात्र भी प्रभाव घर के बच्चों पर नहीं होता है । इस प्रकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सजीव गाँव की एक सुदृढ़ इकाई का अन्त: सौन्दर्य कहीं से खंडित नहीं होता है। बूढ़ों की अकलुष ऊँचाइयों को नयी पीढ़ी छूने का प्रयास करती है। विशेषता यह है कि कथाकार इसे वर्णन-विवरण के रूप में नहीं, रचनात्मक रूप में प्रस्तुत करता है और बाहर से एक परिवार का कुर्सीनामा लगने वाला यह उपन्यास भीतर से ग्राम-जीवन की बढ़न्ती और मधुर अन्त:संघर्ष की दास्तान बन जाता है।

प्रश्न इसके उपन्यास होने का महत्त्वपूर्ण है। इसका नायक अथवा प्रमुख पात्र कौन है तथा क्या कथा-संगठन की एकसूत्रता कायम रहती है ? सच तो यह कि इस आंचलिक शिल्प में शीतलपुर गाँव एक सजीव सत्ता के रूप में चित्रांकित हुआ है और उसके जन्म से लेकर टोलों, पट्टी, गोतियों और घर-हवेलियों के रूप में अपने सारे अंगों को समेट सामूहिक विकास के लिए बढ़ने के चित्र क्रमिक रूप से आते गये हैं। अचेतन को नायकत्व प्रदान करने की हिन्दी में एक परम्परा है। **'बहती गंगा'** और **'बाबा बटेसरनाथ'** प्रमाण हैं। कथाकार शीतलपुर गाँव के जीवन्त महान, उदार, सहिष्णु और विशाल व्यक्तित्व का समाहार उसके आश्रय या शरणदाता व्यक्तित्व के रूप में करता है क्योंकि आरम्भ में ही पड़ोसी अचलगढ़ गाँव से एक विचित्र स्थिति में भागकर मुंशी बलदेव लाल शीतलपुर में कथाकार के पूर्वजों के यहाँ शरण लेते हैं। वे शरणार्थी से सेवक बनकर पुन: स्वामी तुल्य जमींदारी की देखभाल में लग जाते हैं। उनका स्वामित्व, सम्मान और अधिकार उनके पुत्र महेश में स्थानान्तरित हो जाता है और वे महेशचरण के नाम से पूरे उपन्यास में छाये हुए होते हैं तथा इन्हीं का अन्त उपन्यास का अन्त हो जाता है।

इस प्रकार उपन्यास का प्रमुख नायक शीतलपुर गाँव है तो इसमें सेवक की भांति शरण ले स्वामी की भांति राज करने वाले वंशज महेश चाचा उपनायक हैं जो किसी-न-किसी स्तरपर प्राय: घटनाओं को प्रभावित करते हैं। कृति का मुख्य संघर्ष भी इन्हीं से जुड़ा हुआ है। कृतिकार ने बहुत सूझ-बूझ के साथ इस संघर्ष को इसमें डाल छोड़ा है। उपन्यास शिल्प को इससे अनुकूल निखार मिलता है। यह संघर्ष है अधिकार का और इसमें नयी और पुरानी दो पीढ़ियाँ पक्ष और प्रतिपक्ष बनी हुई हैं। पुरानी पीढ़ी के लोग मालिक थे तो मुंशी बलदेव लाल और महेशलाल की निभ गयी किन्तु नयी पीढ़ी के आते ही वे लड़खड़ाकर धराशायी हो गये। यह अधिकारों का संघर्ष बहुत ही मार्मिक है और इसकी रचना में ईमानदार लेखक ने अपने को किंचित् निन्दित स्थान में डालकर भी इसकी सहजता और मार्मिकता की रक्षा की है। महेश चाचा का अन्त उपन्यास का अन्त है, किन्तु यह करुण अन्त नहीं, गाँव के सांस्कृतिक मन के अनुरूप प्रेम-श्रृंगार पूर्ण शान्त अन्त है। उपन्यास का चरमबिन्दु भी महेश चाचा से ही जुड़ा है। शत्रुता की चरम सीमा पर पहुँचकर भी गृहप्रवेश का न्योता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खाने के लिए महेश चाचा कितने आतुर हैं और कथाकार ने पूरी सम्वेदना के साथ यहाँ सम्पूर्ण ग्राम व्यक्तित्व को, उसकी उदारता और महानता को, निष्कपटता और स्नेहशीलता को प्रतिपक्ष महेश चाचा में साकार कर दिया है।

महेश चाचा और युवा जमीन्दार पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह (लेखक) की खटपट, उनका खूबसूरत अन्तर्विरोध, प्रेम की लड़ाई अत्यन्त मनोवैज्ञानिक और दुर्लभ ग्रामरस से ओत-प्रोत हैं। महेश चाचा जो कभी जमींदारी के मालिक थे, फेंक ही नहीं दिये गये, अवमानित भी हुए। उनके उस अपमान की कचोट को चित्रांकित करना सरल नहीं है जिसमें अपमान करने वाले के प्रति हार्दिक प्रेम अब भी भीतर है। महेश चाचा भूकम्प की विपत्ति में बिना बुलाये आकर लेखक के परिवार की रक्षा करते हैं। परन्तु बुलानेपर नहीं आते हैं। वे उसके कल्याणार्थ चुपचाप मनौती-पूजा करते हैं परन्तु प्रकट रूप में अलगाव बनाये रखते हैं। वे बुलाने पर नहीं आते हैं फिर भी न बुलाने की कचोट से तिलमिलाते नजर आते हैं। इन अन्तर्विरोधी स्थितियों के चित्रांकन में कथाकार का उपन्यास-कौशल प्रशंसनीय होता है। उत्तरार्द्ध वाली जीवन की ये यथार्थ और मनोवैज्ञानिक खरोंचें अत्यधिक कलात्मक हैं।

उपन्यास की घटनाएँ वि शृंखलित अथवा स्वतंत्र नहीं हैं बल्कि वे एक दूसरी से जुड़ी हुई गांव की कहानी को आगे बढ़ाती हैं। इन घटनाओं की शाखाएँ आगे-आगे की कथा-भूमियों पर छायी हुई होती हैं। इससे बिखराव कम आया है। हँसी-हँसी में आदित बाबा और पड़ाइन का जो विवाह हो जाता है वह गाँव के चरित्र के महत्वपूर्ण पक्षों को विविध आयामों में प्रकाशित करने वाला सिद्ध होता है। अलगाव, अकेलेपन, और जाति बहिष्कार की पीड़ा से गुजरकर भी आदित बाबा पूर्णत: अकुण्ठ रहते हैं और उनका वास्तविक सम्मान सुरक्षित रहता है। आदित बाबा, बड़का बाबूजी, श्रीपत चाचा और महेश चाच्चा आदि ऊँचे लोग ही नहीं इस पूरे गाँव की कहानी को छोटे-छोटे लोग भी महत्त्वपूर्ण संभाल देते हैं। धनेसर बारी बडे-बूढों की सभा में बेलाग बोलता है। हरूनी प्रत्येक प्रश्न अथवा गाँव की समस्या की व्याख्या अपनी देवी 'सायर मइया' की प्रसन्नता-अप्रसन्नता के सन्दर्भ में करता है। खानसामा भृगुनाथ और इनायत मियाँ जगह-जगह टपक पड़ते हैं। सलार मियाँ बनाम इडिया, मटुकी चौबे बनाम चौबाइन तथा धनेसरा बनाम उसकी आश्रिता नारी ये सबके सब कृति को बड़ों-बूढ़ों की सरदारी को, गाँव के न्याय को चमका देते हैं। घटनाओं के ग्राम समुद्र से इन महत्त्वपूर्ण विविध आयामी कथा द्वीपों का चयन बहुत चुस्त है। पूरे गाँव का चित्रण होने में कुछ कसर न रह जाये इसलिए पूरब पट्टी के अकड़वीर सुलतान बहादुर की एक महत्त्वपूर्ण कहानी लेखक छेड़ देता है। गुलजार बो हलखोरिन और महेन्द्र साह के मुकदमे की कथा अन्त में आती है और इस उपन्यास के भीतर बहुत सुलझे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचार-सूत्रों का छोड़ जाती है।

इस प्रकार **'घर टोला गाँव'** में नाम के अनुरूप गाँव की भाषा में एक गाँव को प्रस्तुत किया गया है। किन्तु ध्यान देने की बात है कि इसका शिल्प नागर है। यह नागर शिल्प काफी चुस्त-दुरूस्त, कटा-छटा, कसा और भद्दगी-भदेस से रहित है। अनावश्यक विवरण विस्तार और भावुकताभरा प्रलाप कहीं नहीं है। इस नागर शिल्प का आभास इसके भाषा-प्रयोग से मिलता है। आजकल भोजपुरी भाषा को तोड़-मरोड़कर गँवारू बोली के रूप में प्रतुत करने की लहर चल पड़ी है। अकारण शब्दों को बिगाड़कर और गंवारू बनाकर पेश करने की इस प्रवृत्ति से उपन्यासकार बचता गया है। उसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों से भड़कने, चौंकने, परहेज करने की प्रवृत्ति नहीं है। वह अवसर के अनुरूप अशक्त, वैतरण, आशीर्वाद,समस्या, गंगाजल, प्रणाम, निश्चिन्त, वैष्णव, वंश, सम्भव, स्वाद, कुत्ता, सन्तान, आशंका, व्याकुल और कल्पना जैसे सैकड़ों शब्दों को शुद्ध रूप में प्रयुक्त करता है। भोजपुरी बनाने की सनक में इनको तोड़ने का अपराध करने से वह बचता है। यह जज्बात, अन्दाज, कब्र, गुस्ताखी, मुश्किल. और दस्तखत जैसे उर्दू शब्दों को भी अवसर रहते अशुद्ध नहीं करता है। इसी प्रकार डिपार्टमेन्ट, एकाउन्ट, हैंडनोट, स्टेशन, एक्सपर्ट, इन्क्रोचमेन्ट, कोर्ट और रजिस्ट्री में भी अनावश्यक अंगभंग की प्रवृत्ति नहीं देखते हैं। किन्तु ऐसा नहीं कि निफिकिर, मउअत, सराध, अनराज, अरदोआय, अस्थिर, अचरज, दउड़ल-परानी, चउका और सनेस जैसे घिसे-टूटे शब्दों की कमी है। भोजपुरी की असली थाती रूप में अछरंग, सरेखल, दोहमच; बेबहरा, बबुनी, घूघ, थथमल, घुसुर-फुसुर, नीमन, लड़कन, निकलुई और सुसुकत जैसे तलवर्ती शब्दों के प्रयोग भरपूर हैं। वास्तव में कृति की भाषा-नीति अत्यन्त सुलझी और परिनिष्ठित है। ऐसा साधु-स्वादवाला महत्त्वपूर्ण लघु आंचलिक उपन्यास भोजपुरी कथा-साहित्य को समृद्ध करता है।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

11 सुन्नर काका : एक भारतीय परम्परा का उल्लास

'गरीबी हटाओ' भारत का आधुनिक राजनीतिक नारा नहीं, वास्तव में यह एक अति प्राचीन, परम्परागत सांस्कृतिक नारा है जिसके संकल्प को अनादिकाल से प्रतिवर्ष दीपों के त्योहार से जनमानस को जगमग करने के पश्चात् देश की जनता संस्कारवत् दुहराती है और इस प्रकार यह स्वतः स्फूर्त कार्यक्रम पवित्रमन और निरालस भाव से अद्यावधि निर्वाध रूप से सम्पन्न होता चला आ रहा है। अन्तर केवल इतना ही है कि गरीबी की जगह दरिद्रता शब्द का प्रयोग होता है, दरिद्रता हटाओ ! दरिद्रता हटाओ !! किन्तु यह सांस्कृतिक नारा नये राजनीतिक नारे की भांति मात्र निषेधात्मक नहीं है, इसके पूर्व स्वीकारपरक अथवा रचनात्मक सम्पूर्ण संकल्प है, 'ईश्वर का प्रवेश हो !' वास्तव में केवल गरीबी या दरिद्रता के हटाने का नारा अत्यन्त खोखला, प्रभावहीन, अधूरा और निष्क्रिय निराधार है वांछित वस्तु की प्रतिष्ठा के बिना अवांछित को हटाया कैसे जा सकता है ? प्रकाश के आये बिना अंधकार को हटाया कैसे जा सकता है ? इस दृष्टि से हमारा यह दीपावली के प्रभात वाला उदात्त संकल्प कि ईश्वर का प्रवेश हो और दरिद्रता हटे राष्ट्रीयस्तर का लोकमंगलकारी रचनात्मक संकल्प है और इस पूरे कार्यक्रम से सांस्कृतिक स्वरूप में आधुनिक ग्रामीण भारती के दारिद्रयतमस को हटाने के पूर्व प्रकाश स्वरूप ईश्वर के प्रवेश का समायोजन है। समकालीन संदर्भ में हमारी इस सांस्कृतिक दृष्टि की आर्थिक व्याख्या होनी चाहिए।

ऐसी ही एक ध्यानाकर्षक व्याख्या सृजनात्मक स्तर पर **प्राध्यापक 'अचल'** ने की है। उनके प्रथम भोजपुरी उपन्यास **'सुन्नर काका'** का केन्द्रीय विचार-बिम्ब गांवों से दरिद्रता हटाने से संदर्भित है। उपन्यास का आरंभ होली से होता है और अन्त दीवाली से। दीया-दीयारी के भिनसहरा बिरजनपुर की औरतें सूप-दउरी बजा-बजाकर दरिद्रता को खदेड़ती दृष्टिगोचर होती हैं। उनका संकल्प है **'ईस्सर पइठसु दलिदर निकलसु, मुहादुआरे परमेसर बइठसु।'** बिरजनपुर गाँव गरीब ग्रामीण भारत का प्रतिनिधि है जिसमें कलाकार ने 'सुन्नर काका' का प्रवेश ईश्वर की भांति कराया है और ईश्वर की कृपा से गाँव उत्तरोत्तर बाधाओं पर विजय प्राप्त करता एक दिन सुन्नर काका की छाया में सुखशांति का अनुभव करता चित्रांकित हुआ है।

श्री विन्ध्याचल राय 'अचल' के उपन्यास **'सुन्नर काका'** का पाठक होली के गाते-बजाते जुलूस के साथ प्रस्तुत कृति में प्रवेश करता है। काका और सहुआइन की रोमांस झांकी का जायजा लेता है। परन्तु उसे जल्दी ही अनुभव होता है कि एक हलके भूकम्प से बिरजनपुर की धरती हिल रही है। अल्हड़- अलमस्त और एकाकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काका ने न जाने कहां से एक अत्यन्त सुन्दर-सुशील काकी को उड़ा लाया है। अब पाठक को लगता है, यह आदमी कैड़े का और बहुत दमदार है। गाँव के नैतिक मन में खलबली मची है। यह विवाह है कि परम्परा-विद्रोह ? किन्तु गाँव में अच्छे भले लोगों की भी एक कतार है जो तय करती है कि वह कुजात के सवाल को नहीं उठायेगी। उनकी दृष्टि में काका-काकी बहुत सही आदमी हैं। फिर भी काका के पुत्रोत्सव भोज पर सवाल खानदान का उठ ही जाता है। मुख्य विरोधी हैं दो सम्पन्न किसान चौधरी दादा और पियारे बाबू। पर गाँव के सम्पत्तिशाली साहु, साठवर्षीय मतनू साहु का काका पर वरद हस्त है। बावजूद दो समर्थ विरोधियों के सारा गाँव एक पंगत पर खाता है। काका का भोज गाँव की एकता के संदर्भ में एक चमत्कार होता है और उसमें से जो काका का नया व्यक्तित्व उभरता है वह गाँव की भावी सुख-शांति के लिए अनिवार्य प्रतीत होने लगता है। इस प्रकार काका को एक जगह प्रतिष्ठित कर कथाकार पाठकों से अपनी काकी का परिचय कराता है। पुत्रजन्म के आनन्द-मंगल की बेला में नेग-जोग प्राप्त करने वाले ब्राह्मण, नाई, महरिन और भाटिन आदि के बीच आंगन में घिरी काकी सनातन भारतीय नारी के पवित्र सांस्कृतिक चित्र की भांति अंकित की जाती है। फिर कुछ संयोग ऐसा जुटता है कि गाँव के मुखिया-चौधरीगण अपनी पगड़ी काका के चरणों पर रख देते हैं। काका गांव के मुखिया बना दिये जाते हैं। अपूछ अनाम काका के माध्यम से जब कि उनके सिर पर सम्पूर्ण गाँव का कुशल क्षेम है, लेखक एक प्रश्न बहुत जोर-शोर से उठवाता है कि गाँव से दरिद्रता कैसे जायेगी ? फिर इस समस्यात्मक पहलू के उभरते ही कृति में बहुत गति आ जाती है ! गाँव का केन्द्र मजबूत है तो परिधियों पर उठने वाले अस्थायी विरोधी बुलबुले बहुत जल्द शान्त हो जाते हैं और ईश्वर की कृपा से निर्विघ्न पूरे गाँव के उत्थान की योजना स्वयं ग्रामवासियों के हार्दिक सहयोग से सफल होती है।

कृति की इस कथावस्तु से स्पष्ट है कि वह उपन्यास की आधुनिक शिल्प भंगिमा से सर्वथा स्वच्छन्द है। आरम्भ, मध्य और अन्त की प्रचलित सस्पैंस क्रियेशन वाली तकनीक, अन्तर्द्वन्द्व, केन्द्रवर्ती संघर्ष, प्रभावान्विति, मध्य का कथात्मक तनाव, चरमविन्दु, सृजन, मूल्य संघर्ष, कथानक संगठन, आरोह-अवरोह, घटनाओं की एकान्विति, कथात्मक फैलाव और सामाजिक जीवन का बहुआयामी चित्रांकन आदि की तनिक भी परवा कृतिकार को नहीं है। परम्परागत उपन्यास शिल्प की उक्त कतिपय पहचान के अतिरिक्त 'सुन्नर काका' में नये उपन्यासों का बिखराव, विद्रोह, अन्तर्मुखता, आधुनिकता, वैयक्तिकता और प्रयोगवृति का भी आग्रह नहीं है। हां, आंचलिकता अवश्य है, परन्तु वह भी स्वातंत्र्योत्तर आंचलिक उपन्यासों के फार्मूलों से सर्वथा भिन्न प्रकार की है। प्रश्न है कि तब वह क्या है जिसे लेकर इस रचना की औपन्यासिकता को परिभाषित और रेखांकित किया जा सकता है ?

ऐसा लगता है कि अनजाने **'अचल'** जी से एक बहुत बड़ा काम हो गया है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और वह है भारतीय कथा साहित्य की मौलिक परम्परा का उद्घाटन। इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि जिसे आज हम उपन्यास के नाम से जानते हैं उसका समूचा प्रचलित और स्वीकृत ढाँचा अंग्रेजी साहित्य का है। खड़ी बोली के गद्यसाहित्य में भारतीय कथा-साहित्य का जो प्रारंभिक विकास हुआ उसकी अपनी परम्परा कुछ और ही भांति की थी तथा उसकी शैली अंग्रेजी ढंग के उपन्यासों से सर्वथा भिन्न थी। सन् 1800 ई० के आसपास ईशाअल्ला खां ने **'रानी केतकी की कहानी'** लिखी। खड़ी बोली हिन्दी के कथा साहित्य में यह पहला मौलिक उछाल है परन्तु हिन्दी के पहले उपन्यास के रूप में अधिकांश लोग गौरीदत्त कृत **'देवरानी जेठानी की कहानी'** (सन् 1870 ई०) की स्वीकृति देते हैं। इसके पश्चात् श्रद्धाराम फुल्लौरी की **'भाग्यवती'** (1877 ई०), भुवनेवर मिश्र की **'घराऊ घटना'** (1893) जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी की **'बसन्त मालती'** (1899), हरिऔघ की **'अधखिला फूल'** (1907), रामचीज सिंह की **'बन बिहंगिनी'** (1909) मन्नन द्विवेदी की **'रामलाल'** (1914) और आचार्य शिवपूजन सहाय की **'देहाती दुनिया'** (1926) नामक कृतियों में कथा साहित्य की मौलिक भारतीय परम्परा का दर्शन होता है। वस्तु की दृष्टि से आंचलिकता और शिल्प की दृष्टि से सरल सपाट विन्यास इन कृतियों की विशेषतायें हैं। इस कड़ी की अंतिम पुस्तक आचार्य शिवपूजन सहाय की 'देहाती दुनिया' है जिसमें बिहार के एक गांव के ईर्द-गिर्द सघन आंचलिक बुनावट डाली गयी है। इसी प्रकार 'बसन्त मालती' में मुंगेर जिले का एक गांव, 'अधखिला फूल' में गोरखपुर जिले का एक गाँव, 'बन बिहंगिनी' में संथाल परगना और 'रामलाल' में गोरखपुर जिले का एक गांव केन्द्र में है। इनमें गाँव के विभिन्न वर्ग के लोग, उनके रीति-रिवाज, ऋतुरंगीनी, सांस्कृतिक आचार और लोकजीवन की तलवर्ती पकड़ है। इसी मौलिक परम्परा में जो सन् 1926 बे बाद रूद्ध हो गयी 'अचल' जी का प्रस्तुत उपन्यास गाजीपुर जिले के एक गांव की आंचलिक छवि लेकर एक सशक्त कड़ी के रूप में उभरा है।

उक्त भारतीय कथा साहित्य की मौलिक शिल्प धारा के समानान्तर ही अंग्रेजी ढंग के हिन्दी उपन्यासों की परम्परा भी चलती रही। जिसकी शुरूआत लाला श्रीनिवास दास की कृति **'परीक्षागुरू'** से मानते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी काल में प्राचीनता और आधुनिकता दोनों को ही पुरस्कृत किया जाता रहा। इसीलिए उपन्यास-साहित्य के विकास की दोनों धारायें, भारतीय कथा-साहित्य की परम्परा से विकसित उपन्यास और अंग्रेजी उपन्यास साहित्य और उसके शिल्प के प्रभाव से विकसित उपन्यास चलते रहे। द्विवेदी काल के बाद हिन्दी-उपन्यास में अंग्रेजी शैली की पूर्ण प्रतिष्ठा दृष्टिगोचर होती है इसीलिए **'देहाती दुनिया'** जैसी मौलिक स्वाद की उत्कृष्ट कृति का फिर कभी दर्शन नहीं होता है। यह विचित्र बात है कि बावन वर्ष बाद उसका स्वाद फिर हिन्दी में उभरा तो वह भोजपुरी के माध्यम से, **'सुन्नर काका'** में। दोनों ही पुस्तकों में भोजपुरी संस्कृति और उसके विशिष्ट लोकजीवन को बिहार और उत्तर प्रदेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के एक-एक गांवों के विविध सामाजिक चित्रों में प्रस्तुत किया गया है । 'देहाती दुनिया' का आंचलिक रंग कुछ अधिक गाढ़ा है । आचार्य जी ने इसमें खड़ी बोली हिन्दी के ठेठ रूप पर बेजोड़ प्रयोग किया है । भाषा को रसात्मक रूप देने के साथ ही उसे जनसामान्य से जोड़ने का उनका यह प्रयास स्तुत्य है । उस युग में **'हरिऔध'** जी ने भी **'ठेठ हिन्दी'** के ठाट को उजागर करने का प्रयास किया था । इधर भोजपुरी हिन्दी के माध्यम से भाषा को सीधे जनसुलभ बनाने की साधना चल रही है । 'सुन्नर काका' में भाषा की इसी साधना के साथ स्थानीय रंग में डूबी सामाजिक दृष्टि है । भोजपुरी-साहित्य का इधर जो द्रुतगति से विकास हो रहा है उसमें एक बात यह लक्ष्य करने वाली है कि वह प्रायः पुरानी परम्परा से जुड़कर सामने आता है । कुलदीप नारायण **'झड़प'** के निबन्धों का एक मूल्यवान संकलन **'बात क बात'** सामने आया तो ऐसा लगा कि भारतेन्दुकालीन जिन्दादिली और व्यंग्य-विनोद की भूली बिसरी कड़ियां अपनी सम्पूर्ण जीवन्तता के साथ जुड़ गयीं । 'अचल' जी का यह उपन्यास प्रकाशित हुआ तो वह सीधे द्विवेदी काल से जुड़ता है । समकालीन सृजनात्मक साहित्य में बनकर आयी इस भोजपुरी साहित्य की परम्परावादी मानसिकता का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण होना चाहिए । जिये जाते जीवन में भोजपुरी प्रदेश अपनी विद्रोहधर्मिता के लिए जहाँ प्रख्यात है वहाँ उसके साहित्य में उभरती आई परम्परावादिता का क्या रहस्य है ?

'अचल' जी की कृति **'सुन्नर काका'** को देखकर सर्वप्रथम हरि मोहन झा की कृति **'खट्टर काका'** की याद आ जाती है । मगर झा जी लोकभाषा मैथिली के सिद्ध हास्य-व्यंग्य लेखक और स्थापित शैलीकार हैं और 'अचल' जी जनभाषा भोजपुरी के अनुभवसिद्ध उभरते कथाकार हैं । एक भोजपुरी कहानी संग्रह **'माया मिललि न राम'** के बाद उनकी यह दूसरी भोजपुरी उपन्यास रचना सामने आयी है । अपनी कहानियों में उनकी सम्पूर्ण दृष्टि सामाजिक है और यही सामाजिकता का भाव उपन्यास में भी केन्द्रीभूत है । समाज़ को बदलने का कार्य सुन्नर काका के हाथों सम्पन्न होता है । कथाकार उन्हें एक रेखाचित्र की भांति प्रस्तुत करता है । पृथक्-पृथक् किंचित् स्वतंत्र स्वाद वाले मनोरंजक अध्यायों में काका के व्यक्तित्व को उत्तरोत्तर विकासनशील विशेषताओं की रेखायें खुलती जाती हैं और अन्त में एक पूर्ण चित्र सामने आ जाता है । यह चित्र आदि से अन्त तक आस्था में डूबा है और इस अनास्थावादी दौर में असहज भी लग सकता है । इस विघटन और बिखराव की प्रवृतियों वाले घोर गिरावट के युग में काका का गाँव में अवतरण, उनकी गाँव के दकियानूसों पर निर्विघ्न विजय, विवाद निपटारा, साहु की सत्यवादिता और उदारता, मौज की सफलता, मुखियागिरि की प्राप्ति, गाँव से दरिद्रता हटाने की समस्या हल होने की सफलता और गाँव में आनन्द मंगल की स्थिति सहज रूप में आ जाना सब कुछ असहज लग सकता है । आदर्श काका की छाया में आदर्श लोग उभर आते हैं, आदर्श गाँव उभर आता है तथा आदर्शवादी भाईचारा और सहयोग सेवा की भावना उमड़ आती है । सर्वत्र ईश्वर की कृपा से संयोग जुटता जाता है । कोई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रश्न, कोई संघर्ष-टकराव, कोई समस्या नहीं होती है और वैचारिक तथा मूल्यगत संघर्षों के चक्कर में भी लेखक नहीं पड़ता है। समय-समय पर वह रैदास की कहानी, महाभारत की कहानी या लोककथाओं के आदर्शवादी माध्यमों से स्थितियों का विश्लेषण-समर्थन कर आगे बढ़ जाता है। वास्तव में इस आदर्शवादी अथवा आस्थामूलक शिल्प की एकहरी, अजटिल, सपाट, सीधी और सरल सहज भंगिमा को आधुनिक लेखन से पृथक कर ही मूल्यांकित किया जाना उचित है। भोजपुरी-साहित्य की यह प्रारंभिक कथात्मक उठान प्रगति के दौर में छलांग लगाने के पूर्व परम्परा को प्रतिष्ठित करने की ईमानदारी निभा रही है।

अपनी उक्त बात के समर्थन में मैं भोजपुरी के एक दर्जन प्रमुख उपन्यासों के नाम पेश करना चाहूँगा। **'डंहकति पुरवइया'** और **'परशुराम'** (अरुण मोहन भारवि) **'जीअनसाह'** (राम नगीना सिंह), **बिंदिया** (रामनाथ पाण्डेय), **'सेमर के फूल,** (सलिल), **'रहनिदार बेटी'** (सुन्दर), **एगो सुबह, एगो सांझि** (विजेन्द्र अनिल), **'थरूहट के बउआ और बहुरिया'** (राम प्रसाद राय), **'गांव के माटी'** (बालेश्वर राम) **'भगजोगनी'** (अंगद मिश्र), **'ऊसर के फूल'** (नरेन्द्र शास्त्री) और **'फुलसुंघी'** (पाण्डेय कपिल) इनमें से प्रायः समस्त रचनायें आदर्शमूलक हैं और कुछ में तो आदर्शवाद इस बचकानी कोटि तक पहुंचा हुआ है कि हास्यास्पद हो गया है। भोजपुरी उपन्यासों के सर्वोच्च शिखर के रूप में उठी रचना **'फुलसुंघी'** में इतिहास, लोककथा, गीत और आंचलिकता की प्रेम और संगीत में डूबी छूअन बेजोड़ है तथा उपन्यास के परिनिष्ठित कसे ढांचे की सफलता आश्चर्यकारी है पर कुछ ऐसी ही विस्मयकारी पकड़ भाषिक संरचना के संदर्भ में आलोच्य कृति **सुन्नर काका** में भी दृष्टिगोचर होती है। वास्तव में 'अचल' जी की भाषा की बनावट भोजपुरी-रस निचुड़ता नहीं छलकता दृष्टिगोचर होता है। 'मुंह चौंधाये लागत' 'चाह-चूह लेत', 'नोंना के कहलसि' 'भिरिंगा डाले' 'जिलखिला जमल', 'समगरदा बनवा दीहल' और 'भोंचाड़ परोसवइया' जैसे प्रयोग यथास्थान तलवर्ती भाषा के स्वाद गंध से बहुत परितृप्त करते हैं। भाषा की रूपवादी रचना में भी 'अचल' जी कुशल हैं। 'साहु के दुआर पर कूल्हि चउधरी ग्रह नियर छा गइलन । तीन बजत-बजत ओहिजा अदमिन क तरई छवा गइलि। राहु-सनीचर नियर सबका निगाह में दादा आ पिआरे बाबू खटकत रहलन।' जैसे साफ अलंकार-प्रयोग हैं तो कहीं-कहीं प्रभावशाली बिम्ब रचना में भी वे सफल हैं। 'एगो लइकाह सदस्य आवाज घींचि के मुंह झटकरलन आ डाली में ले जनेरा का टटका सोन्ह लावा नियर प्रसंग सभका मन का झोरी में भरि गइल।' जैसे प्रयोग गहरी तृप्ति प्रदान करते हैं। शीर्षकों में लोकगीत की कड़ियाँ, मुहावरे, कहावतें, प्रतीक, मिथक और व्यंग्य जो टंके हैं कृति के सौन्दर्य को और बढ़ा देते हैं। यह भाषा का सौन्दर्य इतना आकर्षक है कि शिल्प की सपाट बयानी वाली न्यूनता दब जाती है और इस रेखाचित्रात्मक आदार्शवादी भोजपुरी उपन्यास की यही महत्वपूर्ण उपलब्धि है। ✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12 एक मानक कहानी संग्रह : 'गहरेबाजी'

श्री ईश्वरचन्द्र सिन्हा की कथा-कृति के सन्दर्भ में कुछ लिखना मेरे लिए भारी संकट की स्थिति है। एक तो सिन्हा जी के प्रति मेरे मन में गुरुजनोचित श्रद्धाभाव है। दूसरे, वे समर्पित जीवन पत्रकार होकर भी अच्छी खासी कहानियाँ लिख गये हैं और तीसरे, कृति उस भोजपुरी हिन्दी में है जिसकी स्थिति सत्तारूढ़ हिन्दी के आगे परिगणित अथवा अनुसूचित जैसी है। अब्वल संकट से भूमिका की जगह कथा-यात्रा लिख कर बच निकलना चाहता हूँ। सिन्हा जी की कथाओं के साथ यात्रा बहुत सुखद है। उन्होंने आश्चर्यजनक रीति से कुल चौदह कहानियों के लघु संग्रह में लोक कथा और पौराणिक बोध-कथा से लेकर नयी कहानी और अकहानी तक की सम्पूर्ण ऐतिहासिक और प्रवृत्यात्मक सृजन शिल्प-यात्रा करा दी है। यात्रा के पड़ावों की रंगारंग झांकियों का जुलूस बहुत आकर्षक है। किसी कथा-झांकी के शिल्प को दुहराया नहीं गया है। समय की करवट के साथ बदलती हिन्दी कथा-धारा की पकड़ और उसके परिवर्तित विषय-वस्तु की पहचान कृतियों में स्पष्ट है। इतनी विविधता क्या सायास जुटाई है ? एक लम्बे अन्तराल के भीतर समय-समय पर लिखी इन कहानियों में संयोगवश ऐसा वैविध्य और सम्पूर्ण कथा साहित्य की परिचायक प्रवृतियों का रूप-उभार आ गया है। संगृहीत कहानियों का वर्त्तमान क्रम तो रचनाक्रम है अत: इसे सदोष कहने का प्रश्न ही नहीं, परन्तु ऊपर जिस तथ्य की ओर संकेत किया गया है उसे स्पष्ट करने के लिए निम्नांकित नये क्रम पर ध्यान आकृष्ट कराना चाहूँगा।

(क) कहानी का आदिरूप :

1. लोक कथा – बनिया क बेटा
2. पौराणिक बोधकथा – वासना

(ख) प्रेमचन्द पूर्व :

3. सामाजिक नीति कथा – गाँव के पैडा में
4. जासूसी कहानी – छात्र नेता क हत्या

(ग) प्रेमचन्द युग :

5. आदर्शवादी कहानी – बहिन क हक
6. आदर्शोन्मुख यथार्थवादी – कहाउत पुरान हो गइल
7. रोमैन्टिक – भैरवी क साज
8. ऐतिहासिक – अब्दुल हमीद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

9. हास्य--व्यंग्य — चेयरमैनी क चुनाव

(घ) प्रेमचन्दोत्तर कहानी :

10. यथार्थवादी — बासमती चाउर
11. आंचलिक — गहरेबाजी
12. रेखा चित्रात्मक — पुरूसारथ

(ङ) आधुनिक कहानी :

13. नयी कहानी — राधा गावत हौ
14. अकहानी — दसखत

कहानी के आदि रूप को यदि छोड़ दिया जाय तो शेष हिन्दी कहानी के विकास के चार युगों की प्राय: समस्त प्रमुख प्रवृतियों से जुड़ी रचनाओं का ऐसा संतुलित न्यास है कि लगता है, बहुत सुविचारित और आयोजित ढंग से यह कार्य हुआ है, जब कि ऐसा है नहीं। सिन्हा जी की पहली कहानी जिसकी रचना के बाद उनकी ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित हुआ **'गहरेबाजी'** है, जो 'भोजपुरी कहानियाँ', में नवम्बर 1964 में प्रकाशित हुई और इसके बाद पाठकों की मांग पर उक्त पत्रिका में वे समय-समय पर बराबर लिखते रहे। वास्तव में अनायासागत यह कथा-यात्रा-क्रम न केवल इस कृति की महत्वपूर्ण उपलब्धि है अपितु भोजपुरी हिन्दी की क्षमता और छलांग का परिचायक भी है। कहानी का इतिहास जहाँ सहस्राब्दियों का है वहाँ खड़ी बोली हिन्दी-कहानी तो अभी पिछले दो-तीन दशक से राह बना रही है। स्वामी विमलानन्द सरस्वती की कहानी 'जेहल क सनदि' से भोजपुरी हिन्दी की कहानी का व्यवस्थित इतिहास शुरू होता है। कमला प्रसाद विप्र, मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध', अरुण मोहन भारवि, गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश', ऋषीश्वर, कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य', विजय बलियाटिक, रसिकबिहारी ओझा 'निर्भिक', लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी और रामवृक्ष राय, रामनाथ पाण्डेय, जगन्नाथ, उमाकान्त वर्मा, जगदम्बा आदि लेखकों ने इसे गतिवान किया है। भोजपुरी हिन्दी के इन कहानी--लेखकों के बीच सिन्हा जी आये नहीं, 'फट पड़े' हैं, ऐसा लगता है। वास्तव में उनका क्षेत्र दूसरा है। सृजनात्मक कृतित्व के अन्तर्गत हिन्दी में सफल फीचर--लेखक के रूप में उन्होंने ख्याति अर्जित की है।

सन् 1962 में ज्ञानमण्डल से एक **जन भावनायें** नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें तत्कालीन भारत-चीन-युद्ध के सन्दर्भ में लिखे सिन्हा जी के विविध फीचरों का संकलन है। वास्तव में 'आज' (वाराणसी) में उक्त शीर्षक के स्तम्भ में वे 2 नवम्बर सन् 1962 से दिसम्बर सन् 1963 तक जबकि लोहा गरम रहा, नित्य लिखते रहे। बाद में वही सब पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। युद्ध-काल की मन:स्थिति और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनमानस की वैचारिक यात्रा की इन फीचरों में गहरी और सूक्ष्म पकड़ है । शुष्क समाचारों को संवेदनशील कोणों से उठाकर उन्होंने सृजनात्मक मूल्यों से जोड़ा है । पत्रकार की दृष्टि और कथाकार की सृजन-चेतना लेकर सिन्हा जी ने फीचर लेखन में सफलता तो पायी परन्तु कहानी-लेखन की अपेक्षायें कुछ और थीं । इस कूचे में आकर पत्रकार को पूरी तरह विसर्जित हो जाना था । यही हुआ भी । कुल चौदह कहानियों में एक भी फीचर नहीं है ।

नयी कहानी ने इधर अपनी सीमा का अत्यधिक विस्तार कर लिया है और फीचर, स्केच, रिपोर्ताज तथा ललित निबन्धादि की सीमाओं में उसकी निर्बाध घुसपैठ चल रही है । सिन्हा जी फीचर से जुड़े कहानी दे सकते हैं परन्तु ऐसा नहीं होता है । सच तो यह है कि कहानी लिखते समय वे पत्रकार एकदम नहीं रह जाते हैं । लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि कहानी के शुद्ध साहित्यिक मानदण्डों, उसकी शास्त्रीय विधाओं तथा नवीनतम प्रक्रियाओं से परिचित वे परिनिष्ठित कहानीकार रह जाते हैं । कहानी की टेकनिक, शिल्प-भंगिमा और उसके चालू फैशन या फार्मूलों आदि की प्रयोगात्मक सूक्ष्मताओं की उन्हें एक सीमा तक ही अपेक्षा होती है और इसका एक सुन्दर परिणाम उनकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है । लगता है, कथा-चेतना स्वयं राह बना रही है । वह राह कुछ अनगढ़ होकर भी अत्यन्त सहजाकर्षक है । कहानियाँ बहुत सपाट हैं । तब भी गहरी सूझ और चुस्त पकड़ के कारण कहीं कुछ खटकता नहीं है । कहीं व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ बन कर आ जाता है तब भी रचना की इकाई का कसाव बना रहता है । बराबर एक परिपक्व सिद्ध और व्यावहारिक जीवन का जिन्दा किस्सा जो पाठकों के अवधान को समेटे रहता है । आकर्षण में भोजपुरी हिन्दी के काशिका रूप की न्यारी मिठास और मस्ती भी कुछ अतिरिक्त बढ़ोत्तरी कर देती है ।

खड़ी बोली हिन्दी के अभ्यस्त पाठकों को अक्सर शिकायत होती है कि भोजपुरी हिन्दी पढ़ने में अटपटी लगती है और जल्दी ही थक कर ऊब जाते हैं । शिकायत निराधार नहीं है । भोजपुरी-हिन्दी का लेखक जब उसे गढ़ने लगता है तो उसका सहज प्रवाह आहत हो जाता है । इस भाषा के रूपों और प्रयोगों में विविधता होने के कारण उसके सहज प्रवाह की पकड़ सरल कार्य नहीं है । खड़ीबोली हिन्दी की मानसिकता और पड़ने वाली छाया उसे और असहज बना देती है । समर्थ भोजपुरी हिन्दी के लेखक भी कभी-कभी इस चक्कर में दुरूह हो जाते हैं । भोजपुरी भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से खड़ीबोली से अधिक सक्षम भाषा है । जब उसे पिछलगू या खड़ीबोली से नियंत्रित करने का प्रयास होता है तब उसमें जो कृत्रिमता आती है उसके रहते पाठकों के खटक का कोई जबाब नहीं है । ऐसे असन्तुष्ट पाठकों से एक बार श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईश्वरचन्द्र सिन्हा की बनारसी पगी भोजपुरी हिन्दी भाषा का स्वाद लेने का निवेदन किया जाएगा। विशेषकर **'गहरेबाजी'** व **'भैरवी क साज'** शीर्षक कहानियों की भाषा। इन कहानियों में उतरते ही भाषागत सहजता अपने झोक में इस प्रकार ले लेती है कि खड़ीबोली और भोजपुरी का अन्तराल स्मरण भी नहीं रह जाता है और जब स्मरण होता है तो आश्चर्य होता है। वास्तव में यह आश्चर्य की ही बात है कि भोजपुरी हिन्दी के प्रति एक मिथ्या हीनता की भावना बद्धमूल हो गयी है।

भोजपुरी हीन क्यों ? सिद्ध, सन्त, भक्त और लोक-कवियों की वाणी का जिससे शृंगार हुआ वह 'भारत के सत्रह जिलों के साढ़े सात करोड़ लोगों की पूर्ण सक्षम और सशक्त भाषा अन्तरप्रान्तीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय भाषा जिसे बिहार विश्वविद्यालय ने अध्ययन के लिए अपने पाठ्क्रम में रखा, सचमुच हीन क्यों ? क्या इसका एकमात्र कारण यह है कि इसे सरकार या अर्ध सरकारी मान्यता प्राप्त नहीं है । मेरे विचार से उसे महान प्रतिभाओं और श्रेष्ठ सर्जनात्मक कृतियों की अपेक्षा है । बुरा हो उस राजनीतिक दृष्टि का जिसके चलते जाने कैसे भोजपुरी का नाम लेते ही विघटनवादी गन्ध पाकर लोग बिदकने लगते हैं। भोजपुरी के विकास से राष्ट्रभाषा हिन्दी का ह्रास कैसे होगा ? जिसे हम हिन्दी भाषा कहते हैं वह भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से क्या है ? क्या वह पाँच उप भाषाओं, कई विभाषाओं और भोजपुरी सहित लगभग बीस व्यापक बोलियों के समुच्चय का नाम नहीं है ? उसका आधार यदि राजनीतिक है तो वह परम मिथ्या है। साहित्य उसकी परवाह नहीं करेगा। भोजपुरी हिन्दी अपनी प्राणशक्ति और निहित ऊर्जा के बल पर आगे बढ़ेगी और ऊपर उठेगी। गद्य की नवीनतम विधाओं में उसकी अभिव्यक्ति क्षमता निखार पाती जाएगी।

कहा जाता है कि कहानी कविता को अपदस्थ कर हिन्दी साहित्य की केन्द्रीय विधा हो गयी है और उत्तरोत्तर अधिकाधिक प्रभावशाली और प्रामाणिक बनते बनते वह आज अकहानी तक पहुँची है। शायद आलोच्य संग्रह की **'दसखत'** शीर्षक रचना भोजपुरी हिन्दी तथा साहित्य की पहली **'अकहानी'** है। इसकी **'क्षमता'** के विषय में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। कहानी की मानसिकता का यहाँ सीधा साक्षात्कार है। सावयिता रोजमर्रा के घिसे पिटे जीवन की कठिनाइयों का प्रमाणिक भोक्ता है। युगीन जीवन की विसंगतियों के धक्के से टूटते-टूटते भी यदि जीवन का कोई अंश शेष है तो उसे लेकर कोई व्यवस्था पूर्ण सृजन हो सकता है। किन्तु जब सब कुछ बिखर कर खंड-खंड हो गया है और क्या भीतर क्या बाहर समूचा जीवन एक अन्तहीन आत्मा और घुटन का पर्याय हो गया है तो इन ऐब्सर्ड स्थितियों के साक्षात्कार से उत्पन्न सृजनात्मकता की उत्पत्ति को कहानी नहीं अकहानी ही स्वीकार सकती है। अकहानी जिसमें प्लाट खो गया है, मूड खो गया है, कलम छिन गई है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और कोई कहानी न लिखी जा कर लेखक स्वयं लिख गया है, 'दसखत' के रूप में अत्यन्त कड़वे मध्यमवर्गीय जीवन के व्यर्थताबोध के दस्तावेज पर दसखत कर दी गई है।

संग्रह की सर्वोत्तम कहानी जिसमें आधुनिक जीवन की पहचान अत्यन्त सफाई से उभरी है, **'राधा गावत हौ'** है और यह नई कहानी की भंगिमाओं, संवेदनाओं और सूक्ष्मताओं की ताजगी से पूर्ण अन्तर आन्दोलन के सघन क्षण बिम्बों का आलेखन है। कुछ लोगों की दृष्टि में सर्वोत्कृष्ठ रचना **'भैरवी क साज'** है और निःसंदेह इस कहानी की प्राण-शक्ति अद्‌भुत है। परन्तु कुल मिलाकर इसका बोध पुराना है। हाँ इतना अवश्य है कि इसका कलात्मक चरमोत्कर्ष अतीत गाथा से जुड़े होने के कारण ही है। भैरवी गान के समय कौन सा साज बजेगा ? पाठकों में मीठा कौतूहल होता है, परन्तु साज के रूप में जब खींची हुई चमचमाती तलवारें निकल आती हैं तो शृंगारिक भीषणता के अन्तरविरोध को आत्मसात कर कलेजा काट उठता है। बनारसी संस्कृति रंग रूद्र जी की पुस्तक **'बहती गंगा'** में बहुत घुला कर उसका कथागत रोमैन्टिक निखार प्रसाद की **'गुण्डा'** नामक रचना के बाद फिर ईश्वरचन्द सिन्हा की इस कहानी में ही दृष्टिगोचर होता है। **गुण्डा** आदर्शों से आच्छादित कहानी है और उसकी तुलना में 'भैरवी क साज' का परिवेश कुछ अधिक मुक्त है। प्रसाद ने उसे इतिहास से जोड़ कर बहुत गम्भीर कर दिया और उसका प्रभाव मन पर बहुत विस्तार के साथ उतरता है। सिन्हा जी की कहानी इतिहास मुक्त रोमान्स की गहराइयों में सिमटा परिवेश प्रधान हो जाती है। इसमें संयम बहुत है।

पर, **'राधा गावत हौ'** के आशावाद का धरातल कुछ और है। इस कहानी का भोक्ता नैरेटर श्री किसुन पाँच वर्ष बाद एक बड़े अफसर की हैसियत से बनारस लौटता है। तो मन ही मन पूर्व निर्धारित व्यवस्था के अनुसार क्लार्क होटल में टिकने की अपेक्षा वह दारानगर की उस सहुवाइन के घर रहने के लिए ललक उठता है जहाँ वह विद्यार्थी जीवन में रह कर पढ़ता था तथा जहाँ की अन्यान्य मधुर स्मृतियों के अतिरिक्त एक सुघर सलोनी राधा भउजी उसे खींच रही थी। नैरेटर अद्‌भुत मनोवैज्ञानिक ऊब की उतार-चढ़ाव युक्त स्थिति के बीच अन्ततः तीन दिन बाद लकदक वर्दी वाले शोफर के साथ होटल की इम्पाला में दारा नगर के उस चिर परिचित पुराने मकान में पहुँचता है। अपनी सहुवाइन चाची को तो वह उसी सांस्कृतिक स्नेह सौन्दर्य के बीच पा लेता है किन्तु सपने की भांति मन में उगी राधा भौजी की परिवेशगत विकृत और नियतिगत क्रूरता की टकराहट को वह झेल नहीं पाता है। राधा के असमय उजड़े सौभाग्य की घनीभूत संवेदना को उनके द्वारा गायी गयी मिठास में कसी लोकगीत की एक कड़ी में व्यंग्य बना कर कथाकार पाठकों को झकझोर देता है। पूरा कहानी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में आकर्षण एक सुन्दर नारी देह का है। पर आधुनिक सेक्सी टच सहज भाव से बचता गया है। शायद इस तरह की स्थितियों का साक्षात्कार आज का फैशनजीवी, पेशेवर अथवा धारा में बहने वाला कथाकार नहीं कर सकता है। वास्तव में आधुनिक हिन्दी कहानी को मनोवैज्ञानिक सेक्स केन्द्रीयता ने मार डाला। उसकी सम्बन्धों की सारी तलाश सेक्स केन्द्रित हो चली है और इससे जो एकरसता, उबास तथा कृत्रिमता का अहसास होता है उससे उबरने के लिए ही नये कथाकारों ने स्वयं को अकहानी पर उतार लिया।

कथा यात्रा के अन्त में इस महत्वपूर्ण तथ्य पर ध्यान आकर्षित हो जाता है कि कुछ को छोड़ कर शेष समस्त कहानियों की पृष्ठभूमि काशी नगरी है। जिसमें मुगलसराय, रामनगर, हिन्दू युनिवर्सिटी, राजघाट, मैदागिन, कबीरचौरा, गोदौलिया, चेतगंज और दशाश्वमेध आदि की आंचलिक रेखाएँ बनारसी साफ पानी के साथ उभार पाती हैं। बनारसी रंग और उसके खोये सांस्कृतिक आयाम की बहुत चटक खोज पहली कहानी 'गहरेबाजी' में है। तीस वर्ष बाद साठ वर्षीय अल्लर साह को अपने समवयस्क मित्र जुम्मन सेठ के साथ गहरेबाजी की प्रतिद्वन्दिता में संयोगवश जुट जाना पड़ता है और राजघाट पर बनारस और मिर्जापुर के पानी की वह रोमांचक टकराहट होती है कि पाठकों की सांस रूक जाती है। डाक्यूमेन्ट्री फिल्म की भांति क्षणभर के लिए चालीस मील प्रति घण्टे की रफ्तार के कथाकार गहरेबाज इक्कों के साथ पाठकों को दौड़ा देता है, पर क्लाइमेक्स पर पहुँचकर हार जीत के अतिरिक्त एक तीसरा रंग उभार देता है। अप्रत्याशित अन्त अथवा कथान्त में सर्वथा नयी जगह पर चोट सिनहा जी की कहानियाँ की विशेषता है। एक तो घोड़ों की गहरेबाजी यहाँ जीवन की गहरेबाजी में बदलते देखते हैं। एक समय के सांस्कृतिक बनारस का प्रतिनिधि अल्लर साह मानसिकता की कितनी गहराई में जाता है। प्रतिद्वन्द्विता तोड़ती नहीं, जोड़ती है। बूंढ़ें मिलते हैं नया रक्त एक दूसरे का स्वागत करता है, न कोई हिन्दू है और न कोई मुसलमान। अनुपस्थित नारी तत्व, नई गहरेबाजी, के लिए नया राजघाट का पूल बन जाता है। अत्यन्त छोटी पर कसी इस कहानी में समूचा रोमांस संकेतों में उभरता है और बिम्बात्मक होता है। इस महत्वपूर्ण कहानी संग्रह को प्रकाशित करने के लिए भोजपुरी संसद के संचालक और नियामक डॉ० स्वामीनाथ सिंह को जितना धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है। वास्तव में डॉ० साहब रचनाओं के प्रकाशक ही नहीं हैं, वे कहीं न कहीं उनकी सृजना प्रेरणा को मूल में भी होते हैं। जिस गम्भीरता के साथ भोजपुरी संसद के माध्यम से उन्होंने राजनीतिक नारेबाजियों में फंसी भोजपुरी हिन्दी की प्रगति नियति को मूल्यवान सर्जनात्मक उपलब्धियों से सँवार-सम्भाल दिया है उसके लिए हिन्दी साहित्य का इतिहास उन्हें भूलेगा नहीं।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

13 परम्परा अउर आधुनिकता का टक्कर में उभरल कथा संसार 'केरा के टुकी-टुकी पतई'

भोजपुरी कहानी का भंडार में कथाकार **पी० चन्द्रविनोद** का ताजा कहानी संग्रह **'केरा के टुकी टुकी पतई'** से जवन बढ़ोतरी भइलि ऊ आँखि पर चढ़े लायक बा। ई उनकर दूसरका संग्रह ह। पहिला **'हम कुंती ना हँई'** सन् 1977 में प्रकाशित भइल रहे आ अपना नरम-गरम आधुनिक छुअन से भोजपुरी कहानी का प्रेमिन के मजिगर गुदुरवले-झझोरले रहे। ओह सृजन में कुछ चीजु अइसन उभरल रहे जवन भोजपुरी में बहुत मौलिक आ ध्यानाकर्षक रहे। बहुत स्पष्ट रूप से ई अनुभव भइल रहे कि ललितकला में बूड़ल हाथ जब कलम उठावेला त ओकरा शब्दन में, ओकरा शिल्प में कुछ अतिरिक्त चमत्कार आ जाला। अनगढ़ पत्थर पर छेनी चला के ओकरा में प्राण फूँके वाली सजग सावधान संवेदनशीलता कथा-साहित्य का जमीन के जब स्पर्श करेले त ओकरा भीतर से नया-नया स्वाद फूटे लागेला। अइसने कुछ अविस्मरणीय स्वाद **'हम कुंती ना हँई'** का संगे-संगे भोजपुरी कहानी-साहित्य में उतरल रहे। सहज सामान्य कथ्य का भीतर से जटिल असामान्य व्यंग्य के उत्कीर्ण कइ देवे वाली ई कला पी० चन्द्रविनोद का एह नवका संकलन **'केरा के टुकी टुकी पतई'** में कुछ अउरी मँजल संस्कार लेके उतरलि बा, आ सन्तुष्ट कइ रहलि बा।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का ललित कला संकाय में सेवारत कथाकार पी० चन्द्रविनोद का भीतर एगो खाँटी गँवई मन प्रतिष्ठित बा आ ऊ जब लेखन में उतरेला त सम्पूर्ण रूप से गँवई संस्कृति का संस्कार में रंगाइल लउकेला। ओकर प्रबुद्ध कलाकार नागरिक मन तब भरपूर रूप से तटस्थ रहेला। तमाम-तमाम तरह का राजनीतिक छल-बल, भ्रष्टाचार, आ धुंधग्रस्त जिनिगी के तसबीर उतरलि जाले, गाँव का भाव सम्पदा के प्रपंची आधुनिकता काटति जाले आ कहानिन का संसार में श्रद्धा विह्वल गँवार नर-नारी जन के हृदय जमाना के कुटिल चोट खा-खा के दरकत जाला बाकी कथाकार-मन आपन संयम ना खोवेला। ऊ क्रुद्ध-क्षुब्ध होके न त फुफुकारेला आ न त हार-थाक के निराश होके आँसू बहावेला। अइसना मोका पर बस ऊ बहुत ढब से चिकोटी काटि देला भा कतहीं बीन्हि देला कि भरपूर रूप से छनछना-पनपना जाव। अइसना स्थिति के पैदा करे में बहुत कलात्मक सजगता के आवश्यकता पड़ेले। वास्तव में इहे कलात्मक सजगता पी० चन्द्रविनोद के शिल्प-सम्पदा बा जवना के लेके ऊ अपना कहानिन के गँवई का सांस्कृतिक रंग में बुड़ा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधुनिक रूप में चमकावत बाड़न, ओकरा फैलाव के रोकि के चुस्त बनावत बाड़न आ सपाट वर्णन का भीतर से धारदार व्यंग्य काढ़ के पढ़वइयन के चमत्कृत करत बाड़न। अइसन जनात बा कि केरा के टुकी-टुकी पतई नियर छितराइल गँवई मन जब घनघोर अन्तरविरोध में फँसत बा त प्रबुद्ध कलाकार मन खुद व्यंग्य बनि जात बा। इहे कारण बा कि एह संग्रह का अधिकांश कहानिन में कलात्मक व्यंग्य के स्थिति बहुत प्रौढ़ बा आ एही व्यंग्य के छोर धइ के एह कृति के सम्यक मूल्यांकन हो सकेला।

पी० चन्द्रविनोद का कुछ कहानिन में राजनीति के व्यंग्य के आलम्बन बनावल गइल बा। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाली कहानिन के अन्त राजनीति से जुड़ल व्यंग्य भइला से परम्परा आ आधुनिकता के टकराव बहुत सहज रूप में सामने आ जात बा। जहँवा राजनीतिक व्यंग्य के राजनीतिये का पृष्ठभूमि पर ठाढ़ कइल गइल बा उहँवा तीखापन तनी ढेर तेज हो गइल बा। **'जिन्दाबाघ'** कहानी में एगो कम्यूनिस्ट नेता गँड़ेरिया नियर बोली बोलत गँवई मजदूर नर-नारिन का झुंड क भेंड़ नियर एगो प्रदर्शन में हाँकि ले जात बा। पटना स्टेशन से उतरि के ई भेड़ि लोग कतार में, जुलूस बनि के ललका झण्डा थम्हले **'जिन्दाबाघ'** डेकरित गाँधी मैदान का ओरि डहरल चलि जात बाड़ी। नेता मिसिर बाबा कहले बाड़न कि देबीजी के दरशन कराइबि, सरकस में जिन्दाबाघ देखाइबि, बाजार कराइबि आ दस-दस गो रूपयो दिअवाइब। एह ग्रामीण भोलापन आ शहरी राजनीति का प्रपंची कुटिलता के अन्तरविरोध कहानी के शुरूए से अइसन उभरत चलि जात बा कि पढ़ेवाला साँसि रोकि के कहानी का भीतर से अन्त के ओरि भागत जात बा बाकी ई चुस्त आ खनहन व्यंग्य-कथा सस्ती, दिशाहीन आ धोखा भरल राजनीति पर तेजी से चोट करति जब एके साँसि में आँखि में समा जाति बा त बिहारी के दोहा का सम्बन्ध में कहल जाये वाली लाइन मन में गूँजे लागति बा, 'देखन में छोटे लगै घाव करै गंभीर !'

गंभीर घाव व्यंग्य खातिर अनिवार्य शर्त होला। एही कारन से हास्य से अधि का ओकर प्रभाव समझल जाला। ऊ निछान हँसा के ना छोड़ि देला। बाकी एह चोटो में एगो शर्त होले। चूँकि ई साहित्यिक चोट होले एह कारन से ओह में हिंसा ना होले। व्याकरण का भाषा में ऊ चोट प्राय: व्यक्तिवाचक ना होले। ऊ जातिवाचक चोट होले। ओकरा में बहुत व्यापकता होले। साथे-साथे एह चोट का भीतर प्रतिक्रियात्मक दुर्भाव ना होला। एकरा में दूरप्रभावी सद्भाव होला। ई चोट विध्वंसक कम, रचनात्मक अधिक होले। एही कारण से जब ई व्यंग्य के चोट कहानी का भीतर से कलात्मक रूप से काढ़ल जाले त ओकर रचनात्मक प्रभाव बहुत बढ़ि जाला। कवनो अति, कवनो अन्तरविरोध, कवनो विरोधाभास, अन्याय-अत्याचार भा शोषण का पीड़ा से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पघिल के रचनाकार के मन जब मथा जाला तबे ओकरा भीतर से व्यंग्य के सुर निकलेला। हास्य का स्थिति में जब ई पीड़ा मिलि जाले तब व्यंग्य बनि पावेले। एही वजह से अइसन रचनन का भीतर से गुजरत पाठक एक ओर त हँसत जाला आ दूसरा ओर भीतर से रोवत जाला। बहुत कठिन होला चोट के व्यंग्यात्मक कचोट बना के रचनात्मक रूप में पेश कइ दीहल। इहे कठिन काम पी० चन्द्रविनोद के कथाकार अपना कहानिन में कइले बा। कहानी पढ़ेवाला देश के कोटि-कोटि आम जनता का नाँव से जानल जाये वाली अभागी भेड़िन का बउराही पर आ मिसिर नियर नेतन का तिकड़मबाजी पर हँसत जात बा बाकी भीतर से ओकर हृदय छटपटात जात बा कि कहिया ले ई गड़ेरिया आ भेड़िया जइसन लोग अइसना अभागी भेड़न का खून-पसेना से आपन पियासि बुझावत चलि जइहन ? **'जिन्दाबाघ'** का अन्त में महेन्दर बो, भगजोगनी आ धरीछन बो का कथन से जवन व्यंग्य निकलत बा ओकर सीधा मारि देश का लोकतांत्रिक व्यवस्था पर परति बा।

'केरा के टुकी-टुकी पतई' का अधिकांश कहानिन में व्यंग्य के चुस्ती मिलला से संकलन के मूल्यवत्ता बढ़ि जाति बा। **'जिन्दाबाघ'** के चर्चा हो चुकलि बा। **'देसिला कुकुर'** में आखिरी पंक्ति में जवन देसिला शब्द के प्रयोग होत बा ऊ एकदम मर्मस्पर्शी व्यंग्य बनि जात बा। **'सर्वहारा'** में आम गरीब जन भा सर्वहारा वर्ग के एगो नेता फूलगेंदा सिंह में एतना भारी तालझाम भरल पूँजीवादी बड़प्पन बा कि अपना गाँव में भाषण करावे खातिर उनका सेक्रेटरी से दिन तै करावे में कहानी का नैरेटर के छठी के दूध याद आ जात बा। पूरी तरह कसल ई कथा छद्म नेतृत्व पर व्यंग्य बनि गइलि बा। एही तरह से **'दलिद्दर ना खेदाई'** आ **'बड़-छोट'** में व्यंग्य के रचना भइलि बा। **'दलिद्दर ना खेदाई'** में चटक सांस्कृतिक रंग उभारि के ऊपर से राजनीतिक व्यंग्य के अइसन छींटा मारल गइल बा कि संस्कृति के कुल्हिये रस-गंध विकृति का सड़ांध में बूड़ि गइल बा। लेखक बदलत जात समय का मार के शब्द-शब्द में व्यंजित करत ओकरा प्रभाव के गहरा देत बा। अइसन लागत बा कि गँवई संस्कृति अब एगो व्यामोह बनि के शेष रहि गइलि बा। ई व्यामोहो बस पुरनकी पीढ़ी में रह गइल बा। नयी पीढ़ी ओकरा के झारि-पोंछि के किनारे कइ चुकलि बा। इहे कारन बा कि जहाँ भी नयी-पुरानी पीढ़ी टकराति बा, उहाँ पुरानी पीढ़ी व्यंग्य बनि जात बा ! ओकरा भीतर के भाव श्रद्धा, रस आ राग आज का तिकड़मी राजनीति-रंगी हवा में पता ना कहाँ उड़ि के बिला जात बा !

व्यंग्य वाली जमीन का तलाश में कथाकार के बहुत भटके के नइखे परल ! ऊ अपना अड़ोस-परोस से, परिवेश से आ सुपरिचित क्षेत्रन से बहुत आसानी से ओकरा के ढूँढि लेत बा। सवाल प्रामाणिक भइला के उठि सकेला। लेखक जवन कहत बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ ओकर भोगल सत्य बा कि खाली कल्पने कइल बा ? रिजर्वेशन का कुफुत में मरे वाला, जातिवाद के समर्थक आ संघर्ष, विशेष रूप से वर्गसंघर्ष करा के जिये वाला मोख्तार, मु० बिशुन लाल, टूटल आम आदमी के प्रतिनिधि आ मूल्यहीनता का आँधी में सूखल पतई नियर उधियात जात ईमानदार जन सुखराम सर्वहारा वर्ग के नेता बनि के, अपना सेवा-व्यवसाय के चमकावे वाला फुलगेंदा सिंह, गाँव का दलिद्दर के चुनौती देति आ समय का बदल गइला के रोना रोवति काकी, परम्परा पर विद्रोह के मोहर टप्पा मारत गरीब के बेटी सुगिया, आ कम्यूनिस्ट चिड़ीमार नेता मिसिर जी जइसन लोग आ ओह लोग का इर्द-गिर्द डालल गइलि बिनावट का लेखक के निजी जीवन भोग ह ? एह सवाल के जवाब में कहल जा सकेला कि भोक्ता आ सहभोक्ता का रूप में लेखक अपना के जवन कहानिन का भीतर ताना-बाना रूप में डालत बा ऊ अतना सहज आ जीवन्त बा, ओकर शिल्प अतना चिपकत बा कि प्रामाणिकता स्वयंसिद्ध हो जाति बा। गँवई जीवन का भीतर ढुकि के जवन आज का आदमी के जिनिगी के उठावल-बइठावल गइल बा उ 'टापा टोइया' का रूप में जरूर सही बा बाकी ओकर क्रमबद्धता, समग्रता, कसाव आ गहिराई पर संदेह ना कइल जा सकेला ।

जब कवनो कथाकार के सृजन सन्तुष्ट करेला तब इहो सवाल उठेला कि ओह सन्तुष्टि के कसौटी का होला ? ऊ कवन वस्तु होले जवना का सही-सटीक उपस्थिति से सन्तुष्टि उत्पन्न होले ? पश्चिम-पूरब का सिद्धान्त का बीच से निकालि के एकरा बारे में एक चीज के नाम लिहल जाला, आत्मसाक्षात्कार । अर्थात पढ़े वाला जब अपना के ओह रचना में देखे लागेला त एह कलात्मक आत्मदर्शन से आनन्द मिलेला। ई दर्शन कुल मिला के चेतना का स्तर पर होला । इहे कारण बा कि आंचलिक रचनन के स्वाद महानगर निवासी ओहू लोगन के अनुभूत होला जे कबे अंचल के ना जीअल-भोगल। आदिम जातीय जीवन के मूलभूत आंचलिक संस्कार सभ्य नागरिको भा आधुनिक सुविधाभोगी बुद्धिजीवियो हो गइला पर मनुष्य जाति का अवचेतन में सुरक्षित बा आ ऊहे कलात्मक सृजन का माध्यम से चेतन अनुभूति का रूप में आनन्द के कारण बनेला ।

पी० चन्द्रविनोद का कहानिन से अइसने आनन्दमूलक आत्मसाक्षात्कार घटित होत बा। कहानिन में उतरलि गँवई छवि भा आंचलिक रूपाभा चेतना का स्तर पर अनुभूत होके पढ़े वाला के आनन्द में बुड़ा देति बा। कथाकार अपना रचना में ग्राम-मानस के यथार्थ चित्र अइसन ठाढ़ कइले बा, ओकरा मूरत के अइसन गर्हले बा कि ओकर बहुआयामी सौन्दर्य के एक-एक रंग उन्हन का एक-एक रेखा में सजीव होके उतरि गइल बा। कहल जा सकेला कि व्यंग्य का विशेषता का बाद एह संकलन का कहानिन के दूसरा नम्बर के विशेषता रेखा-चित्रात्मकता बा । ई विशेषता रचनन में अतना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधिक बा कि ओकर उदाहरण ना दीहल जा सकेला। असल में पूरी पुस्तक के एक-एक लाइन उत्कृष्ट आ जीवन्त रेखाचित्रन के उदाहरण बा। जहाँ से उठाईं, बस बोलत-बात करत शब्द-चित्र लउकत जाई। चाहे मजदूर नेता फूलगेंदा सिंह होखसु चाहे चश्मा का फाँक से ताके वाला शीतलपुर के घाघ मुंशी बिशुनलाल होखसु आ चाहे बमपिलाट देह वाली गंगनहानी गोल के चौलर बो होखसु, लेखक एक-एक पात्रन के चित्ताकर्षक चित्र-छवि आ उन्हन का व्यक्तित्व के एक-एक रेखा के उतारत चलेला। **'जिन्दाबाघ'** कहानी शुरू होता, 'सतुआ, भूँजा आ चिउरा के मोटरी मूंड़ी पर धइले, डाँड़ पर लइका सरकावत, मेहरारून के धरमधक्का जब नतिया-पुतवा करत टीसन से निकलल.........!' आ पढ़े वाला ओकरा प्रवाह में बूड़त बा त फेरु अन्त तक ओइसहीं बूड़ल चलि जात बा!

भोजपुरी भाषा आ ओकरा शिल्प के पकड़ कथाकार पी० चन्द्रविनोद में भरपूर रूप में बा आ ओकरा प्रयोग से कहानिन में शक्ति पैदा हो जाति बा। लोकोक्ति आ मुहावरन का प्रयोग के शक्ति, गँवई जीवन से सटत मौलिक अप्रस्तुतन के प्रयोग के शक्ति, पारदर्शी भाव-सौन्दर्य के चित्रण शक्ति, सहज मूर्त्त वर्णन का भीतर से व्यंजना के अमूर्त्त चमक पैदा कइ देबे वाली शक्ति आ सामाजिक जीवन का संगे-संगे वैयक्तिक जीवन के अन्तरवर्ती आधुनिक ग्राफ आँख का सोझा पसार के रख देबे वाली शक्ति जवन **'केरा के टुकी टुकी पतई'** का भीतर मौजूद लउकति बा ऊ लेखक के भोजपुरी कहानीकारन का अगिली कतार में प्रतिष्ठित कइ देति बा।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

14 नरेन्द्र शास्त्री का उपन्यास 'ऊसर के फूल'

'ऊसर के फूल' नरेन्द्र शास्त्री के भोजपुरी लघु उपन्यास को पढ़कर सिद्ध कथाकार अमृतलाल नागर के उपन्यास **'अमृत और विष'** का स्मरण आ जाता है । नागर जी के उपन्यास में जिस प्रकार कथाकार अरविन्द शंकर की रचना प्रक्रिया अत्यन्त चिन्तनात्मक स्तर पर उभरती चलती है उसी प्रकार इस उपन्यास में भी बालक कथाकार राजेन्द्र की बहुत मूल्यवान परिकल्पना नरेन्द्र शास्त्री ने की है । बचपन में छाप छोड़ने वाले कथा संस्कारों से प्रभावित होता-होता किस प्रकार वह सामाजिक विद्रोह की चोटी पर पहुँचता है, उपन्यास में यह एक पृथक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कहानी है । किसी संवेदनशील व्यक्ति में जो बचपन में विविध विसंगतिपूर्ण स्थितियों से टकराता रहता है और कथा रूप में उनका मानसिक साक्षात्कार करता रहता है, किस प्रकार कोई प्रामाणिक कथाकार छिपा रहता है इसकी एक मार्मिक झाँकी इस छोटे से उपन्यास में बड़ी उपलब्धि के रूप में प्राप्त हो जाती है । आज समकालीन सृजनात्मकता के संदर्भ में सबसे बड़ी माँग प्रमाणिकता की है । उपन्यास के इस माइनर पात्र राजेन्द्र के सहारे बहुत सरलता से इस कृति का पाठक कृतिकार नरेन्द्र शास्त्री तक पहुँचता है । और लेखकीय ईमानदारी और चित्रित जीवन की लेखकीय साझेदारी की जाँच में उतरता है ।

बलिया जिले के मुड़ियारी, खरौनी और बाँसडीह की आँचलिक जीवन छवियों के बीच उभरने वाली मुख्य कहानी शमशेर बाबू की है जो किशोर और युवा अवस्था में ही अपनी नाना प्रकार की ऊँची-नीची जीवन भूमियों में घूमकर लेखक की आदर्शवादी गिरफ्त से छूटकर जीवन में वास्तव ट्रेजडी बन जाते हैं । एक ओर अवैध कमाई का चमकता मार्ग है, दूसरी ओर ईमानदारी और अपने पसीने की कमाई खाने की नैतिकता है । बहुत कठिन अन्तर संघर्ष की स्थिति है । शमशेर अपनी नव-विवाहिता युवती पत्नी के आँचल में छिपकर खेती में लगता तो है, पर बिना साधन और पूँजी के वह हाड़तोड़ श्रम करने पर भी क्या पूरी पड़ती है ? उपन्यास का पाठक चिंता में पड़ जाता है, यह आदमी क्या फिर काली कमाई की ओर लौटेगा ? या गरीबी से लड़ेगा ? या नया मोर्चा खोलेगा ? पत्नी की युवा उमंगों और लालसाओं का क्या होगा ? और फिर गहरे उतार-चढ़ाव के बीच पाठक शमशेर को आजीवन कारावास-भोग में और उसकी पत्नी को अबोध शिशु के साथ भीख माँगते देखता है तो धक् से रह जाता है । कृति में जब पानवाली भौजी और रघुनाथ बाबू का हृदय-परिवर्तन हो गया, वे आदर्शवादी हो गये; ममतामयी, सेवती और बाँके लाल जैसे आदर्शवादी चरित्रों की कतार पहले से वर्तमान है फिर उपन्यास के मुख्य पात्र की नियति कैसे इस प्रकार जीवन की उबड़-खाबड़ और बीहड़ घाटियों से गुजरती अन्तत: सर्वनाश को पहुँच गई ?

इस चिन्तन बिन्दु पर पहुँच कर उपन्यास का समीक्षक उस केन्द्रीय तत्व तक पहुँच जाता है, जिसके सम्बन्ध में स्वयं एक शब्द न कहकर कथाकार रचनात्मक स्पर्श

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के बीच केवल ध्वनित अथवा संकेतिक कर देता है। वास्तव में इस उपन्यास की यही महान सफलता है। सम्प्रति ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कमजोरियों का ऐसा सटीक कलात्मक प्रकाशन कथा साहित्य में विरल है। हमें आश्चर्य है कि यही तत्व इस भोजपुरी लघु उपन्यास में कैसे उभर आया है ? शमशेर वास्तव में शमशेर (तलवार) की तरह कड़ा, किन्तु लचीला और मारक है, परन्तु स्थितियाँ उसे तोड़कर रख देती हैं। वह सशक्त चरित्र के रूप में उभरता है। जिसके रंगों को धूपछाँही भराव देने के लिए लेखक ने उसके चारों ओर विविध-वेशी चरित्रों की बुनावट डाली है। शमशेर को बहन का प्रेम मिलता है, पत्नी का प्रेम मिलता है, पड़ोसी मुंशी जी का प्रेम मिलता है। यह प्रेम उसे बारम्बार सामाजिक जीवन की ओर लौटाता है परन्तु चाहते हुए भी अन्ततः उसका न लौट पाना एक असफलता की मर्मगाथा है। उसकी वह करुण विवशता जो अवांछित धन्धे की ओर उसे ढकेल देती है, पूरे उपन्यास को घोर यथार्थवादी रंग देती है।

किन्तु इस उपन्यास के संदर्भ में दूसरा मूल्यवान विचारणीय मुद्दा यह है कि यह भोजपुरी उपन्यास है। भोजपुरी में पाण्डेय कपिल, प्राध्यापक अचल, विक्रमा प्रसाद, पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह, गणेशदत्त किरण, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, भगवती प्रसाद द्विवेदी, नर्मदेश्वर राय, सूर्यदेव पाठक पराग, विप्र जी, रामनाथ पाण्डेय, कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य', बच्चन पाठक 'सलिल', राम नगीना सिंह 'विकल', विजेन्द्र अनिल, विमलानन्द सरस्वती और अरुण मोहन भारवि आदि अच्छे उपन्यासकार हैं तथा इस पंक्ति में नरेन्द्र शास्त्री का जो नाम जुड़ा वह विशेष उपलब्धि के रूप में । तीन गाँव के तीन परिवारों की समानान्तर कहानी आंचलिक-आकर्षण में लिपटी इस प्रकार चलती है कि वह कहीं से बिखरती नहीं है। पहला उपन्यास होने के कारण और भोजपुरी में होने के कारण बहुत रूक-रूक कर और संभल-संभल कर लेखक चलता है । इसके प्रवाह में कहीं-कहीं कमी आती है परन्तु संतुलन और संयम बराबर बना रहता है । जवान पति-पत्नी की एकान्त गरीबी का भोजपुरी भाषा के माध्यम से नया साक्षात्कार एक रोमांच बनकर प्रस्तुत होता है और सुखात्मक-दुखात्मक दोनों ही आयाम पूरी चटकता के साथ आते हैं। उपन्यास की नारियों में अनपेक्षित पीड़ा भोग का तत्व आधुनिक उपन्यास-शिल्प के स्तर को छूता है। विरोधी और अन्तर संघर्ष की स्थितियों को लेखक बावजूद प्रथम प्रयास होने के सहजता के साथ उपन्यस्त कर देता है और उनकी किंचित असिद्धावस्था का स्वाद नये ढंग का सहज तृप्तिकारक सिद्ध होता है। पूरा उपन्यास लोक साहित्य के शिल्प का पड़ोसी होता है और 'जैसे उनका दिन फिरा वैसे.........' की आशीर्वादिता ध्वनि झंकृत होते-होते रह जाती है क्योंकि मुख्य पात्र का अन्त यथार्थ की लपेट में होता है। नरेन्द्रशास्त्री की भोजपुरी को परिनिष्ठित भोजपुरी भाषा कहा जा सकता है यद्यपि वाक्य में खड़ी बोली के प्रभावों से वे मुक्त नहीं रहे। कुल मिलाकर हिन्दी जगत में निस्सन्देह **'ऊसर के फूल'** नये सिरे से चर्चा के योग्य सिद्ध होता है।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

15 निबंध और भोजपुरी निबंध

हिन्दी में हाल ई बा कि निबन्ध क माने विषयन्ष्ठि निबन्ध आ लेख (आर्टिकिल) समझल जाला आ ललित निबन्ध भा व्यक्तिनिष्ठ निबंन्ध के ओकरा से अलग कइके पहचानल जाला। रेखाचित्र, रिपोर्ताज आ संस्मरण वगैरह अउर अलगिया के नयी विधा बने लागल बाड़न स । एह से बहुत घपला हो गइल बा । करीब सइ बरिस पहिले अंग्रेजी साहित्य का 'एसे' (Essay) क शिल्प हिन्दी गद्य में उतरल आ भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र में ओकर नया, टटका आ निखरल रूप लउकल । ओकरा बाद धीर-धीरे हिन्दी में जवन 'निबन्ध' विकसित भइल ऊ अंग्रेजी का 'एसे' से भिन्न किसिम क होखे लागल । अंग्रेजी क 'एसे' त ठीक ऊहे ह जवना के आजु हमनी ललित निबन्ध (व्यक्तिनिष्ठ) का नाँव से जानत-मानत बानीं जा आ जवना में छुट्टा मनतरंग होले; रंगारंग रूचियन क रमणीय धारि लिहले, ऊ अनुरंजनकारी आत्मालाप मतिन, लेखक का व्यक्तिचेतना क स्वतंत्र शिथिल प्रवाह, कथा-कहानी क छुअन भरल रस विदग्ध वैचारिक आतमगीता, बाकी गहूँ-गंभीर ना, हलुक-फुलुक, लेखक का व्यक्तित्व क छाप लिहले, निर्बंध भावमय प्रौढ़ परिमार्जित गद्य रचना आ ई ह निबन्ध (एसे) जवना के हिन्दी में चिन्हारी बदलि गइलि बाटे ।

हमरी इहाँ निबन्ध आ व्यक्तिनिष्ठ निबन्ध में जेतना अलगाव बा ओतना अंग्रेजी का एसे आ परसनल एसे में नइखे । उहाँ अंग्रेजी निबन्ध क जन्मदाता बेकन ओह के विच्छिन्न चिन्तन कहेलन । लिड का नजर में ऊ एगो सुन्दर बकवास ह । जानसन निबन्ध के लूज स्टाइल आफ द माइण्ड कहि के आखिर का कहल चाहत बाड़न ? शिथिल आन्तरिक बुद्धिविलास, मनोजगत क क्रमहीन तरंग, एकदम असंगठित, अनियंत्रित आ बिखरल-बिखरल जइसन निबन्ध क रूप पश्चिम में बतावल गइल । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी क सर्वश्रेष्ठ विषयनिष्ठ निबन्ध लेखक हवन । बाकी ऊहो निबन्ध में व्यक्तित्व का विशेषता के सँकारेलन । बुद्धि का संगे एह में हृदय क योग ना भइले बाति ना बनी । बातचीत जइसन सहज सरल, चुस्त, आनन्दमय, कुछ विचित्र उल्लास भरल आत्मस्पर्शी आ कथा क छौंक दिहल निबंध रूप जवन हिन्दी निबन्ध का चउथा उठान में विकसित भइल ओह के **ललित निबन्ध भा व्यक्तिनिष्ठ निबन्ध भा रम्य रचना** कहल गइल । इहो एगो अचरजे बा कि हिन्दी निबन्ध के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्वन्द्र अंग्रेजी का एसे का बहुत निगिचा बाड़न । उनकर निबन्ध वस्तुनिष्ठ से अधिक व्यक्तिनष्ठ बाड़न स आ उनकर परम्परा भी कुछ आगे सरकलि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
बाकी बाद में हिन्दी 'निबन्ध' क लाइन एकतरफा विषय भा वस्तुनिठ हो गइल। एह से ई सिद्ध हो जाता कि हिन्दी निबन्ध पर अंग्रेजी क प्रभाव त बा, बाकी ओकरा से ऊ प्रेरित भा ओकर नकल नइखे।

हिन्दी निबन्ध क विकास अंग्रेजी निबन्ध से भिन्न त बटले बा ऊ संस्कृतो का परम्परा से अलगा बा। संस्कृत में निबन्ध बाटे, बहुत कड़ेर ढंग क बाटे, बाकी आधुनिक हिन्दी गद्य का निबन्ध से ओकर इचिको तालमेल नइखे बइठत । बस नावें भर ओकर 'निबन्ध' बा ! जब एह शब्द का व्युत्पत्ति पर विचार कइल जाई आ नाँव धराये का स्थितियन पर ध्यान दिहल जाई त बड़ा अचरज होई। प्राचीन वाङ्मय के लिपिबद्ध करे खातिर ओह समय एकी साधन रहे। भोजपत्र, जवना पर हाथ से लिखाइल पोथियन का छुट्टा पन्नन के बटोरल, सीअल, कसल, जोरल, नाथल आ बान्धल एगो भारी काम रहे। एही काम क नाँव 'निबंध' परल । कहलो गइल कि निबन्ध ातीत निबन्ध।' आगे चलि के एकर अर्थ विस्तार हो गइल। बान्हे वाली स्थूल वस्तुदृष्टि बदलि के भावदृष्टि हो गइलि । भोजपत्र पर हाथलिखल पोथिन क पन्ना बान्हे का जगह 'निबन्ध' का अर्थ में रचना बन्हाये लागलि, रचना में रचइता क विचार-भाव बन्हाये लागल। काव्य में बान्ह अउरी पोख्ता होखे लागल। कवि क सुख-दुख आ राग-विराग से भरल केतने प्रबन्ध काव्य ग्रंथ निबन्ध कहा गइल। संस्कृत में 'निबन्ध' आ 'प्रबन्ध' में कवनो खास भेंद नइखे। कुछ लोग कहेलन कि ऊँच पंडिताई भरल रचना निबन्ध होले आ जवन रचना रसगर बेसी होले ऊ प्रबन्ध ह। माने ई कि प्रबन्ध में काव्यत्व क विशेषता होले। बाकी शुरू में संस्कृत में एह नियम में बड़ा ढील बा आ दूनों शब्द करीब-करीब पर्यायवाची बनि के आइल बाड़न स।

बहुत आगे जाके संस्कृत में 'निबन्ध' क एगो रूढ़ रूप लउकत बा। ओह रूप में संस्कृत समीक्षा, टीका आ व्याख्या वगैरह आवे लागलि। ओह निबन्ध रूप में खण्डन-मण्डन, आ प्रतिपादन-स्थापन क बेंवत बन्हाइल रहे। एह टीका युग में निबन्ध क ई बुद्धिवादी आ तर्कशील सरूप कविता से ज्यादे गद्य का रूप में उकसल । इहे टीका युग क गद्य हिन्दी निबन्ध का परम्परा क स्रोत जइसन बनि गइल। गद्य क शक्ति नया रूप में उपटलि। ऊ कविता से एकदम भिन्न किस्म के रहे। विद्वान लोगन का सँकारे क परल कि अब ममिला कसौटी पर खराद पर चढ़ल। **गद्यं कवीनाम् निकषं वदन्ति**। आगे एह में इहो जोरा गइल कि अगर गद्य कवियन क कसौटी ह त निबन्ध गद्य क कसौटी ह। एह कथन से निबन्ध का महिमा का बारे में कवनो शंका ना रहि जाये के चाहीं। युग केतना बदलि गइल, एकर पड़ताल निबन्धे से होई। निबन्ध में युगान्तर क प्रक्रिया परगट होले आ एही वजह से ओकरा के परिवर्तन क प्रतिनिधि कहल जाला। सगरे संसार क साहित्यिक इतिहास उठा के देखीं, विकास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का पहिल लम्मर पर कविता लउकी । निबन्ध बाद में, भरपूर युग-विकास का बाद मैदान में आपन बुद्धिवादी तेवर ले के आवेला ।

साँच पूछल जाव त निबन्ध क बीआ त कला, साहित्य, धर्म, दर्शन, चिन्तन, साधना आ आराधना खातिर बेद में बोआइल आ ऊ पुराणन में अँखुआत संस्कृत साहित्य का गद्य-पद्य में मजिगर पलुहल । फेरू ओकरी टीका वाली नवकी शाखा में फरल-फूलल । बाकी आधुनिक निबन्ध का गढ़न क असली हाथ उनसीसवीं शताब्दी का अंग्रेजी साहित्य में बा । एह सिलसिला में हमार ध्यान ओह समय का लेखक लोगन में से बेकन, मैंथ्यू आर्नल्ड, इमरसन, स्टीवेंसन, कार्लाइल आ रस्किन पर जात बा । विचारात्मक आ आलोचनात्मक निबन्ध साहित्य में एह लोगन के बड़ी-बड़ी उपलब्धि बा । उन्नीसवीं शताब्दी का अन्त में निबन्ध क ऊ जवन पछिवहीं हवा आवति बा इहाँ का रचनात्मकता के टनटना देति बा । विषयवस्तु, रूप-रचना आ शिल्प-संयोजन क ताजा-ताजा ठवनि अइसनि होति बा जइसे एगो क्रांति हो जाति बा । एही क्रांति क नाँव गद्य-क्रांति होत बा । विज्ञान युग जवन कुछ कइलसि-धइलसि आ दिहलसि ऊ सब गद्य का मुँहे सामने आवे लागल । एह गद्य भा निबन्ध का उतरले युगान्तर उतरल । तब भारत में सांस्कृतिक आ राष्ट्रीय नवजागरण क लहरि रहे । हर क्षेत्र में नवोन्मेष क माँग रहे । गद्य क मूल्य कविता से बढ़ि गइल रहे । तर्क, बहस, भाषण, संश्लेषण-विश्लेषण, टिप्पणी, प्रतिवादन आ लेलकार- फुफुकार क तेज धारि गद्य में मिले । कवनो बाति के चुस्त, असरदार आ यथार्थ ढंग से पेश करे खातिर, सही-सटीक आ ठीक-ठीक पकड़ का वास्ते आ सही जगह से उठा क उचित मोड़ देबे खातिर गद्य क लचीला आ सहज प्रवाही रूप बहुत खिंचलसि । एही कारण गद्य क निबन्धिया उकास बहुत तेजी से भइल । अंग्रेजी साहित्य का जमल-जमावल निबन्धनों क शिल्प-प्रभाव रहे आ अपना माटी-पानी में ओह प्रभाव के ढारि के सचहूँ बहुत आकर्षक आ अनुरंजनकारी निबन्ध साहित्य रचाइल ।

बीसवीं शताब्दी का अंग्रेजी के निबन्धकारन में हक्सले, रसल, लिंड आ चेस्टरटन वगैरह क असर हिन्दी निबन्ध पर कहल त जाला बाकी सही बाति ई बा कि ऊ आपनि डहरि अपने बनवले बा । अपना स्थिति, आवश्यकता, परम्परा आ जातीय जीवन का जोग, अपना देश का जोग आपन भेस बनवले बा । बीसवीं शताब्दी क माने होला कठिन जीवन-संघर्ष क शताब्दी, जटिल वैज्ञानिक प्रभावन क शताब्दी आ जीवन मूल्यन का व्यापक गिरावट क शताब्दी । एह शताब्दी के जिये जोग, झेले-अँगेजे आ सहे जोग वैचारिक धरातल क जरूरत हिन्दी निबन्ध में रहे । निबन्ध एह चुनौती के मुँड़ियवलसि आ ओह में बहुत गंभीरता आ गइलि । बाकी जल्दिये ई गंभीरता खसके लागलि । ओकरा जगह पर अनुरंजनकारी आग्रह बढ़े लागल । ई कहनाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सही बइठत बा कि बारहमासी अब, उदासी आ ऊमस का सघन दबाव वाला एह विषम परिस्थिति का मौसम में **'चिन्तामणि'** कइसे रचाई ? अइसना में त **'माटी की मूरतें'** होखे चाहे **'अशोक के फूल'**, जियादे मन रमी । वस्तु प्रधान, विवरण प्रधान लेख आ विषय प्रधान निबन्ध का लकीर से हटि के इहे निबन्ध बनाम ललित निबन्ध क मामिला अब जाके रास्ता धइलसि । लोग के लागत बा कि ललित-निबन्ध के परम्परा सही निबन्ध क परम्परा ह । दार्शनिक, नैतिक, सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक आ आर्थिक आदि विषयन पर लिखल लेख (आर्टिकिल) के निबन्ध से जबले अलगा ना कइल जाई तबले ओकर सही स्वरूप ना निखरी । निबन्ध क अर्थ होला कि जवना में व्यक्तित्व क प्रकाशन होला, जवना में सृजन धर्मिता होले आ जहँवा बुद्धि से अधिका हृदय पक्ष क योगदान होला । यंत्र आ विज्ञान का दौर में बहुत कुंठा-संत्रास आ तनाव-दबाव बा । मन में बहुत पीड़ा आ क्षोभ बा । अइसन देश का समूहन के (ललित) निबन्ध का रम्य भावडोर से बान्हल जा सकेला । ढेर गंभीर विचार दिहले त ऊ बिजुकि उठी । एही से ललित निबन्ध क बहुत स्वागत-सत्कार लउकत बा । विषय का खूँटा से मुक्त, निर्बंध निबन्ध एह युग क प्रमुख साहित्यिक विधा बनि गइल बा ।

हिन्दी साहित्य क इतिहास लिखे वाला लोग एह में निबन्ध-युग क शुरूआत सन् 1850 से मनले बाड़न । ई समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म क ह । एह कारन से एकरा के भारतेन्दु-युग क पूर्वविन्दु मानल जाला । एह बाति में दू राय नइखे कि भारतेन्दु हिन्दी निबंध क जन्मदाता हवन । बाकी एह 'जन्म' शब्द क अर्थ भावात्मक रूप में लिहल जाई, तात्विक रूप में नाहीं । भारतेन्दु का अगाड़ी रामप्रसाद निरंजनी, महर्षि दयानंद आ श्रद्धाराम फुल्लौरी क निबन्ध मिलेलन स आ ओह लोगन का निबंध -प्रतिभा क लाभ हिन्दी भाषा के मिलि चुकल रहेला । ऊपर वाला लोगन का अलावे दूगो राजा लोग, राजा लक्ष्मण सिंह आ राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द याद कइल जइहें । एह लोगन क भाषा वाली हाराबाजी त बहुत मशहूर ह । फोर्ट विलियमो कालेज वाला लेखक लोगन क गोल बहुते काम कइलसि । सभका बाद भारतेन्दु के जवना वजह से ऊँच पीढ़ा देके हिन्दी निबंध का पिता का रूप में आदर दिहल जाला ऊ ई ह कि इहाँ का ओकरा के व्यवस्थित, व्यापक,परिनिष्ठित, व्यावहारिक आ शुद्ध साहित्यिक बना के ओकरा भाषा-शैली के स्थिर कइलीं । एह काम में भारतेन्दु का पत्रकार प्रतिभा क बहुत लाभ मिलल । ई बाति कहल सही होई कि भारतेन्दु युग का निबंधन पर पत्रकारिता क भरपूर छाप बा आ संगे-संगे पश्चिम क प्रभाव पचि-पचा के, हिन्दी का माटी-पानी में घुलिमिलि के रंग बन्हले बा । ओह घरी छपे वाली पत्र-पत्रिकन में मँजि के हिन्दी गद्य क शक्ति खूब निखरलि । सन् 1868 में **'कवि वचन सुधा'** छपे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुरू भइलि। एकरा पाँचि बरिस बाद **'हरिश्चंद्र मैगजीन'** आ फेरू ओकरा चारि बरिस बाद **हिन्दी प्रदीप'** निकलल। एह पहिलके दशक में एह पत्रिकन से गजब क असरदार हवा बन्हा गइलि। सन् 1900 ई॰ में **'सरस्वती'** का छपे-छपे ले त निबंध क दूसरका युग शुरू हो गइल।

भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी आ आचार्य शुक्ल, जेकरा नावें क्रमशः हिन्दी निबंध क तीनि गो युग उचरेला, सचहूँ बड़ा भारी-भारी स्तंभ बाड़न। द्विवेदी जी बीच में बाड़न। इनका युग (सन् 1900-20) में एगो अचरज ई लउकत बा कि भारतेन्दु वाली जिन्दादिली रहि ना गइलि। भारतेन्दु में जवन व्यक्तिनिष्ठ, अनुरंजनकारी, व्यंग्य-विनोद पूर्ण, आंचलिक आ सहज प्रवाही छुअन रहे, चित्र-विचित्र ललित शैली क शुरूआत रहे ओकर मजिगर विकास ना भइल। भारतेन्दु मंडलो क लोग ओह मनतरंग के ना पकड़ि पवलन। बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र आ बालमुकुन्द गुप्त में हास्य-व्यंग्य जरूर बा बाकी ऊ हृदय में चपकि के बइठे वाली ओइसन खुलल बयानबाजी कहाँ बा ? बालमुकुन्द गुप्त के पत्रकारिता दबा देले आ अउरी लोग के पंडिताई। हिन्दी निबंध का नेंइ में भारतेन्दु का हाथे दिहल मस्ती-पानी आगे पुनरुत्थान नवजागरण आ आर्य समाजी आन्दोलन का गंभीरता में खिंचा गइल आ जवन भवन उठल ओह में वर्णनात्मकता, भावात्मकता, विचारात्मकता आ गवेषणात्मकता क विषय प्रधान शिल्प झलके लागल। द्विवेदी काल में ज्ञानविस्तार आ नैतिकता पर जोर परल जवना से गंभीरता खूब आइलि आ आचार्य रामचंद्र शुक्ल तक चोंहपि के ई चोटी ध इ लिहलसि।

त कुल्हि मिला के हिन्दी निबन्ध क जवन चिन्हारी बीसवीं शताब्दी का पहिलका चरन मे उभरलि ऊ कइसनि रहे ? एगो बाति साफ बा कि ऊ उन्नीसवीं शताब्दी का अंग्रेजी निबन्ध से भिन्न प्रकार के रहे। ओह में कुल्हि जोर विषयवस्तु पर रहे, ऊ बहुत कसल, ठोस, सतर्क, गंभीर आ विचार-विवेचन से भरल रहे। चाहे द्विवेदी युग के पूर्ण सिंह, माधव प्रसाद मिश्र, गोविन्द नारायण मिश्र, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, गोपाल राम गहमरी, बालमुकुन्द गुप्त, पद्म सिंह शर्मा, गणेश शंकर विद्यार्थी, श्यामसुन्दर दास, शिवपूजन सहाय और भगवान दास वगैरह होखस, चाहे ऊ शुक्ल युग के गुलाब राय, नन्ददुलारे बाजपेयी, रायकृष्ण दास, राहुल सांकृत्यायन, महादेवी वर्मा, बेचन शर्मा उग्र, सम्पूर्णानन्द, रामचन्द्र वर्मा, निराला जी आ सन्तराम वगैरह होखसु एह कुल्हि निबन्धकार लोगन क उहे गुरु गंभीर चेहरा सामने आवेला।

हवा सन् 40 का बाद बदललि ! स्वच्छन्दतावाद, युद्ध आ औद्योगिक क्रांति आदि का विश्वव्यापी प्रभाव से ई देश कइसे बाँचित ? पहिला धक्का लागल साहित्य का केन्द्रीय विधा कविता पर आ ऊ टूटि गइलि। धीरे-धीरे ओकर असर परल कहानी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाटक आ उपन्यास पर आ निबन्धो हिलि गइल। इन्सान का जिन्दगी क बढ़लि आपाध ापी, जटिलता, कसमकस, आ ऊपर से सूखा, अकाल, मँहगाई, फेरु विज्ञान युग क बौद्धिक दबाव, राजनीतिक घनचक्कर, अब निबन्ध केतना आड़ो ? पहिले निबन्ध पर साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रभाव रहे, अब अनचाहल राजनीतिक प्रभाव धकिआवे लागल। नाना तरह का तनाव में बिलबिलात मध्यमवर्ग आ बुद्धिजीवी समाज का पास गहराई में उतरे लायक कहाँ हूब रहिं गइल ? समय का संगे निबन्धो टूटि जात बा। विषय क खूँटा छोड़ि के ऊ स्वच्छन्द हो जात बा। एगो बढ़िया बाति भइलि। नयी कविता, नयी कहानी आ नया उपन्यास का हवा में 'नया निबन्ध' नाँव ना मैदान में आइल। एह विधा में जवन कुछु नया आइल वोह के **'ललित निबंध'** कहल गइल। ओकर नयापन ई रहे कि ऊ कविता आ कहानी का संगे आपन गँठजोरी त कइए लिहलसि, बहुत तेजी का साथ एकदम नया-नया रूप में फइले लागल। रिपोर्ताज, फीचर, स्केच, फैन्टेसी, न्यू लेटर, संस्मरण, डायरी, वार्ता, चिट्ठी, प्रवचन और व्यंग्य आदि ललित निबंध क रूप बहुत लोकप्रिय भइल। एकबारगी अइसन लागल कि शुद्ध 'निबंध' का विकास क जवन कड़ी भारतेन्दु का बाद गंभीर विचारात्मकता आ वर्णनात्मकता में उलझि गइलि रहे ऊ सुरझि के जुटि गइलि।

ललित निबंध क पुरहर विकास सन् 50 का बाद नवलेखन का संगे-संगे भइल। एकरा के ओह सांस्कृतिक पक्ष का प्रत्यावर्तन क पीरीयड कहल जाला जवन कविता का नवगीत में आ उपन्यास का आंचलिकता में झलकत बा। नवलेखन क विद्रोह ललित निबंध का विधा विद्रोह में उजागर बटले बा। हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्रभाकर माचवे, शांतिप्रिय द्विवेदी, जैनेन्द्र कुमार, लक्ष्मीकांत झा, रामवृक्ष बेनीपुरी आ देवेन्द्र सत्यार्थी वगैरह लोग ललित निबंध लेखकन का पहिली कतार में सचहूँ एह विधा में एगो जनगर विद्रोह बनि के उपटल आ मजा आ गइल। बाद में विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, कृष्णनाथ और विवेकी राय आदि लोग हिन्दी का ललित निबंध के सँवारि के बड़ी सेवा कइले बाड़न। वस्तु ना अब व्यक्ति निबंध क लक्ष्य बनि गइल बा। ओइसे त ई एगो जानल मानल मनोवैज्ञानिक सत्य बा कि वस्तु भा विषयो के लिखि के असल में लेखक अपने के अर्थात व्यक्तिये के लिखेला। बाकी सवाल प्रधानता क बा, प्रमुख दृष्टि भा उठावे वाला कोन क बा। व्यक्ति का कोना से निबन्ध के उठावल एगो भारी क्रांति बा। हिन्दी निबंध में ई व्यक्तिवादी क्रांति बहुत काम कइले बा। एक ओर ई बींसवी शताब्दी क हिन्दी निबंध अंग्रेजी का उन्नीसवीं शताब्दी का निबंध से जुटि गइल बा। दूसरी ओर ई अपना मूल विकास काल का परम्परा से जुटि गइल बा। ललित निबंध का एकदम ताजा स्वाद गंध का परख खातिर आचार्य रामचंद्र शुक्ल आ हजारी प्रसाद द्विवेदी के सोझा-साटी कइके देखल बहुत मनोरंजक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ विचारोत्तेजक होई ।

द्विवेदी जी का ललित निबन्धन में 'मैं' आवश्गक तत्त्व नियर हाजिर रहेला । रचना ओही से शुरू होले, ओही से अन्त तक भरल रहे ले । रचने ना ओकरा शीर्षको में 'मैं' होला । जइसे, 'मेरी जन्मभूमि' भा 'आपने मेरी रचना पढ़ी ?' शुक्ल जी गंभीर आ तटस्थ भाव से बस 'विषय' पर जुटल रहेलन । उनका रचनन में आदि, मध्य आ अन्त क बहुत सुन्दर सटीक संगति होले । पूरी रचना मूल विषय से संकेन्द्रित रहेले । द्विवेदी जी में ई चीज ना मिली । उहाँ का ललित लेखन में आदि कुछ और मध्य क बहस कुछ और, आ अन्त क निष्कर्ष कुछ और ! आदि में कहनी जइसन, बीच में शोध-संश्लेषण, अन्त में चिन्तन ! एह तरह से शुक्ल जी में परम्परावादी संगठन बा त द्विवेदी जी में स्वच्छन्दतावादी बिखराव बा । एक जना साहित्यिक समीक्षक नियर उभरेलन त दूसरका जना सांस्कृतिक चिन्तक जइसन धाहेलन । शुक्ल जी निबंध शुरू करेलन कवनो गंभीर सिद्धान्त वाक्य से, चाहे ठोस परिभाषा से, भा गूढ़ समस्यात्मक विचार से, आ ओह गंभीरता में उतरे खातिर पाठक का बहुत धीरज राखे के परेला । एने द्विवेदी जी कवनों अइसन दिलचस्प गप्प क लासा फेंकिहन कि पाठक अगरा के ओने उतरि जाई । शुक्ल जी के निबंध में दृढ़ता, स्थिरता, क्रमिकता आ समगति होले । एने द्विवेदी जी में अनियमितता आ उच्छृंखल उड़ान क बहार होले जवन आधुनिक पाठकन के खूब खींचेले । शुक्ल जी गहन गंभीर व्यक्तित्व क छाप लिहले निबन्धन के अतना ऊँचाई पर पहुँचा दिहलन कि ओकर परम्परा कम चलति । एने द्विवेदी जी का ललित लेखन क परम्परा सगरे साहित्य पर छा गइलि । हिन्दी साहित्य का केन्द्रीय विधा में कबो कविता रहे, सन् 50 का बाद कहानी आ गइलि आ अब जनात बा कि ललित निबंध ओह आसन पर आ जाई । ई कविता-कहानी दूनों के समेटले बा । शुक्ल जी में जवन विज्ञान के ठोस प्रभाव बा आ ऊ जवन उनकरा समास शैली में व्यक्त होला ऊ मूल्यवान आ महत्वपूर्ण त बहुत बा बाकी द्विवेदी जी का मनोरंजक व्यास शैली में गंभीर से गंभीर चीज जइसे सहज हृदयग्राही बनि के उतरि जाला ओकरा आगा ऊ आज लोकप्रिय ना हो सकेला । असल में सवाल विचार आ भाव क बा । ई भाव क दबाव होला कि द्विवेदी जी का ललित निबन्धन क शीर्षको में रोमैन्टिसिज्म झाँकत रहेला । नियंत्रित संश्लेषण-विश्लेषण का चक्कर में द्विवेदी जी ना परि के अनियंत्रित का भीतरी भाग में खुशी-खुशी पाठकन के घुमा के मूल निष्कर्ष थमा देलन । उद्देश्य कुछ और होला, बात कुछ और उठावल जाले । तमाम इतिहास, पुराण, पुरातत्व, नृतत्त्व, ज्योतिष, पुष्पविज्ञान, धातु विज्ञान, नाना प्रकार के ज्ञान, कला, धर्म, मध्यकालीन साहित्य, प्राचीन तंत्र आ दुनिया भर के मनोरंजक चक्कर आ कुल्हि क तालमेल अइसन बइठावल जाई कि ऊ ललित निबंध अंततक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चोंहपत-चोंहपत कब गंभीर विचार बनि गइल रही, ई पाठक लोगन के ना जनाई। असल में ललित निबंध बौद्धिक आयाम के कल्पना का उड़ान में समेट के पेश करेला। ओकर विचार क खूँटा बहुत मजबूत होला जवना पर से किस्सा-कहानी का रसरी से वर्णन क रमणीय तनाव फैलाव सम्पन होला आ फेरू कुल्हि बिखरल छोर ओही खूँटा में निष्कर्ष रूप बन्हा जाला।

खड़ी बोली हिन्दी का एही निबन्ध परम्परा का आखीर वाला विकास छोर से भोजपुरी निबन्ध क परम्परा शुरू होति लउकित बा। साँच पूछीं त भोजपुरी निबन्ध क दशा बहुत विचित्र बा आ हू-ब-हू उहे नइखे जइसन खड़ी बोली हिन्दी क बा। एह भाषा में एह विधा क सम्पूर्ण चिन्हारी ललित निबन्ध क बाँही ले ले उभरलि बा। शुद्धो ललित निबन्ध बहुत बा। भोजपुरी मुद्रा में गंभीर विषय-वस्तु प्रधान निबन्ध उभरते नइखे। सगरे निबन्धकारन में ललित विनोदात्मक प्रवृत्ति एकतरफा जोर मारति उमड़ति बा। विषयप्रधान निबन्ध का ना रहले अइसन लागत बा कि भोजपुरी में निबन्धे नइखे। बात ठीके बा। निबन्ध चालू अर्थ में त ओही के कहल जाला जवना में कवनो भावात्मक चाहे वर्णनात्मक विषय पर जमि के, क्रमबद्ध आ ओकरा अंग-अंग क विवेचन करत कलम चलावल जाले। ई बाति और बा कि साहित्यिक अर्थ में ऊ महज लेख होला। ऊ लेख सूचना, विवरण, प्रचार, समसामयिक या शाश्वत समस्यन पर विचार, विविध वृत्त, ज्ञान आ जानकारी वाला हो सकेला। ओह में टिप्पणी, समीक्षा, बहस आ भाषण भी समा जाई। धारा प्रवाह विचार आ भाव ओह लेख निबन्ध आर्टिकिल में भरल मिली। भोजपुरी में एह तरह का निबन्धन का पूरा-पूरा टोटा से घनघोर कमी जइसन जनात बा। का कारण हो सकेला एह कमी क ?

भोजपुरी में विषय प्रधान निबन्धन का कमी क एगो खास कारन ई बा कि एकरा विकास में पत्र-पत्रिकन क योगदान बहुत कम बा। खड़ी बोली का निबन्धन का उत्कर्ष काल में, माने भारतेन्दु आ द्विवेदी काल में एह विधा के पत्र-पत्रिकन के खूब परसाद मिलल। एने भोजपुरी में जमल-जमावल पत्रकारिता ना उभरलि। छिटपुट आ छोटमोट प्रयास क का असर परी ? दुसरका एगो मनोवैज्ञानिक कारन बा। भोजपुरी अंचल का समूहमन में भावात्मकता क खानि बा। इहाँ से बुद्धिवादी, आयाम क उपटल अबहीं कठिन जनात बा। एह क्षेत्र का लोहु में सांस्कृतिक रसरंग भरल बा। इहे वजह बा कि ओकरा जमीन से उठल-सटल भोजपुरी साहित्य अबो लोकगीतन का रसमयता में हाथ पैर मारत रहेला। विचार पर ना, ऊ भाव पर खूब जमेला। गंभीरता ना, ओकरा स्वभाव में चुहल आ मनसायन क रंग होला। नागरिक भाव ना, सहज-सरल ग्राम भाव में ऊ व्यापक ढंग से बूड़ल रहेला। कवनो अचरज ना कि ओकरा निबन्धन में आंचलिक रंग ढेर-डेर उभरेला। सबसे अधिका ऊ लोकतत्वन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क, लोकगीतन क, लोकजीवन आ लोक परम्परन क चित्र-विचित्र वर्णन में मजा ले ला। भोजपुरी निबन्ध में ललित तत्व उभरे क तीसरका एगो अउरी कारन बा। खड़ी बोली हिन्दी के ऊ अपना से अलग कबो ना मनलसि। त जवन विकास चाहे जेतना विकास ओकर हो गइल आ ऊ जहाँ पहुँचि गइलि ओकरा बाद वाला रूप भोजपुरी अपना में उभारि के आगे बढ़े लागलि।

वर्तमान युग राजनीति क ह आ भोजपुरी का पास अबहीं राजनीति क आधुनिक भाषा नइखे। ओकर समूचा सृजन-संस्कार अबहीं सांस्कृतिक भूमि पर टिकल बा। आधुनिकता आ नगरबोध क चारू ओर से धक्का कम नइखे लागत, बाकी ओकर कविता अबही लोकगीतन का धुरी पर से जल्दी टकसति नइखे। लोकगीतन क भावुकता, संस्कृति क सहजता आ आंचलिक रंगन क मोहकता भोजपुरी का निबन्ध सभ में बहुत बा। ई कुल्हि मिलि के ओकर सुर ललित निबन्ध वाला हो जात बा। एह सुर में अनुरंजनकारी उपयोगिता त बा बाकी विविध विषयन के ज्ञान करावे वाली योग्यता क अभाव बहुत खटकेला। प्रकृति आ जीवन का सौन्दर्य का संगे-संगे बोध क ऐश्वर्य भी होखे के चाहीं। युग जीवन से बेमेल परले बिछड़ल क्षेत्र क पिछड़ल साहित्य उपेक्षित हो जाई। संतुलन जरूरी बा। एह चंट युग में कोरा भावुक आदमी बेवकूफ कहल जाला। राजनीतिक संघर्ष, रोजी रोटी क दौड़ आ समस्यन क कसमकस आज क जीवन क यथार्थ कहल जाला। यथार्थ क भाषा एह युग क भाषा होई। भोजपुरी कबले आदर्श क कथरी ओढ़ले रही ? यथार्थ के उतारे खातिर अब जरूरत बा कि निबन्ध का जमीन के तनी कठेस बनावल जाव, ठोस, चट्टान नियर। भोजपुरी निबन्ध में जवन लचीलापन बा ऊ निन्दनीय नइखे बाकी ओकर कड़ेर ना भइल जरूर हीनता क बाति बा।

भोजपुरी निबन्ध का ललित विनोदात्मक आ भावात्मक क्षेत्र में त नीक फसल आइलि बा; ओकर एने जवन नयी-नयी गवछई फूटल बाड़ी सं, रिपोर्ताज, रेंखाचित्र, स्वैर विधा, साक्षात्कार, डायरी आ चिट्‌ठी वगैरह का रूप में ओहू में खूब हरिअरी बा। एकरा के खड़ी बोली हिन्दी के प्रभाव कहल जा सकेला। अकेले जमशेदपुर से रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' सगरे नयी निबंध विधन क साहित्य प्रकाशित कइले बाड़न, कुछ अपने लिखि के आ कुछ लिखवाइ के। अइसन नयापन, उत्साह आ प्रगति भोजपुरी का कवनो दूसरा लाइन पर नइखे लउकत। बाकी ढेर जोर-बल गद्य का मनोरंजक भा अनुरंजक पहलुए पर परि जाई त ऊ बचपने में हलुका जाई। तनी भावुकता का लहरि के रोकि के विचार, विवेचन, विश्लेषण, समीक्षा आ शोध वगैरह का ओर ध्यान जाये के चाहीं। भोजपुरी क स्वभाव निबन्ध का सन्तुलित विकास में बाधक हो रहल बा। आदर्शवादी, अजटिल आ भावुक भोजपुरिहा जन क स्वभावो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शायद अब समय आ गइल बा कि समय का ठोकर से बदलि के यथार्थपरक बनी। अबहीं त भावुकता एह स्तर तक बा कि भोजपुरी के सिरजनहार लोग संस्कृत का तत्सम शब्दन से कतरात बाड़न। 'समस्या' शब्द के 'समसेया' लिखे बदे झउरा नध ले बाड़न। लोग शब्दन का तद्भव, विकृत आ घिसल-पिटल रूप के जोते खातिर हँकि रहल बाड़न। बड़ी खींचतान बा। संस्कृत का शब्दन खातिर सतुआ-पीसान गठिया के देशज आ अज्ञात व्युत्पत्ति के शब्द खोजात बाड़न स। का पंचन क इहे राय बा कि भोजपुरी एगो महज आंचलिक बोली भा क्षेत्रीय वैचित्र्य क भाषाई अजायब घर बनिके रहि जाव ? आ ओह देशज शब्दन का माध्यम से का गंभीर विषयन में उतरे जोग शक्ति भोजपुरी में आई ? ई जरूर बा कि ऊ मूल्यवान धराऊँ शब्द भोजपुरी क प्राण बाड़न स, बाकी ई काहें भूलि जाइल जात बा कि उहे देशज आ खाँटि भोजपुरी क शब्द एने खड़िओ बोली क प्राण हो गइल बाड़न स। हमेशा व्यवहार भाषा का खुरदरापन क दोष मेटावे खातिर बोली क ताजा शब्द ओह में मिलावल जाला। बाकी अइसन का पागलपन कि 'भाषा' लिख चललीं त बीनि-बीनि के बोलिये वाला शब्द सजावे लगलीं। हलका फुलका सांस्कृतिक भा भावात्मक छुअन दे के कवनो भाषा-जीवन क सम्पूर्ण अभिव्यक्ति ना हो सकेले। भोजपुरी हिन्दी का संस्कृत शब्दावली से परहेज क मनोवैज्ञानिक द्विधा के हटा के जल्दी ओकरा परिनिष्ठित निबन्ध शैली क विकास करे के परी।

ई कम बढ़िया बात नइखे कि भोजपुरी में निबन्ध क जबरदस्त प्रवृत्ति बा। इहे ओकरा जीवन्त भाषा भइला के सबूत बा। अनेक बोली जीवन्त भाषा ना साबित भइली स काहे कि उन्हन में निबन्ध क प्रवृत्ति ना विकसित भइलि। ई प्रवृत्ति खड़ी बोली के तेजी से आगे सरकवलसि। ओहू में ओके लोकप्रिय आ अतिव्यापक बनावे में शुरू-शुरू में निबन्ध विधा क बल मिलल। भोजपुरी के जीवन्त प्रवाह वाली प्रभावशाली भाषा बनावे में आ एकरा भविष्य के गर्‌हे में एह में लिखाइल उच्च कोटि का निबन्धन क हाथ रही।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

16 'बात क बात' और भोजपुरी निबन्ध साहित्य की स्थिति

कुलदीप नारायण 'झड़प' के भोजपुरी निबन्धों का संग्रह **'बात क बात'** एक ऐसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अवसर पर (1977 ई० में) प्रकाशित हुआ जब भोजपुरी भाषा-भाषी प्रबुद्ध लोगों के बीच उसके सर्वांगीण विकास के संदर्भ में अनेक सरकारी-गैरसरकारी संस्थानिक प्रयत्नों के साथ अद्यावधि प्रकाशित सम्पूर्ण रचनात्मक साहित्य के बलाबल के परीक्षण-सर्वेक्षण की समझदारी जगी थी। मैं यहाँ भोजपुरी में निबन्ध साहित्य की समसामयिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में इस 'बात क बात' पर दो बात कहना चाहता हूँ।

एक भाषा के रूप में भोजपुरी का सर्वाधिक दुर्बल पक्ष यदि कहीं है तो वह है निबन्ध क्षेत्र। कविता और कथा साहित्य में भोजपुरी की आशातीत प्रगति हुई है परन्तु एसा प्रतीत होता है कि भोजपुरी साहित्य में कुल मिलाकर तब तक अपेक्षित गंभीरता का अभाव बना रहेगा जब तक निबन्ध में जोरदार हाथ नहीं लगता है। संस्कृत के आचार्यों ने बहुत सोच समझ कर गद्य को कविता की कसौटी कहा था। जब इस मौलिक कसौटी पर चढ़ कर इस भाषा का सृजन-रंग निखरता है तब वह आधुनिक होगी। कविता-कहानी की भावुकता इस विशाल और प्रविधियुग के बुद्धिवादी तथा विचारात्मक दौर में हलकी पड़ जाती है। जीवन की कड़ी जमीन को तोड़ने का जोरबल और तेवर भोजपुरी में आना अभी शेष है। इस जोर-बल का रियाज निबन्ध के अखाड़े में ही संभव है। प्रसन्नता की बात है कि भोजपुरी की **'अँजोर'** जैसी कुछ दमदार पत्रिकाएँ सुलझी हुई निबन्धात्मक लाइन देने में संलग्न हैं किन्तु प्रगति एकदम असन्तोषजनक है। ऐसा लगता है कि निबन्ध साहित्य को लेकर भोजपुरी पीछे लौट रही है। तेइस वर्ष पूर्व अगस्त सन् 1954 की **'भोजपुरी'** पत्रिका के एक सामान्य अंक को उलट कर देखें तो आश्चर्यचकित रह जाते हैं। इसमें विविध गम्भीर विषयों पर बीस निबन्ध संकलित हैं, हिन्दु कोडबिल से लेकर भवानी दयाल संन्यासी तक और सन्तों की भोजपुरी-सेवा से लेकर भोजपुरी-संस्कृति तक विषयों की विविधता को आयत्त कर।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल उसी को कहते हैं जिसमें गद्यावतरण हुआ है तथा यह नूतन अवतरण निबन्ध में ही निखार लेता है। **'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका'** से लेकर **'सरस्वती'** तक हिन्दी साहित्य में जो मानक मोड़ आये हैं उनके मूल में निबन्ध ही रहे हैं। आश्चर्य है कि निबन्ध साहित्य की उपेक्षा करके भोजपुरी को आधुनिक भाषा के रूप मे स्वीकृत-प्रतिष्ठित करने के लिए आग्रह किया जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबन्ध लिखने, लिखवाने और प्रकाशित करने की जो प्रवृत्ति और धार रघुवंश बाबू की पत्रिका **भोजपुरी** में ढाई दशक पूर्व दृष्टिगोचर हुई वह कहीं न कहीं गहरे गतिरोध में फँसी हुई है। यदि उसी गति से इस विधा का विकास हुआ होता तो क्या भोजपुरी निबन्ध की प्रकाशित पुस्तकों की संख्या मात्र उँगलियों पर गिन ली जाती ? सम्प्रति यह एक सत्य है। सत्य है कि बीते वर्षों के भीतर कुछ ही स्तरीय निबन्ध- पुस्तकें भोजपुरी में प्रकाशित हुईं ।

श्री गणेश चौबे ने **भोजपुरी के प्रकाशित ग्रंथ,** नामक एक बहुत मूल्यवान पुस्तक का सम्पादन किया है तथा उसे अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य -सम्मेलन की ओर से प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक से यह पता चलता है कि वास्तव में भोजपुरी में शुद्ध निबन्ध की एक भी पुस्तक नहीं है। निबन्ध कोटि में ललित निबन्ध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, पत्र-साहित्य, संस्मरण, साक्षात्कार और यात्रा वर्णन सम्बन्धी लगभग एक दर्जन भोजपुरी पुस्तकों का विवरण उसमें प्राप्त है। वास्तव में ये समस्त निबन्धेतर निबन्ध विधाएँ हैं और मोटे रूप से ललित-निबन्ध का ही विस्तार है। ललित निबन्ध के अतिरिक्त रेखाचित्र और रिपोर्ताज भी अब स्वतंत्र विधा के रूप में स्वीकृत हो गया है। भोजपुरी में यह सब है किन्तु विषयनिष्ठ निबन्ध का ऐसा अभाव वास्तव में चिन्तनीय है। **'के कहल चुनरी रंगा ल'** (विवेकी राय) **'चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियाँ'** (मुक्तेश्वर तिवारी) में स्तरीय निबन्धों की पुष्ट बानगी मिल जायगी परन्तु उक्त निबन्ध-संग्रहों में से दूसरा प्रायः ललित निबन्ध की ही कोटि में आता है। **'बेटा के नइहर'** (अविनाश चन्द्र विद्यार्थी) और **'सुरतिया ना बिसरी'** (निर्भीक) में बहुत दम है, किन्तु ये व्यक्तिनिष्ठ रम्य रचना और रेखाचित्र हैं। विचारात्मक अथवा चिन्तनमूलक निबन्ध साहित्य की कोटि में इन्हें ग्रहण करने के विषय में सोचा भी नहीं जा सकता। प्रश्न खड़ा होता है कि भोजपुरी में यह कैसी उलटी गंगा बह रही है ? संसार भर के साहित्य में -हिन्दी साहित्य में तो बहुत ही स्पष्ट - पहले निबन्ध का विकास होता है, फिर ललित निबन्ध की स्वच्छन्द धारा फूटती है। भोजपुरी में पहले ललित निबन्ध ही उछल आये ! शायद इसका एक महत्वपूर्ण मनावैज्ञानिक कारण है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से भोजपुरी और हिन्दी में अभेद होने के कारण सृजनात्मक स्तर पर भोजपुरी अपने को हिन्दी से पृथक नहीं मान रही है। अतः आधुनिक भोजपुरी निबन्धकार आधुनिक हिन्दी-निबन्ध की व्यक्तिनिष्ठ ललित धारा में खुशी-खुशी तैर रहा है तथा ललित निबन्ध, रेखाचित्र और रिपोर्ताज तथा पत्र-साहित्य की रोमानी लहरों में समर्पित युग-जीवन को झेल रहा है। जिन लोगों को शुद्ध विषयनिष्ठ निबन्ध और नवविकसित ललित निबन्ध अथवा व्यक्तिनिष्ठ निबन्ध का विधागत पार्थक्य ठीक-ठीक समझ में नहीं आता है उन लोगों को यह बात बहुत अटपटी भी लग सकती है। किन्तु यह निर्विवाद तथ्य है कि भोजपुरी में विषयनिष्ठ निबन्ध का मोर्चा बहुत कमजोर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसी स्थिति में दो एक प्रकाशनों को लेकर कितनी लड़ाई लड़ी जा सकती है? अत्यन्त आवश्यक है कि इस क्षेत्र में लेखकों का पसीना गिरे।

भोजपुरी जब विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं में अध्ययन के माध्यम के रूप में स्वीकृत कर ली गयी है तो उसमें विषयनिष्ठ, विचार-प्रधान, विश्लेषणपरक और सिद्धान्तमूलक निबन्धों का भी स्तरीय सृजन होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है तो क्या लेकर अध्येताओं के सम्मुख खड़े होंगे ? अब तक के प्रायः समस्त निबन्धात्मक सृजन को जमे हुए परिनिष्ठित कृतित्व की संज्ञा नहीं दी जा सकती है । बहुत सारी रचनाएँ तो 'राहचलन्ता' जैसी हैं और इससे ऊपर यदि कोई कृतिकार उठा है तो वह मात्र 'चलन्ता' बन कर रह गया है। वास्तविकता यह है कि भोजपुरी लेखक जब तक गंभीरता या गहराई में नहीं उतरता है तब तक उसके गद्य में गरिमा और मूल्यवत्ता नहीं आ सकती। इस भाषा में **'अशोक के फूल'** खिले, यह अच्छा है परन्तु बहुत अच्छा तब होगा जब उसमें **'चिन्तामणि'** की चमक आती है। कल्पना की निर्बन्ध रागात्मक-रोशनी उड़ान के साथ वातावरण को जिये जाते समकालीन जीवन के गांभीर्य अपेक्षित स्पर्श प्रदान करने के लिए ठोस वैचारिक धरातल प्रदान करना भी अत्यन्त आवश्यक है। इस अनुष्ठान में भोजपुरी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होगी। ऐसा नहीं है कि इस भाषा में गंभीर निबन्ध लिखने वाली प्रतिभाओं और प्रवृत्तियों का अभाव है। ऐसा भी नहीं है कि लोग लिखना नहीं चाहते हैं। वास्तव में एक आलस है, एक धुंध है और समय आ गया है कि यह धुंध कटना चाहिए। पत्र-पत्रिकायें ऐसे सृजन-समारंभ में पहल करती हैं तो कार्य सुगम हो जाता है।

कुछ वर्ष पूर्व वाराणसी से स्व० डॉक्टर स्वामीनाथ सिंह, ईश्वरचन्द्र सिन्हा और रामबली पाण्डेय के सहयोग से **'पुरवइया'** नामक एक निबन्ध-पत्रिका का इस भाषा में प्रकाशन शुरू हुआ। गुरुगंभीर आकार प्रकार की इस शोधपरक वैचारिक पत्रिका के प्रवेशांक में बहुत दबीज-दबीज आठ निबन्ध आये। ये निबन्ध विविध विषयों की पृष्ठभूमि पर आधारित थे, जैसे - राजनैतिक, समालोचनात्मक, खोजपूर्ण और सिद्धान्तचर्चामूलक आदि। कुछ ललित लेख भी थे। दूसरा अंक पहले से भी वजनदार निकला, ड्यौढ़े निबन्ध और अधिक गंभीरता लेकर। लेकिन 'पुरवइया' बन्द हो गयी। यह बात सन् 1968-69 की है। अब तक कल्पना की जा सकती है कि यदि 'पुरवइया' चलती होती और स्वामीनाथ सिंह जीवित होते तो कितने मूल्यवान निबन्धों की ढेरी लग गयी होती **'भोजपुरी संसद'** जैसी उच्चकोटि की भोजपुरी साहित्य की प्रकाशन संस्था से जिसने विविध विधाओं के मौलिक ग्रन्थों का प्रकाशन किया है, वैसी स्थिति में हम कल्पना कर सकते थे कि कोई शुद्ध विषय प्रधान निबन्धों का संकलन भी प्रकाशित कराया होता।

ऐसा बहुत कम होता है कि लेखक बैठकर इकट्ठे समस्त निबन्ध लिखकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक खड़ी कर देते हैं। वास्तव में निबन्ध का सीधा सम्बन्ध विचार से है और विचार विनिमय का निबन्धात्मक क्रम जब पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर चलता रहता है तथा जब वह प्रभूत की परिधि में आ जाता है तो उसी से स्थायी मूल्य की सामग्री चुनकर पुस्तकाकार प्रस्तुत हो जाती है। भोजपुरी पत्र-पत्रिकाओं में सबसे अधिक आदर और स्थान कवित। कहानी को मिल रहा है। फलतः प्रकाशित साहित्य के रूप में इन्हीं विधाओं की प्रचुरता है। एक तो निबन्ध बहुत ही कम लिखे जा रहे हैं, दूसरे जो लिखे जा रहें हैं उनमें भी बहुत कम हैं जो स्थायी साहित्य के रूप में सुरक्षित रखें जाने की योग्यता रखते हैं। निबन्ध प्रधान पत्रिकाओं का तो अति अभाव है। एक 'पुरवइया' थी वह बन्द पड़ी है। अब नये दशक में **'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'** को विचारात्मक निबन्ध पत्रिका के रूप में उभरते देखते हैं परन्तु यह भोजपुरी साहित्य का भारी दुर्भाग्य ही होगा कि इसके सिद्ध सेवकों में से ही कुछ लोग ऐसे निकलें जिनकी मान्यता हो कि पत्रिका छाप कर क्या होगा ? पुस्तक छपनी चाहिए। उक्त सम्मेलन पत्रिका को जो शोधपरक गंभीर रूप दिया गया वह बहुत उज्जवल भविष्य का द्योतक रहा परन्तु ऐसी निबन्ध पत्रिका यदि साल में एक ही प्रकाशित होती है तो वह कितने प्रभावों वाली सिद्ध होगी ?

भोजपुरी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशक और सम्पादक लोग समय की मांग है कि इस चुनौती को स्वीकार करें। कामचलाऊ समसामयिकता की प्रवृत्ति प्रगति में बाधक होगी। सुविचारित सुचिन्तित निबन्ध रचना-वृत्ति का उन्मेष होना चाहिए। वाराणसी के दैनिक पत्र **'आज'** और उसके सहायक सम्पादक ईश्वरचन्द्र सिन्हा के प्रोत्साहन से भोजपुरी आकाश का वह एक जगमगाता नक्षत्र उछल-उग आया जिसके **'चतुरी चाचा'** नाम में भोजपुरी भाषा और साहित्य की प्रतिष्ठा टंकी हुई है। चतुरी चाचा ने चौदह-पन्द्रह वर्षों तक जिस प्रकार अपने नियमित साप्ताहिक स्तम्भ में निबन्ध बनाम चिट्ठी का विशाल रचना संसार खड़ा किया वह भोजपुरी साहित्य के इतिहास में अदभुत और अद्वितीय है। उन निबन्धों ने अपनी जो गहरी छाप छोड़ी है वह वास्तव में आधुनिक भोजपुरी गद्य का गौरव चिन्ह है। भोजपुरी जैसी अल्हड़ लोकभाषा को ऐसी कड़ी कलम का ध नी लेखक मिल जाता है तो वह क्यों न दलचन्द साहित्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठा पा जाय ? कोई बड़ा पद कहीं बखशीश नहीं मिलता है। उसे अपनी प्राणऊर्जा से अर्जित किया जाता है तथा बाहु-बल या लेखनी-बल अथवा सृजनशीलता के बल पर हथिया लिया जाता है। ऐसे ही बल से अवधी, ब्रजभाषा और हाल में ही मैथिली ने उच्चासन प्राप्त किया है। किन्तु भोजपुरी से अवधी ब्रजभाषा की कोई तुलना नहीं। वे दोनों एक प्रकार से प्रवाह रूद्ध सुप्त भाषा के रूप में जीवित हैं। भाषा का प्राण गद्य है जिसका प्रवाह अवधी और ब्रजभाषा में नहीं है। भोजपुरी में बहुत प्रभावशाली गद्य है और शनैः शनैः विकासवान है। उच्चकोटि की विचारभाषा के रूप में इसकी विराट सम्भावना को भाषा वैज्ञानिक और साहित्यशास्त्री दोनों स्वीकार करते हैं। निबन्धगत न्यूनता को पूर्ण कर निहित क्षमता का पूर्ण विकास तीव्र गति से इस भाषा में होना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भोजपुरी', 'भोजपुरी साहित्य', 'अंजोर', 'भोजपुरी भारती' और 'ललकार' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भोजपुरी के निबन्धों और इस विधा की प्रकाशित पुस्तकों की कुल सामग्री का सर्वेक्षण करने पर जिन प्रवृत्तियों का परिचय मिलता है तथा जिस प्रकार उसका वर्गीकरण किया जा सकता है उसकी एक रूपरेखा प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत होता है।

सर्वप्रथम वह कोटि लक्षित होती है जिसमें भोजपुरी भाषान्दोलन से सम्बन्धित निबन्ध लिखे गये हैं। भोजपुरी भाषा, साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता महत्ता और विविध अन्वेषणों से सम्बन्धित समस्याओं पर निबन्ध बहुत उत्साह के साथ लिखे गये हैं। दूसरे वर्ग के निबन्ध भोजपुरी संस्कृति से सम्बंधित हैं। इसमें लोक गीत, लोकजीवन, लोकसाहित्य, भोजपुरी कवि एवं सन्तों का जीवन, क्षेत्रीय त्योहार, प्रादेशिक वैचित्र्य और आँचलिक इतिहास आदि विषयों को लेखकों ने उठाया है। तीसरी कोटि साहित्यालोचन सम्बन्धी निबन्धों की है जिसमें भोजपुरी संत कवियों के मूल्यांकन, कथा-साहित्य, काव्य साहित्य और लोकगीतों पर समीक्षाएँ दृष्टिगोचर होती हैं। किन्तु इस कोटि के निबन्ध अत्यन्त विरल हैं। चौथी कोटि में विविध विषयों से सम्बन्धित रचनात्मक, विवरणात्मक अथवा वर्णनात्मक निबन्ध आते हैं और भोजपुरी निबन्ध-साहित्य की पाँचवीं महत्वपूर्ण कोटि ललित 'निबन्ध और नव विकसित निबन्धेतर निबन्ध विधाओं जैसे रेखाचित्र, यात्रा वर्णन, संस्मरण और चिट्ठी आदि वाली है।

उक्त रूपरेखा से जो निष्कर्ष निकल रहा है वह अत्यन्त स्पष्ट है। भोजपुरी में विषयप्रधान वैचारिक निबन्ध नहीं हैं और इस चिंताजनक स्थिति का संकेत ऊपर हो चुका है। डॉक्टर मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' अर्थात् चतुरी चाचा, रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', डॉ बच्चन पाठक 'सलिल', अविनाशचन्द्र विद्यार्थी, पाण्डेय कपिल, प्रो० ब्रजकिशोर, स्वर्णकिरण, कुलदीप नारायण झड़प, गणेश चौबे, रामविचार पाण्डेय, अनिल कुमार राय आंजनेय, प्रो० रामेश्वर नाथ तिवारी, ईश्वरचन्द्र सिन्हा, पाण्डेय नर्वदेश्वर सहाय, सत्यवादी जी, चितरंजन, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, रामवृक्ष राय, डा० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी, भैरव नाथ पाण्डेय, बसंत कुमार, शालिग्राम उपाध्याय और कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' आदि भोजपुरी के जागरूक लेखकों के कन्धे पर सहज ही यह भारी बोझ आ जाता है कि इस जीवन्त भाषा के उक्त गंभीर साहित्यिक कलंक को काटें।

इस संक्षिप्त सर्वेक्षण से जहाँ यह स्पष्ट है कि भोजपुरी में विषयनिष्ठ निबन्ध साहित्य का घोर अभाव है वहाँ **कुलदीप नारायण 'झड़प'** के प्रस्तुत निबन्ध संग्रह **'बात क बात'** के महत्वपूर्ण समय पर प्रकाशित होने से ऐतिहासिक विशेषता भी प्रकट हो जाती है। तात्कालिक माँग की दृष्टि से निबन्ध लेखन के क्षेत्र में उठा हर सार्थक भोजपुरी कदम उसके समवेत अभ्युत्थान का कदम है। भोजपुरी मनीषा उसकी अपनी जीवन दृष्टि और मौलिक सांस्कृतिक निजता सब गम्भीर भाव से झड़प जी में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिव्यक्ति पाती दिखती है। हास्य-व्यंग्य, समीक्षात्मक, विचारात्मक और भावात्मक आदि की परिचित कोटियों में अँटती न अँटती संग्रह की सताईस रचनाएँ सही अर्थ में वैविध्य की संज्ञा पा जाती हैं।

ललित निबन्ध बँधान में एक दर्जन रचनायें हैं। इनमें कल्पनाशीलता 'मैं' का प्रसार रागतत्व, सांस्कृतिक दृष्टि, कथात्मक स्पर्श, कवित्वमय पकड़, अनुरंजन और विचार-चिन्तन केन्द्रीयता जैसे ललित निबन्ध के प्रभाव तत्व तो हैं परन्तु एक महत्वपूर्ण तत्व बिखराव नहीं है तथा इस एक अनिवार्य तत्व के न होने से वास्तव में ये निबन्ध व्यक्तिनिष्ठ कोटि में आते-आते रह जाते हैं। इनमें आदि से अन्त तक विषयनिष्ठा और अन्तरसूत्रता बनी रहती है। स्वच्छन्दता, विच्छिन्नता, और क्रम विद्रोह रहित ये रचनायें रम्य होकर भी वास्तव में विषयनिष्ठ निबन्ध की कोटि में ही आयेंगी। सजगता, प्रगल्भता, वचनवक्रता और विदग्धता अनुरंजनकारी अनौपचारिक भाव से उभरती है तो सचमुच आस्वाद के स्तर पर पाठक कहीं गहरे में डूब जाता है।

पुस्तक शीर्षक वाला महत्वपूर्ण निबन्ध -**'बात क बात'** शुरू होता है, -'ई बाते बतावेले कि बात के केतना बिसात बा', और चट स्मरण आ जाता है हिन्दी साहित्य के एक प्रख्यात शिल्पी बालकृष्ण भट्ट का। अलंकारों, मिथकों और मुहावरों में डूबा यह बात-विज्ञान का मनोरंजक मंथन अद्‌भुत है। पचासों प्रकार की बातें, सैकड़ों प्रकार के उनके तेवर और अनन्त भाँति की पाठकीय संवेदनायें। लेखक प्रवाह में बहुत तीव्रता के साथ बहता जाता है, ... प्रवचन, ललकार, फटकार, निन्दा प्रशंसा, आलोचना, सूक्ति, लल्लो-चप्पो, आदेश, उपदेश, निवेदन, विवाद, बकबक, झकझक ....' और यह सब मात्र विवरणात्मक या सूचनात्मक स्तर पर नहीं होता है। इनकी अर्थगर्भिता कहीं और होती है और इस प्रतिज्ञा के साथ खुलती है कि 'चतुर लोक मोका देखि के बात पर बात बइठावेला।' फिर लगता है, चतुर लेखक ने बात पर बात बैठाने में जिस कला-क्षमता का परिचय दिया है उसकी प्रशंसा होनी तो चाहिए मगर किस अर्थ में? अथवा कितनी खुशी से समकालीन जिये जाते जीवन की संवेदना के साहित्यगत आधुनिक आग्रह का परित्याग करने के लिए हम तैयार हैं? न्याय की बात शायद यह होगी कि 'झड़प' जी अपनी इस प्रकार की पूर्ति में दत्तचित्त हैं और इसका मूल्यांकन इसी संदर्भ में उचित होगा।

'झड़प' जी के साहित्यकार में पुरानी पीढ़ी की नैतिकता है और पूरे विश्वास के साथ वह नयी पीढ़ी का साथ देते, उसके सुख-दुख में अँटते, उसे विचारमग्न करने के साथ हँसाते-गुदगुदाते चलते हैं। स्वस्थ मनोरंजन की परम्परा हिन्दी में बहुत समृद्ध है और वह भोजपुरी में उतर कर जहाँ कुछ रचइताओं में भदेस शब्दावली के प्रयोगगत चमत्कार तक सीमित रह गई है वहाँ झड़प जी ने उसे गंभीर और स्तरीय रूप दिया है। पूर्व विवेचित निबन्ध के अतिरिक्त **'खटमल के व्युत्पत्ति'** में विनोद बहुत सहज संवाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुद्रा में प्रस्तुत हुआ है। स्वयं अज्ञानी बनकर हँसाने की अपेक्षा झड़प जी विज्ञ रूप धारणकर पाठकों का मनोरंजन करने उतरते हैं। वे सामान्य बातों के लिए भी काव्य, इतिहास, पुराण और लोक प्रचलित किंबदन्तियों को छान मारते हैं और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की भांति बिना पांडित्य का 'आतंक' जमाये सहज भाव से सबकुछ कह डालते हैं। आलोच्य निबन्ध में खटमली गुरिल्लों से उनकी भिड़न्त और रात भर की मोर्चाबन्दी बहुत सधे अन्दाज में प्रस्तुत हुई है। ऐसा लगता है कि झड़प जी में मध्य की स्थिति नहीं है। या तो वे गंभीर चिन्तक और अन्वेषक हैं या तो अपने निबन्धों में अति विनोदी हैं। शिष्टता, शालीनता और संयमन से भरी ये मनोरंजक रचनायें एक छोर पर हैं तो **'साँच का ह'** जैसी दार्शनिक उड़ान वाली अथवा **'सभ्यता के आदि भूमि'** जैसी खोजपूर्ण ऐतिहासिक रचनायें गंभीरता के दूसरे छोर पर हैं। कभी-कभी दृष्टि के पैनेपन से झड़प जी आश्चर्य में डाल देते हैं। भारतीय पक्षी-विज्ञान को जब वे भोजपुरी में उतारते चलते हैं तो उनके हर विवरण के साथ पाठकों को भोजपुरी धरती और आकाश की अपनी विशिष्टताओं का अहसास होता चलता है तथा यही उनके प्रबन्ध की वह मौलिकता होती है जिसके चलते पाठकों का चित्त एक विशेष सांस्कृतिक रसबोध की स्थिति में पहुँच जाता है।

अक्सर एक सवाल किया जाता है कि हिन्दी निबन्ध का भारतेन्दु मण्डलान्तर्गत जो तेज व्यंग्य-विनोद और गहमागहमी पूर्ण जिन्दादिली के बीच विकास हुआ वह परम्परा के रूप में वैसे आगे क्यों नहीं चलता लक्षित होता है ? आँचलिकता, विविधता, रसवत्ता, गंभीर अध्ययन छाप, शास्त्रीयता, समसामयिकता, राष्ट्रीयता और पाठकों को चमत्कृत कर तृप्त कर देने वाली स्तरीय साहित्यिक पकड़पूर्ण भारतेन्दु के हिन्दी गद्य की नींव वाले निबन्धों का शिल्प सर्वदा अनछुआ कैसे रह गया ? ऐसा लगता है कि आचार्य द्विवेदी के पुनरूत्थानवादी गांभीर्य में वह निबन्ध की चुस्त कड़ी खो गई। यह कहना वास्तव में तनिक भी अति नहीं होगा कि झड़प जी के प्रस्तुत भोजपुरी निबन्ध संग्रह में वही कड़ी पुनः जुड़ती लक्षित होती है। भारतेन्दु के कुछ निबन्धों की तरल बनावट देख कर ललित निबन्ध की शुरूआत का भ्रम होता है। ठीक वैसे ही 'झड़प' जी में लालित्य का इन्द्रजाल बिखरा है। भारतेन्दु की ही भाँति इस लालित्य के पड़ोस में पड़ी है गवेषणात्मकता। **'सभ्यता के आदि भूमि'** में सांस्कृतिक दृष्टि के साथ प्राचीन इतिहास में जो दौड़ लेखक लगाता है वह बहुत मौलिक प्रतीत होती है। भारत के साथ यूनान, मिश्र, अरब और फारस के प्राचीन सम्बन्धों की वह खोज कल्पना की उड़ान नहीं लेखकीय प्रतिभा की पकड़ में आई सच्चाई है। अमृतलाल नागर के उपन्यास **'एकदा नैमिषारण्ये'**, में औपन्यासिक रचनात्मकता के अन्तर्गत अरब और भारत के प्राचीन सम्बन्धों का प्रामाणिक और विशद चित्रण किया गया है। उस चित्रण में नृतत्व, पुरातत्व, भाषा विज्ञान, इतिहास, पुराण, समाजशास्त्र और विविध ज्ञान की शाखाओं का उपयोग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथा में निचुड़ कर बिखरता है। 'झड़प' जी की रचना शुद्ध निबन्ध रूप में है, अतः उन्हें बातों को सीधे रखने की सुविधा है। आश्चर्य है कि भोजपुरी में इतने जटिल विषय को उठा कर मुक्त और सहज भाव से लेखक सँभाल ले जाता है। बातों को प्रस्तुत करने में उसे कहीं कोई असुविधा नहीं होती है। वास्तव में असुविधा तब होती है जब कोई भाषा व्यक्तित्व का अंग न बनकर कृत्रिम वैचारिक वाहन बनती है। 'झड़प' जी की सांस्कृतिक चेतना और शुद्ध भोजपुरी व्यक्तित्व के योग से जो अभिव्यक्तिगत सहजता इस निबन्ध में लक्षित है वह भोजपुरी निबन्ध साहित्य की एक उपलब्धि है।

भोजपुरी प्रदेश के निवासियों में राजनीति रहित सांस्कृतिक भावुकता की प्रकृति प्रायः दुर्बलता की सीमा तक होती है और यह उसके बौद्धिक वर्ग में भी होती है। भाषा के विषय में मुँह खोलते समय कभी-कभी इसके पक्षधर वैज्ञानिक विवेचन कम करके रागात्मक समर्थन में अधिक दत्तचित्त हो जाते हैं। भोजपुरी विकासशील भाषा है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से समृद्ध, सक्षम और जीवन्त भाषा के समस्त लक्षण इसके भीतर हैं। इसकी निहित शक्ति, संभावना और इसके व्यक्तिगत प्रभावी आयामों को लेकर भोजपुरी में सबसे अधिक निबन्ध लिखे गये हैं। इस भाषा का हर निबन्धकार जब कलम उठाता है तो सबसे पहले इसकी प्रशस्ति में जुट जाता है। 'झड़प' जी के प्रस्तुत संग्रह में भी एक चौथाई निबन्ध इसी पृष्ठभूमि पर हैं। भोजपुरी का विकास, उसके साहित्य की परम्परा और उसकी मर्मस्पर्शिता के साथ प्रसार आदि में उतरते अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भों से जोड़ कर सात निबन्धों में एक प्रकार से इस विवेचन को पूर्णता तक पहुँचा दिया जाता है। प्रश्न यह होता है कि तो क्या उक्त दुर्बलता झड़प जी में भी है ? इसका उत्तर बहुत स्पष्ट है। वास्तव में इन निबन्धों में तथ्यातथ्यपरक वैज्ञानिक विश्लेषण, भाषा वैज्ञानिक उपलब्धियों के उद्घाटन और ऐतिहासिक अनुसंधान की प्रवृत्ति प्रधान होने के कारण रागबद्ध भावुकता के लिए कम स्थान है। फिर भी दो-एक निबन्धों में 'झड़प' जी कुछ भावुक हो लेते हैं। शायद इस भावुकता का शत प्रतिशत अभाव होता तो इस मुद्दे पर उनकी आलोचना होती।

उनके इस पूरे निबन्ध संग्रह की रचनाओं का केन्द्रीय स्वर साहित्यिक से अधिक सांस्कृतिक है। संस्कृति का प्राण भाव है और सभ्यता का स्रोत विचार है। भोजपुरी सभ्य बनकर 'झड़प' जी उसकी जन्मकुण्डली उलटते-पुलटते हेमचन्द्र के शब्दानुशासन और 'प्राकृतिक पैंगलम' तक पहुँचते हैं और उसकी भाग्य रेखाओं का विवेचन करते प्राचीन ऐतिहासिक दस्तावेजों, माफीनामों, दानपत्रों, ताम्रपत्रों और विविध लेखों-उल्लेखों में अति गंभीर भाव से उतरते हैं। वे किंचित मात्र भी भावुक नहीं होते हैं। यह शुचिप्रवृत्ति उनकी मूल प्रवृत्ति है और भोजपुरी निबन्ध क्षेत्र में वे अप्रतिम हैं। निस्सन्देह **'बात क बात'** से भोजपुरी निबन्ध संसार और गौरवान्वित हुआ।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

17 निबन्ध क्षेत्र का मानक कृतित्व : 'विचार बन्ध'

सालभर पहिले जब हम बोकारो में सम्पन्न भइल अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का बार्षिक अधिवेशन का बारे में चिट्ठी लिखले रहलीं त ओकरा के पढ़ि के अनेक भोजपुरी प्रेमी लोग पत्र भेजले रहलन। ओह पत्रन में विलासपुर से आइल मनोहर लालजी के पत्र हमके बराबर याद रहल ह। पत्र में ऊ कुछ सवाल उठवले रहलन आ कुछ जानकारी प्राप्त कइल चहले रहलन।

मनोहर लाल जानकारी कइल चहलें रहलन कि भोजपुरी में कवन निबन्ध के पुस्तक बा जवना के प्रतापनारायण मिश्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, गुलाब राय आ हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबन्धन का कतार में ठाढ़ कइल जा सकेला ?

सवाल बड़ा कठिन रहे। एही वजह से एकर जवाब देबे में साल भर के समय लागि गइल ह। भोजपुरी में निबन्ध ग्रन्थन क कमी नइखे। सन् 1960 आ सन् 90 का बीचे लगभग पचास गो निबन्ध सम्बन्धी नीक पुस्तकन के चर्चा पं० गणेश चौबे अपना किताब **'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस'** में कइले बाड़न। ओह पुस्तकन का लेखकन में नागेन्द्र प्रसाद सिंह, कुलदीप नारायण 'झड़प', अक्षयवर दीक्षित, विवेकी राय, डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा), अविनाशचन्द्र विद्यार्थी, जितराम पाठक, सत्यवादी छपरहिया, हरिशंकर वर्मा, प्राचार्य विश्वनाथ सिंह, महेश्वराचार्य, आ कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' वगैरह के नाँव जवन भोजपुरी निबन्ध-साहित्य में उछलल बा ऊ बहुत दमदार बा बाकी ऊपर का सवाल के जवाब देबे लायक एगो सबका से वजनदार नाम अबहीं हाल में सामने उभरल ह, **डॉ० अनिलकुमार 'आंजनेय'**।

डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' के निबन्ध-पुस्तक **'विचार बन्ध'** सन् 1989 में भोजपुरी अकादमी, बिहार सरकार, पटना से छपलि। एह पुस्तक में लेखक के ग्यारह गो निबन्ध संकलित बाड़न स। शुरू के तीन गो निबन्ध भोजपुरी भाषा आ ओकर साहित्य का सम्बन्ध में लिखल गइल बाड़े स। एह लेखन के रूप 'प्रतिवादक-प्रतिस्थापक' बा बाकी ओकर मूल स्वर राष्ट्रीय बा। हिन्दी का प्रति एह में कवनों तरह के दुराव भा बिरोध नइखे। भोजपुरी का जयजयकार का संगे-संगे हिन्दी खड़ी बोलियो के जयजयकार कइल गइल बा। लेखक आचार्य शिवपूजन सहाय आ आचार्य कुलदीप नारायण झड़प का प्रयास के सराहना करत लिखत बा कि भोजपुरी भाषा आ साहित्य का बढ़न्ती के लेके एह दूनो प्रयास के लक्ष्य राष्ट्रभाषा हिन्दी के समृद्ध-सशक्त बनावही खातिर भोजपुरी के प्राचीन साहित्य के उद्धार आ नवीन के सृजन-संकलन आ प्रचार-प्रसार रहे। 'खड़ी बोली' वाली 'हिन्दी' के लतर धकियाइ के ऊपरै-ऊपर अतना ना छा गइलि कि धरती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का छाती से लागल मांगलिक 'दूब' के नावों-निसान हालाहाली ना लउके लागल।'

ऊपर वाला विचार से सिद्ध बा कि आंजनेय जी के दृष्टि साफ बा। उनका दृष्टि में हिन्दी अगर फूलत-फरत लहलहात लतर बा त ओकरा सोभ्रा भोजपुरी मांगलिक दूब जइसन बा। एक स्थान पर ऊ अउरी बढ़िया रूपक में एह सम्बन्ध के निरूपण करत बाड़न, 'भोजपुरी समेत ई कुल्हि क्षेत्रीय भाषा हिन्दी का अक्षयवट के बरोहि हई सन।' (पृष्ठ 3) इहे विशुद्ध रचनात्मक स्वर सब जगह लेखक भरपूर शक्ति का साथे उठा के भोजपुरी का सशक्त राष्ट्रीय रूप के उजागर कइले बा। रचनात्मक दृष्टि आ रचनात्मक विचार का संगे-संगे रचनात्मक ललित निबन्ध-भाषा के मेल पुस्तक का ऊँचाई आ गंभीरता के बढ़ा देत बा।

साँच पूछल जाव त **'विचार बन्ध'** के सगरे निबन्ध उत्कृष्ट ललित निबन्ध का रूप में प्रस्तुत भइल बाड़न स। बाहर से शीर्षक देखि के जनात बा कि ई विषय प्रधान लेख होई बाकी ओकर भीतर ढुकला पर व्यक्ति प्रधान ललित निबन्ध के स्वच्छन्दता मन के अपना ओर खींचि लेति बा। इहाँ तलक ले कि पहिले वाला तीनि गो निबन्धों में, जवनन में हिन्दी-भोजपुरी के जयकार भइलि बा, भोजपुरी के महातम खोजल गइल बा आ ओकरा जनगर-पनिगर शब्दन के छाँटि के विवेचन भइल बा, लालित्य भरल व्यक्ति प्रधान छाप के चटक रूप में उभारल गइल बा। इहे कारन बा कि मनोविनोद, भा एकरा के काव्य-शास्त्र-विनोद वाला तत्व कहल जाव, रचना पर छवले रहत बा। बाकी एकर अर्थ ई नइखे कि निबन्धन में कोरा मनोरंजने बा। विचार आ चिन्तन-विश्लेषण आंजनेय का निबन्धन का केन्द्र में बा। अनुरंजन ओकरा परिधि पर बा। इहे ललित निबन्ध के प्रमुख पहचान होले।

ललित निबन्ध में लेखक हलका-फुलका मनोरंजन का रास्ता से पढ़े वाला का भीतर विचार-चिन्तन के गंभीर लहर पैदा कइ देला। ओह रचना के सहज, स्वच्छन्द आ रम्य आधुनिक बुद्धिजीवी के तनाव रहित प्रफुल्लित कइ देबे वाली शक्ति राखेला। ओह में सांस्कृतिक दृष्टि अनिवार्य रूप से रहे ले। लेखक के व्यक्तित्व के छाप अइसन परेले कि रचना बिखराव से कसाव का ओर, सूचना से सम्प्रेषण का ओर, हलकापन से गंभीरता का ओर आ मनोरंजन से चिन्तन का ओर बढ़ि जाले। अइसने स्वच्छन्द सम्प्रेषण के ललित निबन्धात्मक विशेषता आंजनेय का निबन्धन में मिलति बा।

संकलन का निबन्धन में **'बंस पुरान'** **'बतरस आ पाती'** आ **'हाथ-माथ के अनुनासिकता'** में विशुद्ध ललित निबन्ध के तत्व निहित बा। **'विनय पत्रिका के एगो पद आ कहरऊ बोली'** में अनुरंजक अन्वेषण बा त **'भोजपुरी बाबा'** में रेखाचित्र बा। अइसन जनात बा कि सगरे लेखन के पृष्ठभूमि भोजपुरी भाषा बा आ ओकरा ऊपर पैर जमा के लेखक विनोदपूर्ण आक्रामक रूप में ठाढ़ बा। ओकरा एह रूप में बहुत सहजता आ सद्भाव बा। भारतेन्दु के जिन्दादिली आ विचारोत्तेजना, प्रताप नारायण मिश्र के विनोदद्रियता, गुलेरी के पांडित्यपूर्ण शिल्प आ माधव प्रसाद मिश्र का प्रगल्भता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का संगे-संगे आधुनिक काल का ललित निबन्ध-लेखकन के विशेषता के छाप समेटले आंजनेय के निबन्ध एगो भरपूर साहित्यिक आस्वाद-सुख का रूप में सामने आवत बाड़न स।

हिन्दी ललित निबन्ध के आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, विवेकी राय, अज्ञेय, प्रभाकर माचवे आ नगेन्द्र वगैरह लेखक लोग बहुत ऊँचाई पर पहुँचा देले बाड़न। ओह ऊँचाई के भोजपुरी अबहीं भला कइसे छू लेई ? अबहीं त ई बोली से उठि के भाषा का रूप में ठाढ़ भइलि ह। धीरे-धीरे एकरा में शक्तिशाली सम्प्रेषण के रूप निखरि रहल बा। कहानी में सबसे अधिक निखरल बा आ निबन्ध में सबसे कम। एह कमी के **'विचार बन्ध'** पूरा करत जनात बा। भाषा के पृष्ठभूमि बना के रचना में लालित्य आ ओज पैदा कइल आसान काम नइखे आ ओहू में आधुनिकता के भरपूर समावेश अवरू कठिन बा। काहे से कि ई खाली विषयवस्तु में ना रहेले। शिल्प का भीतर आधुनिकता के मुद्रा जब तलक ले ना पैदा होई तब ले रचना का भीतर से पुरानापन ना जाई। नयापन के ताजगी आ जीवन्तता उत्पन्न करे खातिर आंजनेय जी कथ्य आ शिल्प में जवन आपन मौलिक छाप छोड़त बाड़न ओकर कुछ बानगी देखल जरूरी बा।

'कोश के महिमा, स्वरूप आ दिशा' शीर्षक लेख में हिन्दी का कोषग्रन्थन में क्षेत्रीय भाषा का महत्वपूर्ण शब्दन के उपेक्षा आ अंग्रेजी डिक्सनरी के रूढ़ डहरि धइके भाकठ-पुरान नियर अँखमुद्दा बढ़ला पर लेखक आपन क्षोभ प्रकट करत बा-

'हिन्दी साहित्य के इतिहास जो देखीं, त एह खेसरा-खतिअवनी से इहे पता चली कि बाबू लोगन के इलाका बहुत बड़ बा। ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही,अंगिका, बज्जिका आ ना जाने अउरी कहाँ-कहाँ ले त एह लोगन के ताल्लुका आ जमीदारी के लमहर पसार बा बाकी कोश के जो उलटीं त अतना अरजा-परजा के सबद बेलकुले नदारद, खजाना खाली। इहे रहनिया त रंक बना घललसि आ सभकुछ बेहुरमत कइ देहलसि। लोक-भाषा के उचिलवला के फल सामने बा कि कोश के कोख ना भरल।' (पृष्ठ 64)

ऊपर का उदाहरण से स्पष्ट बा कि आंजनेय का भाषा में भोजपुरी भाषा के मौलिक पकड़ बा, ओकरा मूल मुहावरा, लोकोक्ति, शब्दावली आ विशिष्ट पदन के प्रयोग अतना सही सटीक ढंग से होत बा कि पढ़त में ओकरा सहजता पर आँच नइखे आवत। आंजनेय जी अखिल भारतीय जनपदीय परिषद के महामंत्री हवन आ एकरा आन्दोलन के एगो महारथी हवन। एकर आहट **'विचार बन्ध'** में मिलि जात बा। जनपदीय चेतना का अपना सांस्कृतिक दृष्टि के अपना ललित निबन्धन में ढारि के ऊ जवन स्तरीय साहित्यिक स्वाद उत्पन्न कइले बाड़न ओकरा के देखत एह पुस्तक के हम भोजपुरी निबन्ध का मानक ग्रन्थ का रूप में सामने रखे के कोशिश कइले बानी। आशा बा कि प्रश्नकर्ता भाई के समाधान मिलि गइल होई। ✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

18 भोजपुरी निबन्ध की नागरमुद्राः 'गूलर के फूल'

'सदानीरा' (1993) के प्रकाशन के साथ भोजपुरी भाषा और साहित्य से जुड़े लोगों का ध्यान श्रीमती डॉ॰ राजेश्वरी शांडिल्य की ओर आकर्षित हुआ। इसके पूर्व **'भोजपुरी लोक'** (लखनऊ) के सम्पादन और भोजपुरी के प्रचार-प्रसार सम्बन्धी गंभीर और ठोस रचनात्मक कार्यक्रमों की अटूट श्रृंखला की संचालिका के रूप में उन्होंने भारी ख्याति अर्जित की थी। उनके पन्द्रह निबन्धों के संकलन 'सदानीरा' ने उक्त ख्याति को स्थायित्व प्रदान किया। सभी निबन्ध स्तरीय, रम्य, गंभीर और साहित्यिक स्वाद वाले हैं। इस पुस्तक की भूमिका से ज्ञात होता है कि इसमें ऐसा सारस्वत चिन्तन और संकल्प निहित है जिससे समाज में प्रेम और सद्भाव की वृद्धि के साथ देश के प्रति श्रद्धाभाव की प्रतिष्ठा हो। कुछ और निखार के साथ ठीक यही सृजनात्मक स्थितियाँ लेखिका के दूसरे भोजपुरी निबन्ध संकलन **'गूलर के फूल'** में भी हैं और यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि इन दो मानक संकलनों को देकर श्रीमती डॉ॰ राजेश्वरी शांडिल्य ने भोजपुरी निबन्ध साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया।

'गूलर के फूल' में भोजपुरी निबन्ध साहित्य की नागर मुद्रा पूर्ण निखार पर है। उक्त नागर मुद्रा का ही यह प्रभाव और दबाव है कि लेखिका की प्रमुख चिन्ता (भूमिका में) भोजपुरी भाषा के मानकीकरण की है। निबन्ध लेखक के भीतर इस प्रकार की छटपटाहट होनी ही चाहिए क्यों कि वही है जो साहित्य-सृजन की कसौटी पर चढ़ता है। कहा गया है, गद्य कवियों की कसौटी है और निबन्ध गद्य लेखकों की कसौटी है। इस दृष्टि से भोजपुरी भाषा के मानकीकरण का विषय अवश्य ही चुनौतियों से भरा हुआ दृष्टिगोचर होता है।

इस सम्बन्ध में मेरा दृष्टिकोण यह है कि किसी भी भाषा के मानकीकरण अथवा प्रयोग से सम्बन्धित समस्याओं को एक सीमा तक समय भी हल कर देता है। प्रयोग प्रवाह की निरन्तरता में भाषाओं का स्वरूप निखार लेता चला जाता है। उनका अनगढ़पन स्वयं भी छँटता जाता है। लेखन, प्रकाशन की सुविधा परस्पर प्रभावित होने और परिष्कार करने की दिशा में अनायास प्रोत्साहित करती चलती है। अनेकरूपता और क्षेत्रीय प्रयोगों की विविधता के बीच एकरूपता और सर्वमान्य रूप के विकास की एक प्रक्रिया अज्ञात रूप से जागरूक लेखक समुदाय के भीतर चलती रहती है और इसका प्रभाव एक समय के बाद भाषाओं के ऊपर स्पष्ट रूप से लक्षित होता है। यही जीवन्त भाषाओं का लक्षण है। भोजपुरी भी अपने विशाल लेखक समुदाय के हाथों सँवारी जाती हुई द्रुतगति से विकसित होती चली जा रही है। साहित्यिक रूप में इसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गद्य के लेखन-प्रकाशन का इतिहास मात्र अभी आधी शताब्दी का है । यदि पचास वर्ष और पीछे चलें तो अत्यधिक ध्यानाकर्षक और विचारोत्तेजक तथ्य सामने आयेंगे ।

श्री रामनगीना सिंह, पूर्व राज्यमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ ने लगभग एक सौ वर्ष पुराना भोजपुरी में लिखा फैसला 'उत्तर प्रदेश' (लखनऊ) के 2 फरवरी 1974 के अंक में प्रकाशित कराया था । यह फैसला सूबा इलाहाबाद की गाजीपुर सरकार के गड़हा परगना गाँव दौलतपुर (वर्त्तमान जि० बलिया के अन्तर्गत) गाँव के एक आपसी झगड़े के निपटारा वाला दस्तावेज है । इसमें जिस प्रकार के भोजपुरी गद्य का प्रयोग किया गया है वह निम्न प्रकार का है -

'....... तब राजकुमार राय का माथे नीरलय पराइल राजकुमार राय गंगाजल ले के बोलल ही जे हम दुई सौव आठ रूपैआ शंकर राय का खुद पर बा : रेहनी समेत हमार दीहल हौ तो हमार जेई है कही के कीरीआ कहलन्ही साथ बोनइस दीन् के बदान भैइल तब रसाई के घर वोकर कौवर अगीला हर के बरह देख के ...... ।'

यह रहा प्राचीनतम भोजपुरी गद्य का एक प्रामाणिक प्रारूप । भोजपुरी भाषाभाषियों से भी किंचित अबूझ, अनगढ़ और बिना बिरामादि चिन्हों वाली इस सरपट्टा भोजपुरी को देखते श्रीमती डॉ० राजेश्वरी शांडिल्य की 'गूलर के फूल' में भाषा को देखें -

'हमनी का विचार-विमर्स के दिशा बदल गइल आ गूलर के फूल के तुलना भगवान से करे लगलीं जा । काहें की भगवान के अस्तित्व बहुत लोग माने ला आ जे ना मानेला ऊहो कवनो स्वचालित भा अनायास सक्ति के संवेदना महसूस करेला । जे मानेला ऊहो आज ले भगवान के दर्शन ना क पावल ।'

उक्त दोनों प्रकार के भोजपुरी गद्य पढ़कर प्रश्न उठता है कि वह किस प्रकार तथा किस प्रयत्न से उस पुराने रूप से विकसित होकर आधुनिक चुस्त और बोधगम्य स्तरीय रूप तक पहुँचा है ? और इसी प्रश्न के उत्तर के साथ मानकी करण की समस्या का एक समसामयिक समाधान मिल जाता है । बीतते समय के साथ प्रयोग प्रवाह में भाषा का मँजते और सँवरते जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । इसका अर्थ यह भी नहीं कि भाषा के संदर्भ में एकरूपता, मानकीकरण शुद्धता और व्याकरण सापेक्षता का प्रयत्न नहीं होना चाहिए । यह होना चाहिए किन्तु मेरे विचार में सम्प्रति इसे आन्दोलन की सीमा तक नहीं पहुँचाना चाहिए । अभी समूचा बल सृजन पर पड़ना अपेक्षित है । डॉ० उदयनारायण तिवारी ने भी पटना में भोजपुरी अकादमी के एक समारोह में इसी प्रकार का विचार प्रकट किया था । उनका कहना था कि भोजपुरी भाषा में खूब लिखा जाना चाहिए । उसके बाद मानकीकरण स्वयमेव हो जायगा । (भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका (पटना), मई सन् 1992 की सम्पादकीय टिप्पणी ।)

भोजपुरी भाषा के मानकीकरण और विशेषकर उसके निबन्ध साहित्य में सम्प्रति भाषा प्रयोग से सम्बन्धित एक अन्तर्द्वन्द्व इस प्रकार का चल रहा है कि संस्कृत की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्सम शब्दावली से बचते हुए उसे ठेठ लोकजीवन की जमीन से जोड़ कर आगे बढ़ाया जाय अथवा यथास्थान संस्कृत शब्दावली का प्रयोग करते हुए उसे स्तरीय रूप प्रदान किया जाय तथा इस प्रकार जनता के बोध की, जमीन को ही ऊपर उठाने का प्रयास किया जाय।

उक्त दो विचारों में औचित्य का पलड़ा दूसरे का ही भारी पड़ता प्रतीत होता है। तुलसीदास की अवधी और ब्रजभाषा के ठेठ के बीच-बीच में भी यथास्थान संस्कृत के तत्सम शब्द और उच्चस्तरीय शब्दावली का प्रयोग हुआ है। वास्तव में अपने शुद्ध गँवारू रूप में कोई भाषा साहित्य सृजन की व्यापक प्रभावों वाली भाषा नहीं बन सकती है। भिखारी ठाकुर की भाँति मात्र काव्य क्षेत्र में, कुछ विशेष स्थितियों के चित्रण से जुड़ कर कोई कवि प्रभाव और लोकप्रियता के शिखर को छू ले तो वह गद्य के क्षेत्र के लिए उदाहरण नहीं हो सकता। इस क्षेत्र में गंभीर चिन्तनात्मक विश्लेषण के लिए; इतिहास, पुराण, दर्शन, धर्म, राजनीति, विविध शास्त्र और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के समावेश के लिए ; भोजपुरी लोकभाषा को अन्यान्य मान्य साहित्यिक भाषाओं के समकक्ष लाने के लिए तथा कुल मिलाकर उसे 'कसौटी' पर खरा उतारने के लिए उसके गद्य को संस्कृत की भाषा-सम्पदा से आवश्यकतानुसार जोड़ कर रखना होगा। यही कार्य श्रीमती डॉ० राजेश्वरी शांडिल्य ने **'गुलर के फूल'** में किया है और इसीलिए कहा कि उसमें भाषा की एक परिनिष्ठित नागरमुद्रा उभरी है।

इस सम्बन्ध में ब्रजभाषा-गद्य की आधुनिक स्थिति को देखना पर्याप्त विचारोत्तेजक होगा। वह शताब्दियों तक काव्यभाषा के रूप में हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायी रही परन्तु गद्य प्रधान आधुनिक युग में मृतवत् हो गयी। उसमें युगीन अभिव्यक्तियों के अनुरूप गद्य का अभाव रहा। नये युग में इधर उसने गद्य के क्षेत्र में अपना सिर ऊँचा किया है और यह देखकर सन्तोष होता है वह अपनी गौरवशाली परम्परा के अनुरूप सुसंस्कृत नागर मुद्रा में उभर रही है। उसका एक उदाहरण निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है –

'यों तो लोकजीवन अरू संस्कृति से जुरी भई ह्वै वे लोकसाहित्य की सगरी विधा अपने आप में मधुर एवं आकर्षक होय पर लोकसंगीत अरू आत्मानुभूति की संवेदना सरसता की विद्यमानता ने लोकगीतन कौ रूप अरू प्रभाव अलगाई दीख परे।' (राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर की त्रैमासिक पत्रिका **'ब्रज शतदल'** के अंक में प्रकाशित डॉ० त्रिलोकी नाथ 'प्रेमी' का निबन्ध 'ब्रज के लोकगीतन में पारिवारिक संदर्भ।')

उक्त ब्रजभाषा के उद्धरण में संस्कृति, साहित्य, आत्मानुभूति, संवेदना और विद्यमान जैसे शब्दों का तत्सम प्रयोग भोजपुरी में तद्भव पर जोर देने वालों को देखना चाहिए। इन्हें इस प्रतिष्ठित पत्रिका में सँसकीरिति, साहित्त, आतमानुभूती, समबेदना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और विदमान जैसा प्रयोग नहीं किया गया है ।

'भोजपुरी क्षेत्र के लोककला' शीर्षक अपने गंभीर और बड़े आकार वाले निबन्ध में 'गूलर के फूल' की लेखिका ने उक्त प्रकार की भाषा-प्रयोग-नीति के अनुसार यथास्थान तत्सम शब्दों का प्रयोग कर रचना को उच्चस्तरीय रूप दिया है -

'सच्ची कला ओही के कहल जाई जवन मनुष्य के बिराट रूप विकसित करे, ऊ इन्द्रियन के गुलाम ना रहे, ओकरा खाली पेट के चिन्ता ना रहे, बलुक ऊ संवेदनशील बने, दुखकातर बने । इहे कला के सार्थकता बा । कला मनुष्य का ओह तपस्या के मूर्त्तरूप ह जवन ओके मनुष्य के विकास का ओर ले जाये में सहयोगी बने ले । ' ('गूलर के फूल')

प्रस्तुत संकलन में व्यक्तिनिष्ठ और विषयनिष्ठ दोनों ही प्रकार के निबन्ध संकलित हैं । सभी निबन्धों की पृष्ठभूमि वैचारिक और गंभीर है । लेखिका की सक्षम विश्लेषण दृष्टि मूलत: अन्वेषक शास्त्रीय दृष्टि की भाँति उभरी है और विविध इतिहास पुराण और काव्यशास्त्रादि को छानने में जुटी हुई दृष्टिगोचर होती है । कहीं-कहीं रम्य रचनाओं में शिल्पगत स्वच्छन्दता दृष्टिगोचर होती है परन्तु कुल मिलाकर डॉ० शांडिल्य का निबन्धकार व्यवस्था, संगठन और क्रमबद्धता के अनुशासन में बँधा दीखता है । उसमें पांडित्य और गंभीर अध्ययन की रचनात्मक प्रवृत्ति है परन्तु इनके प्रयोग में सर्वत्र ऐसी सहजता होती है कि प्रदर्शन जैसा नहीं लगता है । निबन्ध की ऐसी ही विशेषताओं को लक्ष्य कर डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है -

'निबन्ध में लेखक की रूचि एवम् मन:प्रवृत्ति के अनुसार विचारों की श्रृंखला अव्यवस्थित और शिथिल अथवा सुगठित और व्यवस्थित दोनों ही प्रकार की हो सकती है । आत्मव्यंजना निबन्ध की मूलभूत विशेषता है ।... निबन्ध में पांडित्य, गंभीर अध्ययन एवम् तार्किकता आवश्यक नहीं । ये विशेषतायें , निबन्ध लेखक के व्यक्तित्व के सहज अंग बनकर आ सकती हैं ।' ('हिन्दी गद्य साहित्य' पृष्ठ 55)

'गूलर के फूल' के निबन्धों की रचना 'भोजपुरी निबन्ध के स्वतंत्र शिल्प-विकास के संकल्प के साथ हुई और यह संकल्प जैसे उसके 'गूलर के फूल', 'हारे को हरिनाम', 'आचार्य देवोभव' और 'पाँचे पाँच' जैसे पूर्वार्द्धके ललित निबन्धों में दृष्टिगोचर होती है वैसे ही अंतिम पाँच ऐसे वस्तुनिष्ठ निबन्धों में भी दृष्टिगोचर होती है जिनमें भोजपुरी भाषा, साहित्य, क्षेत्र, जीवन और उसके प्रभाव-प्रसार, सम्बन्ध और इतिहास आदि सम्बन्धी सामग्री पूर्णता, प्रामाणिकता और मौलिकता के साथ प्रस्तुत कर दी गयी है । 'भोज, भोजपुर भोजपुरिया आ भोजपुरी', 'भोजपुरी के विकास में महिलन के योगदान', 'भोजपुरी क्षेत्र के लोक कला', 'भोजपुरी क्षेत्र के गौरवमय अतीत आ वर्तमान', और 'हिन्दी आ भोजपुरी के भाषिक सम्बन्ध' जैसे शीर्षक मेरे विचार के उदाहरण हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भोजपुरी साहित्य का इतिहास' (डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय) सन् 1972 ई० में प्रकाशित हुआ। उसमें निबन्ध वाले अध्याय में कुल मिलाकर चार निबन्धकारों का उल्लेख है जिनमें डॉ० बच्चन पाठक सलिल, राधामोहन राधेश और चन्द्रभूषण सिन्हा का अवदान सम्पादक के रूप में है। मौलिक सृजन के रूप में मात्र एक पुस्तक **'के कहल चुनी रँगा ल'** (डॉ० विवेकी राय) का उल्लेख है । यह पुस्तक 1968 ई० में प्रकाशित हुई। इसके बाद भोजपुरी निबन्ध साहित्य का बहुत तीव्रगति से विकास हुआ और डेढ़ दशक के भीतर **'भोजपुरी प्रकाशन के सई बरिस** (पं० गणेश चौबे) के साक्ष्य के अनुसार पच्चीस श्रेष्ठ निबन्ध लेखकों और उनकी रचनाओं ने भोजपुरी निबन्ध साहित्य को समृद्धि प्रदान की है। इस समृद्धि को डॉ० शांडिल्य के निबन्ध संकलनों ने शिल्प-विस्तार और भाव - चिन्तन की गहराई प्रदान कर अतिरिक्त रूप से यशस्वी बनाया है।

'गूलर के फूल' के निबन्धों की कुछ विशेषतायें ऐसी हैं कि जिनके परिप्रेक्ष्य में भोजपुरी निबन्ध साहित्य में उन्हें अद्वितीय कहा जा सकता है। इनका आकार में बहुत बड़ा-बड़ा होना सर्वप्रथम ध्यान आकर्षित करता है। यह स्फीतिवृत्ति कहीं से अनावश्यक भी नहीं लगती है। निबन्धों का कसाव सुरक्षित रखते हुए यह विस्तार लेखिका के धैर्य और विषयों के गंभीर अध्ययन तथा लेखन क्षमता को प्रकट करता है। रचनाओं में निहित अनुरंजन, विश्लेषण-संश्लेषण और तार्किकता से सम्पृक्त शिल्प, विविध विषयों का समावेश और ज्ञान-विज्ञान तथा अध्ययन-अनुसन्धान प्रवृत्ति का विचारोत्तेजक समावेश तथा इसके साथ ही भावात्मक तथा संवेदनात्मक आन्तरिकता का मानवीय संस्पर्श आदि, सब मिलाकर इनके आस्वादन से पाठकों का निजी स्तर पर तृप्ति और भोजपुरी निबन्ध-साहित्य के भविष्य के संदर्भ में आश्वस्ति मिलती है।

संकलन का पहला शोधपरक निबन्ध 'गूलर के फूल' है। इसका आरंभ इस प्रकार होता है, 'एक दिन हम अपना बेटी, नातिन का सङे पिकनिक पर गइल रहलीं त ओही जाँ हमनी के एगो भारी गूलर के पेड़ के नीचे बइठि के खइलीं-पिअलीं जा आ. ....।' और फिर गूलर के पेड़ उसके फल और फूल तथा उनसे सम्बन्धित कौतूहल वर्धक चर्चा सभी हलके फुलके इतिवृत्तात्मक, आरंभ के बाद मध्य में तर्क, बहस, विचार, कल्पना और तथ्यों की उड़ान है। इसके पश्चात निबन्ध का अन्त चिन्तनात्मक गहराइयों से जुड़ जाता है। यही ललित निबन्ध की प्रमुख पहचान है ।

वास्तवं में गूलर का फूल रहस्यवादी फूल है। वह ईश्वर की भाँति अस्तित्व रूप में है परन्तु दिखायी नहीं पड़ता है। उसका होना परन्तु दिखायी नहीं पड़ना यह एक ऐसा सर्वमान्य तथ्य है कि लोकजीवन में अनेक स्तरों पर घुल मिल गया है। 'गूलर का फूल हो जाना' हिन्दी में एक प्रसिद्ध मुहावरा है। इसी प्रकार एक भोजपुरी 'बुझौवल' में भी इस फूल को लक्ष्य कर 'बुझाया' गया है -

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हरदी के गाब-गब, पीतर के लोटा,
हाय रे परान तो के कबहूँ ना देखा।'

इस बुझौवल में गूलर के फूल के रूप-रंग को एक काल्पनिक बिम्ब के साथ प्राण जैसे अस्तित्त्व की बहुत सार्थक व्यंजना है। भोजपुरी क्षेत्र में एक किंबदन्ती इस प्रकार चलती है कि गूलर के फूल का अस्तित्व प्रत्यक्ष रूप में बहुत क्षणिक होता है और उस सूक्ष्म क्षण में यदि उसके नीचे कोई वस्तु पड़ जाय तो वह कभी घटती या समाप्त नहीं होती है। यही कारण है कि जब कोई वस्तु अप्रत्याशित रूप से घटने का नाम नहीं लेती है तो उस स्थिति के लिए एक मुहावरा चलता है, 'गूलर का फूल पड़ जाना।' वास्तव में यह सब एक भारी रहस्य है और लेखिका ने इसके इसी रहस्यमय दार्शनिक और चिन्तनात्मक पक्ष को लेकर गंभीर सांस्कृतिक उड़ान भरने का साहित्यिक स्वादवाला आयोजन किया है। इस पर हुए वैज्ञानिक शोध सम्बन्धी जानकारियाँ भी निबन्ध में मिल जाती हैं। ऐसे एक शोध की गूँज कवि मैथिलीशरण गुप्त की एक कविता से भी मिलती है।

बात उस समय की है जब देश में होमरूल का ऐतिहासिक विरोध वाला काल चल रहा था। पं० मदनमोहन मालवीय उधर उसके समर्थक थे। विरोधियों ने मालवीय जी पर टिप्पणी की थी- **'कहते हैं मालवी जी, हम होमरूल लेंगे। दीवाने हो गये है, गूलर भी फूल देंगे।'** राष्ट्रकवि गुप्त जी मालवीय जी के पक्षधर थे। उन्होंने उनके बचाव पक्ष में एक कविता उछाली

'जब होम रूल होंगे, बैंकुअर भी जन्म लेंगे।'
हाँ-हाँ जनाब तब तो गूलर भी फूल देंगे॥

निबन्धकार राजेश्वरी शांडिल्य के समस्त निबन्धों की पृष्ठभूमि भारतीय संस्कृति है। यही कारण है कि उनकी विवेचनाओं के भीतर से ईश्वरवाद, आस्थावाद, धर्म-दर्शन, भारतीय वाङ्मय के प्रति कृतज्ञता और काव्य-शास्त्र आदि की चर्चा के साथ स्वस्थ आशावाद की झलक मिलती है। **'हारे को हरिनाम'** शीर्षक ललित निबन्ध का चिन्तनात्मक अन्त द्रष्टव्य है-

'संसार में आ गइला पर निराश ना होखे। जीवन संघर्ष के कहानी ह। करम फल के संचालन अदृश्य शक्ति क रहल बा।'

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

19 'आखिरी गीत' की पहली पहचान

अपने जीवन दर्शन मूलक निबन्ध संग्रह **'जीवन गीता'** के प्रकाशन (सन् 1977) के साथ ही हरिशंकर वर्मा भोजपुरी साहित्य में एक निबन्धकार के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। उनका दूसरा निबन्ध संग्रह **'आखिरी गीत'** जिसमें नौ रचनायें हैं और अधिक निखार के साथ प्रस्तुत होकर कुछ सोचने के लिये विवश कर देता है। ऐसा लगता है कि साहित्यिक निबन्ध, ललित निबन्ध और रेखाचित्र यात्रा अथवा जीवन-वृत्त मूलक निबन्धों के बाद पहली बार शुद्ध विषयनिष्ठ निबन्ध भोजपुरी-साहित्य में प्रस्तुत हुआ है। वास्तव में रसगंधवती सांस्कृतिक ग्रामभूमि से जुड़ी लोक भाषा होने के कारण प्रारंभिक साहित्यिक उठान में भोजपुरी की प्रकृति ललित निबन्धों के लिए बहुत अनुकूल सिद्ध हुई। अब दो-तीन दशक के भीतर उसमें पर्याप्त प्रौढ़ता आ गयी है और किसी भाषा के साहित्य का यह वही समय होता है जब उसमें गंभीर, विषयनिष्ठ और चिन्तनात्मक निबन्धों की रचना होती है। समय की इसी आवश्यकता की पूर्ति हरिशंकर वर्मा ने की है।

इस संग्रह के आरंभिक छः निबन्धों का केन्द्रीय विषय प्रेम है और शेष का मृत्युबोध। प्रेम की विवेचनाओं को पढ़कर आचार्य शुक्ल के निबन्ध, विशेषकर **'श्रद्धाभक्ति'** का स्मरण आ जाता है। यद्यपि वर्मा जी शुक्ल जी की भाँति साहित्यिक और सैद्धान्तिक विवेचनाओं की ऊँचाइयों को छूने के लिए नहीं बल्कि अन्तरजगतीय अध्यात्म सिन्धु को थाहने के लिए प्रेम जैसे भाव का सहारा लेते हैं तथापि शैली-शिल्प सम्बन्धी कुछ समानतायें ध्यान आकर्षित करती हैं। वे अपनी बातों को समझाने के लिए विविध क्षेत्रों से ढेर-ढेर उदाहरण, कथायें अथवा बोधकथायें उठाकर प्रस्तुत करते हैं। विविध कोणों से विषय को उठा कर गंभीर रूप में विश्लेषित करते हैं। सूत्र वाक्य, परिभाषा रचना और निर्णायक कथन जैसी प्रवृत्तियाँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। बिना भूमिका के वे निबन्ध के प्रथम वाक्य में ही विवेचना की गहराई में उतर जाते हैं। जैसे प्रथम निबन्ध के प्रथम वाक्य का आरंभ होता है, **'प्रेम परमात्मा के खोज के पहिला पुलक ह।'** इस प्रकार छोटे-छोटे वाक्यों में, सहज भाषा में, सोच की भाषा में और तर्कयुक्त स्वसंवाद की साधु भाषा में जटिल आध्यात्मिक बातों को वर्मा जी भोजपुरी भाषा में बेलाग कहते चलते हैं तो आश्चर्य होता है। विषयनिष्ठा के साथ वर्मा जी में भावनिष्ठा का मणिकांचन योग होने के कारण निबन्धों का स्वाद बदल जाता है।

वर्माजी के निबन्धों में आस्थावादी धरातल है तथा उसमें उदात्त जीवन मूल्यों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अन्वेषण की प्रवृत्ति है। इस अन्वेषण में लेखक वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक सतर्कता बरतता चलता है। यही कारण है कि आज का बुद्धिवादी जन जिन कोरी आध्यात्मिक, नैतिक, बोधात्मक अथवा तत्त्वचिन्तन मूलक बातों से भड़कता है उससे लेखक बच गया है। उसके आत्मविश्लेषण अथवा अन्तरावलोकन में भावुकता का ज्वार नहीं दृष्टिगोचर होता है। उसमें सर्वत्र नयी दृष्टि सम्पन्न एक आधुनिक चिन्तक धीर प्रशान्त मुद्रा में अपनी बात कहता चलता दिखायी पड़ता है। उसके भीतर सचमुच कुछ कहने के लिये है। संभवत: उसने इन निबन्धों को सिर्फ लिखने के लिये नहीं लिखा है, ये स्वयमेव लिख गये हैं, किसी दुर्निवार आन्तरिक दबाव से। पाठकों को लग सकता है कि लेखक के शब्दों, पदों और व्यक्त विचारों के पीछे गहरी अनुभूतियाँ हैं और कृतिकार गृहस्थ के वेश में कोई साधु पुरुष है। भाषा का सहज आकर्षण प्रचार और प्रदर्शनकामी लेखकों की कलम से नहीं फूट सकता है। भाषा वाह्य साधना से अधिक आन्तरिक साधना की माँग करती है। धन्य ही नहीं, मूर्द्धन्य हो जाते हैं वे लेखक जिनकी भाषा में भाषा का जादू उत्पन्न हो जाता है। सौभाग्य से हरिशंकर वर्मा का एक ऐसा ही सिद्ध भाषाकार भोजपुरी के साहित्याकाश में उग गया है।

लेखक गंभीर बातों को किस प्रकार सहज ढंग से समझाता चलता है, इसका एक उदाहरण लिया जाय। **'प्रेम से काव्य के जन्म'** शीर्षक निबन्ध में जहाँ वह देह के दूसरे परत वाले प्राणमय कोष की व्याख्या करता है वहाँ अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए आगे कहता है, 'सुबह जब सुरूज उगेंले त पत्थर पत्थरे रहेला। रातों के पत्थर पत्थर रहेला। लेकिन पौधा रात में कुछ अउरियो होला आ सुबह कुछ अउरिये। एगो भीतरी जीवन धारा बा, एगो प्राणमय देह बा, जवन सुरूज का संगे खुशी से भरि जाले।...प्राणमय देह ऊर्जा निर्मित बा, स्थूल शरीर पदार्थ निर्मित बा, अन्न से निर्मित बा।....आदमी कबहूँ प्राण के आहार के कला सीख जाय त अन्न का आवश्यकता से मुक्त हो सकेला।' इस प्रकार बहुत सारे अध्ययन पचाकर और उन्हें गहरी अन्तरानुभूतियों में ढालकर लेखक विस्तार और पूरे अवकाश के साथ पाठकों के सामने इस प्रकार मन को छूने वाले हलके-फुलके शिल्प में प्रस्तुत करता चलता है कि उसमें अनिवार्य पठनीयता के गुण आ जाते हैं। भोजपुरी में ऐसी एकरस, गंभीर और सहज चिन्तन-भाषा का विकास पहली बार दिखायी पड़ा है।

रचनाओं में चिन्तन-भाषा और शिल्प ही नहीं निखरा है, उसमें विषयवस्तु भी चिन्तनमूलक ही है। लेखक स्वयं इसे मननग्रन्थ मानता है। किन्तु मेरे विचार में इसे चिन्तन ग्रन्थ कहा जाना उपयुक्त होगा। मनन का सम्बन्ध मन से है और चिन्तन का चित्त तथा और आगे बढ़कर सीधे चेतना से सम्बन्ध होता है। प्रस्तुत कृति के निबन्धों को पढ़ने पर ऐसा लगता है कि लेखक चेतना के स्तर पर उमड़-घुमड़ कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचारों की वर्षा करता है। मृत्युबोध के इर्द गिर्द जिस दिलचस्पी के साथ विचार विस्तार हुआ है, वह प्रमाण है कि लेखक का जो भी सोच है वह मन के स्तर से ऊपर उठा हुआ है। सामान्य मन तो मृत्यु के नाम से भी घबराता है। उसकी चर्चा से सहमता है, कतराता है और बिदकता है। उसका स्वागत तो 'श्याम समान' कह कर कोई कवीन्द्र ही कर सकता है अथवा कबीर महादेवी जैसे रहस्यदर्शी को ही वह इतना प्रिय हो सकती है कि उसी के कोण से बारम्बार जीवन के विश्लेषण की गहराई में उतरा जाय। इस पुस्तक का शीर्षक **'आखिरी गीत'** जो रखा है तो उसका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ है मृत्यु। जो व्यक्ति मृत्यु को गीत की संज्ञा दे रहा है उसकी सचेतनता समझने लायक है।

अपनी पुस्तक के अन्तिम अध्याय के अंतिम भाग में एक स्थान पर लेखक लिखता है कि 'ब्रह्मविद्या के साधक लोग आखिरी गीत के स्वाद ले सकेला।' लेखक की दृष्टि में सहर्ष स्वीकृत मृत्यु ही सच्चे ज्ञान की पहचान है। मृत्यु को स्वागतार्ह तथा वरेण्य मानना ही परमयोग अथवा ब्राह्मी स्थिति है। अन्तिम नौवें अध्याय को लेखक ने दो भागों में बाँटा है। एक का नाम है **'परम योग आखिरी राग ह'** और दूसरे का नाम है, **'सुखद ध्यान नयका घर का ओर।'** ये दोनों शीर्षक पर्याप्त सांकेतिक हैं। दोनों के भीतर मृत्युबोध के भारतीय पक्ष को बहुत ही ओज के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह मृत्युबोध का विश्लेषण पश्चिम से आयातित विश्लेषणों से भिन्न है। इसमें सुदृढ़ आस्थावादी धरातल है। यही कारण है कि घोर वैराग्य मूलक होते हुए भी वह कहीं से निराशावादी नहीं हो पाया है। उसमें विनाश नहीं विकास, नवोत्थान, अभिनव आरोहण और उच्चतर जीवन की आशायें आकांक्षायें हैं। **'स्वीकृत मृत्यु ज्ञान के पहचान ह'** शीर्षक निबन्ध में आखिरी दिन के सोल्लास स्वागत के विवेचन में उतरने के बाद अंतिम निष्कर्ष के रूप में लेखक लिखता है–

'जमीन के आसमान के खोज बा। पदार्थो चैतन्य होखे के रास्ता पर बा।.....एके डेग में सगरी यात्रा समाइल बा।....जीवन आ मृत्यु में कवनो फर्क नइखे।'

कोई ऐसा ग्रन्थ जिसके भीतर से गुजरना निर्मल चित्त के चिन्तन महोत्सव के बीच से सोत्साह गुजरने जैसा लगे, इस कुंठा, तनाव, संत्रास, अनास्था, निराशा और व्यर्थताबोध वाले युग में अपनी विशेष सार्थकता रखता है। युगीन जीवन की जटिलताओं और जिये जाते हुए आधुनिक जीवन की अनेकमुखी कठिनाइयों ने आज आदमी को निचोड़ कर इस प्रकार सिकोड़ दिया है कि वह साधन और सुविधाओं को बटोरने के सपनों में पागल हो गया है। ऐसी स्थिति में बहुत मँहगे हो गये हैं ऐसे सौदे जिनके बारे में विचार किया जाय कि 'जीवन में जवन कुछ भी महत्त्वपूर्ण' बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकरा के हासिल करे में जेतना खुशी होले ओ से कहीं ज्यादे खुशी ओकरा के बाँट में मिलेले ।' हरिशंकर वर्मा अपने रचना-संसार में ऐसे ही मँहगे सौदों की बाजार सजाते चलते हैं । वे अत्यन्त मर्मस्पर्शी संवाद-भाषा में जीवन के सहज-संगीत में उतरने की प्रेरणा देते हैं । कहते हैं, 'केहू कतनहू कहे कि जीवन अर्थहीन ह, निस्सार ह, बाकी तबहूँ जीअल चाहिला ।....व्यर्थ भइला से केहू जिनिगी के छोड़ के भरसक मृत्यु अपनावे के बेचैन ना होला.....नासमझी के कारण जीवन बोझ बन जाला ।...ई जिनिगी तर्क का पकड़ का बाहर बा ।....जिनिगी कवनो ढाँचा के ना मानेले । जिनिगी का स्वतंत्रता में बहुत भीतर गइला पर एगो संगीत बा ।'

इस प्रकार मनुष्य जाति के खोये जीवन संगीत की खोज में स्पष्ट प्रस्तुत कृति **'आखिरी गीत'** भोजपुरी साहित्य की एक उपलब्धि बन गयी है । लेखक में विचार-धारा के साथ तीव्र भाव प्रवाह होने के बावजूद अद्‌भुत संयम है । यही कारण है कि छः अध्यायों में प्रेम के बहुआयामी विश्लेषण के अन्तर्गत कहीं पिष्टपेषणा नहीं हुआ है । समग्र और समन्वित दृष्टि से विषयनिष्ठ होते हुए भी बीच-बीच में ललित निबन्ध की निर्बन्ध उड़न-झाँकी मिल जाने से रोचकता बढ़ जाती है । सबसे प्रसन्नता की बात यह है कि भोजपुरी गद्य को प्रस्तुत कृति में ऐसी सहज-सँवार मिली है कि पढ़ते समय पाठक उसमें खो जाता है । मैं हिन्दी से भिन्न कुछ भिन्न पढ़ रहा हूँ', ऐसा तनाव मन पर नहीं रहता है । इस क्रम में इस तथ्य पर भी ध्यान जाता है कि वर्मा जी ने शाश्वत, स्वतंत्र, विक्षेप, ऊर्जा, निर्विकार और आध्यात्यिक आदि जैसे विचार प्रवाह में आये संस्कृत के तत्सम शब्दों को तोड़ने का कहीं प्रयास नहीं किया है । इससे उनकी भाषा में सजीव सहजता आ गयी है । इस कृति से निश्चित रूप से भोजपुरी-साहित्य की श्रीवृद्धि होती दीख रही है ।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

20 भोजपुरी का महत्त्वपूर्ण साहित्य: 1978

1. भोर मुसुकाइल

भोजपुरी भाषाका विकास बड़ी तीव्र गति से हो रहा है और पिछले वर्षों में इसमें सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, और प्रायः हर विधा में उच्चस्तरीय साहित्य अपने आकर्षक रूप में आ रहा है। यद्यपि भोजपुरी उपन्यास की संख्या पर्याप्त नहीं है किन्तु जिन दो दर्जनों उपन्यासों का प्रकाशन हुआ है, उनमें दो पुस्तकें ऐसी हैं जिन्हें दो स्पष्ट शिखरों के रूपमें पहचाना जा सकता है। भोजपुरी उपन्यासों के सर्वोच्च शिखर के रूप में उठी रचना **'फुलसुंघी'** में इतिहास, लोककथा, गीत और आंचलिकता की प्रेम और संगीत में डूबी छुअन बेजोड़ है और उपन्यास के परिनिष्ठित कसे ढांचेकी सफलता आश्चर्यकारी है तो वहीं अत्याधुनिक स्थितियों में रसी-बसी जिन्दगी की सारी विसंगतियोंसे उत्पन्न अच्छे-बुरे भावोंको सहज ढंगसे उद्घाटितकर समसामयिक मानवीय संवेदनापर निरन्तर पड़ रहे आर्थिक-सामाजिक आघातोंको चित्रित करने में **'भोर मुसुकाइल'** की सफलता अद्भुत और आह्लादकारी है। इस उपन्यासमें गांवकी बदलती स्थितियों एवं मनोवृत्तियों तथा नागरी सभ्यताकी चकाचौंध की ओर भागते गंवई नवधन-कुबेरों की उन मनोदशाओं का मार्मिक चित्र उरेहा गया है जिसमें वे अब गांवकी किसी बसंतीको 'भौजी' या 'बहन' न मानकर उसे भोगनेकी वस्तु मानते हैं और नैतिकता को दफनाकर हर फनसे दौलत कमाकर मौज-मस्तीको ही जीवन का लक्ष्य मान बैठते हैं। सिवरन गांवकी माटीका प्रतीक है, सीधा-सादा गँवई मनई जो गाँव के सिवान में जाते ही अपने रोआँ-ओआँ में गुदगुदी महसूसता है किन्तु अपने कंचन जैसे बगीचेको अकालमें प्राण बचानेके लिए सूरूज सिंहको रेहनकर देनेकी मजबूरीका बोझभी करेजपर ढोता है। उसका मन ताव खाता है किन्तु उस तावमें पानी नहीं है क्योंकि बेचारा सीधा-सादा आदमी है और नये जमानेके शहरी चाल-ढालमें ढले दीपासिंहकी तिकड़मों से टूट-सा जाता है।

दलित वर्ग और निम्न जातिके लोग आजादीके पहले जहां जमींदारोंके अत्याचारोंके शिकार होते थे और बड़ी मुश्किलोंसे कोई **'सिगुलाम'** अंग्रेजोंकी शहपर मूंछपर ताव दे पाता था वहीं आजाद भारतमें भी उनकी बहू-बेटीकी इज्जत सरेआम लूटनेका फंदा रोज डाला जाता है। पुलिस के संरक्षण में अपराध-कर्म सुरसाके बदनकी तरह बढ़ रहे हैं और गरीबोंको पैसेके बलपर तरह-तरहके मामले-मुकदमें में फंसाकर तबाह किया जाता है। किस्मतसे **रामबालक सिंह'** जैसे दयालु और नेकदिल इंसानभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभी गांवमें हैं जो इस तबाहीको अपनी सामर्थ्यभर रोकनेकी कोशिशमें जुटे हैं। आजादी के पहलेकी परम्परा रूपी जलसे पोषित ऐसी कुछ वल्लरियोंकी शीतल छांह क्या सबको समेट सकेगी जब वैमनस्य एवं स्वार्थके सर्प फन फनफनाकर चारों ओर से धावा बोल देंगे ? आजके भारतकी तस्वीर मानों **'भोर मुसुकाइल'** के पन्नोंपर टुकड़े-टुकड़े होकर फैल गयी है और पाठक उसे बटोरने-सहेजनेके लिए आतुर-आकुल हो उठता है। कथानक आकर्षक, मोहक और रूचिकर है। बीच-बीचमें काव्य बिम्बों, मुहावरों, व्यंग्योक्तियों तथा सूक्तियों को भी इस तरह पिरोया गया है कि कथा-प्रवाह लहरीला हो गया है।

इस उपन्यासमें **विक्रमा प्रसाद ने** आजके समाजमें व्याप्त छल-प्रंपंच, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, बलात्कार, घूसखोरी और गरीब लोगोंपर हो रहे अनाचारको स्पष्ट लकीरोंसे उकेरा है और हरिजनोंकी समस्याको विशेष रूप से उठाया है। प्रायः आजके लेखक वर्त्तमान समस्याओंको उठा तो लेते हैं किन्तु निदानके लिए पाठकोंके विवेकका भरोसा कर लेते हैं। लेखक इस कृति में स्वयं समस्याका समाधान भी प्रस्तुत करता है। हो सकता है, पाठकोंका एक बड़ा वर्ग इस समाधान से सहमत न हो किन्तु लेखकने अपने स्तरपर इसका प्रयास तो किया ही है। कभी-कभी ऐसा प्रयास महंगा पड़ता है। विक्रमाप्रसाद भी इस समाधानके चक्करमें चूक गये हैं और इस नियोजित लोभने 'भोर मुसुकाइल' के कथा-प्रवाहकी स्वाभाविकताको अन्तिम पृष्ठमें झकझोर दिया है ! इससे कथानक अपने समग्र रूपमें कसा हुआ नहीं हो सका है और शिल्पमें भी थोड़ा बिखराव आ गया है। सोद्देश्यताने अन्तको कलात्मकतासे किंचित दूर फेंक दिया है। फिरभी चरित्र-चित्रण एवं मनोवैज्ञानिक तथ्योंका उद्घाटन मार्मिक तथा संवेदनशीलतासे पूर्ण है और पाठक अन्तिम शिथिलताको सहज ही पार कर जाता है। 'बसंती' की कहानी आज हर नारीकी कहानी जैसी लगती है और शरीफ इन्सान 'सिबरन' की तरह निरीह बनकर टुकुर-टुकुर ताकता दिखायी पड़ता है।

उपन्यासकी भाषा काफी सजी, सधी और मंजी हुई है। कहीं लड़खडाहट नहीं है। उपमाएं बिम्ब खड़ा कर देती हैं। मनके द्वन्द्व, बाहरी संघर्ष, मनोवैज्ञानिक उहा-पोह और मानसिक चिन्ताओंके साथ मानों प्रकृतिकी हलचल भी मिली हुई है। बातचीतकी शैलीमें पात्रोंका अन्तर्द्वन्द्व उभारा गया है और वातावरणके साथ घुलमिलकर इनके चरित्र जीवन्तता ग्रहण करते हैं। भोजपुरी उपन्यासोंमें लीकसे हटकर जिस तरह **'फुलसुंघी'** में पाण्डेय कपिलने प्रेमके शाश्वत स्वरूपके करुण-त्यागको एक निर्धूम पृष्ठभूमि प्रदान की है उसी तरह विक्रमा प्रसाद ने **'भोर मुसुकाइल'** में शहराते गांवकी छटपटाहट और आधुनिकताकी आंधी में गुम होते नैतिक मूल्योंको पकड़ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की चेष्टा की है तथा दलित वर्गकी सुगबुगाती चेतनामें आये बदलावोंको रेखांकित किया है।

इस उपन्यासकी एक अन्यतम उपलब्धि है इसकी भूमिका (प्रो. ब्रजकिशोर) जिसमें भोजपुरी उपन्यास-साहित्यके विकासका इतिहास समीक्षात्मक दृष्टिकोण से दर्पणकी तरह साफ हो जाता है और 'बिन्दिया' से लेकर अबतक की लेखकीय मनोवृत्तियों का आकलन हो जाता है। **'भोर मुसुकाइल'** न केवल काया में अबतक प्रकाशित भोजपुरी उपन्यासों में बड़ा है वरन् शिल्प और प्रभान्वितिमें भी 'फुलसुंघी' की तरह ही, लगभग उसकी ऊंचाईका स्पर्श करती हुई यह एक महत्त्वपूर्ण कृति है। पुस्तकका आवरण, मुद्रण आदि काफी अच्छा और सुरूचिपूर्ण है। इस उपन्यास का स्वागत सुधी पाठक वर्ग काफी उत्साहके साथ करेगा और प्रथम कृति होनेके बावजूद एक सफल सृजनके लिए लेखकको अवश्यही दाद देगा। ✪

2. भइंसिके दूध

चतुरी चाचा (डॉ॰ मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध') की चौदह भोजपुरी कहानियोंका संकलन **'भइंसिके दूध'** काफी प्रतीक्षाके बाद प्रकाशित हुआ है क्योंकि भोजपुरी हिन्दीमें चाचाकी कहानियोंकी धूम काफी दिनोंसे मची हुई है और पाठकोंको उनके संकलनकी गहरी प्रतीक्षा थी। सरलता और सिधाई बेसुधजीकी कहानियोंकी अन्यतम विशेषता है। वस्तु और शिल्प दोनोंमें ही वे अन्वितिकी वक्र भंगिमाओंसे परहेज-से करते दृष्टिगोचर होते हैं। इसलिए कभी-कभी उनकी कहानियाँ लोक कथाओंके स्वादके समानान्तर स्वाद उत्पन्न करने लगती हैं। हिन्दी में यदि अंग्रेजी साहित्यके प्रभावसे कहानी विधा में नये कटे-छटे शिल्पका मोड़ नहीं आया होता और भारतीय परम्पराके कथा-साहित्यका सहज विकास हिन्दीमें संक्रांत हुआ होता तो कहानियोंका रूप चतुरी चाचाकी कहानियों जैसा होता, ऐसा अनुमान स्वाभाविक रूपमें किया जा सकता है।

इस संकलनकी शीर्षकवाली कहानी **'भइंसिके दूध'** में दूदरकी कहानी है। वह ऋण लेकर भैंस ले आया कि अन्तिम टूअर लड़का भीम तगड़ा हो जायेगा और परिवार पालन होगा। इधर परिवार ऐसा निकला कि व्यक्तिगत स्वार्थका नंगा-नाच शुरू हो गया। दूध, दही, घी की चोरी बढ़-बढ़कर होने लगी। उधर ऋण साहुकी बेईमानी से दूना हो गया और सूद में वह एक दिन भैंस हांक ले गया। इस प्रकार पारिवारिक विघटन ऋण और गरीबीकी समस्या सरकारी योजनाओंकी विफलता आदिको छूती यह बहुत मार्मिक और पैनी कथा भीतरसे व्यक्तिको झकझोर देती है। कहानीमें जितना मुखर हास्य व्यंग्य है उतना ही चुभनशील उसका करुण अन्त है। सपाट वर्णनात्मकतामें मुहावरेदार सप्राण भाषा का योग पाकर जीवनका यथार्थ कहानीमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सफलतापूर्वक रूपायित हो जाता है ।

कभी-कभी चतुरी चाचा अपनी कहानियोंमें बहुत ऊँची सिद्धान्त-चर्चा सामान्य ढंगसे सहज रूपमें प्रस्तुत कर देते हैं । मार्क्स, हक्सले, राहुल, नीत्से और विनोबा-गाँधी आदि ने कहा है कि व्यक्तिगत सम्पत्ति के भाव और आर्थिक जड़मूल्यों से दुनियां में सारी बुराई फैलती है । अब इसी तथ्यको चतुरी चाचा अपनी रचनामें फन्तासी और लोककथाकी विधाओंमें ढालकर प्रस्तुत करते हैं तो एक निराला अनुरंजनकारी वैचारिक स्वाद उत्पन्न होता है । अपनी उक्त रंग-ढंगकी कहानी **'सपनाके सम्पत्ति'** में कथाकार वियतनाम और बंगलादेशकी समस्या, रूस-अमरीकाके शीतयुद्ध, आधुनिक आविष्कारोंके संहारक रूप और भारत की भ्रष्टाचारवाली स्थिति से बहुत व्यथित दीखता है । कहानीका श्रावयिता एक बार बुखारकी स्थितिमें सपना देखता है, एक स्वर्गीय संसारका सपना, जहां प्रेम, सद्‌भाव और मानवीयता है, जहां नीलम और राजूमें प्रेम है, ऐसा प्रेम जो सम्पत्तिसे कम नहीं किया जा सकता, जहां लोगोंके मनमें वासना नहीं है तथा जहां वस्तु है परन्तु उसकी कोई कीमत नहीं है । फिर ऐसे संसारमें कैसे अर्थभावकी उत्पत्तिसे जीवनका सारा अर्थ ही बदलकर अधोगतिकी ओर मुड़ जाता है, कथाकार बहुत आसानीसे, कह डालता है और पाठक चमत्कृत होकर फन्तासीके स्वादमें डूब जाता है ।

मूलत: वैचारिकता के सन्दर्भमें नहीं, चतुरी चाचा को तलवर्ती लोक-जीवनके विश्वसनीय चित्रकारके रूपमें रेखांकित किया जाता है । उनकी इस केन्द्रीय प्रवृतिका प्रचार **'पेटके पाप'** में बहुत सफलताके साथ हुआ है । प्रकृतिके मोहक और भावात्मक चित्रणसे कहानी शुरू होती है । इसका अन्त चमत्कारपूर्ण है । गांवके सामूहिक सांस्कृतिक मनमें नैतिक मूल्यों तथा नारी की दैहिक पवित्रताके लिए कितना आग्रह है, कथाकार इसका आलेखन बहुत गहराई से सम्पन्न करता है । स्वराज्यके बाद सड़क, विद्यालय, चर्खा केन्द्र, डाकखाना और बैंक आदिकी सुविधाएं गांवमें उपलब्ध हुईं । इस सिलसिलेमें पढ़े लिखे सभ्य मध्यवर्गीय लोग गांवमें पहुंचे । गरीब गांवका नैतिक मन इन लोगों को जल्दी आत्मसात् नहीं कर पाता है । यह एक सत्य है, जो कहानीका केन्द्रीय तत्त्व है । गांवमें बैंक खुला तो मैनेजर अपनी पत्नीके साथ एक दिन टहलनेके लिए निकलता है । भोरकी बेला है और पति-पत्नी पुलपर खड़े होकर ग्रामांचलके सौन्दर्यमें डूबे हैं । उनका यह स्वच्छन्द विचरण गँवई दर्शकोंमें खलबली मचा देता है । कटिया करते बनिहार और वहां उपस्थित किसान सबको कौतूहल होता है । पुलिस तक आ जाती है और लेखक अपनी कुशलता से पूरे समयतक पाठकोंको गहरे सस्पेंसमें रखता है । पानीदार भाषा और रवानीदार भंगिमामें कहानीका निखरा शिल्प नि:सन्देह बहुत आकर्षक है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुरी चाचा कुछ कहानियोंमें एक कुशल व्यंग्य लेखक के रूप में हमारे सामने आते है। **'बिलेकके दियारी'** एक ऐसीही व्यंग्य-कथा है। देऊ पुरुष और लछिमिनिया नारी है। दीवालीकी लक्ष्मी-पूजाके संकल्पसे कहानी शुरू होती है किन्तु अन्ततक दीपावलीकी प्रकाश-व्यवस्था नहीं हो पाती है तो 'ब्लेक' के उभरते तीखे व्यंग्य के साथ कथान्त हो जाता है। कहानीके बीचके तनावमें गँवई मनईके जीवन की बहुआयामी दरिद्रता उभरकर सामने आती है। काले बाजार और घूसखोरी के संदर्भोंको देखते प्रस्तुत कहानीमें ललित निबन्धका स्वादभी झलक मार जाता है। गरीब आदमी दूसरेकी लक्ष्मी के स्वागतकी तैयारी में इस्तेमाल हो जाता है। कहानीका यह व्यंग्य कि आधुनिक लक्ष्मी 'ब्लेक' से आती है, बहुतही चुभनशील है।

अपनी कहानियोंमें चतुरी चाचा विविध आधुनिक ध्यानाकर्षक कथा-शिल्पोंके कुशल प्रस्तोता बन उभरे दृष्टिगोचर होते हैं। श्रेष्ठ लोककथात्मक शिल्पके लिए उनके इस संग्रहकी कहानियोंमें **'ठूंठा पीपर'** को और आत्म कथात्मक शिल्पके लिए **'बिना डोरी के चंग'** का चयन किया जा सकता है। लोककथात्मकताके साथ 'ठूंठा पीपर' में प्रतीकात्मकता भी निहित है। ठूंठा पीपर प्रतीक रूपमें आधुनिक लोकतंत्र है। तिकड़मी लोग उसके नीचे स्वार्थ सिद्धिमें जुटे हैं। कहानियों में दूसरा प्रतीक दानव है जिसमें अंग्रेजी-राज छिपा है। उसके राजके चालक व्यक्तियों में गांधी की बुनावट है। विनोबा और जयप्रकाश के सर्वोदय कार्यक्रम के साथ चुनाव आदिकी प्रक्रियाएं भी प्रतीक रूपमें भरमाने के सन्दर्भमें जो झूंठ और तिकड़म एक गांव में उभरते हैं वही सारे देश में, शासन में और राजधानी में छाये हैं।

वस्तु तत्त्वके रूप में समसामयिक जीवनकी विसंगतियों के स्पर्शसे कहानियों में जो ताजगी और जीवन्तता आयी है वह उसके प्रौढ़ भोजपुरी भाषा-शिल्प प्रयोग से और भी निखरकर मूल्यवान् हो जाती है। लोकोक्तियों और मुहावरों के संदर्भ में चतुरी चाचा को उसके प्रयोग-सम्राट के रूप में स्मरण किया जाना चाहिये। पुरानेही नहीं, नये लोकतांत्रिक और आधुनिक जीवन में उभरे मुहावरों की भी पकड़ बहुत गहरी है। वास्तवमें जीवनके मुहावरों का तालमेल बैठा पाने में ही कथाकारकी सफलता निहित है। भाषा का सौन्दर्य पाठक के चित्त को सहज प्रवाह में इस प्रकार समेटता है कि भोजपुरी हिन्दी के पार्थक्यका किंचित् भी आभास नहीं होता है और न ही पढ़ने में कहीं अटक होती है। इस प्रकार भोजपुरी के परिनिष्ठित स्वरूप की परिकल्पना में चतुरी चाचा की भाषा को मानक माना जाये तो तत्सम्बन्धी अनेक विवाद स्वतः गिर जायेंगे। कहानियों में भाषा और भी परिष्कृत होकर सहज हो गयी है। उसमें पाठकीय चित्तको अपने स्पर्श से प्रभावित करने की क्षमता है। मात्र भोजपुरी भाषा के आकर्षक स्वाद के लिए भी **'भइंसिके दूध'** की कहानियों को पढ़ना तृप्तिकारक हो सकता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और उसके समग्र रूप के बीच से गुजरना तो जैसे भोजपुरी कथा-साहित्यकी एक मूल्यवान् उपलब्धि के बीच से गुजरना होगा। ✪

3. सकदम

बिहार के युवा कथाकार और कलाकार **ब्रजकिशोर दूबे** का कहानी संग्रह **'सकदम'** एक विशेष मनोविश्लेषणात्मक क्षितिज को स्पर्श करता भोजपुरी कथा-क्षेत्र में लगभग नवारंभ बनकर उतरा है। वैसे भोजपुरी में मनोवैज्ञानिक कहानियों का एकान्त अभाव नहीं है किन्तु आलोच्य संग्रह की समग्र कला-दृष्टि में उभरे मनोविश्लेषणके सूक्ष्म आयाम उसे अतिरिक्त गरिमा प्रदान करते हैं। संग्रह की शीर्षक कथा 'सकदम' में रमेश नगर का एक मध्यवर्गीय पात्र है। एक रात वह सपना देखता है कि दूर गांव में पड़े उसके स्त्री-बच्चे बहुत बेचारे और फटे हाल जैसे भद्दे-भदेस वेश में पड़े हैं और वह जगने पर बेचैन होकर गांव-घरकी यादमें डूब जाता है। सासकी तानाशाही में खपती उसकी पत्नी, उसके टूटते अरमान, गंदे और भद्दे ढंग से रहने की उसकी ग्रामीण विवशता और यही स्थिति उसके बच्चेकी, सब कुछ उसे बहुत कचोटता है और यह कचोट अपटूडेट पड़ोसी दम्पतीकी यादकर और बढ़ जाती है। अपनी स्त्रीको नगर में लाकर सलीके से रखने और बच्चों का भविष्य संवारने की प्रबल लालसा एक निश्चय तक पहुंचती है कि वह उन्हें जाकर लिवा लाये। फिर कुछ अन्तरंग मनोवैज्ञानिक मोड़की तरंगें ऐसी आती हैं कि कहानीका अप्रत्याशित आदर्शवादी अन्त पाठकोंको चमत्कृत कर देता है।

हिन्दी कहानियों में मनोविश्लेषण वैयक्तिक यथार्थ के रूप में उभरा है परन्तु भोजपुरी हिन्दी की कहानियों में कुछ और ही रंगत देखने में आती है। यहां वह वैयक्तिक आदर्श के रूप में मोड़ ले लेता है और यह नया रंग अपनी भारतीय जमीन का रंग है। भोजपुरी कहानियों के वस्तु और शिल्पका गंभीर अध्ययन समीक्षकों को इस निर्णयपर पहुंचा देता है कि इनमें भारतीय कथाधाराका सहज विकास अभी सुरक्षित है। अंग्रेजी तो क्या हिन्दी कहानी का भी शतप्रतिशत प्रभाव भोजपुरी कहानियों पर नहीं है और स्वतन्त्र विकास सहज-स्वाभाविक रूप से होता चल रहा है। ब्रजकिशोर दूबे की कहानी **'शक'** के शिल्प से भी ऐसे संकेत प्राप्त हो रहे हैं।

'शक' में नारायण और जीतन दो भाई हैं, सहोदर; जिनके बीच इतना प्रगाढ़ स्नेह है कि सारे गांव को उस दिनकी गहरी प्रतीक्षा है जब उनके बीच दरार पड़कर तनाव उत्पन्न होगा। इस कहानी के शिल्प को बहुत आसानी से परम्परागत लोककथा के शिल्प में ढाला जा सकता है। (जैसे एक गांव में दो सगे भाई थे । बड़े का नाम नारायण और छोटे का जीतन था। दोनों में बहुत घनिष्ट प्रेम था।....) कहानी में दोनों का प्रेम, वात्सल्य, पढ़ाई, लिखाई और कमाई के संदर्भ उभरते हैं। प्रेम बना रहता है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनों का विवाह होता है, पत्नियां आती हैं और स्थितियों की मनोवैज्ञानिक बुनावटमें पत्नियों के रास्ते वैमनस्य के असम्भव आयामका अवतरण होता है । किन्तु ऐसा लगता है कि कहानीको आदर्शवादी मोड़ देने के लिए कथाकार ने मनोवैज्ञानिक तथ्योंके साथ कुछ जोरजबरदस्ती की है । कथा प्रवाहमें पात्र जब लेखकके हाथ की कठपुतली हो जाते हैं तो उसका स्वाद आहत होता है । कहानीके जीवन्त पात्र किस सीमातक अपनी स्वतंत्र जीवन-धारा के प्रवाह में हैं, इसकी अपेक्षाएं जागरूक पाठकों में बराबर रहती हैं और कथाकार को उन्हें सन्तुष्ट करना होता है ।

उभरते कथाकार ब्रजकिशोर दूबे में प्रतिभा है, संवेदनशीलता है और तगड़ी कथात्मक पकड़ है । भोजपुरी संसार आशा कर सकता है कि कृतिकारकी अगली रचना और प्रौढ़ शिल्प में निखरी होगी । ✪

4. धुआँ

'धुआँ' (ब्रजकिशोर) भोजपुरी कहानी संग्रह के रूप में आधुनिक टूटे-दुखते और रिसते सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज है । कथाकार ने स्वीकार किया है कि 'गरीबी, घुटन आ तनाव से आदमी के दम धुंआ रहल बा ।' और स्थितिकी यह चोट उसकी कलाकी चुनौती बन उभर आयी है । अपनी संकलित छः कहानियों में लेखक ने प्रतिबद्ध दृष्टिकोण और पूर्वाग्रह रहित आजके कड़वे यथार्थ का साक्षात्कार किया है । पुस्तक का शीर्षक कथाके रूप में 'धुआँ' की खोज बेकार है । वास्तवमें आजकी सचाई का घुटनभरा 'धुआँ' उसकी प्रत्येक कहानी में विद्यमान है ।

पहली कहानी **'बालू के भीत'** का आरंभ युवा पति-पत्नी विमल और रंजना द्वारा कार से मार्केटिंग के लिए जाना, हंस-हंसकर काफी खरीदारी करना और बाहर यह देखना कि उनकी कार गायब है, जैसी घटनाकी सनसनीसे होता है । इसके बाद कहानीका तनाव आरम्भ होता है तो गुण्डे पिस्तौल की नोक पर कार सहित रंजना को उठा ले जाते हैं । विमल थाना, एस. पी., मंत्री और मुख्य मंत्री तक नाकाम भटकता मजाक जैसा बन जाता है । तभी झटके से कहानीका अंत आता है । सुबह गेटपर परिचित हार्न बजता है किन्तु उसपर रंजना नहीं उसकी लाश मिलती है, 'बहुचर्चित समाजवादकी तस्वीर जैसी ।' और इस प्रकार उत्तरोत्तर उत्कर्ष पर पहुंचती गयी कहानी अमूर्त लोकतंत्र को गुंड़ाराजके व्यंग्य रूप में अनुभूत कराती मन पर छा जाती है ।

ब्रजकिशोर जी की अधिकांश कहानियों में उक्त कहानी की ही भांति आरम्भ, तनाव और अन्तवाले तीन ही तत्त्व हैं । अंग्रेजी कहानी के ढांचेवाले पांच तत्त्वों, आरम्भ, विकास, चरमबिन्दु, उतार और अन्तकी उपेक्षा की गयी है । हिन्दी कहानी के विकास में ये पांचो बिन्दु प्रायः अनिवार्यतः स्पष्ट हैं । भोजपुरी के अन्य कथाकारों ने भी अधिक जटिलता रहित तीन ही तत्त्वों के ताने-बाने में अपनी कथा वस्तुकी बुनावट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डाली है । इससे स्पष्ट है कि भोजपुरी कहानी विकास की दृष्टि से हिन्दी कहानी की अपेक्षा भारतीय कथा परम्परा के सहज विकास के कुछ अर्थों में अधिक निकट है । ब्रजकिशोर जी की परिवेश प्रधान कहानी **'खनतलासी'** में भी इसी प्रकार का सीधा-सहज ढांचा लक्षित होता है । कहानी आत्मकथा शैली में प्रकृति-वर्णन से शुरू होती है । थानेदार का दल गांव में पहुंच डांट-फटकारके साथ मुसहरों पर चोरी का इल्जाम लगाता है और उसके डेरे में एक सुन्दर लड़की देख खनतलाशी शुरू कर देता है । लड़की के साथ बलात्कार का भी प्रयत्न होता है और असफल होने पर उसे जबरदस्ती जीपपर लादकर थाने ले चलने का प्रयास होता है । फिर कथान्त में घात लगा कर एक मुसहर इस प्रकार आक्रमणात्मक प्रतिरोध करता है कि पुलिस दलको भागना पड़ता है । आश्चर्य है कि इतनी सपाटता होते हुए भी कहानी में भरपूर आकर्षण है । वास्तव में उसे आरम्भ से ही संवारते हुए जिस नुकीले बिन्दुतक पहुंचाया गया है वह है दलितोन्मेषका जीवन्त बिन्दु ! नयी हवा और मुसहरों में प्रतिरोध शक्ति का विकास बहुत रोमांचक लगता है ।

'लहोक' दलित-जागरण से सम्बन्धित एक अच्छी कहानी है । इसमें रामफल का चरित्र बहुत साफ और तीखे तेवर के साथ उकेरा गया है । रामफल के प्रयत्न और सूझ-बूझ से दबे-कुचले लोगों के मन में आत्म-सम्मान का जो भाव जगा है, चमटोली में जो जागरण हुआ है उससे बूढ़े-जवान सभी प्रभावित होकर अन्याय के विरूद्ध सिर उठाने की हिम्मत पा लेते हैं । यह दलित-संघर्ष सवर्णों के साथ नहीं बल्कि पिछड़ों में दबंग गिने जाने वाले लोगों के साथ है । रामफल गाँव के सहके-बहके शोहदों के विरूद्ध जमकर लड़ता है और उस आग को धोखे से बुझा दिया जाता है । रामफल को मारकर दबंग लोग सोचते हैं कि....'फेर कवनो सार के मूड़ी उठावे के हिम्मत ना पड़ी ।' लेकिन अन्याय के विरूद्ध संघर्ष की चिनगारी जब एकबार लुत्ती बनकर जगती है तो उसे लहोक बनने से कौन रोक सकता है ? उसके फैलाव को रोक पाना कठिन होता है । इसी बात को कहानी के अंत में कहानीकार इंगित करते हुए अन्त में कहता है-' पह फाटल त रामफल का शहादत के लहोक जइसे पूरा पूरबी क्षितिज पर फइल के लाल टेस हो गइल रहे ।' अन्य सभी कहानियों की तरह 'लहोक' भी एक सशक्त और बेहतरीन शब्दचित्र बन गया है। न केवल पात्रों के चित्र पाठकों के मन में आईने की भाँति बिम्बित-प्रतिबिम्बित होते हैं, वरन् अमूर्त्त स्थितियाँ भी मूर्त्त होकर बोल उठती हैं । भाषा का स्वरूप मानक है और इसमें मुहावरों, कहावतों का प्रयोग भी प्रचुरता से हुआ है । इसके तरल-तेवर में कविता-सा लयात्मक प्रवाह है और प्रतीकों से भी स्थिति को साफ किया गया है, जैसे, 'दू-दू गो जवान एगो चिड़ई पर टूट पड़ले । आ पाँख नोचायें लागल ।' इसी में तिलेसरी को बचाने के लिए लपककर आते रामफल का चित्र मिथकों के सहारे कितने बेबाक ढंग से खींचा गया है-'उ अपना हाथ के लाठी सम्हारत धावल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुझात रहे कि हनुमान जी हहास बन्हले सीता सतवन्ती के बचावे खातिर अशोक बन में ढुकत होखस ।' (पृष्ठ 64) । इसी तरह एक-एक स्थिति का वर्णन इतना साफ है और इसमें इतनी गति है कि पाठक साँस रोके आगे बढ़ता चलता है । बहुत कम ऐसी पंक्तियाँ हैं, जो मुहावरों से खाली हैं ।

'दल बदलू के डायरी' में पतनशील राजनीति का चित्रण किया गया है । इसमें उस समयावधि का चित्र है, जब राजनीति अभी पतनोन्मुख हो रही थी । सिद्धान्तहीनता की ओर बढ़ती राजनीति में सभी दल एक ही उद्देश्य के लिए, कुर्सी-गद्दी के लिए प्रयत्नशील रहते हैं । आज राजनीति का जो अपराधीकरण हो गया है, अपराधी, नेता और नौकरशाह सभी आकण्ठ भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं- इस सबका बीज बहुत पहले ही राजनीति के खेत में डाल दिया गया था । कैसे-कैसे अयोग्य, भ्रष्ट, स्वार्थी तत्त्व राजनीति में घुस आये हैं, इस सबका खुलासा इस डायरी के माध्यम से किया गया है और वह भी बड़े मनोरंजक ढंग से ।

'होसिला' में भारत-चीन युद्ध के समय एक आम गाँव के दिल-दिमाग में चलने वाले द्वन्द्व का, अन्तः संघर्ष का चित्रण किया गया है । बनवारी काका का बड़ा बेटा द्वितीय विश्वयुद्ध में मारा गया था और दूसरा बेटा भारतीय सेना में है । एक ऐसे बाप के मन में जो भावनाएँ उमड़ती-घुमड़ती हैं, उनको बड़े ही मार्मिक ढंग से इस कहानी में रखा गया है । बनवारी का अद्भुत रेखाचित्र उभरता है **'होसिला'** में । जाड़े की कँपकँपाती रात मे गाँव के ऊपर से बार-बार गुजरते हुए उड़नजहाजों के शोर से युद्ध की आशंका होती है- 'कतहीं फेरू आग लागल, कवनो देस के मन फेरू धनकल । कतहीं फेरू लड़ाई शुरू हो गइल का ?'' (पृष्ठ 26) ''जरूर कतहीं लड़ाई के डाइन हपासिन लँगटे नाचे लागल बिआ-कवनो देस का माथा पर ब्रह्म-पिचास चढ़ गइल बा ।'' (पृष्ठ 27) कहानी में कई ऐसी पंक्तियाँ हैं जो पाठकों के चित्त पर टँक जाती हैं, विचार सुभाषितों की तरह स्मरणीय हो उठते हैं । जैसे-

1. 'लड़ाई खातिर कवनो कानून ना होला ।'

2. 'जेकरा तनिको जोस होई, हूब होई, जेकरा रग में खून बहत होई, ऊ अत्याचार के विरोध करबे करी । जहाँ विरोध उपजल कि संघर्ष पनपल ।'

3. 'इन्सान अपना आत्मा के मुँह जब जाब देला त ओकर विवेक मर जाला, ओकरा आदमियत के दम घुट जाला ! एह हालत में आदमी खुदगरजी में बउरा जाला, -ओकरा खाली हमहीं हम लउकेला, तूँ के इचिको सुमगुम ना भेंटे । इन्सान हैवान बन जाला-बेलकुल दनवाँ-दईंत ! लड़ाई त एही खुदगरजी के लहोक ह, धाह हं जवना में आदमियत जर के राख हो जाले ।''

4. ''कवनो ममिला अइसन नइखे कि बतिआवल जाव, बुद्धि-विवेक से काम लिहल जाव त ना फरिया जाई ।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

5. देह धइला पर त देह के धरम निबावहीं के पड़ी ।''

6. ''इज्जत बड़ चीज ह । ओकरा के बचावे खाती जवन कुरबानी दियाय कम बा ।''

ऐसी ही पंक्तियाँ किसी-न-किसी सन्दर्भ में हरेक कहानी में बिखरी पड़ी हैं चाहे वह दलित-चेतना के उत्थान की बात हो, वर्ग-संघर्ष की बात हो या अराजक होते समाज की बात हो । बड़ी बात है कि ऐसी उक्तियाँ अलग से जड़ी हुई नहीं लगतीं । बिल्कुल स्वाभाविक कथा-प्रवाह में पात्रों के मुख से निकल पड़ने वाली ऐसी उक्तियाँ हृदय की आवाज बनकर अनायास आई हैं ।

कहानीकार ने आज के दिशाहीन समाज, राष्ट्र और व्यक्ति की विवशता का बड़ा ही मार्मिक शब्दचित्र खींचा है । भूमिका में ब्रजकिशोर जी ने कहा भी है-' जे नीचे दबाइल-कुँचाइल बा ऊ शेषनाग खानी करवट बदले खातिर बेचैन बा बाकी ओकर बेचैनी एगो राजनीतिक दाव-पेंच में पड़के गलत स्थिति के सृजन कर रहल बा ।'' इसी बेबसी, बेचैनी, दाव-पेंच और गलत स्थिति के यथार्थ को उजागर करती हैं धुआँ की कहानियाँ ।

सीधी सपाट कहानी यदि रेखाचित्रात्मक प्रवृत्ति से जुड़ी है तो उसका आकर्षण बढ़ जाता है । ब्रजकिशोर जी की सभी कहानियों में यह प्रवृत्ति निखारपर प्राप्त होती लगती है । उनकी एक पात्रीय कहानी **'एगो आउर अभिमन्यु'** वास्तव में एक बड़ा ही सशक्त रेखाचित्र है । गम्भीरा का उत्कर्ष, महंथ से उसका द्वन्द्व, फिर पुलिस और महंथ के षड़यंत्र से घटित उसकी मौत के बाद उसकी पत्नी का नवोत्कर्ष, सब बहुत सहज किन्तु चित्रात्मक रूप से उभरता चलता है । गँवई की सर्वहारा युवा शक्ति के उत्कर्ष को कथाकारने बहुत ओजस्वी वाणी प्रदान की है । प्रगतिशील और अन्याय विरोधियों को तोड़नेवाला पूंजीपति और सरकार का संयुक्त मोर्चा बहुत सार्थक संकेतों में व्यक्त किया गया है । लोकभाषा का कथाकार सर्वत्र मिलता है परन्तु उसमें जनवादी कथाकारोंवाली शोभाचारिता और राजनीतिक मुहावरेबाजी का अभाव है । इसीलिए वह सामान्य पाठकों को अधिक प्रभावित करता है । आज के समाज की संघर्षपूर्ण स्थितियों के यथार्थ को उजागर करने में कहानीकार काफी सफल रहा है । ✪

5. सतहवा

'सतहवा' में अक्षयवर दीक्षित की सात भोजपुरी कहानियों का संकलन है और इन सात कहानियों का एक आदर्शवादी स्वर है, परम्परागत पारिवारिक समरसता । यद्यपि इस आदर्श को नयी पीढ़ी ने धकिया दिया है किन्तु दीक्षित जी जब प्रेमचन्द को अपना आदर्श मानते हैं तो भोजपुरी में प्रेमचन्दकी परम्पराके इस सृजनका मूल्यांकन इस रूप मे असंगत नहीं होगा । वास्तव में भोजपुरी साहित्य में अभी बहुत कुछ ऐसा है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसपर गांधी, प्रेमचन्द, मैथिलीशरण और प्रसाद-निराला के युग की छाप है । एक उगता-उठता हुआ साहित्य जिसके अपने स्वतंत्र स्वर को प्रभावित करनेवाले अनेक पार्श्ववर्ती स्वर हैं, धीरे-धीरे अपनी राह बनाता है और समसामयिक जीवन की विसंगतियों को उस राह से रेखांकित करता है । दीक्षित जी की आलोच्य कृति में सामाजिक और पारिवारिक जीवनकी विसंगतियों को छूने का प्रयास हुआ है और सोद्देश्य हुआ है । उनमें आस्थावादी मूल्यों के लिए प्रबल आग्रह है ।

पहली कहानी **'बरछा'** में पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी का मनोमय टकराव है और यह टकराव एक सांस्कृतिक मांगलिक अवसर पर होता है । कथा श्रावयिता अपने मित्र शास्त्रीजी के साथ उस 'वर' को जिसका 'बरछा' करने लोग गये हैं चौकपर बैठा देखता है तो उसे कठया मार देता है, यह वही ट्रेन में बदतमीजी, आवारागर्दी करने वाला परले सिरेका पतित कर्मकारी युवक तो है ! और कहानी का चरमबिन्दु पाठकीय चेतनापर कचोटभरी चोट करता है । परन्तु दीक्षितजी कहानी के अन्त को सम्भाल नहीं पाते हैं । उपदेशात्मकता के चक्कर में कहानी के कलात्मक मूल्य का कुछ ह्रास होता है । यही स्थिति **'रहनिदार पतोह'** शीर्षक कहानी की भी है । बहुत साध-श्रद्धा के साथ बसन्ती का विवाह मनोहर के साथ हुआ और विवाह के बाद मनोहर काहिल-कामचोर ही नहीं बेशर्म घरघुसरा हो गया तो उखड़ती गृहस्थी और टूटते परिवारको बसन्ती ने जिस रूप से सम्भाला उसका मनोवैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण करने के बाद कथाकार निष्कर्ष भी प्रस्तुत कर देता है । भोजपुरी चुस्ती-दुरूस्ती की दृष्टि से कथाकार की **'सांझि के लवटल'** और **'क्षमादान'** आदि कुछ कहानियाँ बहुत अच्छी हैं । विशेषकर मार्मिक कथा-भाषा की पकड़ की दृष्टि से अक्षयवर दीक्षित की रचनाओं की भूरिभूरि प्रशंसा करनी ही पड़ेगी । ✪

6. शकुन्तला और अन्य नाटक

संस्कृत के प्रसिद्ध नाटकों का भोजपुरी छायानुवाद कर शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी ने **'शकुन्तला और अन्य नाटक** नामक रचना द्वारा भोजपुरी की अमूल्य सेवा की है । इन अनूदित नाटकों में महाकवि कालिदास के नाटकों की प्रमुखता है । शकुन्तला, कर्पूरमंजरी, उर्वशी, मालविका, वरदान और उत्तर रामचरित आदि उनकी अनूदित कृतियों की भाषा और शिल्प की विशेषताएँ आकर्षित करती हैं । बिहार के विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में भोजपुरी प्रवेश के साथ जो स्तरीय पाठ्यग्रन्थों की समस्या खड़ी हो सकती है, उसके निराकरण की दिशा में यह कदम सहायक हो सकता है । बिहार सरकार ने भोजपुरी अकादमी की स्थापना भी कर दी है । अतः भोजपुरी की समृद्धि में जुटे शास्त्री जी की कृतियों का मूल्यांकन होना चाहिये ।

महाकवि कालिदास की अमरकृति **'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'** के भोजपुरीकरण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में जो कठिनाइयाँ थीं, शास्त्रीजी ने बहतु सरलता से उन्हें पारकर लिया है । भोजपुरी की बोल-चाल की स्वाभाविकता में उन्होंने कालिदास के गहन-गम्भीर और अति भावाच्छन्न प्रसंगों को ढाल दिया है और उसे रंगमंचोपयोगी प्रवाह प्रदान किया है । शास्त्रीजी की सफलता वास्तव में इसी में निहित है कि उन्होंने रंगमंच का ध्यान रखा है । इससे अनजाने एक बहुत बड़ा कार्य हो गया है और वह कार्य है भोजपुरी भाषा के मानकीकरण की दिशा में हुआ एक सफल प्रयास । पुस्तक के 'दो शब्द' में भैरवनाथ पाण्डेय ने भी इसे स्वीकार किया है । भाषा के व्याकरण सम्मत रूप से और व्यावहारिक रूप के बीच शास्त्री जीने सफलता के साथ तालमेल बैठाया है । यही स्थिति उनके नाटक **'मालविका'** की है । यह महाकवि कालिदास की प्रथम कलात्मक नाट्यकृति **'मालविकाग्निमित्रम्'** का छायानुवाद है । शास्त्रीजी की धारणा है कि नाटककार की नाटककर्त्री प्रतिभा का यह बीज रूप है । इसकी मूल रसात्मकता को भोजपुरी में अक्षुण्ण रखने का प्रयास शास्त्री जी ने किया है ।

शास्त्रीजी ने राजशेखर की नाट्यकृति **'कर्पूरमंजरी'** और श्रीहर्षके नाटक **'नागानन्द'** का भी भोजपुरीकरण किया है । नागानन्द को **'वरदान'** शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है । इस नाटक में बिना शब्दों को तोड़े-मरोड़े काम चलाया गया है । बहुत सधे हाथों से स्थानीय प्रयोग किये गये हैं और श्रीहर्ष की आत्मा के साथ न्याय का भी भरपूर प्रयास किया गया है । **'विक्रमोर्वशी'** का अनुवाद **'उर्वशी'** नाम से हुआ है और इसमें रंगमंच का विशेष ध्यान रखा गया है । भोजपुरी रंगमंच अबतक भिखारी ठाकुर के हाथों में रहा है और इसका स्वतंत्र विकास का न होना बहुत चिन्तनीय है । ऐसे स्तरीय नाटक और नाटिकाओं के अवतरण से मार्ग प्रशस्त होगा, ऐसी आशा की जा सकती है । कालिदास, राजशेखर और श्रीहर्ष के साथ भवभूति भी इस भोजपुरी-साधना में अवतरित हुए हैं । उनके **'उत्तर रामचरित'** का ऐसा चुस्त-दुरुस्त रूपान्तर प्रस्तुत किया गया है जो कुछ अंश में मौलिक स्वाद से परिपूर्ण लगता है ।

वास्तव में संस्कृत के संवादों का शतप्रतिशत सही अनुवाद भोजपुरी जैसी अविकसित साहित्य-भाषामें लगभग असम्भव है । शास्त्रीजी ने इसीलिए छायानुवाद का मार्ग अपनाया है और मार्ग पर सफलतापूर्वक दौड़ लगाने की उनके भीतर क्षमता दृष्टिगोचर होती है । किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने वस्तु को और का और बना अनचीन्हा कर दिया है । मूल की रक्षा प्रत्येक स्थानपर भावात्मक स्तर पर सुरक्षित मिलती है । इस प्रकार 'हरिश्चन्द्र' सहित सात नाट्य कृतियों को भोजपुरी रंगमंच के लिए खड़ा कर शास्त्री जीने एक प्रशंसनीय कार्य किया है।

उक्त कृतियों के अतिरिक्त **'श्रीमद्भागवत गीता'** और **'मेघदूत'** का भी भोजपुरी रूपान्तर शास्त्रीजी की लेखनी से हुआ है । **'सत्यनिष्ठ हरिश्चन्द्र'** उनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक प्रबन्ध काव्यभी है जो सन् 76 का प्रकाशन है । उच्चस्तरीय भोजपुरी भाषा की शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने **'भोजपुरी छन्द मंजरी'** नामक पुस्तक की रचना की । हिन्दी तथा भोजपुरी में लगभग एक दर्जन प्रकाशित अन्य पुस्तकें उनके पांडित्य और रचनात्मक कुशलता के प्रमाण हैं । उनकी काव्यात्मक प्रतिभा का शिखर यदि **'भोजपुरी मेघदूत'** को कहा जाये तो अत्युक्ति नहीं होगी । हिन्दी मन्दाक्रान्ता और भोजपुरी के जातीय छन्दों में प्रस्तुत इस अनुवाद में शास्त्रीजी को श्रम बहुत करना पड़ा है । विशेष कर कालिदास के भावों की रक्षा के लिए कुल भोजपुरी की भाषा–सम्पदा लेकर वे साधनापुरी में कठिन साधनारत दीख पड़े हैं । भोजपुरी को एक विशेष दिशा में प्राप्त उनका मार्गदर्शन और रचनात्मक अवदान उसके इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा । ✪

7. भोजपुरी मेघदूत

महाकवि कालीदासके प्रबन्ध मुक्तक **'मेघदूतम्'** के भोजपुरी पद्यानुवाद में इस भाषा के कवियों ने बहुत रूचि दिखायी है । विद्यानाथ ओझा और सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी शास्त्री के **भोजपुरी मेघदूत** प्रख्यात हैं । शास्त्री जी की कृति 1977 में प्रकाशित हुई और उसके मूल संस्कृत के साथ खड़ी बोली हिन्दी और भोजपुरी दोनों में कवित्वमय अनुवाद की प्रवृत्ति मिली है । किन्तु आलोच्य तीसरे भोजपुरी अनुवाद में निखार अधिक है । इसमें संस्कृत और भोजपुरी को आमने–सामने किया गया है । सजीवता और अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए लोकगीत बिरहा और शास्त्रीय छन्द मनहरण के संयोग से जिस नये छन्द का आविष्कार किया गया है वह पूरे अवकाश के साथ महाकवि की भावधारा को अपने प्रवाह में समेट लेने के लिए पर्याप्त सिद्ध हो रहा है । नमूने के लिए आरम्भ की प्रसिद्ध पंक्तियों को लिया जा सकता है –

'अपनी करनिया का चुकवा से एगो जच्छ,
धनिया से सहेला वियोग ।
सामी के सरपवा से बल–बुद्धि–तेज खोइ,
भोगता बरिस भर के भोग ॥'

'भोजपुरी मेघदूत' की सबसे बड़ी उपलब्धि है उसकी रसमयता । वह कहीं भी शाब्दिक अनुवाद में नहीं उलझा है । **हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'** स्वयं भोजपुरी के सिद्ध कवि हैं और **'सहृदय'** हैं । अतः भावानुप्रवेश की आन्तरिक प्रक्रिया को पूर्णकर छायानुवाद को वे मौलिक रसात्मकता से ओत–प्रोत करने में सफल हुए हैं । संस्कृत के क्लिष्ट से क्लिष्ट भावों की गांठों को वे भोजपुरी के सहज–सरल चुभते शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत कृति में व्यंजित कर देते हैं । लेकिन ऐसा भी नहीं कि उन्होंने इसे एकदम लोकगीत के निकट रख देने का प्रयास किया हो । वे साहित्यिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यंजना और गरिमा को भी बनाये रखना चाहते हैं। इसीलिए समास का प्रयोग खुलकर करते दृष्टिगोचर होते हैं। अलंकार और व्यंजना को अपने भोजपुरी अंदाज में निबाह ले जाते हैं। कठिनाई पड़ती है कुछ भोजपुरी के अति स्थानीय प्रयोग से। वास्तव में भोजपुरी के प्रयोग से सम्बन्धित कुछ आग्रह ऐसे हैं जो 'सहृदय' जी के अपने हैं और उन्हें बहुसंख्यक भोजपुरी भाषा-प्रेमी साहित्यकार समुदाय उसी रूप में मानने से कतराता है। **'भोजपुरी मेघदूत'** में अपने उन विशिष्ट प्रयोगों की प्रवृत्ति से यद्यपि 'सहृदय' जी बहुत बचते चलते हैं तथापि कहीं-कहीं झटके से ऐसे प्रयोग आकर खटक जाते हैं। जब स्वागत, बन्दनीय, सिद्ध, शिव, वत्सराज, त्रिभुवन, कुन्द, संगम और भुजबन्ध जैसे शब्दों के प्रयोग में हिचक नहीं है तो 'यक्ष' को 'जच्छ' कर देना यथास्थान आवश्यक नहीं लगता है। इसी प्रकार 'चुन्नवां' और 'जुधवा' जैसे अगणित प्रयोग भी कृत्रिम लगते हैं। 'वा' की भोजपुरी प्रवृति भाषा के लोच को बढ़ाती है परन्तु उसका अति प्रयोग उसकी मार्मिकता को आहत करता है। ऐसा लगता है कि प्रवाह, मिठास और लोक प्रयोग का आग्रह 'सहृदय' जी में अधिक है। निस्सन्देह मिठास निर्वाह आदि से अन्त तक एकरस हुआ है और आश्चर्य कि बिना उर्दू के प्रचलित शब्दों के प्रयोग के यह कार्य हुआ। ग्रन्थ के अन्त में 'जुदाई' और 'मंजूर' जैसे कुछ शब्द 'जरूर' आये हैं परन्तु पूरी पुस्तक में ऐसे शब्दों का एकान्त राहित्य भी एक चमत्कार है।

इस काव्य के साथ 'सहृदय' जी ने 28 पृष्ठों की एक अनुसन्धात्मक भूमिका लगाकर जो अपना पांडित्य प्रकट किया है वह सोने में सुगन्ध का कार्य करता है। इस भूमिका को देखकर आचार्य शुक्ल की लिखी सूर, तुलसी और जायसी से सम्बन्धित भूमिकाएं याद आ जाती हैं। कालिदास के काल, मेघदूत की महत्ता, रामगिरि और अलका सम्बन्धी खोज तथा उसके और भौगोलिक एवं साहित्यिक विश्लेषण पर कवि ने अत्यन्त गम्भीरता के साथ कलम चलायी है। भौगालिक मानचित्र उपस्थिकर उसने इस अध्ययन को पूर्णता तक पहुंचा दिया है। अच्छा होता यह भूमिका खड़ी बोली में होती। ऐसी स्थिति में उसका व्यापक लाभ सम्भावित हो जाता।

कवि की कृति में जो गरिमा है उसके अनुरूप ही प्रकाशन की सुरूचि-सम्पन्नता उसे उपलब्ध हुई है। पटना के **'लोग प्रकाशन'** ने इधर स्तरीय भोजपुरी साहित्य के प्रकाशन में मूल्यवान् योगदान किया है। श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह स्वयं साहित्य-साधक हैं और **'भोजपुरी मेघदूत'** को स्वच्छता और शुद्धता प्रदान करने में उनका भरपूर योगदान मिला है। निस्संदेह 'भोजपुरी मेघदूत' के प्रकाशन से भोजपुरी भाषा का गौरव बढ़ा है।

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

21 भोजपुरी का महत्वपूर्ण साहित्य : 1977

राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बनाने के लिए प्रयत्नशील भाषाओं में 'भोजपुरी' की उपेक्षा अब सम्भव नहीं रही। भोजपुरी भाषाभाषी मनीषा अपना पृथक् अस्तित्व घोषित करने के दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है, वह अपनी अस्मिता के प्रस्थापन द्वारा अपनी पहचान कराना चाहती है। यह प्रवृत्ति भोजपुरी की सृजनात्मक क्रियाशीलता में लक्षित होती है। इस सृजनात्मक क्रियाशीलता पर दृष्टिपात करना इस दृष्टि से उपयुक्त होगा कि किसी राष्ट्रीय प्रक्रिया को गति मिल सके। इस प्रयोजन से भोजपुरी की कुछ चर्चित और उल्लेखनीय कृतियों का समीक्षात्मक और परिचयात्मक विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

इन कृतियों के समीक्षात्मक विवरण से यह स्पष्ट होता है कि इसकी भाषिक और संवेदनात्मक क्षमता प्रौढ़ हो चुकी है; गतिशील भंगिमा, आधुनिकता की अभिव्यक्ति, अभिव्यक्ति के अनुकूल भाषिक रूपकार, नवीन शिल्प-प्रयोग की दृष्टि से निरन्तर यह प्रगति कर रही है।

साहित्यिक क्षेत्र में अवतीर्ण होने और वहाँ अपना स्थान बनाने के लिए उत्सुक भाषाओं की प्रवृत्ति कभी-कभी अत्याधुनिक हो उठती है। दूसरी ओर यह भी आशंका रहती है कि कदाचित् वे आधुनिक प्रवृत्तियों के सम्पर्क से एकदम दूर हो और परम्परा से जुड़ी रह जायेंगी। ऐसा इन विवरणों से प्रतीत नहीं होता है। विवरणों के अनुसार मौलिक पृष्ठभूमि के अन्वेषण की प्रवृत्ति उजागर होती है, सामाजिक समस्याओं के प्रति चेतना, आज की विवशताओं, विसंगतियों, पीड़ाओं के प्रति जागरूकता विद्यमान है। इनकी अभिव्यक्ति के लिए सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता; बिम्ब-योजना का आश्रय लिया जाता है। भावनात्मक आवेशों में बौद्धिकता और वैचारिकता दबकर नहीं रह गयी। आधुनिक मिथक और मुहावरे हैं तो रहस्य के अस्थायीवादी संकेत भी हैं। सम्पूर्ण रूप से आज का भोजपुरी साहित्य अपने माधुर्य और सौन्दर्यवादी रूप के कारण उभरकर चुनौती देता हुआ सामने आ खड़ा हुआ है। इस प्रकार का जीवन्त साहित्य अपनी मान्यता के लिए किसी प्रकार की राष्ट्रीय प्रक्रिया की प्रतीक्षा किये बिना भी अपना स्थान स्वयं बना रहा है। नीचे सन् 77 की प्रकाशित प्रमुख भोजपुरी पुस्तकों की समीक्षा प्रस्तुत है।

1. फुलसुँघी

'फुलसंघी' (पाण्डेय कपिल) बड़े प्रभावों वाला लघु भोजपुरी उपन्यास है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और सृजनात्मकता का एक ऊँचा सौन्दर्यवादी शिखर है । इस जबरदस्त रोमैंटिक रचना में एक समय का पूरा रंग तो समा ही गया है मध्यकालीन आदर्शवादी जीवन मूल्यों के समस्त रसगंध कहानी में सहज रूप से समाहित हो जाते हैं । हर रोमैंटिक रचना की भांति इसमे भी ऐहिकता, प्रेमादर्श, लोककथात्मकता, वीरत्व, त्याग-योग भाग्यवाद, संयोगवाद, मिलनपरक समाधानक अन्त, संगीताकुलता और आँचलिकता के संयोजन बिखरे हैं । परन्तु कृति कहीं से न तो कमजोर पड़ती है और न ही उसका कथा-प्रवाह कहीं से ठण्ढा पड़ता है । छपरा अंचल से जुड़े ढेला, महेन्दर मिसिर, हलिवन्त सहाय और रिवेल साहब जैसे ऐतिहासिक नामों और वृत्तों को जो बीतते समय के साथ लोकमानस में लोककथानायकों की भाँति मिथकीय प्रभाव बन छाये हैं, कथाकार उठाता है और उन्हें कल्पना के साथ एक कथासूत्र में पिरो देता है । इस प्रकार इतिहास और रोमान के ताने-बाने में बनी और बनारस-छपरा के बीच की एक विशिट भोजपुरी संस्कृति को समेटती यह कृति आँचलिक कृति जैसी प्रतीत होती है । परन्तु वास्तविकता तो यह है कि आँचलिकता इसकी परिधि है । केन्द्र में है चरित्र सृष्टि, आदर्शवादी चरित्र सृष्टि तथा इसकी सफलता देखते 'फुलसुंघी' को पूर्णतः क्लैसिकल रचना के अन्तर्गत लिया जायेगा । रूप सौन्दर्य, प्रेम, भोग, सेवा और त्याग से पूर्ण उक्त चार ऐतिहासिक चरितनायकों के अतिरिक्त कथाकार की काल्पनिक चरित्र सृष्टि भी अत्यन्त उदार है । कोई बुलकना डोम है तो उसमें भी आदर्श चरित्र की धूप-छाँही तसवीर है । राय लछुमन प्रसाद के रूप में खलनायक के आदर्श की भी कमी पूर्ति हो जाती है । इस छोटे से उपन्यास में अत्यन्त कसे कसाये ढंग से, बिना भावुक बने और स्वयं की तटस्थता बनाये रखकर लगभग एक दर्जन चरित्रादर्शों को सघन उभार देना सचमुच एक आश्चर्य की बात है और इससे कृति की गरिमा बढ़ती है ।

छपरा के रसिक रईस और जमींदार बाबू हलिवन्त सहाय अपने समय की अनिंद्य सुन्दरी और कलाविद् ढेला बाई की शोहरत सुनकर दौड़े हुए मुजफ्फरपुर जाते हैं, और ढेला का एक कड़वा अस्वीकार उन्हें ऐसा झनझना देता है कि अपने पायक बुलकना डोम से उसका अपहरण करा कर उसे नवनिर्मित लाल कोठी में डाल देते हैं । अर्थात् इधर-उधर उड़नेवाली फुलसुँघी को वे सोने के पिंजरे में डालने में समर्थ हो जाते हैं । किन्तु बाबू साहब की पत्नी की भांति रहनेवाली फुलसुँघी गुलजारी बाई (ढेला) अन्ततः भीतर ही भीतर अपने योग्य एक ताजे फूल पर, लोकगायक महेन्द्र मिसिर के प्रति समर्पित हो ही जाती है और फिर पूरा उपन्यास इसी तीसरे बिन्दु अर्थात् प्रेमी महेन्दर मिसिर की अन्तः पीड़ा की बुनावट बनकर अत्यन्त अप्रत्याशित मिलन के चमत्कार-बिन्दु से अन्त हो जाता है । इस प्रकार रोमेंटिसिज्म की जो शुरूआत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढेला के अपहरण से होती है अन्त तक बना रहता हैं और चलचित्र की भाँति उभरते उसके विविध आयाम कृति को भरपूर आकर्षण से पूर्ण रखते हैं। पलटुआ-जिरिया की शादी, ढेला द्वारा महेन्दर मिसिर को चुपके से अपनी नथुनी अर्पित करना, रिवेल साहब का त्याग और सेवाव्रत, मुकदमाबाजी और लालकोठी तथा सफेद कोठी का संघर्ष, विद्याधरी और केसरबाई की प्रतिस्पर्धा, महेन्दर मिसिर का अन्तर्द्वन्द्व, शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत की टक्कर, पं० रामनारायण मिश्र का क्लैसिक व्यक्तित्व, प्रेम कथा का गीत से आरम्भ और गीत से अन्त और हलिवन्त सहाय में मध्ययुगीन चरित नायकों की छाया सब मिलाकर उपन्यास में रामैंटिसिज्म का रोमांच पूरे उभार पर होता है।

'फुलसुंघी' की कहानी में संगीत और संगठन का शिल्प बहुत आकर्षक है। कथाकार की कल्पना बहुत उर्वर है। प्रत्येक पात्र के साथ एक पूर्ण कहानी लगी है जिसके दो भाग होते हैं, एक का सम्बन्ध वर्तमान से अर्थात् गुलजारी बाई की कहानी से और दूसरा उसके पूर्व जीवन से जुड़ा होता है जिसे फ्लैश बैक शैली के द्वारा प्राप्त किया जाता है। कथाकार की कुशलता इस पहचान में है कि कहाँ पर किसी पात्र से जुड़ी पूर्व कथा को फ्लैश दिया जाये। गुलजारी बाई की माँ की कहानी को वह अन्त में पेश करता है। इन समस्त चरित्रों की कहानियों के छोर को जोड़ना और सबकों एकोन्मुख करना, फिर सीमित पृष्ठों के भीतर, सचमुच उपन्यास-शिल्प का कमाल है! संतुलन और कसाव के कारण कहीं पर अनावयक विस्तार नहीं होने पाया है। छपरा, रिविलगंज, वाराणसी और कलकत्ता में अत्यन्त लोकप्रिय गीतों के रोमान में झनकती कहानी अन्ततक अपना आकर्षण बनाये रखती है तथा कहीं भी ठंढी नहीं पड़ती है। पाठकों को ऐसा लगता है कि उपन्यास का अन्त अवसाद में डूबकर लड़खड़ा जायेगा परन्तु कथानायिका के जीवन की संध्या में जेल से उसके प्रेमी महेन्दर मिसिर के छूटने और मिलने की सूचना से पुनः बहुत वेग आ जाता है और अन्त में फिर एक नया आकर्षण गुलजारी बाई द्वारा एक गीत सुनाने के प्रस्ताव से उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार अन्तिम पंक्ति तक कथाकार पाठकों को रसाकर्षण में डुबोये रखने में समर्थ होता है। फिर इस प्रश्न का भ्रम हो सकता है कि बाबू हलिवन्त सहाय उपन्यास के नायक हैं परन्तु वास्तविकता यह है कि यदि वे गुलजारी बाई के पति हुए तो महेन्दर मिसिर प्रेमी। प्रेमी का पलड़ा सदा भारी होता है। कहानियों में 'उसने कथा था' और 'गुण्डा' (प्रसाद) का जो केन्द्रीय मर्म है तथा उपन्यासों में 'पुनर्नवा' (हजारी प्रसाद द्विवेदी) की जो आन्तरिक रोमानी रसमयता है वही 'प्रेमी' के सन्दर्भ में आलोच्य उपन्यास में भी निहित है। प्रेमी होने के कारण ही गोपाल अर्याक अर्थात् लोककथा गीत का लोरिक उपन्यास का नायक हो जाता है। जिसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेम की पीड़ा में मृणाल-मंजरी दूर-दूर से रिसती है। कुछ ऐसी ही स्थिति महेन्दर मिसिर की है। जनसामान्यों में आज भी वह एक लोककथा गीत के नायक के रूप में गूंजता है, उसके गीत गूंजते हैं जिनमें वह नोट छापनेवाले प्रेमवीर के रूप में आख्यायित होता है। उसकी इस प्रेम वीरता को खूब आंच देकर कथाकार ने गढ़ा है। उसे छपरा में अपनी प्रथम प्रेमिका ढेला से जो ठोकर लगती है उसकी प्रतिक्रिया में वह बहुत भटकता है। बनारस में फिर उसे केसरबाई से और कलकत्ता में मनोरमा से ठोकर लगती है। अन्ततः अपने सुरक्षित प्रेम की सम्पूर्णता लेकर अपनी प्रेमिका से मिलने में वह समर्थ हो जाता है। यह खटक सकता है कि उसके अन्तर्द्वन्द्व को और प्रेम को और अधिक उभारना चाहिये था। उसकी नोट छापनेवाली स्थितियों को भी कुछ और मनोवैज्ञानिक और प्रामाणिक ढंग से उपस्थित करना अपेक्षित था। फिर भी प्रेम की अव्यक्त पीड़ा में कसमसाते चरित्र की वेदनीयता उसमें भरपूर है।

कथाकार की समूची चरित्र-निर्माण-क्षमता बाबू हलिवन्त राय और रिवेल साहब के निर्माण में झोंकी हुई है और उदात्त गुणों वाले महान चरित्र की विशेषताएँ उनमें सहज रूप से आ जाती हैं। रिवेल साहब की रचना में एक क्रांति है और वह उदयोन्मुख गाँधीवाद से प्रभावित है। उनका सेवा-त्याग और उदार मानवतावाद इस नृत्य, संगीत, मुजरा, तान, लय और लोकगीतों के तरल सागर में एक पृथक् द्वीप की तरह लगता है जिसे देखते इस सागर की लहरों का स्वाद-गंध बदल जाता है। इस उपन्यास के कुल एक दर्जन बिखरे गीत की कड़ियाँ प्राण संचारक शरीर की धमनियों और रंगों की भाँति धड़कती रहती हैं। पूरा पांचवां अध्याय **'बिसरई हो जनि बालम हमार सुधिया'** की गूंज से परिपूर्ण होता है। इन गीतों की योजना के सौन्दर्यवादी बंधान के अतिरिक्त लेखक का रूपवादी शिल्प स्थान-स्थान पर भरपूर अनुरंजनकारी सिद्ध होता है और कृति को साधारण वर्णनात्मकता के स्तर से ऊपर उठाकर सही मायने में क्लैसिकल उपन्यास बना देता है। पृष्ठ 24 का एक उदाहरण पर्याप्त होगा। गुलजारीबाई की माँ मीनाबाई के एक नृत्य का चित्रबिम्ब इस प्रकार उभारा गया है – 'बीस-बाइस बरिस के मीनाबाई के गदराइल उमड़ल सरजू लेखा भरल रहे लबालब। जूरीदार लँहगा सावन के सरजू लेखा लहरा लेबे। घूमस त बुझाय जइसे सरजू में चकोह पड़ गइल बा।' उपन्यास में भोजपुरी भाषा और उसके साहित्य का स्वाद पूर्ण निखार पर है। ऐसे स्तरीय सृजन के कथाकार को बधाई। ✪

2. परशुराम

कथाकार (**अरुण मोहन भारवि**) का यह पहला पौराणिक उपन्यास **'परशुराम'** कई दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। कथाकार को पिछले वर्षों उसके प्रथम उपन्यास **'डहकत पुरवइया'** से भरपूर ख्याति मिली। कथा-भाषा की पहचान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अरुणमोहन में बहुत प्रौढ़ है और साथ ही जिसे गतिशील भंगिमा कहते हैं उसके प्रयोग की कला भी कथाकार में है, इसी से इस विधा की बहुत अधिक सम्भावना बक्सर के इस युवक कथाकार में है। 56 पृष्ठों के इस लघु उपन्यास में 12 परिच्छेद हैं और हैहयवंशी राजा सहस्त्रबाहु, यमदग्नि ऋषि, रेणुका और परशुराम के इर्दगिर्द कहानी एक सीधे छोर से घूमती है। परशुराम द्वारा अपनी माँ की हत्या की घटना को कथाकार ने विस्तार से प्रस्तुत किया है परन्तु तत्कालीन जीवन मूल्यों की जिनके लिए एक पुत्र ऐसा साहसिक कदम उठाता है, कुछ विस्तृत चर्चा पात्रों की मन: स्थिति के आन्तरिक चित्रण के रूप में प्रस्तुत की जानी चाहिये थी। कथाकार ने इस लघु उपन्यास से भोजपुरी कथा-साहित्य के एक नये क्षितिज का उद्घाटन किया है, इसमें संदेह नहीं। ✪

3. दरबा

'दरबा' भोजपुरी के सिद्ध कथाकार **वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय** की कहानियों का संग्रह है। समस्त कहानियों में आधुनिकता की कलात्मक पकड़ है और भोजपुरी कहानियों की आदर्शवादी ग्रामगन्ध झड़ी हुई है। नयी कहानी की पकड़ की प्रतिभा का मूल्यवान अवदान 'दरबा' के रूप में भोजपुरी कथा-साहित्य को मिला है। लेखक जीवन की गहराइयों में प्रवेश करता है। घिसे पिटे कथानकों से परे वह मौलिक पृष्ठभूमियों का अन्वेषण करता है। पुस्तक शीर्षकवाली कहानी **'दरबा'** की अन्तिम पंक्ति कहानी का चरम बिन्दु बनकर गहरी चोट करती है। विवाह के विद्रूप और दहेज अभिशाप को कथाकार ने नये स्तर पर प्रस्तुत किया है। पाठक पीड़ा का सहभोक्ता बन जाता है। पिता-पुत्री के माध्यम से समाज के उस अंग का चित्र प्रस्तुत किया गया है जो बहुत ही लुंजपुंज और अभिशप्त है।

'दरबा' में रजनी को यह परवाह नहीं होती है कि उसका गरीब पिता ऐसे घर में रहता है जो मकान नहीं दरबा है। वह लिखते-पढ़ते ऐसे ही घर में जवान होती है। उसकी विवाह चिन्ता में पिता क्षयग्रस्त हो जाता है। डाक्टर दवा और पथ्य के साथ उसे साफ-सुथरे हवादार घर में रहने की सलाह देता है और सलाह उसे भीतर चीरती-सी निकल जाती है कि वास्तव में वे मकान नहीं दरबें में रहते हैं जहाँ से निकलने के लिए चिड़िया पाँख फड़फड़ा कर रह जाती है। भोजपुरी के मुहावरों का पैनापन कहानी को बहुत चुस्त बना देता है।

इसी प्रकार **'का किनाई'** शीर्षक में भी रजनी एक पुत्री है, मध्यमवर्गीय विवशता को जीती, होली के कपड़े की जगह ब्लड-बैंक से खून खरीदने की उसकी मजबूरी पाठकों को हिला देती है। सामाजिक यथार्थ का धरातल वीरेन्द्र नारायण की कहानियों में बहुत कठोर है। वैयक्तिक यथार्थ के धरातल के कुछ चित्र भी काफी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असरदार हैं । **'मात'** में आधुनिकता का स्वर है । नारी को अपने नारीत्व के कारण मात खानी पड़ती है । किन्तु कहानी को पढ़कर ऐसा लगता है कि आधुनिकता की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए भोजपुरी भाषा को कुछ और टूटना होगा । भाषा का मौसम वस्तु से यदि बेमेल पड़ जाता है तो कहानी दब जाती है । संग्रह की अन्य कहानियों में कथाकार बहुत सजग है और भोजपुरी को स्तरीय कहानी की सही भाषा बनाने में उसका योगदान अविस्मरणीय होगा । ✪

4. माया मिललि न राम

श्री विन्ध्याचल राय 'अचल' की एक दर्जन भोजपुरी कहानियों का संग्रह **'माया मिललि न राम'** का प्रकाशन पाठकों को चकित करने वाला सिद्ध होगा । कथाकारों में 'अचल' जी उस कोटि के कथाकार हैं जो सृजनरत तो बराबर रहते हैं परन्तु पत्र–पत्रिकाओं में छपने और प्रचार पाने में कम से कम इच्छावान रहते हैं । कहानियों में वस्तुगत बन्धान और शिल्पगत प्रौढ़ता जिस निखारपर दृष्टिगोचर होती है उसे देखकर नहीं लगता है कि यह लेखक की पहली रचना है ।

'अचल' जी के व्यक्तित्व में जो अनुभवों की परिपक्वता है वही उनकी कहानियों में छनकर आयी है । निस्सन्देह समस्त कहानियाँ पर्याप्त मनोरंजक हैं और उनमें जिस समाज को उठाया गया है वह हमारा निकट का परिचित समाज है । लेखक की मर्मभेदी दृष्टि इस समाज की तह में प्रवेशकर विसंगतियों को उघारती है और चेहरे के पीछे समाज के अगुआ लोगों के असली चरित्र को नंगा करती है । भाषा की सफाई और भोजपुरी जीवन के मुहावरों की सही पकड़ के कारण कृति का महत्त्व बढ़ जाता है । ✪

5. हम कुन्ती ना हँई

पाण्डेय चन्द्रविनोद में कला की सम्पूर्ण चेतना है । शान्ति निकेतन से मूर्तिकला की साधना आरम्भ करके काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ललित कला संकाय की सेवा में जुटे इस युवा कलामर्मज्ञ की साहित्य साधना में बहुत गहराई है । **'हम कुन्ती ना हँई'** शीर्षक पाण्डेय जी की सात कहानियों के भोजपुरी संग्रह का प्रकाशन बहुत शीघ्र ही काफी चर्चित हो गया । ग्राम स्तरपर चलनेवाली कुछ ऐसी धोखाधड़ी के चक्कर में शीर्षक कथा की नायिका फंसती है कि लोग लोकलाज से उबरने के लिए उसे संतति को हटा देने की तजबीज पेश करने लगते हैं और ऐसी स्थिति में उसका उत्तर कि 'हम कुन्ती ना हँई' अचानक पाठकों को एक ओर स्तब्ध कर देता है और दूसरी ओर पूरी स्थिति और समस्या को नये सिरे से समझने के लिए बाध्य कर देता है । कहानी में कसाव और सांकेतिकता का विशिष्ट गुण उसकी गरिमा को बढ़ा देता है । इसी प्रकार **'पारस पत्थर'**, **'चवन्नी'** शीर्षक रचनाएँ भी काफी संवेदनीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। पूरे संग्रह में तल्लीनता का विशेष गुण मिलता है और कहानियों का आन्तरिक स्वाद काफी सुरूचिपूर्ण होता है। ✪

6. अमरावती

साहित्यकार पिता का साहित्यकार पुत्र होना एक संयोग और सौभाग्य की बात है। फिर पिता-पुत्र का एक ही शिल्प-धारा का होना तो और भी संयोग साध्य है। **घनश्याम मिश्र** के साहित्यकार व्यक्तित्व की ओर इस दृष्टि से ध्यान जाना स्वाभाविक है। भोजपुरी भाषा और साहित्य को उसके लब्धप्रतिष्ठ वयोवृद्ध सर्जक **डॉ० कमलाप्रसाद मिश्र 'विप्र'** पर गर्व है और उनके सुपुत्र घनश्याम जी की प्रतिभा का परिचय उक्त पहली रचना में पाकर उक्त गर्व और दूना हो जाता है। विप्र जी में भोजपुरी गद्य का जो निखार है उसे निस्संदेह घनश्याम मिश्र ने आगे बढ़ाया है।

'अमरावती' भोजपुरी का एक मानक कहानी-संग्रह है। इसकी भाषा की बनावट कसावट और अभिव्यक्ति भंगिमा बेजोड़ है। भोजपुरी की मौलिक पहचान प्रत्येक कहानी में बहुत कुशलता से उजागर हुई है। कुल एक दर्जन कहानियों में हलकी और चलती कहानी एक भी नहीं है। इस संग्रह से भोजपुरी कथा-साहित्य को नयी दीप्ति मिली है। भोजपुरी के कहानी-लेखक प्रायः खड़ी बोली में आयी आधुनिकता और उसके तेवर के अनुसरण में भटक जाते हैं और जिस जीवन का चित्रण उठाते हैं उसमें वह आधुनिकता न होने के कारण उनका चित्रण अप्रामाणिक हो जाता है। घनश्याम मिश्र इस सम्बन्ध में काफी सजग हैं और यही कारण है कि 'अमरावती' एक साफ-सुथरा सुन्दर संकलन हो गया है। ✪

7. सतवन्ती

रामनाथ पाण्डेय का क्षेत्र मूलतः हिन्दी खड़ीबोली का है जिसमें उन्होंने प्रभूत कथा-साहित्य का सृजन किया है। फिर भोजपुरी में उन्होंने पहला उपन्यास **'बिंदिया'** लिखा जिसका बहुत स्वागत हुआ। कहानी का क्षेत्र भी उनका अपना है और भोजपुरी की पत्रिकाओं में लगभग आधा सौ कहानियों को प्रस्तुत करने के बाद उनका चिरप्रतीक्षित कहानी-संग्रह पाठकों के सामने आया है। उनकी आधी दर्जन कहानियों के इस संग्रह में मध्यवर्गीय जीवन को विशेष ढब से उठाया गया है। पहली कहानी **'परफरमा के फ़िगर'** में आफिस का जीवन और मानसिक शोषण का माहौल भरपूर रूप से उभरा है। अन्तिम कहानी में गरीबों की दुनियाँ में लेखक उतरता है। लेखक रचनाओं में दायित्व-बोध को डालने का प्रयास करता है और कहीं-कहीं स्वयं तटस्थ नहीं रह पाता है। इससे कहानियों की रचना में भावात्मक स्पर्श आ जाता है। भोजपुरी की प्रकृति को कुछ और खरेपन से उठाने की आवश्यकता पाण्डेय जी के कहानी-संग्रह को पढ़कर महसूस होती है। ✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

8. ढिबरी

प्रस्तुत पुस्तक **ढिबरी** में श्री शुकदेव सिंह स्नेही जी की पन्द्रह भोजपुरी हास्य कहानियाँ संगृहीत हैं। हास्य के नये पुराने आलंबनों को लेकर लेखक पाठकों को खुलकर हँसा देने में सफल होता है। शुकदेव सिंह स्नेही एक श्रेष्ठ हास्य लेखक हैं। ✪

9. प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के

भोजपुरी की 28 कहानियों का यह प्रतिनिधि संग्रह कई दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। सम्पादकों ने ऐसा प्रयत्न किया है कि श्रेष्ठ कहानियों के प्रस्तुतीकरण के साथ भोजपुरी कहानी का विकास भी झलक जाये। इसीलिए पुरानी और नयी पीढ़ी के चुने हुए लेखकों का इसमें बहुत ही सूझ-बूझपूर्ण संयोजन हुआ है। आचार्य शिवपूजन सहाय और दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती, आदि यदि पुरानी पीढ़ी के हैं तो मध्य में चतुरी चाचा, उमाकांत वर्मा आदि और नयी पीढ़ी में गिरिजेश, तैयब हुसेन 'पीड़ित' आदि आते हैं। यह अच्छा हुआ कि संग्रह में कुछ ऐसे भोजपुरी कथाकारों को समेटा गया है जो हिन्दी के जाने-माने लेखक हैं: जैसे श्री ईश्वरचन्द्र सिन्हा, मधुकर सिंह, जवाहर सिंह और विवेकी राय। भोजपुरी कहानियाँ में प्रतिनिधि कहानियाँ छाँटना बहुत कठिन कार्य था परन्तु सम्पादकों ने बहुत परिश्रम से इसे सम्पादित किया है। रामवृक्ष राय 'विधुर', मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध', स्वर्ण किरण, हिमांशुरंजन, ब्रकिशोर और गिरिजाशंकर राय गिरिजेश की कहानियाँ बहुत उत्तम कोटि की हैं। सम्पादक कृष्णानन्द कृष्ण स्वयं एक सफल कहानी लेखक हैं। उनकी कहानी **'रावन अबही मरल नइखे'** से इस तथ्य की पुष्टि हो जायेगी। यही कारण है कि यह प्रतिनिधि संग्रह संग्रहणीय हो गया है। इसके सम्पादक सिपाही सिंह श्रीमन्न और कृष्णानन्द कृष्ण ने इसे प्रस्तुत करने में बहुत परिश्रम किया है।✪

10. शुरूआत

'शुरूआत' (**केदारनाथ पाण्डेय 'प्रशान्त'**) का प्रकाशन भोजपुरी साहित्य में एक स्वस्थ शुरूआत है। वास्तव में इसमें अच्छे और रंगमंचोपयोगी नाटकों का अभाव बहुत दिनों से खटकता था। यह भोजपुरी-साहित्य का एक दुर्बल पक्ष है। निश्चित रूप से आलोच्य नाटक से एक भारी अभाव की पूर्ति हुई है। केदारनाथ पाण्डेय एक कुशल रंग निर्देशक और रंगमंच मर्मज्ञ हैं। सीवान और पटना से लेकर दिल्ली तक में अपनी बाल-पार्टी के नाट्य-प्रदर्शनों में उन्हें ख्याति मिली है। **'पृथ्वीराज चौहान'**, **'कैकेयी'**, **'गुरुदक्षिणा'**, **'वीर शिवाजी'** उनके अभिनीत हिन्दी नाटक हैं जिनका पुस्तकाकार प्रकाशन हो चुका है। 'अवसर' की रचना भोजपुरी में हुई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और लेखक पौराणिक-ऐतिहासिक क्षेत्र छोड़कर समाज के समकालीन जीवन-संघर्ष को मंचस्थ करने में जुटा है । समाज का वर्तमान रूढ़िग्रस्त, जर्जर और भ्रष्ट रूप नाटक में जिस कोण से प्रदर्शित किया गया है वह आकर्षक, मनोरंजक होने के साथ विचारोत्तेजक भी है । सबसे ध्यानाकर्षक रंगमंचीय सम्भावनाएँ हैं । अपने रंगमंच सम्बन्धी सभी प्रभावशाली और सुविधाजनक अनुभवों को निचोड़ कर पाण्डेय जी ने जो **'शुरूआत'** की है वह भोजपुरी साहित्य और जीवन को अवश्य ही प्रभावित करने वाली है । ✪

11. जोत कुहासा के

भोजपुरी में गद्यगीत (**जोत कुहासा के**) प्रस्तुत करने का यह प्रयासें भाषिक उपलब्धियों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । कवि **ब्रजकिशोर** जी ने इसमें भाषा को माँजकर मुलायम कर दिया है । इससे एक दोष भी आ गया है । पूर्वार्द्ध में जो छायावादी सौन्दर्यबोध से जुड़े गीत हैं उनके लिए तो सहजता का यह प्रवाह उपयुक्त पड़ता है किन्तु उत्तरार्द्ध में जो अधिकांश विचार-कविताएँ प्रस्तुत की गयी हैं, उनके लिए कुछ खुरदरी भाषा अपेक्षित प्रतीत होती हं । वैसे प्रवाह वहाँ भी बना हुआ है और गीतों की लयभंगिमा कहीं खंडित नहीं होती है तथा व्यक्तित्व के प्रकाशन में कहीं से कोई अवरोध नहीं प्रतीत होता है ।

वास्तव में प्रस्तुत कविता पुस्तक के कवि में एक सरल-भावुक व्यक्ति है जो क्षुब्ध भी होता है तो बहुत खूबसूरत लगता है । किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उत्तरार्द्ध की विचार-कविताएं मात्र शोभाचारितावश प्रस्तुत की गयी हैं । इन्हें पढ़कर पाठकों को प्रत्येक क्षण लग सकता है कि कवि के पास कुछ अपना अनुभूत है जिसे अभिव्यक्ति देने के लिए वह छटपटाता है । युग जीवन की विसंगतियों से जूझते वह जिस निष्कर्ष पर पहुँचता है वह बहुत मार्मिक है । कहता है, **'आईं/ हमनी पहिले बेचैन हो जाईं ! / जे अकुलाइल ना / ऊ का जाने कि शान्ति का ह ?'** इस प्रकार की कविताओं में बाहर भीतर की मंजिलों के रोड़े, उनकी ठोकर, सम्भाल की चेतना और फिर एक बोध, यह क्रम ब्रजकिशोर जी की कविताओं में देख सकते हैं । यह बोध जहाँ जटिल है वहाँ शिल्प में प्रतीकात्मकता आ जाती है । जैसे **'जिनगी के रूप'** में समकालीन विद्युत प्रकाशी जीवन की वैज्ञानिक उपलब्धियों के बीच उसके एब्सर्ड रूप को कवि छिपकिली, मक्खी और मकड़े के प्रतीक में बहुत सहज भाव से प्रस्तुत कर देता है । संग्रह की सबसे लम्बी कविता **'बँसुरी युग-कृष्ण के'** में भी बौद्धिक और वैचारिक आयामों की ही प्रधानता है परन्तु उसमें प्रतीक नहीं है ।

सहजता और सिधाई कवि की मूलभूत प्रवृतियाँ हैं और इन्ही शिल्प-सम्पदाओं के सहारे वह **'जोत कुहासा के'** जैसी एक छोटी किन्तु आकर्षक भावकुटी जोड़ता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। इस भावकुटी में **'कुर्सी'** और **'भूख'** जैसी समसामयिक जीवन के स्वयंसिद्ध पीड़ा बिन्दुओं से सम्पृक्त आधुनिक मिथक और मुहावरे हैं तो आरंभ में रहस्य के आस्थावादी संकेत भी हैं। **'सवाल के डंड़ेर'** में निराला की कविता 'तुम और मैं' के भावों का सर्वथा नये स्तर पर प्रस्तुतीकरण जैसा है।

मुक्त छन्द का स्वाद, गद्य गीत का तेवर और विचार कविता की बौद्धिक झनक इन सबके परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि **'जोत कुहासा के'** कवि ब्रजकिशोर की एक सफल भोजपुरी रचना है किन्तु इस प्रारम्भिक सफलता को पूरा नहीं समझना होगा क्योंकि कविता में उस 'पीड़ा' को अभी लाना शेष है जो पाठकों के मन को छूकर हिला देती है।✪

12. अरघ

एक कवि के रूप में **'झड़प' (आचार्य कुलदीप नारायण)** जी का व्यक्तित्व यद्यपि चिरपरिचित है तथापि इधर कुछ दिनों से उन्हें अन्वेषक के रूप में जो प्रतिष्ठा मिली है उससे उनका कवि रूप दब गया था। अब उनकी लगभग ढाई दर्जन कविताओं का संग्रह **'अरघ'** नाम से प्रकाशित हुआ है तो पाठकों ने जाना है कि साठोतरी सीमा पार करते और अन्वेषण की निरन्तर श्रमशीलता में खपते हुए भी 'झड़प' जी का कवि चुक नहीं गया है। भोजपुरी भाषा में यह काव्य-सृजन और भी अर्थवान हो जाता है।

यह भी एक आश्चर्य की बात है कि यह पूरा का पूरा संग्रह विविध छन्द-भँगिमा में प्रकृति का मुग्ध चित्रण है। हिमालय, सरिता, पतझड़ के फूल, बसंत के जन्म, जेठ के महीना, पहिला असाढ़, सूखा, शरद, जाड़काला, पूस, उषा, प्रातःकाल, भिनसार और संध्या जैसे शीर्षकों में ऊर्जस्वित प्रकृति स्तवन सचमुच विराट् पुरूष के चरणों में भावुक कवि का 'अरघ' बन गया है। भोजपुरी भाषा और साहित्य-संस्कृति की प्रकृति से कवि का तादात्म्य इतना गहरा है कि पाठक उसकी सहज धारा में डूब जाता है। ऐसी स्वस्थ सुरूचिपूर्ण रचना के लिए कवि को बधाई। भोजपुरी काव्य-साहित्य में यद्यपि प्राकृतिक वर्णन की ही प्रधानता है तथापि 'झड़प' जी की कविताओं के नये रस-गंध से उसकी गरिमा और बढ़ेगी। ✪

13. सनेहिया

'सनेहिया' (रघुनाथ चौबे) का पूर्वार्द्ध पढ़कर किसी भी सहृदय व्यक्ति को आनन्द उपलब्ध हो सकता है क्योंकि कवि लोकगीतों के सांस्कृतिक स्पर्श और भारतीय जीवन की तरह जीवन संवेदनाओं से चित्त को जोड़ देता है परन्तु उत्तरार्द्ध में वह आंचलिक रंगों को छोड़कर आधुनिकता के चक्कर में पड़ा दृष्टिगोचर होता है। ऋतुपरक सौंदर्यवाद और कृषि जीवन मूलक भावात्मक प्रसंगधर्मिता अपने देश के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठकीय चित्त को बहुत प्रभावशाली ढंग से छूती है और समकालीन भोजपुरी कवि इन्हें भुनाने में कहीं से भी नहीं चूकता है । लेकिन अच्छा होता कि लोकगीतों की संवेदना को मौलिक काव्य में ढालकर पेश किया जाता । कवि रघुनाथ चौबे में संभावनाएँ बहुत हैं । आशा है, वे **'सनेहिया'** की परम्परा को लोकधुनों से आगे बढ़ाकर भोजपुरी कविता को अपनी निजी परम्परा के रूप में विकसित करने में योगदान करेंगे । ✪

14. लर मोतिन के

आलोच्य पुस्तक कवि जगन्नाथ की भोजपुरी गजलों का संग्रह है । भोजपुरी गजल के क्षेत्र में **जगन्नाथ** ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनायी है । जगन्नाथ जी का यह प्रतिनिधि संग्रह शिल्प और कथ्य दोनों दृष्टि से बेजोड़ है । ✪

15. उर्वशी

प्रस्तुत पुस्तक में पुरुरवा और उर्वशी की अमर पौराणिक प्रेम गाथा को सात सर्गों में काव्यबद्ध किया गया है । भोजपुरी शृंगार वर्णन पर यह एक अच्छा काम हो गया है । इसके रचइता **सत्यनाराण 'सौरभ'** हैं । ✪

16. रेखा पर रेखा

'रेखा पर रेखा' डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी के चौदह रेखाचित्रों का संग्रह है और इसमें व्यक्ति, वस्तु और स्थान स्थिति सब के अत्यन्त चटक चित्र शब्दों की मार्मिक रेखाओं में अभिव्यक्त हैं । वास्तव में त्रिवेदी जी रेखाचित्र के कुशल पारखी और विशेषज्ञ हैं । अभी हाल में ही उन्होंने एक शोधप्रबन्ध काशी विद्यापीठ को प्रस्तुत किया है जो हिन्दी रेखाचित्रों के इतिहास और उसकी उपलब्धियों का अन्यतम विश्लेषण है । उस शोध-प्रबन्ध की बहुत प्रशंसा हुई है । इस प्रकार रेखाचित्र संज्ञक विधा के मर्मज्ञ होने के क़ारण त्रिवेदी जी की लेखनी में बहुत सँभाल और कलात्मकता आ गयी है ।

इस कृति का प्रकाशन वास्तव में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति है । लेखक ने **'आपन कथ'** शीर्षक भूमिका में रेखाचित्र सम्बन्धी एक लम्बा समीक्षात्मक और शोधपरक विश्लेषण प्रस्तुत किया है । इस विश्लेषण से कृति का महत्त्व बढ़ जाता है । रेखाचित्र नयी विधा है और लेखक ने दिखाया है कि किस प्रकार और किस सीमा तक इसने स्वतंत्र विधा का रूप धारण कर लिया है । संस्मरण, रिपोर्ताज, कहानी, ललित-निबन्ध, भेंटवार्ता, स्मृतिचित्र, आत्मचरित और यात्रा साहित्य से रेखाचित्र किस-किस स्तर पर जुड़ता और उन्हें प्रभावित करता है लेखक ने इसका विधिवत् विश्लेषण किया है । रेखाचित्र के तत्व और उसके शैलीशिल्प की विशेषताएँ भी साथ ही साथ विवेचित हो गयी हैं । इन विवेचनों के साथ लेखक के रेखाचित्रों का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रचनात्मक स्वाद बहुत तृप्तिदायक सिद्ध होता है। सम्भवतः इसी कारण से लेखक ने अपने रेखाचित्रों में वैविध्य को स्थान दिया है। शास्त्रीय पक्ष और रचनात्मक पक्ष का यह एकत्र संयोग शोध छात्रों के लिए बहुत उपयोगी होगा।

रेखाचित्र सम्बन्धी ऐसी मूल्यवान कृति का भोजपुरी हिन्दी में प्रस्तुत किया जाना भी एक घटना है। 1977 इस भोजपुरी भाषा और साहित्य के लिए बहुत ही समृद्धि का वर्ष रहा है। पटना के **भोजपुरी संस्थान** ने इस वर्ष अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाधर्मी कृतियों का प्रकाशन किया है। एक विशिष्ट और नवीन विधा पर आधिकारिक और प्रामाणिक व्यक्तितत्त्व की छाप पड़ने के कारण प्रस्तुत कृति में बहुत गम्भीरता आ गयी है। जीवन के यथार्थ पक्ष को लेखक ने निकट से देखा है तथा उसके संघर्षों में अपना पसीना भी खूब बहाया है। आलोच्य रेखाचित्रों में कदम-कदम पर इसकी आहट मिलती है। अलंकृत शैली से लेखक ने अपने को पृथक् रखा है अतः सादगी का सहज स्वाद स्वयंमेव ऊपर आ जाता है। मुख्य ध्यानाकर्षक वस्तु है आस्था, भावुकता और श्रद्धा-स्वीकार। लेखक का समूचा जीवन आस्थावादी परिवेश के हरे-भरे ग्रामांचल में बीता और आश्चर्य नहीं कि उसके परिवेश की सम्पूर्ण गमक अन्तरान्दोलन के रूप में कृति में मूर्तिमन्त हो उठी है। गंगातिरही संस्कृति की सादगी और भावात्मकता में जो श्रद्धामूलक स्वीकार भाव है वही लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी के रेखाचित्रों का प्राण है। अपने लगभग छह दशक के संघर्ष भरे जीवन में लेखक ने इतिहास के अनेक उतार चढ़ाव देखें हैं और राष्ट्रीय जीवन के इतिहास निर्माण में उसका सक्रिय योगदान भी रहा है। अथक भाव से लेखक अब भी समाज-सेवा में सक्रिय है। इन सब जीवन स्थितियों की गहरी छाप रेखाचित्रों पर है। उसमें निराशा और अनास्था का स्वर इसी से बहुत विरल है। इससे कृति की सामाजिक उपयोगिता बढ़ जाती है।

अपने रेखाचित्रों में लेखक ने अपने चारों ओर के कुछ आत्मीय लोगों को उजागर किया है और ऐसे व्यक्ति चित्रों की संख्या कृति में लगभग तीन चौथाई है। ये समस्त लोग भी जीवित हैं और प्रख्यात लेखक, पत्रकार, महात्मा, नागरिक ही नहीं टिपिकल व्यक्तितत्व वाले चपरासी और दोस्त भी हैं। किन्तु इन रेखाचित्रों को पढ़कर व्यक्तिचित्र से अधिक वर्ग चित्र ही अधिकांश चित्त पर चढ़ता है। अपने परिचितों की वैयक्तिक चर्चा से उठकर उसे आस्थावाद के स्तर पर मौलिक साहित्यिक स्वाद से परिपूर्ण करने का प्रयत्न लेखक ने किया है। डॉ० भगवतशरण उपाध्याय की रेखाओं में अपना भावात्मक रंग जब लेखक भरता है तब कहीं-कहीं तटस्थता लड़खडाने लगती है पर वह सँभलना भी जानता है। वास्तव में शिल्प को रूपवादी बनाने में लेखक ने कम से कम प्रयास किया है, इसी से सर्वत्र सहजता और सिधाई का ही साम्राज्य है। पाठक इस सिधाई पर कभी-कभी विस्मित भी होता है और सोचता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह भी क्या कहने की बात है, मगर लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी का रेखाचित्रकार है कि एकदम बेलौस है। अपनी झक में लेखक सब कुछ उधेड़ता चला जाता है। भोजपुरी भाषा की सिधाई उसके पक्ष में पड़ती है और कुल मिलाकर कृतिमें एक ऐसा मोहक वातावरण बनता है कि पढ़नेवाला पूरी पुस्तक पढ़े बिना नहीं छोड़ सकता है। इस कृति का खड़ी बोली में अनुवाद होना चाहिये। लेखक इन रेखाचित्रों को उरेहने में काफी सफल है। ✪

17. कलमिया नाहीं बस में

सत्यवादी जी छपरहिया का ललित निबन्ध **'अगस्त के महीना भइल बड़ा सोर'** पहले-पहल **'भोजपुरी साहित्य'** में छपा और उससे लेखक की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ। वास्तव में उक्त निबन्ध जितना ही विस्तृत है उतना ही गम्भीर है। उसमें सूचनात्मकता को विचित्र ढब से लालित्य दिया गया है और अन्त में निजी 'मैं' से सम्पूर्ण स्थितिगत सर्वेक्षण को इस प्रकार जोड़ा गया है कि पाठक चमत्कृत हो जाता है। वह प्रसिद्ध निबन्ध इस संग्रह के मध्य में रखा गया है और कुल पाँच निबन्धों का यह संग्रह भोजपुरी भाषा की शक्ति और अभिव्यक्ति क्षमता को व्यक्त करता है। इसे एक भाषा के रूप में मान्यता के लिए गद्य के जिस परिष्कृत और चलते मानक रूप की आवश्यकता है वह धीरे-धीरे कुछ लेखकों में उभार पा रही है। छपरहिया जी ऐसे ही लेखकों में से एक हैं।

इन निबन्धों को देखकर कहा जा सकता है कि ये गँवारों के पढ़ने के लिए नहीं लिखें गये हैं। इन दमदार गम्भीर विस्तृत और मौलिक निबन्धों में यदि फन्तासी की प्रवृत्ति है तो विषय-निष्ठा भी है। निर्बन्ध मनमौजीपन के कारण इस संग्रह से भोजपुरी साहित्य को समृद्धि मिली है।

कुछ लोग कम लिखकर भी अधिक ख्याति अर्जित कर लेते हैं। सत्यवादी जी भी ऐसे ही भाग्यवान लोगों में से एक हैं। यह बात उनके प्रस्तुत ललित निबन्धों के संग्रह को देखकर विश्वास के साथ कही जा सकती है। इस संग्रह में केवल पाँच ही रचनाएँ हैं परन्तु वे बहुत दमदार हैं। वस्तु को गहराई से उठाकर और विस्तार में विवेचन करने की प्रवृत्ति है जिससे सर्वत्र उनका साहित्यिक स्वाद उजागर रहता है। इनमें ललित निबन्ध की जो आधुनिकतम विधा है उसमें युगीन जीवन की विचारशीलता और बौद्धिकता की आहट कदम-कदम पर मिलती है। कूदफांद खूब होती है पर केन्द्र की पकड़ कहीं नहीं छूटती है। जहाँ निबन्ध-लेखक फन्तासी का प्रयोग करता है वहाँ और अधिक सफलता मिलती है। मनमौजीपन और अध्ययन की छाप देकर छपरहिया जी ने जिन निबन्धों का सृजन किया है उनमें परिवार नियोजन और भ्रष्टाचार जैसे सस्ते विषय की घुसपैठ को निकाल दिया जाये तो शेष बहुत सफल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृति है। फिर इसका भोजपुरी हिन्दी में होना उसकी महत्ता को और बढ़ा देता है। ✪

18. बात क बात

आचार्य श्री कुलदीप नारायण 'झड़प' के 24 निबन्धों का यह संग्रह भोजपुरी-साहित्य को निबन्ध के क्षेत्र में ध्यानाकर्षक समृद्धि देनेवाला सिद्ध होगा । इसमें वैचारिक और साहित्यिक निबन्धों के स्तरीय सृजन से भोजपुरी के एक अभाव की पूर्ति हुई है। इसमें संकलित एक दर्जन ललित निबन्धों में भी कई स्तर की नवीनता है। भारतेन्दु के व्यंग्य-विनोद सम्बन्धी निबन्धों की सूखती धारा को झड़पजी ने भोजपुरी में बहुत ही मौज के साथ पल्लवित किया है। भोजपुरी संस्कृति और भोजपुरी प्रदेश के निवासियों की प्रकृति की पहचान झड़पजी में बहुत पैनी है और इसका पग पग पर परिचय इस संग्रह से मिलता चलता है।

यह कहना सही होगा कि इस पूरे निबन्ध संग्रह की रचनाओं का केन्द्रीय स्वर साहित्यिक से अधिक सांस्कृतिक है। लगभग एक चौथाई निबन्धों में भोजपुरी के विकास और उसकी सांस्कृतिक परम्परा का उद्घाटन हुआ है। झड़प जी की शैली में मौलिकता का गुण प्रधान है। शोध और तर्क से पूर्ण यह शैली बहुत प्रवाह और प्रभावमयी होती है। भोजपुरी निबन्ध का क्षेत्र इस संकलन से समृद्ध हुआ इस तथ्य के साथ यह भी जोड़ लेना उचित होगा कि इससे भोजपुरी भाषा-भाषियों के बीच के क्षेत्र का विस्तार होगा क्योंकि बहुत सी गम्भीर और नूतन वस्तुओं को बहुत ढब से उठाकर झड़प जी ने प्रस्तुत किया है। ✪

19. भोजपुरी निबन्ध निकुंज

भोजपुरी निबन्धों के इस आधुनिकतम संकलन में भोजपुरी निबन्ध के विकास क्रम को दृष्टि में रखकर नये पुराने निबन्धकारों को सहेजा गया है। राहुल सांकृत्यायन, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी से लेकर चतुरी चाचा और कुलदीपनारायण झड़प आदि तक के कुल 34 निबन्धों का यह संकलन एक मानंक कार्य के रूप में सामने आया है । इसे वर्गीकृत करके तथा पूर्ण वैज्ञानिक रूप देकर प्रस्तुत करने में सम्पादकों ने बहुत श्रम किया है। वास्तव में भोजपुरी भाषा में इसके प्रकाशन से भोजपुरी गद्य का ओजस्वी प्रभावशाली और परिनिषठित रूप निखरकर सामने आ जाता है। यूनिवर्सिटियों में भोजपुरी के चलते पठन-पाठन को देखकर और उच्च कक्षा के भोजपुरी छात्रों की आवश्यकता के अनुरूप इसका प्रकाशन हुआ है। निबन्धों के साथ एक अत्यन्त विस्तृत और खोजपूर्ण भूमिका भी है जिसमें हिन्दी गद्य के सम्पूर्ण विकास को बहुत सुलझे ढंग से प्रस्तुत करते हुए भोजपुरी गद्य के इतिहास की एक रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है। कृति निस्सन्देह अनिवार्य रूप से संग्रहणीय है। इसके सम्पादक डॉ० विवेकी राय और सिपाही सिंह श्रीमन्त जी हैं। ✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

22 भोजपुरी का महत्त्वपूर्ण साहित्यः कुछ टिप्पणियाँ

1. 'बयार पुरवइया' और 'अँजुरी भर मोती'

गहमरीजी के पिछले संकलन **'बयार पुरवइया'** (1964) के छपने के बाद बहुत तेजी से भोजपुरी कवियों की पंक्ति में इन्होंने अपनी एक अलग पहचान बना ली। आज भोजपुरी के उन तमाम भूले-बिसरे धुनों को आप खोज-खोजकर उसका नवीन श्रृंगार करके पाठकों के सम्मुख दर्पण की तरह रख रहे हैं। अपनी इस कविता संग्रह के अतिरिक्त कवि सम्मेलन और आकाशवाणी तथा टेलीविजन के माध्यम से भारतीय जीवन को गहमरी ज़ी ने जितनी गहराई से स्पर्श करके गुद्‌गुदी उत्पन्न की है और झनझना दिया है, इसको देखते लोग बहुत विक्षिप्त होकर इनके नवीन संग्रह को खोजते हैं। उसके डेढ़ दशक पश्चात् **'अँजुरी भर मोती'** के साथ गहमरी जी का सुकुमार कवि उपस्थित है।

निस्सन्देह डेढ़ दशक के बीच का समय भी कम नहीं होता है। इस बीच न जाने कितना पानी गंगा में बहा। मनुष्य बदला, समाज बदला, और साहित्य में तो बदलाव की जैसे बाढ़ आ गयी। धीरे-धीरे घुटने के बल भूमि पर सरकती लोकभाषा आज तरना कर खड़ी हो गयी। विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित की गयी। अत्यधिक कथा, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, समीक्षा, काव्य और महाकाव्य की रचनाएँ हुईं। सृजन में बहुत गहराई, विस्तार और ऊँचाई आ गयी। इसी समय में रची इस **'अँजुरी भर मोती'** के गीतों में विविध लोकधुनों की ताजा चोट भरकर गहमरीजी ने कविता के बहाने लोकजीवन के जिस नये क्षितिज का उद्‌घाटन किया है वह बहुत मोहंक है। उसका रूप, रंग और गन्ध-स्वाद का परिचय समय-समय पर रेडियो और टेलीविजन के माध्यम से लोगों को मिलता रहा है। यह एक सुखद संयोग है कि इस नवीन संग्रह के कुल गीत देश के कोने-कोने से प्रसारित होकर और इथर की तरंगों पर थिरक-थिरक कर जनमन को मोह चुके हैं। इन सभी गीतों में मात्रा या रिद्‌म का पूरा ध्यान रखा गया है और समूचे गीत वाद्य यन्त्र पर सही-सही सटीक उतरे हैं। काव्य साहित्य और संगीत का यह मूल्यवान दुर्लभ संयोग बहुत समय पश्चात् जुटा है। कविवर हरिवंश राय बच्चन ने अपनी पुस्तक तृभंगिमा में लोकधुनों को बाँधा अवश्य परन्तु उसमें वाद्ययन्त्रों की कठिनाई और सीमा का ध्यान कम रख गया है। शायद खड़ीबोली हिन्दी लोकधुनों को पचाने में असमर्थ सिद्ध होती है। गहमरी जी के इस संग्रह को देखकर और गीतों के स्वाद में उतरकर भोजपुरी भाषा की नयी शक्ति का परिचय पाठकों को मिलेगा इसमें संदेह नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत लोगों को शायद एक बात की जानकारी नहीं है कि रेडियो पर नामी और विख्यात भोजपुरी गायक **मुहम्मद खलील** अपने को गहमरी जी का शिष्य कहते हैं। गुरु कवि और शिष्य संगीतज्ञ और गायक ऐसा संयोग भोजपुरी भाषा को बहुत भाग्य से प्राप्त हुआ है। इस क्षेत्र में वास्तविक समस्या धुनों की ठीक-ठीक पहचान की है। मात्रा का दोष न रहने पर भी धुन की गड़बड़ी से स्वाद और रस बिगड़ जाता है। लेकिन गुरु शिष्य इस समस्या का बखूबी निर्वाह करते हैं और साहित्य-संगीत के लोकस्वाद की भरपूर रक्षा करते हैं। आजकल आये दिन देखने-सुनने में आ रहा है कि गहमरी जी के गीतों का स्वर और अंतर को तोड़-मरोड़कर उसी ढंग से मंच पर और सीधे रेडियो पर गाया जाता है। हरती को गाँठ बाँधकर पसारी बनाकर कुछ नवीन संगीताचार्य लोग ठीक ढंग से लोकधुनों में डूबने की कोशिश करते तो अच्छा होता।

बात बहुत स्पष्ट है कि संगीत के सफल समावेश के लिए **'अँजुरी भर मोती'** को उपलब्धि' कहा जाय लेकिन इसका यह अर्थ कतई नहीं होगा कि इसका काव्य पक्ष कहीं से कमजोर और नरम है। वास्तव में संगीत तो बाहर से आया है, भीतर से गहमरी जी विशुद्ध कवि हैं। नीचे से ऊपर तक खाँटी कवि । वास्तविक भोजपुरी जीवन में रसा-बसा एक रससिद्ध गीतकार यह बहुत खुशी की बात है कि संगीत की मनमोहन झनकार में कवित्व कहीं से दबा नहीं है। संगीत के सरोवर में कविताई, सर्वत्र उजागर हुई है। इन सभी गीतों को सुनने और पढ़ने से साफ लगता है कि इनमें गहमरी जी का कोमल मन और मधुर स्वभाव बोल रहा है। ✪

2. लहलह पात

काव्य संकलन **'लहलह पात'** के प्रकाशन से भोजपुरी साहित्य में श्रीवृद्धि के साथ ही एक ऐसी महत्वपूर्ण कड़ी जुड़ रही है जिसकी ओर काव्य-प्रेमियों और सभी समीक्षकों का ध्यान अवश्य आकर्षित होगा। बहुत दिनों से भोजपुरी काव्य में निहित एकरसता की जमी परतों को तोड़ने की चर्चा जो चली आ रही है वह इस संकलन में रचनात्मक स्तर पर मूर्त्त रूप लेती हुई प्रतीत होती है। वास्तव में इस आग्रह के पीछे भोजपुरी काव्य की अपनी मौलिकता की अभिव्यक्ति का प्रश्न छिपा है। उसकी अपनी रसगंध जो प्रबल और दुर्निवार आकर्षणों से परिपूर्ण होती है यदि छूट जाती है तो बावजूद भोजपुरी भाषा होने के भोजपुरी काव्य अपनी पहचान खोकर न केवल खोखली झनक मात्र रह जाता है बल्कि वह भीतर गहरे में कहीं सह नहीं पाता है। भोजपुरी काव्य न तो गँवई जीवन के सुखात्मक या दुखात्मक वर्णनों का नाम है और न ही वह इस प्रदेश के लोकगीतों का भाषिक छायांकन है। वह वास्तव में एक ऐसी सतत् विकासमान जीवन धारा की पकड़ है जो हमारे सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवनधारा को प्रभावित करने के साथ हमारी सम्पूर्ण उत्कृष्ट भावसम्पदा का केन्द्रीय तत्व बन प्रतिष्ठित है। चाहे अनुभव करें या नहीं परन्तु उन कारणों से भोजपुरी कवि का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है। इस महान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तरदायित्व को देखते वह खड़ी बोली हिन्दी या किसी अन्य प्रतिष्ठित भाषा की प्रतिस्पर्द्धा में हीनता या उच्चता के भावों से आक्रान्त होकर सृजन के लिये संकल्पवान होता है या उसमें अनुकरणात्मक तत्व प्रभावी हो जाते हैं तो वह पकड़ जो किसी काव्य को विचार या भाव के स्तर पर मर्मस्पर्शी बनाती है, छूट जाती है तथा ऐसी स्थिति में वह काव्य अपनी भाषा के साहित्य में वृद्धि तो करता है परन्तु उससे उसकी श्रीवृद्धि नहीं होती दीखती है। **'लहलह पात'** को दूसरे खाते में डालते हमें यहाँ भारी प्रसन्नता हो रही है।

पण्डित लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी पिछले चार-पाँच दशक से हमारी राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति में अनेक स्तर पर समर्पित भाव से जुटे हैं। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, अध्यापक, साहित्यकार और समाजसेवी आदि उनके बहुआयामी जीवन में सबसे जीवन्त उनका कवि रूप ही सिद्ध होता है क्योंकि आन्तरिक स्तर पर इसने उनके उस समूचे जीवन संघर्ष को समेट लिया है जो बहुत आपाधापी भरा, कोलाहल और कर्कशता से पूर्ण तथा क्लिष्ट-क्लान्त अनुभवों में डूबा हुआ है। कवि की कविताओं को पढ़कर आपको इस बात पर आश्चर्य हो सकता है कि उक्त स्थितियों से विपरीत उसकी कविता में अत्यन्त कोमल, सुकुमार और रसमय छुअन कहाँ से आ जाती है ? वास्तव में कविता की यही विशेषता उसे शीर्ष स्थान पर प्रतिष्ठित करती है। वह गरल को पचाकर अमृत प्रदान करती है। उसकी उपयोगिता रुग्ण और भद्दे समाज को इसी प्रकार की अभिव्यक्तियों से और अधिक रुग्ण और भद्दा बनाना नहीं है। आधुनिक जीवन की तमाम-तमाम प्रकार की विसंगतियों, तनावों, जटिलताओं और क्षुब्ध क्रुद्ध स्थितियों के बीच बारम्बार साहित्य के उत्तरदायित्व की बात दुहराकर हम वास्तव में कहना यही चाहते हैं कि कविता मरी नहीं है। आज या कल इस त्रासदियों की शताब्दी का जहर उसे ही पीना है । यह दायित्व किसी विकसित भाषा के सिर पर जितना है उससे कम विकासशील भाषा के सिर नहीं है। प्रसन्नता है कि भोजपुरी भाषा, साहित्य और विशेषकर उसके काव्य के बढ़ते चरणों के आगे से धुँधलका हट रहा है। ✪

3. 'डागा बाजि गइल'

भोजपुरी हिन्दी की गद्य-पद्य की समस्त विधाओं पर समान अधिकार रखने वाले और सभी में स्तरीय सृजन सेवा का अप्रतिम आदर्श उपस्थित करने वाले समर्पित साहित्यसेवी **श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी** की सात कहानियों के संकलन **'डागा बाजि गइल'** के ऊपर दो शब्द लिख कर मेरी लेखनी आज पवित्र हो गयी। गंगाधार की भाँति पवित्र विद्यार्थी जी के हृदय की भाव-धारा में अवगाहन करते मन कभी तृप्त नहीं होता है। नैसर्गिक निर्झर की भाँति झरता उनकी वाणी का सौन्दर्य क्या गद्य और क्या पद्य सर्वत्र अपनी एक अनाविल मौलिकता लिए सहृदयों के चित्त को अनुरंजित करता रहता है। अटूट प्रवाह वाली अपनी कहानियों में भी चूँकि वे अपनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहज भावुकता को विसर्जित नहीं कर पाते हैं अतः पग-पग पर भाव-भाषा की चिपकनशीलता अपना रंग लाती है । विद्यार्थी जी की कहानियाँ उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप से सम्पृक्त होने के कारण भोजपुरी कहानी साहित्य में अपनी नयी छाप छोड़ने के साथ ही नयी पहचान बनाती हैं । ✪

4. महतारी

भोजपुरी प्रबन्ध काव्य **'महतारी'** अपने ढंग का अकेला और चालू भोजपुरी काव्य की लीक से हटकर है । इसका शिल्प इस बात के लिए आश्वस्त करता है कि इस नवविकसित भाषा के काव्य में हर्ष गद्‌गद् आँसुओं सहित रोमांचित कर देने की शक्ति आ गयी है । इस काव्य के यशस्वी कृतिकार **विन्ध्याचल राय 'अचल'** ने ग्रामवासिनी भारतीय माँ के सांस्कृतिक सन्दर्भों को उसकी सम्पूर्णता में उठाया है और वर्णन विस्तार में न जाकर तथा भावात्मक चित्र-बिम्बों में सामासिक कसाव देकर सन्तति के शैशव से लेकर माँ की स्नेहिल छाँह में एक से इक्कीस होने की स्थितियों को बहुत ही प्रवाहपूर्ण परिनिष्ठित भोजपुरी में प्रस्तुत किया है । बहुत ही मंगलाशापूर्ण उदात्त भाव तरंगों को उठाने के साथ ही अन्त में सम्पूर्ण परिवार के योगक्षेम को वहन करती माँ के अवसान के समय कवि पाठकों को गंभीर विचारों में डुबो देता है । ये विचार आस्था और पूस्तवन जैसे जीवन मूल्यों से जुड़े होते हैं । पूरी कृति मूल्य सापेक्ष होने के कारण बहुत मूल्यवान है । केन्द्रवर्ती माँ के चतुर्दिक परिधि पर बहुत मोहक ग्राम संस्कृति है जिसके सजीव चित्रों को पूरी रसवत्ता के साथ प्रस्तुत करने में अचल जी को भारी सफलता मिली है । ✪

5. 'लोक धर्म'

एक सर्जक के रूप में **भगवान सिंह भास्कर** ने भारतीय संस्कृति के मांगलिक क्षेत्रों की बहुत ही सार्थक खोज की है और उसी क्रम में उनकी पाँचवी पुस्तक **'लोक धर्म'** भी पाठकों के सामने आ गयी । इसमें भास्कर जी ने राम, कृष्ण, शंकर, दुर्गा और गंगा के साथ-साथ छठ और पिंड़िया पर भी प्रकाश डाला है । उक्त विषय से जुड़े सातों निबन्ध मूलतः शोध-परक हैं और उनमें विस्तार के साथ-साथ गहराई भी है । महापुरुषों के पौराणिक आधार पर प्रस्तुत जीवन और लोक परम्परा में उनसे जुड़े गीतों में जो अन्तराल अथवा विसंगति है उसके विश्लेषण से कुछ मौलिक प्रश्नों को खड़ा करते हुए लेखक ने बुद्धीजीवियों के लिए पर्याप्त विचारोत्तेजक सामग्री दी है । कहना उचित होगा कि भोजपुरी भाषा में यह पुस्तक अस्पर्शित विषय-वस्तु को प्रस्तुत कर बेजोड़ बन गयी है । ✪

6. मंगल गीत

भोजपुरी भाषा और साहित्य की सेवा में समर्पित कवि, कहानीकार और निबन्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखक **भगवान सिंह 'भास्कर'** की कविताओं के संकलन **'इन्द्रधनुष'** और आध्यात्मिक चिन्तन से ओत-प्रोत **'भगवान गीता'** को देखने के बाद उनके द्वारा श्रमपूर्वक संकलित **'मंगलगीत'** को देखना एक सहज साहित्यिक सुख है। सांस्कृतिक रूचि सम्पन्न व्यक्तित्व वाले 'भास्कर' जी द्वारा प्रस्तुत शताधिक मांगलिक गीतों की सुसज्ज मंजूषा 'मंगल गीत' ग्रन्थ के रूप में सामाजिक जीवन की एक मूल्यवान धरोहर है। इस पुस्तक में भगवान शंकर से सम्बंधित मंगल गीत (सहाना) की संख्या अठारह है तथा झूमरों की संख्या कुल उन्तालीस है। इसी प्रकार सामान्य सहानाओं की संख्या पैंतालीस है। भोजपुरी के भंडार के इसके पूर्व कवि ने **'भोजपुरी के विवाह गीत'** नाम की एक सम्पादित कृति से भरने का पवित्र कार्य किया है। जागतिक जीवन में बढ़ती आपा-धापी और संघर्ष-संकुल तनाव की कठिन स्थितियों को देखते इन लोकगीतों की महत्ता अब आतुरता के साथ स्वीकारी जाने लगी है। ये गीत हमारे आन्तरिक जीवन के घावों को सहलाव देने और भरने-सुखाने के संदर्भ में औषधि का कार्य करते हैं। परम्परा, आस्था और मूल्यवादी सांस्कृतिक जीवन से जुड़े इन अचूक मनोवैज्ञानिक प्रभावों वाले लोकगीतों के प्रचार-प्रसार और संकलन में जुटे लोग वास्तव में धन्य हैं। उनके इस प्रयास से क्रूर और उग्र प्रवृत्तियों की प्रधानता वाले इस युग की आँखों में कोमलता, तरलता, करुणा और भावविह्वलता की संजीवनी का संचार संभव है। ✪

7. रउवा राजा बाबू हउवा

एक दिन आकाशवाणी वाराणसी में रेकार्डिंग रहलि। गइलीं त भइया **हरिराम द्विवेदी** मिललन। रेकार्डिंग का बाद साँझ बेरा एगो चाहखाना में धइले गइलन आ भरि पेट कविता सुनवलन। बड़ा सुख मिलल। ऊ सुख हम रउवा सभी के बाँटल चाहत बानी। **'रउवा राजा बाबू हउवा !'** कवना कोना से ओह सुख के उठाईं। धन्य हो **रामजियावन दास** ! के तोहके **'बावला'** कहेला ? तू त सभ के बावला बना देत हउआ। भइया हरिराम द्विवेदी का मुँहे तू अतना नीक लगला कि मन में चुभि गइला ! सुनीं ला कि मिलला पर मारे प्रेम के धधवा देलऽ, बाकी छोड़ऽ, द्विवेदी भइया का सहत बाड़न, सुनि-सुनि के धधा जात बानी।

हमके ओह दिन मालूम भइल कि **रामजियावन दास 'बावला'** एगो सच्चा जनकवि क जिनिगी जी रहल बाड़न। भगती का गीतन में सराबोर रामचरित मानस में एबसे जियादा बुड़की मरले बाड़न। राम बनबास पर उनकर गीति सुनि के झरझर लोर झरे लागेला।

रामजियावन दास क गाँव चकिया क्षेत्र में **नाँव-भीषमपुर** ह जहाँ एगो लोहार परिवार में ऊ पैदा भइलन। घरे खेती-बारी बा। शिक्षा त कमे भइलि बाकी भीतर से ढेर अँजोर जनमते लउकल। भँइसि चरावत में तुलसी का मनिया गरहाये लागे या भगती के गीति जोराये लागे। आगे चलि के ई सुभाव अइसना भजनानन्दी का रूप में निखरल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि बनारस आ बनारसी बोली दूनों धन्य भइल । आज 'बावला' जी का पास पूरा गवनई पार्टी बा, ढोल-झाल आ करताल बाजत बा, लोग झूमत बाड़न, लोकोत्तर आनन्द क बरखा होत बा, सुर लहरात बा, 'रउआ राजा बाबू हउवा !'

जब से हरिराम द्विवेदी सुनवलन, मन एक-एक सबद पर लहालोट हो गइल बा ! अइसन सहज आ प्रभावशाली अभिव्यक्ति अइसन साफ शब्दावली में हमरा सामने आजु तलक ले ना आइलि रहलि । बड़े-बड़े कविन क गुरु गंभीर तेवर एह सहजता का मिठास का सोझा पानी भरो ! द्विवेदी जी हमार ध्यान एह कवितन का तुक्कन का ओरि खींचलन । रामजिआवन दास पहिलहीं एगो बहुत कोमल आ मीठि 'हउवा' खड़ा कइ दींहलन । अब आगे का-का आई ? गजब बा ई भोजपुरी क जादू आ एकरा एगो जादूगर क कमाल । त तनी पूरा जायजा एह लोकगीत क ले लीं -

हम बनवासी कोल भील कें बेटउवा
रउवा राजा बाबू हउवा !
करीं सेवा का खिआई ?
कहां आसनी बिछाई ?
इहाँ बनवा में बाय कन्द मूल फल पतउवा !
रउवा राजा बाबू हउवा !
तोरे बाबू-माई हउवैं ?
घरे अउरन भाई हउवैं ?
बाबू तपसी कै भेस ई बुझात बा बनउवा !
रउवा राजा बाबू हउवा !
आजु मोरे घरे रहा
रहबा कि नाहीं कहा
बाटे मरजी तोहार नहीं कउनों बा दबउवा !
रउवा राजा बाबू हउवा !
बनवासी हम लोग
नाहीं सेवा करे जोग
लोग 'बावला' भयल बा देखि-देखि के सुभउवा !
रउवा राजा बाबू हउवा !

हम ए गीत के लोकगीत कहत बानी । हालाँकि एकरा के रचे वाला जनकवि के अता-पता सूरूज नरायन नियर प्रत्यक्ष बा । लोकगीत त ऊ कहाला जेकरा के रचे वाला का बारे में केहू कुछु ना जानेला आ परम्परा से ओकरा मिठास में लोग बूड़त आवेलन । लोकगीत के अइसन जनाला कि केहू बनावेला ना, ऊ अपनही बनि जाले, जइसे फूल बनि जाला, ओस चू जाले या टिकोरा लाग जाला । एही से ओह में गजब क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परान होला । अइसही परान ऊपर वाला गीत में बा । एही से हम एकरा के लोकगीत कहत बानी । भावुकता चोटी पर चढ़ति जाति बा । केतना निगिचा से बोलल जात बा, कइसे अगरा के मन क बाति कहल जाति बा, एक-एक वाक्य में एक-एक गो बाति धड़कनि नियरि खुलति बा । जिज्ञासा, आग्रह, कौतूहल, आशंका, असमर्थता, निरपेक्षता, आदर, श्रद्धा, प्रभाव, विनोद, औत्सुक्य और उपेक्षा से लेके मान-मनउअल तक के केतना भाव ओ संचारी भाव एह में गुथाइल बाड़न । जंगली कोल भील का लइकन का भीतर मन में भाव के उहे अमृत झरना बा जवन सभका मन में बा आ बहुत जल्दी एह लोकगीत में अइसन सुइया जुटान हो जात बा जे मजा आ जात बा । जनपदन में बिखरल अइसना सत्कविन क खोज होखे के चाहीं । ✪

8. नयकी पीढ़ी

'नयकी पीढ़ी' नाटक पढ़ि के अनासे मुँह से निकलत बा कि जइसे रधिया-किसुन आ उनकरा गाँव लखनपुर क दिन लवटल ओइसहीं सात घर बादी-मुदई आ उनकरा गाँव क दिन लवटो । एह विचार क एगो कारन बा । पहिला अंक में जब परदा उठत बा त मंच पर 'अन्हार लउकत बा' । ई अन्हार मंचे पर नइखे सगरे गाँव में छवले बा आ गाँव का लोगन के जिनिगी नरक बनवले बा । सरि के खदरि गइलि बा, देखले घीन बरत बा, बाकी पुरनकी पीढ़ी, जमींदार-चउधुरी आ महाजन क जोंकइल पीढ़ी उपद्रो नधले बा । मारे त्रास के पीअर पतई नीयर थहरात मेहरारू आ पाला से कठुअइला डीभी मतिन मरद, जिनकर जिनिगी धुँआ रहलि बा, न बरति बा न बुताति बा, ईहे गाँव बा । एही बीच अइसनि हवा बहति बा कि सुगबुगाति नयकी पीढ़ी लहसि के धधकि उठति बा आ सगरे 'अन्हार' छँटि जात बा । तब काहें ना मन से असीस उठो ? भोजपुरी में पहिले-महिले रंगमंच लायक जवन एगो सधल रूप क सामाजिक नाटक लिखाइल ओमें भोजपुरी-आत्मा के जगावे खातिर सुखान्त कइल जरूरी रहल । ईहे हमार असली रूप ह, पीरा-बाथा त जिनिगी में लगले बा । नाटक में तनी ऊ छँटत लउको, ओके देखे वाला लोग तनी बोझा उतारि के लवटसु, अइसन ना कि 'माथो मुँड़वले गरीबगिरि नाँव !'

बेशक, **'नयकी पीढ़ी'** क रचना पढ़े खातिर ना, खेले बदे भइलि बा । कई बेरि भोजपुरी-रंगमंच पर उतार के एह नाटक क तार-तार कसल गइल बा आ छाँटि-छूँटि के खूब चुस्त बनावल गइल बा । हो सकेला कि पढ़त में कहीं-कहीं अटपट बुझाई, बाकी रंगमंच का मोताबिक भावन क तनाव आ उत्तेजना शब्द रूप खूब जमल बा । जवन नाटक पढ़े में दिलचस्प होला ऊ रंगमंच पर चढ़ते छितिरा जाला । **श्री शिवमूरत सिंह जी** क ध्यान बराबर स्टेज का ओरि बा । हिन्दी का नाटकन में ई भारी दोष बा कि रचइता लोगन क कुल्हि जोर कलम का करामात आ साहित्यिक जोम देखावे में लागल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा। पढ़ला पर त रोवाँ फरफरा जाई बाकी रंगमंच पर टाँय-टाँय फिस ! अब भेद कइल गइल कि नाटक के दू किसिम बा, एगो पाठ्य नाटक यानी चुपचाप एकन्ता में बइठल पढ़ेवाला आ दूसर अभिनेय यानी रंगमंच पर उतारे लायक । खुसी क बाति बा कि भोजपुरी क ई जोरदार **'नयकी पीढ़ी'** दूनों गुनआगर बा ।

लेखक **श्री शिवमूरत सिंह** के बधाई दिहला का बाद एगो बाति अउर । 'नयकी पीढ़ी' छापि के भोजपुरी-संसद सचहूँ नयकी पीढ़ी के चुनौती देले बा । जवने ओरि से सोचल जाव अइसन जनात बा कि आज बिदरोह क बहुत जरूरत बा । समाज में बाप-दादा का नाँव पर, परम्परा का नाँव पर पाप-पुनि आ धरम का नाँव पर बहुत सहल गइल । सहत-सहत जवानी खिआ गइलि आ पानी ओरा गइल । गाँव टूटि गइल । अब कवनों शासन, कवनों सरकार भा कवनों बाहर क इन्तजाम अइसन ना कइ सकेला कि सरग क तरई उतारि के भुइयाँ धइ देई, लेईं सभे चाभीं ! अपना दुख के हटावे खातिर नीचे से आपन हाथ-पहुँच चलावे के परी । अपना चारू ओरि फइलल कूड़ा-कचरा अपने हाथे बहारे के परी आ अपने हाथे ओमें आगि लगावे के परी । तबे समाज सुखी होई । देस का नवहन में ई आगि जागो, बिदरोह जागो, नया खून उछड़ि के मैदान में आवो फेरू नयी दुनियाँ बनो । भरोसा बा कि देस क नयकी पीढ़ी एह **नयकी पीढी** क चुनौती माथ पर उठाई । ✪

९. 'हम गीत गाँव क गाईंला'

पद्मदेव प्रसाद 'पद्म' की एक्यावन भोजपुरी कविताओं के संकलन **'हम गीत गाँव के गाईंला'** में लोक रंग की अचूक छुअन दिखायी पड़ती है । इसकी रचनायें कवि के विशिष्ट अंतरंग मोह की उपज हैं और यह मोह गाँव के प्रति है । यह तथ्य आरंभ में ही उभर गया है । एक गीत – **'हमरा गाँवन से मोह बहुत; हम गीत गाँव के गाईंला ।'**

यहाँ विचारणीय बात यह है कि यह मोह सीमित या वैयक्तिक नहीं है । उसमें गाँव मात्र और इस प्रकार व्यापक ग्राम संस्कृति के प्रति आन्तरिक लगाव है। इस लगाव की लगन इतनी प्रबल है कि कवि के कण्ठ से गीत बनकर फूट पड़ती है । वास्तव में निर्वैयक्तिक प्रेम में ही वह गहराई और व्यापकता होती है जो चित्र को रँगने वाली रंग-तरंगों के उठने का कारण बनती है । ऐसे चित्त को रँगने वाले लोक रंगों का 'पद्म' की कविताओं में अभाव नहीं है । कवि ने बहुत ही मुग्ध दृष्टि से गाँव स्थित खेत, बाग-बगीचे, प्रकृति की सुन्दरता, पर्व, ऋतु रंगीनी और भोले-भावुक गँवई लोग-बाग आदि को देखा है ।

लोक रंग में डूबे कवि को अपने देश, उसके गौरवशाली इतिहास, प्रेरक अतीत और उसके राष्ट्रीय संदर्भों की भी याद आती है और वह कभी-कभी बहुत भावुक हो उठता है । **'हिमालय माँग रहल बलिदान'** जैसी रचनायें इसका प्रमाण है । इतना होते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुए भी ऐसी रचनायें संकलन में कम हैं। अधिकांश रूप में कवि की मूल काव्य-प्रवृत्ति बन गाँव की प्रकृति-संस्कृति छायी रहती है। प्रकृति के सौन्दर्य-पक्ष से कभी-कभी उचट-उकता कर वह उसकी विकृति को रेखांकित करने में जुट जाता है। **'मजूरन से पूछ मजूरन के हाल', 'सुख बाँटेला जे दुनिया के, रहेला खुद मजबूर। हम त हई मजूर ॥', सड़कों पर सर-सर दउरत बा, एक अजूबा रिक्सा गाड़ी।' और 'काहे आदमी के आदमी परान हरेला।'** इत्यादि रचनायें बहुत मर्मस्पर्शी हैं।

वास्तव में देश में शोषण, अन्याय और भ्रष्टाचार की समस्यायें इतनी ज्वलन्त हैं कि चाहे कैसा भी भावुक आत्मलीन कवि होगा उसकी निगाहें इन अतियों-विसंगतियों पर अटक जायेंगी ही। **'पद्म'** के भोले कवि को भी ऐसी कुछ चीजें बहुत कचोटती-कुरेदती हैं और तब **'थाना-कचहरिया में सभे घूसखोर बा'** जैसी-जैसी पंक्तियाँ अत्यन्त सहजता से उछल आती हैं।

गीत, नवगीत, गजल और लोकधुनों से सम्पृक्त यह सहजता कवि के शिल्प का प्राण तत्त्व है। यह **'रामजी रामजी पानी द'** जैसे लोकगीतात्मक भावचित्रों से जुड़कर तथा लोक संगीत की मधुर झंकृतियों के बीच से कढ़कर बहुत मुग्धकारी हो जाती है। ध्वनि शब्द-चित्र और शब्दचित्र की शिल्प-सम्पदा का भी संकलन में अभाव नहीं है। कहना सही होगा कि संकलन की कुल एक्यावन कविताओं में विविध बावन रंगों की इन्द्रधनुषी छटा छिटकाने और कभी-कभी गरजन-तरजन के साथ बिजली चमकाने की भोजपुरी काव्य-कला का तीता-मीठा स्वाद समकालीन भोजपुरी साहित्य में अपनी अलग पहचान कराने में समर्थ है। ✪

10. 'बिहान होई कहिया'

अपने सहज-सरल और खरे किसान व्यक्तित्व को जन-भाषा भोजपुरी में ढाल कर जो **'बिहान होई कहिया'** काव्य का निर्माण कवि **कुमार विनय राय** ने किया है, वह सही मायने में जनवादी भाव सम्पदा का घोषणा-पत्र बन गया है।

कवि के भीतर एक आग है, एक तड़प है और सचमुच ही कुछ सार्थक कहने की तीव्र छटपटाहट है। यही कारण है कि मात्र मनोरंजन से ऊपर उठ कर वह अपने पाठकों और श्रोताओं को जन पीड़ा की सम्वेदनाओं में डुबो देता है। **बिहान होई कहिया** की भाषा सपाट होते हुए भी सीधी मार में सक्षम है। साहित्य को लड़ाई का हथियार बनाने के लिए अलंकृत-औपचारिक साहित्य की शास्त्रीय भाषा नहीं, कुमार विनय की बोलचाल की प्राणवान भाषा उपयुक्त होगी। कवि का काव्य देश के मुट्ठी भर सुजन लोगों को नहीं, कोटि-कोटि दीन-हीन जन लोगों को सम्बोधित करता है। यही उसकी सार्थकता है। गाँव की मूलभूत पृष्ठभूमि पर उभरी यह राष्ट्रीय सोच की सरल जन-गीता निस्सन्देह ध्यानाकर्षक है। इसके पाठक रचनाओं में अपने को, अपने आसपास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के आम लोगों के जीवन को, उनके सुख-दुख तथा उनकी समस्याओं को, उनकी पीड़ा को निकट से देख सकेगा ।

इस कृति की केन्द्रीय सम्वेदना मानवीय पीड़ा है परन्तु कवि ने उसे भाषणबाजी के रूप में सीधे सपाट रूप में न प्रस्तुत कर कवित्वमय तथा कलात्मक शिल्प भंगिमा में प्रस्तुत किया है और इस प्रस्तुति की हर मुद्रा, कदम-कदम पर अनुरंजक रूप लेती आगे बढ़ती है । इसीलिए कविताओं में मर्मस्पर्शी होने के साथ-साथ अनुरंजन का गुण भरपूर रूप में विद्यमान है । इन्ही सब कारणों से बबुरंग को भोजपुरी के लोकप्रिय कवियों में से एक माना जाता है । **'बिहान होई कहिया'** पहली कृति होने पर भी बहुत प्रौढ़ है । ✪

11. चन्द्रशंखर मिश्र के दो प्रबन्ध काव्य

बाबू कुँवर सिंह भोजपुरी क्षेत्र के अप्रतिम जननायक हैं । भोजपुरी भाषा में उनके ऊपर रचे प्रबन्ध काव्यों की संख्या लगभग आधा दर्जन है । भोजपुरी का पहला महाकाव्य **'कुंअर सिंह'** सन् 1957 में छपा । इसके रचइता **हरेन्द्र देव नारायण हैं ।** यह कुतूहलवर्धक संयोग रहा है कि दूसरा महाकाव्य ठीक इसी **'कुँअर सिंह'** नाम से सन् 1965 में प्रकाशित हुआ । इसके स्रष्टा चन्द्रशेखर मिश्र हैं । इसके पश्चात् **सर्वदेव तिवारी 'राकेश'** और **कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'** आदि प्रतिष्ठित कवियों ने कुँअर सिंह के चरित्र को अपने काव्य में उठाकर भोजपुरी भाषा को समृद्ध किया ।

उक्त महाकाव्यों को देखते चन्द्रशेखर मिश्र के महाकाव्य का महत्व सहज ही रेखांकित किया जा सकता है । इसमें काव्य सौन्दर्य और रसवादी रूपवादी शिल्प का निखार अधिक है । भोजपुरी काव्य को इस कृति ने बहुत ऊँचा उठाया है । इसकी भूमिका में काशी के विद्वान मनीषी डॉ० सम्पूर्णानन्द (उस समय वे राजस्थान के राज्यपाल थे) ने लिखा कि 'कुँअर सिंह' काव्य में कई पँक्तियों में इसका अपूर्व उद्रेक देख पड़ता है और यही उत्कृष्ट काव्य का लक्षण है । जो काव्यग्रन्थ मुझें सर्वांग सुन्दर प्रतीत होता है उसके किसी अंश की प्रशंसा क्या करूँ !'

कुँअर सिंह की इतिहास-विदित रोमांचक कहानी को लेकर चन्द्रशेखर मिश्र ने अपनी कवित्व-कल्पना से आकर्षक उत्तेजना का सृजन किया है । रचना में वर्णानात्मक वृत्ति कम, भावात्मक गत्यात्मकता अधिक है । पूरे महाकाव्य को सात अध्याय में विभाजित किया गया है । 'जननि भारत, कोटि प्रणाम है' के मंगलाचरण के बाद पहला अध्याय **'जुटलि सुहागिन मंगल गावइ'** के रूप में और अंतिम **'गढ़ पर फहरल विजयी निशान'** के चित्रों में प्रस्तुत हुआ है । इन दोनों की आह्लादक शृंगार शांत-संगति के बीच वीर-रसादि की अति प्रवाहमय ओज-तेज भरी योजना है । इनमें **'चुरिहारिन गाउँ में आवत नाहीं'** और **'बाबू कऽ फिरलि दोहाई'** नामक अध्याय बहुत रोमांचक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और युद्धोत्साह-चित्रों से परिपूर्ण हैं तथा हिन्दी-प्रदेश में अपनी सुपरिचित गूँज छोड़े हुए हैं।

'कुँअर सिंह' महाकाव्य की ही भाँति चन्द्रशंखर मिश्र का खण्डकाव्य **'द्रौपदी'** बहुत प्रसिद्ध हुआ है। इन दोनों की भाषा परिनिष्ठित भोजपुरी से कुछ हटकर है। कवि ने इसे द्रौपदी की भूमिका में **पश्चिमी भोजपुरी** कहा है। वास्तव में यह भोजपुरी अवधी और काशिका में पग कर और मीठी, मार्मिक और लचीली हो गयी है।

'द्रौपदी' में भी **'कुँअर सिंह'** की रसवत्ता बनी हुई है। वास्तव में रस की प्रधानता होने के कारण ये दोनों प्रबन्ध काव्य शुद्ध भारतीय परम्परा में आते हैं। 'कुँअर सिंह' में यदि वीर रस प्रधान है तो 'द्रौपदी' में करुण। इन दोनों का यथेष्ट परिपाक अपने काव्य में उतारकर चन्द्रशेखर मिश्र अपने पाठकों और श्रोताओं के चित्त पर अपनी कवित्वकला और काव्य प्रतिभा का सिक्का जमा लेते हैं। 'द्रौपदी' में उन्होंने कृष्ण और द्रौपदी के सम्बन्धों पर नये सिरे से प्रकाश डाला है और इनके माध्यम से भाई-बहन के पवित्र शाश्वत प्रेम की अनूठी व्यंजनायें प्रस्तुत की हैं। पुस्तक की भूमिका में उक्त सम्बन्ध के संदर्भ में विद्वत्तापूर्ण विवेचना की गयी है।

चन्द्रशेखर मिश्र की भाषा में अप्रतिम प्रवाह है। वे इस प्रवाह में तत्कालीनता का छोर पकड़ सर्वकालीनता की ओर कभी-कभी मुड़ जाते हैं तो चमत्कार उत्पन्न हो जाता है। **'कुँवर सिंह'** में भारत माता को स्वप्न में रोते देख दादा जी उनसे बेटे की भूल क्षमा करने को लिए कहते हुए कहना शुरू करते हैं - (पृष्ठ 69)

'दाना ना खाये भोजपुरिया,
पानी ना पीये भोजपुरिया,
बाकी जब ले दम में दम बा-
तेगा चमकाये भोजपुरिया।'

और इसके बाद 18 छन्दों के भोजपुरिया लोगों की जुझारू और आत्मत्यागी प्रकृति का जो चित्रण होता है वह एक स्वतंत्र विचार सरणी बन जाता है। इसी प्रकार **'द्रौपदी'** में भी एक मार्मिक स्थल उपस्थित हुआ है। चतुर्दिक से निराश द्रौपदी का ध्यान अपने भाई कृष्ण की ओर जाता है -

'तर्क-वितर्क तियागि दे रे मन,
नाहीं संदेह बा एकउ कना कऽ।
दूर दुअरिका बा मनलिउँ पर,
फाल बड़ा ओनके चरना कऽ।
बाती समान हिला हियरा,
मन में सोंचलीं गज के सरना कऽ।
आँटल नाहीं भुगोल तनिउँ,
अस बा इतिहास मोरे बिरना कऽ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार अपने भाई पर भीतर गर्व की विश्वास भरी अनुभूति होती है और इसके बाद भाई-बहन के पवित्र सम्बन्ध पर ऐसी मार्मिक व्यंजनायें होती हैं जो प्रसंग से ऊपर उठकर शाश्वत चिन्तन बन जाती हैं। इस प्रकार भावोद्रेक के साथ विचारोत्तेजना और उक्तिवैचित्र्य, चमत्कार और अनुरंजन के साथ रसवत्ता, का सृजन पग-पग पर लक्षित होता है। **कुँअर सिंह** में वीर के साथ वीभत्स और भयानक आदि रसों की व्यंजना भी सफलता पूर्वक हुई है। अनुप्रास और उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का सौन्दर्य पूरे काव्य को गांभीर्य प्रदान करता है। वास्तव में क्या कथा-कल्पना और क्या अभिव्यक्ति-शिल्प सर्वत्र कवि हलकेपन से बचता गया है। इसीलिए भोजपुरी काव्य की गंभीरता का प्रसंग उपस्थित होने पर **चन्द्रशेखर मिश्र** के अवदान को स्मरण किया जाता है। भोजपुरी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में उनका यह अवदान उन्हें अमरत्व प्रदान करता है। **'द्रौपदी'** के आरम्भ में सरस्वती की प्रार्थना करते हुए कवि विनम्रता वश कहता है, **'भाव नाहीं, भाषा नाहीं, छन्द-रस बोध नाहीं,** मगर इन कृतियों का पाठक उक्त क्षेत्रों में कृतिकार का लोहा मानता है। विशेष कर रस-क्षेत्र की सृजन सिद्धि उसे विशिष्टता प्रदान करती है। ✪

12. 'सोचविचार' और 'नवरंग'

भोजपुरी सेवीजनों में **नागेन्द्र प्रसाद सिंह** अपने प्रगतिशील चिन्तन और तथ्यपरक शोधवृत्ति के लिए प्रसिद्ध हैं। वे लिखते कम हैं परन्तु जो कुछ भी लिखते हैं वह बहुत गंभीर, प्रामाणिक, प्रखर और आधुनिक होता है। इसीलिए सन् 1996 में उनके दो निबन्ध-संग्रह **'सोचविचार'** तथा **'नवरंग'** (नवरंग का यह दूसरा संस्करण रहा) प्रकाशित हुए तो भोजपुरी साहित्य प्रेमियों को बहुत प्रसन्नता हुई।

लगभग सन् 1970 से भोजपुरी भाषा और साहित्य से जुड़े नागेन्द्र प्रसाद सिंह मानते हैं कि 'निबन्ध, समीक्षा आ शोध साहित्य के कठोर विधा ह' और जब वे इसी दिशा में मुड़ते हैं तो मानना पड़ता है सामान्य भोजपुरी-रचनाकारों से वे पृथक मानसिकता वाले हैं। वे भोजपुरी साहित्य के उक्त कठोर क्षेत्र को पूरी शक्ति लगाकर कोड़ते-कमाते प्रतीत होते हैं। **'सोच-विचार'** की भूमिका में वे अपनी सम्बन्धित रचना प्रक्रिया की ओर इंगित करते हैं, 'हम ओही भारतीय मनीषा का परम्परा में अपना निबन्ध, समीक्षा आ व्याख्यान में भूमिकाबाजी का अनावश्यक झाड़-झंखाड़ में भरसक ना फँस के सीधे अपना विषय रूपी शिकार पर सिंह लेखा आक्रमण करेके प्रयास करीलें! ...... भाषा आ वाक्य रचना में हमार ईहे प्रयास होला, ताकि हमरा पाठक के एको शब्द फालतू ना पढ़े के पड़ो।'

लेखक की उत्तम रचना प्रक्रिया की झलक उनकी कृति में मिलती है। **'सोच विचार'** में कुल सोलह रचनायें संकलित हैं। समस्त रचनाओं के स्वर को समाहार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूप में प्रस्तुत करती अंतिम रचना, **'भोजपुरी अस्मिता के संकल्प'** हमारा ध्यान तेजी से आकर्षित करती है । इसका आरम्भ इस प्रकार होता है 'समाज,जाति, भूभाग आ सभ्यता-संस्कृति के विकास आ समृद्धि के स्तर के ओह भूभाग के आबादी के मातृभाषा में विकसित साहित्य का अनुशीलन से निर्धारित कइल जा सकेला' और आगे इस कसौटी पर चढ़ वे भोजपुरी को कसते हुए घोषणाा करते हैं, 'भोजपुरी एगो निश्चित भूभाग, बड़हन आबादी आ विकासशील चेतना के पुरान मातृभाषा ह ।' और इसके बाद इसके प्रचार-प्रसार की स्थितियों का विश्लेषण पूर्ण निर्णय देते हुए राष्ट्रीय मानक का स्मरण दिलाते हैं । वह राष्ट्रीय मानक कैसा हो ? - 'गोड़ का नीचे आपन भोजपुरिया जमीन आ मन प्राण में भोजपुरी अस्मिता के गौरव-स्तम्भ के पहचान ।'

स्पष्ट है कि लेखक अपने निबन्धों में एक गंभीर उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए दृष्टिगोचर होता है । वह सर्वत्र संतुलित होता है और अतियों से बचता है । भाषा के विषय में भी वह क्षेत्रीयता को राष्ट्रीय मानक के रूप में उभारने का पक्षधर होता है । उसके इस सम्बन्ध में विचार है, 'भोजपुरी साहित्यिक भाषा, खासकर के निबन्ध, समीक्षा, शोध आ शास्त्र लिखे वाला भाषा के गँवई भोजपुरी भाषा का ओर मोड़ल एगो द्राविड़ प्राणायाम आ अपराधिक कर्म होई ।' कहने की आवश्यकता नहीं कि यह अपराधिक कार्य नागेन्द्र प्रसाद सिंह ने कहीं नहीं किया है ।

'सोच-विचार' के निबन्धों में कुछ को छोड़ कर शेष की चिन्ता भोजपुरी भाषा और साहित्य से सम्बन्धित है । भोजपुरी आन्दोलन से लेकर इसके प्रकाशन तक, इससे जुड़ी शिक्षा, सामाजिक चेतना और परम्परा से लेकर विविध संभावनाओं की टोह तक लेखक बहुत नापजोख और पैमाइश करता है । वह 'भोजपुरी के वर्त्तमान स्थिति आ जनता के कर्त्तव्य' तक की पड़ताल में जाता है । कुल मिलाकर उसके भीतर एक छटपटाहट है और इसीलिए पुस्तक का नाम **'सोच-विचार'** बहुत सार्थक प्रतीत होता हैं । **'लोक नाटक आ लोक मंच : परम्परा के पहचान'**, **'विदेशिया शैली ना ह, परम्परा ह'** तथा लघुकथा से सम्बन्धित आलेख शोधपरक हैं और बहुत गंभीर हैं । भोजपुरी के ख्याति पुरुष भिखारी ठाकुर से सम्बन्धित तीन-चार रचनाओं का होना सिद्ध करता है कि लेखक प्रगतिशील होते हुए भी अपनी परम्परागत जमीन से भलीभाँति जुड़ा है । यही स्थिति **'नवरंग'** की भी है ।

'नवरंग' का दूसरा संस्करण हमारे सामने है । भोजपुरी की किसी कृति का दूसरा संस्करण हो जाना उसकी अति लोकप्रियता का प्रमाण है, जिस पर भी निबन्ध कृति का । इसका पहला संस्करण सन् 78 में हुआ था । लगभग दो दशक में भारी बदलाव आया और इसीलिए दूसरे संस्करण की भूमिका में लेखक ने सफाई दी हे कि 'यदि आज नवरंग में समाहित विषयन पर हमरा लिखे के होइत त संभवत: ओकर सामग्री, प्रतिपादन पद्धति, भाषिक संरचना दोसरे होखित', मगर एक पाठक की दृष्टि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से कोई भी 'नवरंग' में अपने मन को रंग कर अनुभव कर सकता है कि उक्त वक्तव्य विनम्रतावश दिया गया वक्तव्य है । कोई भी अच्छी रचना पुरानी नहीं होती है और पुरानी होती भी है तो उसका स्वाद नया हो जाता है । इसी स्वाद के नयेपन के संदर्भ में **'नवरंग'** की सार्थकता को रेखांकित किया जायगा ।

प्रस्तुत संकलन का प्रथम निबन्ध है, **'भोजपुरी अनुसंधान क प्रक्रिया'** और यह एक सुव्यवस्थित और पुष्ट रचना है । इसके विचार कभी बासी होने वाले नहीं है । इसमें संकलित भोजपुरी के **'व्याकरण दर्शन'** और **'समीक्षा के मानदण्ड'** को देखकर सन्तोष होता है कि भोजपुरी के उठान काल में ही उसका एक शुभचिन्तक प्रहरी ऐसे गंभीर विषयों की ओर ध्यान आकर्षित कराता है । वह वास्तव में उसकी **'ऐतिहासिकता की रक्षा'** में सन्नद्ध खड़ा होता है और स्पष्ट रूप से कहता है, 'ताकि अध्येता-समीक्षक हमरा विकास के ओह सीढ़ियन के विश्लेषण क सकस, जवना से गुजर के हम आज एह मोकाम पर खड़ा बानी' (पहले संस्करण की भूमिका से)

मैं उक्त वक्तव्य में यह जोड़ना चाहता हूँ कि इसमें जो 'हमरा' शब्द का प्रयोग हुआ है उसका अर्थ लेखक के अर्थ में न लेकर सम्पूर्ण भोजपुरी भाषा और साहित्य के रूप में लिया जाय तभी 'नवरंग' की सार्थकता और उपादेयता का मूल्यांकन हो सकेगा ।✪

13. 'गाँव बहुते गरम बा'

कृष्णानन्द कृष्ण बहुत प्रौढ़, परिपक्व आ परिष्कृत रूचिवाला कवि, कहानीकार, लेंखक, समीक्षक, पत्रकार आ चिंतक व्यक्ति बाड़न । उ हिन्दी आ भोजपुरी दूनो के भरपुर सेवा कइले बाड़न । तन-मन से इंजीनियर होत भी उनकर साहित्य चेतना संपन्न सहृदय सर्जक भइल, अपना इर्द-गिर्द साहित्यिक परिवेश बनाके आ संगठनात्मक स्तर प आपन महत्वपूर्ण सेवा अर्पित करत रहल ध्यानाकर्षक बा । हिन्दी जगत 'पुनः' जइसन समकालीन जनचेतना के अनियतकालीन गंभीर पत्रिका के संपादक के रूप में जानेला आ आदर देला । एकरा अलावे 'लघुकथा सर्जना और मूल्यांकन' (सम्पादन), 'इसी दिन के लिए' (कहानी संकलन-संपादन) आ 'एक सही निर्णय' (मौलिक कहानियन के संकलन) उनकर हिन्दी के कृतित्व बा ।

भोजपुरी में दूगो कहानी संकलन **'एह देस में'** आ **'रावन अबही मरल नइखे'** अउर एगो समीक्षा पुस्तक **'भोजपुरी कहानीः विकास आ परम्परा'** के सृजन के बाद लेखक के नया चर्चित कहानी संग्रह **'गाँव बहुते गरम बा'** (सन् 1996) सामने आइल त ओह में नया परम्परा के प्रत्यावर्त्तन दृष्टिगोचर भइल । लेखक के कुल सात गो कहानियन के एह संकलन के शुरू में कहानीकार के विस्तृत रचना प्रक्रिया आ ओकरा आत्मकथ्य के साथे कथाकार आ ओकरा प्रस्तुत कथा-संकलन के संदर्भ में भोजपुरी के सुधी समीक्षकन के आलोचनात्मक टिप्पणी आ बहस व्याख्यान संकलित बा । प्रो॰ ब्रजकिशोर संकलन के सामाजिक सरोकार आ संवेदना के कहानियन के संकलन कहलन । डॉ॰ चन्द्रेश्वर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्ण कृष्णानन्द कृष्ण के जीवन के प्रति प्रतिबद्ध संघर्षशील कथाकार कहलन। डॉ० अशोक द्विवेदी लीक से अलग हट के चले चाला कथाकार कहलन। इहे तथ्य डॉ० सतीराज पुष्करणा के टिप्पणी से सामने आवत बा। उनकर कहना बा कि– कृष्ण जी कहानी लिखत खा आलोचकन के चिन्ता ना करस 'शायद आपका मानना है कि पाठक से बड़ा कोई समीक्षक या आलोचक नहीं होता। यही कारण है कि आपकी कहानियाँ एक बच्चे की तरह इतनी मासूम है कि उनमें कोई छल प्रपंच या राजनीति के दाँव पेच न होकर सीधे-सीधे जो कहना है कह दिया, आरोपित कुछ भी नहीं।'

विपिन बिहारी के टिप्पणी के सारांश बड़ुए कि कृष्णानन्द कृष्ण के कहानियन में सामाजिक स्तर प जमीनी लड़ाई चालू रखे के प्रेरणा निहित बा। भगवती प्रसाद द्विवेदी के कहनाम बा कि लेखक के कथा-दृष्टि स्पष्ट बा आ उ सर्वत्र कमजोर वर्ग के साथे अपन संवेदनात्मक संपृक्ति के अभिव्यक्ति देत चलत बाड़न। एकर पुष्टि लेखक के आत्मकथा से भी होत बा। उ लिखत बाड़न कि कमजोर वर्ग के उपर बढ़त अन्याय-अत्याचार के घटना उनकर प्रमुख उत्प्रेरक तत्व बा। कृष्णानन्द कृष्ण के कहानियन के बीच से गुजरत खा हमरो कुछ अइसने अनुभव भइल। बाहर से देखे में व्यक्ति के स्तर प उ अपना सुभाव से जतना अधिका शान्त-सौम्य बाड़न भीतर से कथा-लेखक के रूप में ओतने पनपनाइल तेवर वाला जुझारू बाड़न। उनकर बाहरी सामाजिक व्यक्तित्व अगर शान्त सागर 'गाँव बहुते गरम बा' के अधिकांश कहानी उनका व्यक्तित्व के पुष्टि करेला।

एह संकलन के शीर्षक कथा 'गाँव बहुते गरम बा' के पृष्ठभूमि समसामयिक दौर के एगो गाँव बा जे अराजक तत्वन के करिया छाया में साँस रोक के जीयत बा। एह स्थिति से उत्पन्न हिंसक कालिमा के आंतरिक प्रभावन के शाब्दिक संवेदना में ढाल के पाठकन तक संप्रेषित क देवे में कृष्ण जी के कहानी कला जुटल बा। कहानी के अंतिम वाक्य 'बस भागल जात रहे आ चूल्हा से उठत धुआँ के चिराइन महक बस के पिछुअवले आवत रहे' सांकेतिक स्थिति बिम्बवाला एगो बहुते बड़ विचारोत्तेजक चरम बिन्दु बा। एही तरह पहिलकी रचना 'कालो दी' विकास पाठकन के चमत्कृत करत बा। आंतकबादी रौद्र के करूण-दुखान्त में पर्यवसान हो जात बा। वास्तव में सऊँसे कहानी अपने-आप में एगो सशक्त रेखाचित्र बा जवना में कालो दी एकल चरित्र के रूप में उभर के सामने आवत बाड़ी। उ अकेले गाँव के मूल्यवादी स्वरूप के रक्षा में तन के खड़ा होत बाड़ी। आ चुपचाप आपन आत्माहुति दे के ओकर रक्षा करत बाड़ी। उनकर मौत गाँव के मूल्यवादी रूप के मौत बा। हालाकि आखिर में एह घटना के प्रतिक्रिया में 'सउसे गाँव-जवार के लोग गेंहूअन अस फन कढ़ले फुफुकारत रहन' जइसन चित्र आवत बा बाकिर पाठक जानत बा कि अइसन फुफुकार बस फुफुकार होला। उ भलासोच वाला त होला बाकिर असंगठित आ नेतृत्वविहीन होला। ओने बुरा सोचवाला निहितस्वार्थवादी हिंसक-अराजक संगठित तत्व एगो समय के लहर के भीतर बराबर सफल होत रहेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृष्णानन्द कृष्ण के कहानियन में अइसन अनौपचारिक सहजता मिलेला जेकरा प्रभाव से घटना विचार बन जाला। लेखक तटस्थ रहत समसामयिक परिवर्त्तन के तेज रफ्तार के बीचे समय के मिजाज के पहचाने के चेष्टा मे लागल रहत बा। एह पहचान में घर-परिवार के यथार्थ अपना पूरा रोमांच के साथे उभर के सामने आवत बा। **'वसीयतनामा'** पारिवारिक टूटन आ विसंगतियन के कहानी बड़ुए। नयादौर के भीषण स्वार्थ आ सुविध ावादी आँधी में परम्परा आ मर्यादा के सीमा कइसे ध्वस्त भइल बा एकर सजीव चित्रण एह कहानी में भइल बा।

वोइसे संकलन के सब कहानी ध्यान आकर्षित करत बाड़ी स बाकिर **'मउवत'** शीर्षक कहानी तथ्य के मनोवैज्ञानिक संश्लिष्टता के चलते विशेष ध्यान आकर्षित करत बा। एह कहानी के बुनावट बहुते संश्लिष्ट बा। आ एकर व्यंग्य बहुत चोटीला बा। कहानी टण्डइल नॉव के वर्कशाप के कर्मचारी के बा। उ ईमानदार आ कर्त्तव्य निष्ठ बा। उ कथा के आरंभ में अपना सहकर्मी तुलसी से अपना बड़ा साहेब के अवांछित क्रूर व्यवहार के छिपावत चित्रित भइल बा। ओने तुलसी के उ सब बात मालूम बा। एह तरह से बीस बरिस पुरान नेक कर्मचारी के करूण कथा शुरू होत बा जेकरा के नाहक डॉटत-ओकर साहेब ओकरा के हरामखोर, कमीना ले कह देत बा।

कहानी के विरोधाभास अउर मार्मिक हो जात बा जब गाली से चोट खाइल कर्मचारी के घरे जाके साहेब के मेम साहेब ओकरा बेमार बच्चा के प्रति हमदर्दी जतावत बाड़ी, दवा खातिर पइसा देत बाड़ी। उ एह व्यवहार प हैरान होत बा बाकिर चलत-चलत मेम साहेब जब झूला ना बनला के तकाजा ठोकत बाड़ी त ओकर घाव दरक जात बा।

भीषण गरीबी, ईमानदारी, साहब के गाली, भविष्य के अंधेरा, पुरान इयाद, बिआह के समय के चित्र, सपना के टूटल, साहेब के क्रूर परछाँही, बहरी-भीतरी के अन्हरिया, बीस बरिस के प्रतिष्ठा गंवावे के अनपेक्षित पीड़ा-भोग, गाली के गोली लेले साहेब के आतंक, आ आखिर में टण्डइल मिस्त्री के अन्त। कम शब्दन में समूचा स्थितियन के अइसन सहज मनोवैज्ञानिक चित्रण भइल बा कि कहानी में जान आ गइल बा।

बहुत पहिले समरसेट माग के एगम अंग्रेजी कहानी के 'छीक' शीर्षक से हिन्दी अनुवाद पढ़ले रहीं जवन में एगो क्लर्क बॉस के आतंक में आपन प्राण गँवा देले रहे। घटना मामूली रहे। एक दिन बॉस के फाइल देखावत ओह क्लर्क के बॉस के सामने छींक आ गइल रहे। ई ओकरा बॉस के पसन्द ना आइल। बात बहुत छोट रहे बाकिर 'छींक' एगो मनोवैज्ञानिक आतंक बन के बेचारा क्लर्क के प्राण ले लेलस। दूनो कहानियन के कथ्य में समानता बड़ुए बाकिर 'मउबत' के बुनावट में जे विरोधाभासी स्थितियन के क्रमिक बुनावट भइल बा उ अतिरिक्त प्रभाव छोड़त बा। इहाँ मनोवैज्ञानिक चोट में सामाजिक अप्रतिष्ठा के विषम कचोट के मिश्रण बहुत सधल हाथन से संपन्न भइल बा। फेर भोजपुरी भाषा के आपन विशिष्ट प्रतीकन, बिबन आ भंगिमा के प्रयोग वैशिष्ट्य कृष्णानन्द कृष्ण के एह कहानी के आ अउर कहानियन के ताजगी से भरल अतिरिक्त छुअन आ अनुरंजनपूर्ण विचारोत्तेजना से परिपूर्ण कर देले बा। ✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

23 अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अधिवेशन-रिपोर्ताज

(क) पहला अधिवेशन (1975), इलाहाबाद

भोजपुरी-साहित्य के अगहुड़ डेग

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिला अधिवेशन में जवन 8-9 मार्च सन् 1975 के हिन्दी साहित्य-सम्मेलन इलाहाबाद के हाता में भइल रहे, ढेर भोजपुरी भाषा के नया किताब आ पत्र-पत्रिका लेखकन द्वारा हमरा के भेंट कइल गइल, जवन एहू घरी हमरा सोझा पड़ल बाड़ी स, एह बात के प्रमाणित करे खातिर काफी बा कि कुछे बरिस के भीतर ई भाषा प्रकाशन के लाइन में काफी आगे बढ़ल बिया आ अपना स्तर के ऊँचा उठवले बिया। भदेस, गवईं आ भोंड़ापन के लांछन अब एकरा नया साहित्य पर नइखे लगावल जा सकत। साहित्य अकादमी एहके मान्यता चाहे देव भा ना, बाकिर एकर जवन जीवट हमन का सोझा आइल बा ऊ एह के अपने आप ओहिजा चहुपावंत लउकता जहवाँ सरकारी मान्यतो नाटुर पड़ जाई। एह सम्मेलन में सचहुँओ पहिला हाली भोजपुरी के भीतरिया जीवट बहरिआइल बा। ई एगो अचरजे के बात बा कि एह भाषिकोल्लास के उफान अधिका बिहारे में लउकत बा। भोजपुरी भाषा आ साहित्य के ई तरक्की ओहिजा के कवनों राजनीतिक आन्दोलन से एकदम अलहदा बा, आ अपना मने फइलत जा रहल बा। ऊ खाँटी साहित्यिक रूप से लोगन से जुटल बा। उत्तर प्रदेश के पूरबी जिलो गंभीर भाव से एह में हाथ बँटावत बाड़ें। हमरा के पटना से पाण्डेय कपिल आ नागेन्द्र प्रसाद सिंह के सम्पादन में प्रकाशित भोजपुरी भाषा के अनियतकालिन एगो साफ-सुथरा बाकी छोट पत्रिका "लोग" मिलल त सबसे पहिले ओकर मथेला पर हमार धेयान खिंचाइल। अइसन लगता किं भोजपुरी 'लोग' साहित्य के राह से सचहुँओ आम लोगन से मिले-जुले के कोसिस कर रहल बा। कविता, कहानी, ललित-निबन्ध या उपन्यास आदि सब में जमाना के नया आवाज भरल बा। सचहुँओ, एह ढंग के पत्रिका के पीछे ना त कवनों बनिआदम करे के सपना बा आ ना कवनो फैक्ट्री के लमहर तीजोरी के जोर। ई अखुआइल चेतना के उफान के जब ओके गढ़े लागेला त ओकर सहज-धार भोथरा जाला। एह भाषा के रूप आ प्रयोगन में विविधता होखे के कारण ओकर सहज धार के पकड़ल लइकन क खेल नइखे। खड़ी बोली-हिन्दी के दीमागीपन आ पड़ेवाली छाप ओके अउर कठिन बना देले। समर्थ भोजपुरी लेखको कबो-कबो एह चक्कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में दुरुह हो जालन। ठीके में ई भाषा भाषावैज्ञानिक दृष्टि से खड़ी बोली से अधिका जीवट वाला बिया। जब ओके पिछलगू भा खड़ी बोली से कन्ट्रोल करेके कोसिस होला तब ओमें जवन बनावटीपन आवेला ऊ पाठकन के खटकबे करी।

भोजपुरी से खुनसाइल हिन्दी पाठक एक बेरी श्री ईश्वरचन्द्र सिन्हा के **'गहरेबाजी'** के बनारसी भा काशिका के आपन सहज मस्ती में सउनाइल भाषा रखले, खासकर **'गहरेबाजी'** आ **'भैरवी क साज'** शीर्षक कहानियन के। एह कहानियन में उतरते भाषागत सहजता अपना झोंक में एह प्रकार ले लेले कि खड़ी बोली आ भोजपुरी के फरकाँव खतम हो जाला, ऊ इयादो ना रह जाला आ जब इयाद पड़ेला त अचरजे होला। अचरजे बा भोजपुरी हीन काहें ? सिद्धन, सन्तन, भक्तन आ लोककवियन क वाणियन से जेकर सिंगार भइल, ऊ भारती के सतरह जिलन के साढ़े सात करोड़ लोगन के पूरा समर्थ आ मजबूत भाषा अन्तरप्रान्तीये ना त अन्तर्राष्ट्रीय भाषा सचहूँ हीन काहे ? का एकर एकलउता कारन ई बा कि एके सरकारी या अर्द्धसरकारी मान्यता नइखे मिलल ? हमरा विचार से ओकरा में महान प्रतिभा आ पोढ़ जीवनदायिनी कृतियन के जरूरत बा। उफर परो ऊ राजनीतिक नजर जवना चलते ना जाने कइसे भोजपुरी के नामे लेत विघटनवादी महक पा के लोग बिदके लागताड़न। भोजपुरी के तरक्की से राष्ट्रभाषा हिन्दी के घाटा कइसे होई ? जवना के हमन का हिन्दी भाषा कहत बानी जा ऊ असल में भाषा वैज्ञानिक नजर में का ह ? का पाँच उपभाषा, कई विभाषा आ भोजपुरी सहित लगभग बीस बड़हन बोलियन के मेल ना ह ? संका आ खिलाफत के कारन जदि राजनीतिक बा त ऊ सोरहो आना झूठ बा। भोजपुरी हिन्दी आपन ताकत आ जीवन के बल पर ऊपर उठी। अखिल भारतीय भोजपुरी-साहित्य-सम्मेलन के पहिला अधिवेशन प्रयाग में 8 मार्च 75 के अध्यक्षपद से भाषण करत डॉ० उदय नारायण तिवारी एह सच्चाई के उजागर कइनी। उहाँ के ब्रज, राजस्थानी, अवधी, मैथिली आ भोजपुरी आदि बोलियन के हवाला देत कहनी कि "बहुते विद्वान जे में भाषा वैज्ञानिको बाड़न एह सभन के हिन्दी के बोली मानेलन। साँच त ई बा कि भाषा आ बोली के अलग अलग करे वाली कवनो बंटवारा करे वाली डाँड़ नइखे। धर्म आ राजनीति के अलग पाके कवनो बोली भाषा हो जाले। कश्मीरी आ पंजाबी एही प्रकार के बोली हई स जवना के आज कानूनन चौदह भाषन में जगह आ मान्यता मिल गइल बा। भारत में, एह वर्गीकरण में भाषा के बोली कहीं चाहे भाषा कवनो अन्तर पड़े वाला नइखे। कुछ लोग ई समझेला कि ई सब भाषन के हिन्दी के बोली मान लेला से हिन्दी के एगो ताकतवर भाषा कहाये के अधिकार मिल जाई। बाकिर ई खाली भरमे बा। हिन्दी के ताकत एह में होई कि अलग-अलग सब बोलियन के मजबूत बनावे खातिर ओहिजा के लोग कुछ करसु। ओके महतारी भाषा के रूप में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे बढ़ावसु। आज विश्व भाषा के रूप में अंग्रेजी आ रूसी के एही कारन से अइसन इज्जत बा कि दोसरो भाषा वाला ओके अपनवले बाड़न।''

लोकभाषा के सन्दर्भ में **'व्रज-भारती'** (मथुरा) के सम्पादक बाबू **वृन्दावनदास** ओह दिन भोजपुरी के प्रयाग अधिवेशन में आयोजित 'अन्तर्जनपदीय परिषद्' के एगो गोष्ठी में आपन लिखित भाषण में साफ-साफ आपन विचार प्रगट कइनी। रउरा कहनी – 'लोकभाषा के हौवा समझ के ओकरा तरक्की भा ओकरा से पैदा जातीय जागरन से डेराये के कवनो जरूरत नइखे। ओकरा हिन्दी से कवनो डाह नइखे।...... हिन्दी के खिलाफत खुद लोकभाषन के हित में नइखे। एकरा से ओकरा आन्दोलन के धक्का लागी।' बाबू वृन्दावन दास जी डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के जनपदीय आन्दोलन योजना के चरचा करत कहनी कि एह योजना के 'जनपदीय-भाषन' के दृष्टि से ओतना जरूरी नइखे मानल गइल जेतना राष्ट्रभाषा हिन्दी के 'सामर्थ्यशक्ति' के बढ़ावे के नजर से।' भोजपुरी के मूल्यांकनो एही हिसाब से होखे के चाहीं। एकरा तरक्की से राष्ट्रभाषा के ताकत कवना अर्थ में, कवना ढंग से आ कतना मात्रा में भइल-विचार एह लाइन पर होखे के चाहीं।

प्रयाग के एह भोजपुरी सम्मेलन के अवसर पर हमरा के भोजपुरी के कइगो मासिक आ अनियतकालीन पत्रिका मिलली स। **'लोग'** के चरचा हो चुकल। **'चटक'**, (स० चितरन्जन), **'टटका'** (स० रमाशंकर पाण्डेय), **'अँजोरिया'** (स० चन्द्रकांत), **'माटी के गमक'** (स० विमलेश), **भिनसार** (स० रवीन्द्र कुमार शर्मा), **भोजपुरी साहित्य** (स० जितराम पाठक), **'ललकार'** (स० डा० सलिल आ रामवचन तिवारी), **भोजपुरी कहानियाँ** (स० गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश'), **'अँजोर'** (स० पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय) आ **भोजपुरी भारती** (स० सभाजीत मिश्र) आदि भोजपुरी पत्रिकन में लोक जीवन के मौलिक स्वाद स्तरीय ढंग से उजागर भइल बा ओकर पलाव कुछ अलग ढंग के बा। **'अंजोर'** (पटना) बड़ा पोढ़, गम्भीर आ खोजपूर्ण ढंग से लिखले बा। **'भोजपुरी-कहानियाँ'** (वाराणसी) बेजोड़ बा। **'ललकार'** (आदित्यपुर-जमशेदपुर) सराहे लायक जुटान बा। **'भोजपुरी भारती'** (कलकत्ता) के मौलिक सृजनात्मक नीति बड़ा पोढ़ बा। एह पत्रिका द्वारा भोजपुरी निबन्ध प्रतियोगिता आ पुरस्कार योजना चलता। हमरा खुद एह सभ पत्रिकन के सम्पादकन से मिले के मोका मिलल आ सभ में एगो अजीब तरह के छटपटाहट देखे के मिलल। अइसन बुझाता कि भाषा आ साहित्य से अधिक एह लोगन में सांस्कृतिक चेतना के उफान के लहर ढेर तगड़ा बा। भाषा, साहित्य आ संस्कृति मिल के जवना रूप में जिनगी के एगो सोगहग रूप बनेला ओकर खोज के प्रक्रिया भोजपुरी विचारकन में बड़ा सहज आ बिना टिपटाप के बा। कविता के माध्यम से पिछला दस बरिस में भोजपुरी साहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन बाँहि फइलावत गद्य के अनेक आधुनिक विधा में डेगरगरे आगे बढ़ता अइसन ई पत्र-पत्रिकन के देखला पर साफ हो जाता। **अंजोर** (पटना) में प्रकाशित समालोचना बड़ा पोढ़ आ पकठाइल लगली स।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के नया तरक्की के बारे में मोरिशस के राजदूत **श्री रवीन्द्र घरभन** आ **डॉ० रामकुमार वर्मा** के विचार काफी भावुकता पूर्ण ना होके तथ्यपरक रहे। घरभन जी सम्मेलन के उद्घाटन कइले रहीं। उहाँ के बतलवनी कि मोरिशस में हमन के पुरान संस्कृति भोजपुरी के ताकते पर जीयत बिया। डा० रामकुमार वर्मा भोजपुरी के एगो सहयोगी आ बरिआर भाषा बतवनी । हमरा विद्वान वक्ता के एह घोषणा के समय दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती के अप्रकाशित विशाल महाकाव्य बौधायन इयाद पंड़ गइल। काश ! ऊ जल्दिए छपित आ हिन्दी संसार देखित कि भोजपुरी क़तना बरियार भाषा बिया, आ ओमें कतना मोहक मिठास बा। ओह दिन एने हाल में छपल हम तीनगो प्रबन्ध काव्य देखनी - **'कौशिकायन** (अविनाशचन्द्र विद्यार्थी)' **किरनमयी** (रामबचन सिंह यादव 'अंजोर') आ **'सीता के लाल'** (कुञ्जन)।

'कौशिकायन' के प्रस्तुतीकरण महाकाव्य के ढंग पर भइल बा। छन्द, सर्ग, भाषा, शैली, रस, अलंकार, शब्द शक्ति, वृत्ति का वर्णन-चित्रण आदि के प्रयोग में कवि कौशिक विश्वामित्र के तपोभूमि बक्सर में रह के आ उनकर कहानी उठा के पूरा तपस्या कइले बा। कवि के सिद्धि आ सफलता दूनों भेंटाइल बा। सबसे ढेर सफलता कवि के विषय आ रस के अनुरूप भाषा आ छन्द प्रयोग में मिलल बा। ताड़का वध वाला प्रसंग में अद्भूत आ भयानक रस के प्रयोग बेजोड़ बा। सचहुँओं एह कृति में भोजपुरी भाषा के आपन सुघराई के ताकत उजागर भइल बा। आखिर में भोजपुरी के सैकड़न कवियन के प्रति जवन कवित्वमय आभार प्रगट कइल गइल बा ऊ कवि के आपन खास मामला के रहलो पर कुछ लोगन के खेलवाड़ उस लाग सकता। बाकिर बाकी जवन कुछ बा ऊ सबके सब एगो बरियार कृति बा। चन्द्रशेखर मिश्र के वीर रसात्मक महाकाव्य **''कुँअर सिंह''** के बाद अब **कौशिकायन** के नाम लिहल जाई। मिश्र जी सम्मेलन में आपन अप्रकाशित प्रबन्ध काव्य जे **'द्रोपदी'** के ऊपर लिखल बा कुछ हिसा सुनवलन, जवना से बुझाइल कि भोजपुरी में एगो बड़हन काम सपरावल जा रहल बा। जायसी नागमति के साधारणीकरण कइके जइसे पाठकन के रस में डुबा देलन, ओसहीं मिश्र जी द्रौपदी के एकदम नया सांस्कृतिक ढंग से सोझा रख के आ साधारणीकरण वृत्ति के बल पर रसिकन के खुशी आ चकचौंध में डाल देत बाड़न।

भोजपुरी में पुराणे ना इतिहासो के प्रबन्ध के विषय बनावल गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

''किरनमयी'' अइसने रचना कहाई । एह में कवि **श्री रामबचन सिंह यादव ''अंजोर''** मुगल काल के उठवले बाड़न । औरंगजेब के समय के सूखल-झँवाइल इतिहास से कवि राजपूती वीरता के एगो जीवट के कहानी चुन के आपन कथा नायिका किरनमयी के असरसगर सजावट के लुग्गा पहिरावता कि मध्यकालीन भारतीय चरितकाव्यन के परम्परा नया रूप में भोजपुरी भाषा में झलके लागता । कवि में रोमैन्टिसिज्म के निखार बा । इतिहास के अन्हरिया में कल्पना के दीया पूर्वाग्रह के झोंका से बुता जात बा त अंजोर जी अपना 'बाहुबल' से घुसे के कोसिस करत बाड़न । उनका में साहस के कमी त नइखे बाकिर जरूरी कलाकुशलता में थोड़का कमी बा । एकर ई माने ना कि ऊ फेल बाड़न । इतिहास बोध के भीतर जवन काव्य रस के सृष्टि आ ओकर रसपान खातिर ऊ किरिया खइले बाड़न ओमें ऊ पास बाड़न आ एह कृति से भोजपरी के सिङ्गार बढ़त बा ।

'सीता के लाल' नाम के भोजपुरी खण्ड-काव्य त हमके पहिलहीं मिल गइल रहे बाकी ओकर कवि **श्री कुंज बिहारी प्रसाद 'कुञ्जन'** प्रयाग सम्मेलन में मिलनी । हम जननी कि उहाँ के सासाराम में डाक्टर बानी । डाक्टर के लगे सचहुँओ के वैज्ञानिक नजर होले । एह नजर के तालमेल कविता से ना बइठे बाकी जब एह काव्य के भूमिका में कुञ्जन जी 'बहस में जवन साँच उतरे' आ 'परखनली की वैज्ञानिक जाँच के बात करत बानी त ओकर माने साएद अतने बा कि ऊहाँ के रामायन के कहानी के ठोस नजर से देखत बानी । कुंजनजी 'रामचंद्रिका' अस संवाद शैली आ नाटकीय भाव-भंगिमा एहमें सोझा रखले बानी । बाकिर एकर भाषा एकदम सरल आ सपाट बा । अइसन लागता कि ई बाल-साहित्य के रूप में रचाइल बा । कविता से 'कौशिकायन' अस सुरूए चौतीस आदमी के धन्यवाद एहू में मौजूद बा । हमरा सबसे बेसी पसन आइल कुंजनजी के व्यावहारिक लहजा । लव एक जगह झटके में कहता- **'बड़ा खिसियात बाड़े मरदे अनेर तूँ''** आ एह ढंग के लाइन बड़ा खींचत बिया । ऊहाँ के कई लोकगीतन के छन्दनों के सधले बानी । भोजपुरी के आपन भीतरिया सुघराई जहाँ उजागिर होतियां ओहिजा सचहुँओ एगो गजबे चमत्कार पैदा हो जाता । जे लोग डा० रामविचार पाण्डेय (बलिया) आ मोती बी० ए० का कविता के रस लेले होई ऊ त भोजपुरी के ताकत के लोहा मनबे करी । यदि ई दूनो कवि प्रबन्ध-काव्य लिखतन त एह भाषा के गौरव में चार चाँन लाग जाइत । भाषा के साधना भोजपुरी के नया प्रतिभनों में निखरता ।

हमरा प्रयाग में, जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् के प्रधान सचिव श्री **रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'** आपन परिषद के सतरहवाँ फूल **''हहरत हियरा''** भेंट कइलन त लागल कि कई नजर से एगो बड़हन काम हो गइल । विषय-वस्तु आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साज सज्जा दूनो माने में ई भोजपुरी गीत संग्रह अत्याधुनिक बा। एह कृति क नवही गीतकार **श्री गंगाप्रसाद 'अरुण'** में कविता के सहज उन्मेष बा आ एही से गीतन में सहज बहाव, खींचाव, गुलाबी ताजगी आ सही माने में सतरंगी ओज बा। एह के देखि के लागता कि भोजपुरी अब बदरिया के दीमागीपन से आगे बढ़ि के जीवन-बोध आ युग बोध के क्षितिज के छुए में लागल बिया। गीतकार के संग ही हम निर्भीकजी के एह प्रकाशन खातिर धन्यवाद देत बानी।

निर्भीकजी जेकर पूरा नाम रसिक बिहारी ओझा ह भोजपुरी साहित्य के पुरहर सेवा कइले बानी। भोजपुरी-साहित्य-परिषद् जमशेदपुर के इहाँ के अब एगो बेजोड़ सेन्टर बना देले बानी। कविता, उपन्यास, नाटक, एकांकी, छाया-नाटक, कहानी, रेखाचित्र, यात्रा-विवरण, निबन्ध, रिपोर्ताज आ साक्षात्कार साहित्य सम्बन्धी सतरह स्थायी साहित्यिक-मूल्य के भोजपुरी किताबन क ऊहाँ का प्रकाशन कइले बानी। पाँच किताबन के त ऊहाँ के खुदे लेखक हईं। भोजपुरी के अजगुत पत्रिका **'लुकार'** जे देखले होई ऊ निर्भीक जी के नयापन के समझ सकता! साँचों भोजपुरी के कुछ सेन्टर बड़ा काम करत बाड़न। वाराणसी, पटना, जमशेदपुर, कलकत्ता, बलिया, आरा, बक्सर आ सिवान आदि सेन्टरन में से छपाई के लेहाज से भोजपुरी संसद वाराणसी के जगह पहिला बा आ जमशेदपुर के दूसरा। संसद के सूत्रधार डाक्टर स्वामीनाथ सिंह भोजपुरी के बड़ा मान बढ़वले बानी। कविता में कई कीमती प्रकाशन के बाद गद्य के कई विधा में साहित्य छपाई के ऊहाँ के ललित-निबन्धन के संग्रह **'के कहल चुनरी रँगा ल'** तइयार करा लेलीं। उहाँ में भोजपुरी के जइसन मिशिनरी स्पिरिट रहे ओके देखला पर कमे समय में भोजपुरी के सोरह मानक किताबन के छपाई कवनो अचरज के बात नइखे। ऊहाँ के आखिरी इच्छा भोजपुरी के संस्कार गीत के संग्रह छपवावे के रहे, जे के पिछला साल डाक्टर विजयनारायण सिंह (**विजय बलियाटिक**) सम्पादित क के संसद से छपववले बानी। एह भोजपुरी संसद के एगो शाखा प्रयाग में बा, जेकर प्रधान सचिव भोजपुरी के सफल कवि **श्री भोलानाथ गहमरी** हईं। जे एह संसद के तत्वावधान में अ० भा० भोजपुरी-साहित्य-सम्मेलन के ई पहिला अधिवेशन आयोजित कइनी ह। ई एगो अचरजे बा कि भोजपुरी के सेवा में अइसने लगभग दू दर्जन संस्था चुपचाप भीड़ल बाड़ी स। एह तीन नाम संस्थन के अलावे **भोजपुरी समाज** (दिल्ली आ कलकत्ता), **भोजपुरी संस्थान**, (पटना), **अभिनव भोजपुरी परिषद्, भोजपुरी परिवार** (पटना), **भोजपुरी साहित्य संस्थान**, (पटना), **भोजपुरी साहित्य सेवा गोष्ठी** (पटना), **अ० भा० भोजपुरी समाज** (कानपुर), **पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद** (कलकत्ता), **भोजपुरी परिवार** (हजारीबाग), **भोजपुरी-साहित्य-परिषद्** (मुजफ्फरपुर) आ रोहतास, बलिया, सिंहभूमि, चम्पारन, सारन,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिवान, आदित्यपुर आ वाराणसी आदि के संस्था पूरा सक्रिय बाड़ीस । एहनी के प्रतिनिधियन से प्रयाग में मिल के अइसन लागल कि प्रचारात्मक कम आ क्रियात्मक आ रचनात्मक पहलू बेसी उजागर भइल बा-आ सगरो ईमानदारी से, दूसरा से अधि का काम करे के भावना भरल बा ।

प्रयाग अधिवेशन के अवसर पर एगो बड़ा नीक प्रस्ताव पास भइल जेमें कहल गइल कि भारत में शिक्षा के माध्यम त हिन्दिए रहो बाकिर भोजपुरी क्षेत्र के हर विश्वविद्यालय में एगो भाषा के रूप में भोजपुरियो पढ़ावल जाव । साँचो, अबे खाली **बिहार विश्वविद्यालये** भोजपुरी के मान्यता देले बा । एह संदर्भ में स्नातक स्तर तक के मौलिक रचनात्मक पाठ्य-पुस्तक के कमी के चरचा होले । अबे भोजपुरी में शब्दकोष नइखे । एह कमी के त डा० भोलानाथ तिवारी जल्दिये दूर कर रहल बानी । ऊहाँ के बड़ा मेहनत क के एके तइयार कइले बानी । भोजपुरी कहाउत आ मुहावरा पर डा० मुक्तेश्वर तिवारी एगो कीमती किताब छपववले बानी । डा० तिवारी बारह-चउदह बरिस तक **'आज'** में **'चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठी** के माध्यम से ऊहाँ के भोजपुरी गद्य सूबे निखरले बानी । ऊहाँ द्वारा भोजपुरी में कहानी, रेखाचित्र, व्यंग, फन्तासी, रिपोर्ताज आ ललित-निबन्ध सम्बन्धी गद्य साहित्य के भण्डार भरल बा । भोजपुरी में कहानी साहित्य बड़ा भरल-पूरल बा । श्री ईश्वरचन्द्र सिन्हा क **'गहरेबाजी'** क चरचा हो चुकल बा ! **बैरिन बाँसुरिया'** (श्री गिरजाशंकर राय 'गिरिजेश') आ **'चुटकी भर सेनुर** (कामता प्रसाद ओझा दिव्य) बड़ा नीक बाड़ी स । प्रयाग में हमरा दू गो नया संग्रह देखे के मिलल । पहिला **'एह देस में'** (कृष्णानन्द कृष्ण) आ दोसर **बिछुउँतिया** (तैयब हुसेन 'पीड़ित')। पहिला संग्रह में नयी कहानी के आधुनिक बोध बा आ दोसरा संग्रह **बिछउतिया** के आऊर कई विशेषता के साथ एगो जबरजस्त बात ई बा कि एकरा छपला के बाद भोजपुरी में **'चोरी बनाम मौलिक'** के विवाद खड़ा हो गइल बा ! पत्र-पम्पलेट छपल बा । पत्र-पत्रिकन में टिप्पणी छपल । का साँच बा, का झूठ एकरा से अलग हमरा ख्याल में ई भोजपुरी में नव जागरण के चिन्ह बा । अइसने एगो नवजागरण के रूप प्रयाग सम्मेलन के अवसर पर साँझी के खेलल भोजपुरी नाटक **'सोना'** (ले० श्री भागवत प्रसाद) देखला पर मिलल । पूरा प्रस्तुतीकरण अतना सहज आ मरमबेधी रहे कि पूरा समय तक प्रयाग के प्रबुद्ध नागरिक आ नेवतल साहित्यकार भाव-विभोर हालत में रसपान करत रह गइलन । ऊ भोजपुरी के ताकत के गजब नजराना रहे । एकरा शब्दन में कतना ताजगी आ प्रभाव बा । शिवप्रसाद सिंह आ राही मासूम रजा के उपन्यास तथा कुबेरनाथ राय के ललित निबन्धन में जगहे-जगह टँकाइल भा छितराइल कुछ भोजपुरी के शब्द कतना चमकेलन स आ राष्ट्रभाषा हिन्दी के शब्दकोष के भरे में ओकर कतना साथ मानल जात बा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एके जागरूक पाठक ठीक से बूझत बाड़न । अ० भा० भोजपुरी-साहित्य-सम्मेलन के महामंत्री पाण्डेय कपिल एगो बड़ मजेदार बात सम्मेलन के दिने कहलन कि 'भोजपुरी खातिर समय तइयार बा ।' एकर अगहुड़ डेग के विचार करत खा हमरा ऊ बात हमेशा इयाद रहल ह । अन्त में, भोजपुरी के सधल कवि श्री सिपाही सिंह 'श्रीमंत' के लगले छपल कविता संग्रह **'जवानी के जगाइले** का पहिला गीत के एगो लाइन– **''खड़ा होके जिनगी का बीच चौमुहानी पर, आदमी का सूतलो जवानी के जागाइले''** लिखत बानी । भोजपुरी के साहित्यकार नवजागरण के मूड में बा । ऊ साहित्य के माध्यम से संस्कृति के उठान खातिर छटपटाइल बा ।

बाकिर, एह निबन्ध के अन्त करे के पहिले कुछ आउर बातन के चरचा कइल बड़ा जरूरी बा । जइसे कि ''भोजपुरी कहानियाँ'' में श्री अरुणमोहन 'भारवि' एह प्रयाग-सम्ममेलन के रिपोर्ट लिखि के सबकर धेयान खींचले बानी-एह सम्मेलन में भोजपुरी के नामी साहित्यकारन में से कुछ प्रमुख लोगन के गैरहाजिरी अखरल । राम विचार पाण्डेय, रामबली पाण्डेय, गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश', चतुरी चाचा, लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी आ रामवृक्ष राय 'विधुर' आदि के गैरहाजिरी सायद ई बता रहल बा कि भोजपुरी साहित्यकार संगठनात्मक स्तर पर उदास बइठल बाड़न आ ई हालत भोजपुरी के राह में रोड़ा त बड़ले बा जानमारूओ बा । ✪

(ख) अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन- दूसरा अधिवेशन (पटना)

सवाल भोजपुरी की स्वीकृति का

पिछले मार्च में एक समाचार आया कि साहित्य अकादमी ने भोजपुरी को मान्यता दे दी है, लेकिन बाद में उस समाचार की संपुष्टि नहीं हुई परन्तु गत 15-16 मई सन् 1976 को पटना राजा राममोहन राय सेमिनरी के कबीर नगर में आयोजित 'अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन' के दूसरे अधिवेशन की उपलब्धियों को देख कर ऐसा महसूस किया जाने लगा है कि बहुत देर नहीं, जब भोजपुरी शुद्ध सांस्कृतिक और साहित्यिक संभावनाओं के बल पर स्वीकार कर ली जायेगी । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (सभापति), केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री जगजीवन राम, बिहार के स्वास्थ्यमंत्री श्री केदार पांडेय (स्वागताध्यक्ष), भू० पू० मुख्य मंत्री श्री दारोगा प्रसाद राय, वर्तमान मुख्यमंत्री श्री जगन्नाथ मिश्र, पटना और मुजफ्फरपुर विश्वविद्यालय के कुलपति क्रमशः आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा और डॉ० लल्लन प्रसाद सिन्हा तथा पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० केशरी कुमार सहित देश के कोने-कोने से आये विद्वान प्रतिनिधियों के वक्तव्य विचारणीय हैं ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने न्याय की बात सामने रख दी; ''रागात्मक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संबंध को उजागर करनेवाला साहित्य किसी भी बोली में लिखा जा सकता है। इसी से अब साहित्य अकादमी ऐसी अनेक बोलियों को साहित्यिक पुरस्कार दे रही है, जिनकी मान्यता संविधान में नहीं है .... तो भोजपुरी-अवधी आदि शक्तिशाली बोलियों की क्यों उपेक्षा होगी ?'' **जगजीवन बाबू** अपने विस्तृत मनोरंजक भोजपुरी भाषण में इसकी शक्ति का विश्लेषण करते हुए बारबार दोहराते हैं कि लोक भाषा के रूप में इसका विकास हिन्दी का विकास होगा। बिहार के मुख्यमंत्री की ओर से आश्वासन मिलता है कि प्रस्तावों की ठोस रूपरेखा पर सरकार हर संभव सहायता देगी। लगे हाथ कबीर को भोजपुरी का आदि कवि और इस क्षेत्र की 'जनता का प्रतीक मानते हुए एक कबीर शोध संस्थान का संकल्प भी गूंज गया। लेकिन कोरे संकल्प नहीं, दो दिवसीय कार्यक्रमों की उपलब्धियाँ, बकौल काशी के वरिष्ठ पत्रकार श्री ईवरचन्द्र सिन्हा के, हमें आश्चर्यचकित करती हैं। कुल सात गोष्ठियों और खुले अधिवेशन के बाद रात में चालीस-पचास हजार लोगों की अभूतपूर्व शांति के बीच भोजपुरी नाटक **'सोना'**, लोकगीत, लोकनृत्य, भोजपुरी काव्यपाठ, गजब के साहित्यिक मेले का स्वाद। सम्मेलन के महामंत्री पाण्डेय कपिल की ओर से घोषणा होती है कि भोजपुरी में लिखित मानक साहित्य के लिए प्रतिवर्ष पांच-पांच सौ रूपये के तीन साहित्यिक पुरस्कारों की पक्की व्यवस्था हो गयी है, तो हर्ष की एक लहर दौड़ जाती है। नहीं रह गया, अब भोजपुरी साहित्य अटकल-अनुमानों में, पंण्डित गणेश चौबे ने सम्मेलन की ओर से लगभग चार सौ मूल्यवान भोजपुरी के प्रकाशित साहित्य की एक परिचय-सूची (सन् 1882-1976 ई. तक) प्रकाशित कर दी।

सम्मेलन की ओर से एक और पुस्तिका वितरित हुई, **'भोज, भोजपुरी जन अउर भोजपुरी भाषा'** - लेखक **डॉ० मुरलीधर श्रीवास्तव**। इसी समय प्रकाशित **'भोजपुरी संस्थान'** (पटना) का मुख्यपत्र **'उरेह'** सही माने में भोजपुरी नवलेखन का पत्र उतरता है। एक गंभीर लेख भोजपुरी नवलेखन पर **'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'** में प्रकाशित मिलता है। यह पत्रिका भी अ० भा० भो० सा० सम्मेलन का एक ठोस प्रकाशन कदम कहा जायेगा। लगभग एक सौ पृष्ठों की इस शोध पत्रिका के साथ हमारा ध्यान अधिवेशन स्थल पर लगे भोजपुरी साहित्य के बुकस्टाल पर जाता है और एकदम नये टटके काव्य, कथा-साहित्य और शोध-समीक्षा संबंधी मानक प्रकाशनों में से **'भोजपुरी शब्दानुशासन'** (रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक') **'राम काव्य परम्परा में मानस'** (डॉ० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'), **'जोत कुहासा के'** (ब्रजकिशोर), **'मनसा'** (कन्हैया सिंह सदय) और **'ई हरनाकुस मन'** (पाण्डेय सुरेन्द्र) को देख कर भोजपुरी की आधुनिक समृद्धता उजागर होती है। ✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ग) अ० भा० भो० सम्मेलन का सातवाँ अधिवेशन अमनौर (सारण), 1982

सवाल भोजपुरी की मान्यता का

इस वर्ष अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन बिहार के एक गांव में हुआ। उद्घाटन करने के लिए दिल्ली से डॉ० नामवर सिंह आये। उन्होंने यहां भोजपुरी भाषा में अपना पहला भाषण किया और कहा, बदली हुई स्थितियों में भोजपुरी को भाषा के रूप में मान्यता अनिवार्य लगती है। इस उद्घाटनकर्ता विद्वान को ही नहीं, वहाँ उपस्थित प्रत्येक साहित्यकार, पत्रकार, राजपुरुष और प्रबुद्ध व्यक्ति को इन बदली हुई स्थितियों का आभास हुआ। उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बंगाल और बिहार आदि के विभिन्न स्थानों से भारी संख्या में प्रतिनिधिगण उपस्थित होकर 29, 30 और 31 अक्तूबर 1982 को सारण जिले के कुल पांच–छ हजार आबादी वाले अमनौर गांव में डटे रहे।

भोजपुरी को अष्टम सूची में स्थान देकर मान्यता प्रदान करने के संदर्भ में मुख्य दो कारणों से अब तक दिल्ली को हिचक रही है। प्रथम राजनीतिक कारणों से और दूसरे हिन्दी की क्षति की आशंका से। किंतु अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन की वर्तमान सातवें अधिवेशन सहित अब तक स्थितियों और उपलब्धियों से इंसका स्पष्ट अराजनीतिक स्वरूप जो निखर कर सामने आया है, उससे किसी प्रकार की कोई आशंका नहीं रह जाती है। अमनौर में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन की समूची रंग–तरंग शुद्ध साहित्यिक और सांस्कृतिक उल्लास से परिपूर्ण रही। हवा में कहीं कोई राजनीतिक कीटाणु नहीं रहा, जो घुल–मिल कर वातावरण को दूषित करता। बिहार और भारत सरकार के मंत्रीगण तीनों दिन पहुँचते तो रहे, मगर मंत्री के रूप में नहीं भोजपुरी के सेवक के रूप में। इसीलिए उनकी उपस्थिति न तो कहीं व्यतिक्रम बनती रही और न ही कोई तनाव। भोजपुरी के नाम पर ऐसे स्वतः स्फूर्त अनुशासन को देख बिहार की वित्तमंत्री प्रभावती गुप्ता को एक वक्ता के कथन का समर्थन करते हुए कहना पड़ा, 'यहां अशांत बिहार में सचमुच एक नये प्रशांत बिहार का दर्शन हो रहा है।'

रहा सवाल हिन्दी की क्षति का, तो इसके संबंध में डॉ० नामवर सिंह ने स्पष्ट रूप से कहा कि भोजपुरी को मान्यता प्रदान करने से हिन्दी की कोई क्षति नहीं होगी। क्योंकि वे लोग हिन्दी का विरोध न कर मात्र अपनी मातृभाषा के लिए साहित्यिक भाषा के रूप में मान्यता की मांग करते हैं। उन्होंने इस संबंध में एक उदाहरण प्रस्तुत किया राजस्थानी का। उसे साहित्य अकादमी से भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त होने के बाद राजस्थान में हिन्दी का कोई अहित नहीं हुआ। अब यह भ्रम भी दूर हो जाना चाहिए कि हिन्दी को उखाड़ने के लिए बोलियो को आड़े किया जा रहा है। इस वक्तव्य क्रम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में एक बहुत महत्वपूर्ण सुझाव सामने आया। डॉ० नामवर सिंह ने अधिवेशन में पारित लगभग एक दर्जन प्रस्तावों को लक्ष्य करते हुए कहा कि फिलहाल इतने प्रस्तावों की जगह सारी शक्ति बटोर कर तथा सारा संकल्प संकेद्रित कर एकमात्र मान्यतावाले प्रस्ताव के कार्यान्वयन की दिशा में सक्रिय हुआ जाये, क्योंकि मात्र विडम्बना होते हुए भी देखा जाता है कि सरकारी स्वीकृति मिलती है तथा इससे उस संस्कृतिमूलक जातीय भावना का विकास होता है, जो वास्तव में जनतांत्रिक भावना है, सबको जोड़नेवाली ।

सच पूछा जाये तो भोजपुरी की मान्यतावाला सवाल ही अधिवेशन के सम्पूर्ण कार्यक्रमों के भीतर केन्द्रिय कसमसाहट के रूप में व्याप्त था। वर्तमान सातवें अधिवेशन के वयोवृद्ध अध्यक्ष और यशस्वी पत्रकार ईश्वरचन्द्र सिन्हा के विस्तृत अभिभाषण में भी इसी एकमात्र पीड़ा के इर्द-गिर्द विविध मूल्यवान संदर्भों और विचारों के ताने-बाने चलते रहे। उन्होंने वर्तमान वर्ष को सर्वेक्षण और मूल्यांकन वर्ष के रूप में देखने की अपील की और सचमुच ही भाषण के बीच एक जीवंत सर्वेक्षण का ऐतिहासिक संगीत पैदा हो गया, तो सबने अनुभव किया कि इस सम्मेलन के दूसरे वर्ष के अध्यक्ष डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने दो टूक भाषा में कहा था कि राष्ट्र के दसवें भाग के लोग जिस भोजपुरी को बोलते हैं तथा जिसमें अपने सुख-दुख की अभिव्यक्ति करते हैं, उसे भाषा के रूप में मान्यता तो मिलनी ही चाहिए। वास्तव में यह एक विचित्र विडंबना है कि ऐसे सशक्त समर्थन के बावजूद सरकार का सिर नही हिल रहा है। केन्द्रिय सिंचाई मंत्री केदार पाण्डेय ने अधिवेशन के मंच पर भोजपुरी के प्रति अपने को समर्पित करते हुए अपने भाषण में इसको, सरकारी मान्यता के सवाल को, बहुत चुटीले ढंग से बारबार उठाया। डॉ० प्रभुनाथ सिंह (बिहार,के उद्योग, योजना और विकास राज्यमंत्री तथा इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष) ने भोजपुरी के अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप का विश्लेषण करते हुए कहा कि जब विश्वविद्यालयों में इसकी शिक्षा होने लगी, अकादमी की स्थापना हो गयी और ढेर सारा मूल्यवान साहित्य-सृजन होने लगा, तो अष्टम अनुसूची में स्थान के लिए अब कौन-सी क्षमता शेष रही ।

बेशक, अब यह कहने में कोई हिचक नहीं कि मान्यता के संदर्भ में भोजपुरी के पास जो सबसे बड़ा बल है, वह अनवरत सार्थक सृजन का। भोजपुरी अकादमी पटना (बिहार सरकार) तो मूल्यवान ग्रंथों के प्रकाशन में जुटी हुई ही है, व्यक्तिगत स्तर पर उत्साही रचनाकार और लगभग एक दर्जन भोजपुरी के स्तरीय प्रकाशन प्रतिष्ठान इसके साहित्य की श्रीवृद्धि की दिशा में उत्कट आस्था लिये अग्रसर हैं। अमनौरवाले अधिवेशन में सबसे रोचक दृश्य नव-प्रकाशित पुस्तकों और पुस्तिकाओं के भेंट तथा आदान-प्रदान का रहा। दिल्ली से पधारे विशिष्ट अतिथियों - डॉ० नामवर सिंह, और डॉ० केदारनाथ सिंह को इस नव-प्रकाशित साहित्य की प्रभूत मात्रा में प्राप्त भेंट प्रतिनिधियों, के लिए संभवत: नये झोले की व्यवस्था करनी पड़ी होगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु इस बदली हुई स्थिति और ऊर्जा का पूरी तरह आभास शायद उन्हें पूरी तरह न हो सके जिन्होने अमनौर के इस सातवें अधिवेशन को अपनी आँखों से नहीं देखा। गाजे-बाजे के साथ निकलनेवाला अध्यक्ष का विराट जुलूस, अधिवेशन स्थल से पांच किलोमीटर पहले से, उस क्षेत्र के संतकवि, लोकगायक, भक्त, स्वतंत्रता संगाम सेनानी और ऐतिहासिक पुरुषों आदि के नाम पर एक दर्जन से ऊपर निर्मित भव्य द्वार और सैकड़ों प्रतिनिधियों की आवास आदि की व्यवस्था में ही नहीं भोजपुरी के प्रति नये उत्साह का आभास दूसरे दिन एक साथ आयोजित आठ विचार-गोष्ठियों में, एक सौ कवियों के काव्य पाठ में और खुले अधिवेशनों की समृद्धि में, जैसे मिलता रहा, उससे कई सवालों के जवाब अपने आप मिल जाते रहे। इन्हीं सवालों में एक वह भी जिसकी ओर आरंभ में ही संकेत किया गया है। क्या विशेषता रही कुल मिला कर इस अधिवेशन की ? स्पष्ट है कि जिस भोजपुरी की जड़ें नगरों-महानगरों से ले कर इस प्रकार शुद्ध ग्रामांचल की ऐसी गहराई में जमी हुई हैं, उसकी मान्यता के सवाल को क्या अधिक दिनों तक अटकाया जा सकता है ? अथवा जिस भोजपुरी भाषा के अनन्य सेवकों की नयी कतार में पूरी निष्ठा के साथ डॉ० प्रभुनाथ सिंह जैसे लोक जीवन के प्रति समर्पित जनप्रतिनिधि -कलाकार-प्रशासक खड़ा है, उसे बहुत अधिक भटकाया जा सकता है ? ✪

(घ) अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का नवम् अधिवेशन (राँची)

भोजपुरी भाषा और साहित्य का उत्कर्ष रेखांकित हुआ

गत 26 और 27 अक्तूबर (1985) को राँची में जो 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन' का नवम् अधिवेशन सम्पन्न हुआ, उससे लगता है कि भोजपुरी ने उत्कर्ष की महत्वपूर्ण सीढ़ियों को पार कर लिया है। इस सम्मेलन की सफलताओं को अनेक विशिष्टताओं एवं उपलब्धियों के सन्दर्भ में रेखांकित किया जा सकता है। पहली बात तो है कि यह पहला अधिवेशन रहा है, जिसमें राज-पुरुषों से दोनो ही दिन मंच रिक्त रहा और विशुद्ध साहित्यकर्मियों के अपने सहज रंग में कोई प्रशासन का अंग नहीं घुला। दूसरी बात यह कि इस बार हिन्दी के साहित्यकारों का मुक्त सहयोग बहुत अधिक मिला है और सारा कार्यक्रम बहुत ही शान्तिपूर्वक तथा शालीनता के साथ सम्पन्न हुआ है। ऐसा लगा कि इस बार का भोजपुरी सम्मेलन प्रचारात्मकता से आगे बढ़ कर उपयोगी कार्यक्रमों को लेकर सार्थकता की तलाश में अधिक सक्रिय है। भोजपुरी भाषा की वर्तनी सम्बन्धी गोष्ठी इसका प्रमाण रही, जिसमें प्राचार्य विश्वनाथ सिंह का इस सम्बन्ध में लिखा गया एक लम्बा शोधपरक निबन्ध श्रोतागण बिना ऊब प्रकट किए सुनते रहे। बहस और खण्डन-मण्डन से अधिक मध्यममार्गीय औसत हल को लेकर आगे बढ़ने और इस भाषा तथा इसके साहित्य को संवारने की प्रवृति का विकास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस सम्मेलन की उपलब्धि रही ।

किसी भी साहित्यिक आन्दोलन की सफलता इस अर्थ में आकलित होती है कि उसने अपने पीछे कितने समर्पित लोगों को पैदा किया है । भोजपुरी के आन्दोलन को इस दृष्टि से देखते हैं तो एक ओर यह देख कर प्रसन्नता होती है कि अल्प समय में ही देश के कोने-कोने में इसके ऐसे ढेर-ढेर प्रेमी-प्रतिनिधि और अनुयायी उत्पन्न हो गए जो अपना समय, श्रम और पैसा व्यय कर अधिवेशन में सम्मिलित होते हैं तो दूसरी ओर हर अधिवेशन कुछ ऐसे सुदृढ़ स्तम्भों को खड़ा कर देता है, जिनके सहारे भोजपुरी की प्रगति का बितान नई-नई आशाओं के आसमान को चूमने लगता है । इस रांची-अधिवेशन में भी जहां प्रतिनिधियों का जमघट लगा रहा, वहाँ इन प्रतिनिधियों के बीच दो नए नाम विशेष रूप से चर्चित रहे- एक डा० प्रभुनाथ सिंह का और दूसरा डा० ऋता शुक्ल का । बिहार सरकार के भूतपूर्व मंत्री डा० प्रभुनाथ सिंह वर्तमान में बिड़ला इंजीनियरिंग इन्स्टीट्यूट में मैनेजमेट डिपार्टमेण्ट के अध्यक्ष हैं और देश-विदेश में अपने अर्थशास्त्र सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान के लिए प्रख्यात हैं । यह महसूस किया जाने लगा है कि पिछले अमनौर वाले अधिवेशन से डा० प्रभुनाथ सिंह के भीतर भोजपुरी सम्मेलन के प्रति जो प्रेम पैदा हुआ, वह इस रांची अधिवेशन में प्रगाढ़ता की चरम सीमा पर पहुंच गया और ऐसे कर्मठ, कर्तव्यष्ठि, सूझबूझ सम्पन्न और तूफानी व्यक्ति की अशेष शक्ति पाकर भोजपुरी आन्दोलन को लक्ष्यसिद्धि में सरलता हो जाएगी । इस बीच डा० प्रभुनाथ सिंह का भोजपुरी गीत संग्रह **'ई हमार गीत'** का प्रकाशन भी हो गया है जो इस अधिवेशन में लोगों के हाथों में देखा गया ।

इस सम्मेलन की दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि रही, हिन्दी की चर्चित कथा-लेखिका डा० ऋता शुक्ल की हार्दिक सहयोग भावना । इस भोजपुरी-सम्मेलन का प्राणत्व यदि उसका सांस्कृतिक कार्यक्रम था तो इस दो दिवसीय कार्यक्रम का सबसे अधिक संवेदनीय और पुलक रोमांचपूरित वह कार्यक्रम था, जिसे डा० ऋता शुक्ल ने महिला महाविद्यालय की बालिकाओं द्वारा नृत्य और गीत आदि के रूप में तैयार करा कर प्रस्तुत किया । डा० ऋता शुक्ल के कथा-संकलन **'क्रौंचवध तथा अन्य कहानियां'** को 'भारतीय ज्ञानपीठ' की नई पीढ़ी कथा-प्रतियोगिता (1984) में सर्वप्रथम घोषित करते हुए, उन्हें पुरस्कृत तथा सम्मानित किया गया था । अधिवेशन में श्री पी. एन. सिंह (राँची) भी अपनी चमक-दमक के साथ इसे सफल बनाने में सपरिवार लगे रहे ।

रांची सम्मेलन के सभापति श्री गणेश चौबे ने कहा कि भोजपुरी भाषा और साहित्य पर जितना शोध कार्य हुआ है, उतना हिन्दी की किसी लोक-भाषा पर नहीं हुआ है । इतने पर भी भोजपुरी के संत साहित्य, प्रेमाख्यान, रीति-काव्य और राष्ट्रीय गीतों पर अभी काम होना शेष है । अपने वेशभूषा, शरीर, खान-पान, आचार-व्यवहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और विचारधारा से महात्मा गाँधी की प्रतिकृति-जैसे लगते, भोजपुरी के दधीची और महाभाष्यकार वयोवृद्ध पंडित गणेश चौबे का इस नवम् अधिवेशन का अध्यक्ष होना भी अपने आप में एक महती उपलब्धि रही। अध्यक्ष श्री चौबे जी ने अन्त में कहा कि कुछ लोग चिन्ता प्रकट करते हैं कि भोजपुरी के विकास से हिन्दी का अहित होगा, परन्तु यह चिन्ता व्यर्थ है। हिन्दी में जितने प्रसिद्ध लेखक हैं, उनमें आधे से अधिक भोजपुरी क्षेत्र के ही हैं।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भोजपुरी अकादमी के अध्यक्ष एवं पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने इस भाषा के बहुआयामी महत्व और भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से प्रौढ़त्व का विशद् विश्लेषण करते हुए कहा कि हिन्दी के लगभग सत्तर-पचहत्तर शब्द ऐसे हैं, जो भोजपुरी के हैं।

इस अवसर पर भोजपुरी की विशिष्ट सेवाओं के लिए भोलानाथ गहमरी और लोहा सिंह (डा० रामेश्वर सिंह कश्यप) को भी पुरस्कृत किया गया। जगन्नाथ सिंह पुरस्कार रामनाथ पाण्डेय की पुस्तक 'बिंदिया' को दिया गया।

अधिवेशन के दूसरे दिन खुले अधिवेशन में भोजपुरी को संविधान की आठवीं सूची में सम्मिलित करने के लिए प्रस्ताव पारित हुआ। इसके अतिरिक्त भोजपुरी को विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं विद्यापीठों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने के सम्बन्ध में भी प्रस्ताव पारित हुए। अन्य प्रस्ताव भी पर्याप्त महत्वाकांक्षी रहे जो भोजपुरी की शक्ति और इसके बढ़ते कदमों को घोषित कर रहे थे। दूसरे दिन आयोजित कुछ गोष्ठियों में भोजपुरी प्रदेश सम्बन्धी पुरानी पड़ गई मांग को उठाने का प्रयत्न हुआ, परन्तु मामला कुछ बना नहीं। भोजपुरी के साहित्य-सेवी अधिकांश रूप में इसके अध्ययन-अध्यापन की समस्याओं के व्यावहारिक और यथार्थवादी पक्ष पर बहस कर किसी निर्णय तक पहुंचने के इन्छुक प्रतीत हो रहे थे। बिहार के तीन विश्वविद्यालयों में इसकी पढ़ाई की व्यवस्था तो है, परन्तु वह संतोषजनक नहीं है, यह सवाल बार-बार उठता रहा।

इस सम्मेलन के सबसे आकर्षक कार्यक्रमों में सांस्कृतिक कार्यक्रम और कवि-सम्मेलन रहे। कुमार आनन्द का शास्त्रीय गायन, कुमारी रंजना का नृत्य, मधुकर आनन्द का कत्थक नृत्य, बलरामजी का नृत्य, बोकारो के कलाकारों का नाटक **'बिरजू का बिआह'**, बाबू नन्दन का धोबिया नृत्य और अन्य ढेर सारे कार्यक्रम विशुद्ध सांस्कृतिक ऊर्जा उत्पन्न करने वाले कार्यक्रम रहे।

दूसरे दिन मंच पर 'कुंजन स्मारिका' और 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन' के इस नवें अधिवेशन की स्मारिका का विमोचन हुआ। ✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ङ) अ० भा० भो० साहित्य सम्मेलन का 10 वाँ अधिवेशन, बोकारो

भोजपुरी विशाल संभावना वाली भाषा ह

सुराज मिलला का बाद जनभाषा भोजपुरी के बढ़न्ती बहुत तेजी से भइल ह । गते-गते अब ई बोली का दरजा से उठि के भाषा का आसन पर बिराजे लागलि बा । एह साल अखिल भारतीय भोजपुरी-साहित्य सम्मेलन क दसवाँ अधिवेशन बोकारो स्टील सिटी में 8-9 अक्तूबर 1989 के जवन सम्पन्न भइल ह ओकरा में भोजपुरी के शक्ति के विकास लउकल ह । अध्यक्ष पद से अपना भाषण में श्री विश्वनाथ सिंह एही भाषा आ बोली के सवाल उठवले बाड़न । उनकर कहनाम बा कि 'बोली वाचिक अउर सामान्य व्यवहार खातिर आ भाषा प्राय: लिखित अउर औपचारिक व्यवहार खातिर प्रयोग में आवेला । दूनों में परस्पर कवनो विरोध नइखे । कवनो जीवित भाषा का बारे में ई ना कहल जा सकेला कि ई खाली भाषा ह, बोली ना ह । हिन्दी, बंगला, मराठी, पंजाबी भाषा हईं स, आ बोलियों, काहे कि इन्हनी के लिखित व्यवहार होला आ बोलली जाला । संस्कृत आ पाली भाषा हईं स, बोली ना, काहे कि इन्हनी के व्यवहार केवल लिखित रूप में होला, बोलचाल में नइखे रह गइल । **भोजपुरी एगो समर्थ आ जीवन्त बोली आ विशाल सम्भावना वाली भाषा ह ।**'

ऊपर का विचार में भाषा आ बोली के अन्तर साफ हो गइल बा । भोजपुरी में लिखित साहित्य का रूप में जवन सम्पदा ठाढ़ हो गइलि बा ऊहे ओकरा के समर्थ आ विशाल संभावना वाली भाषा बना रहलि बा । बोकारो का सम्मेलन में जे गइल रहे ओकर ध्यान उहाँ भोजपुरी का पुस्तक प्रदर्शिनी पर बारम्बार जा के अटकि जाय । काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र, समीक्षा, निबन्ध, कोश, व्याकरण, साहित्यशास्त्र, लोकगीत आ लोककथा का पुस्तकन का चमचामात ढेरी में एगो किताब विशेष रूप से आकर्षित करे, **'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस'**, ले० **पंडित गणेश चौबे** (भूतपूर्व अध्यक्ष) । एह विशाल ग्रन्थ में लगभग साढ़े तीन सइ जवन स्तरीय प्रकाशन के विवरण बा ऊ आँखि खोलि देबे वाला बा । खास तौर से काव्य, उपन्यास, कहानी आ ललित निबन्ध जइसन रचनात्मक साहित्य में मजिगर डेग बढ़ल बा । सन् 1983-86 का बीचे भोजपुरी में जवन विकास भइल बा ओकर अलगा से सर्वेक्षण कइ के चौबे जी कलकत्ता से छपे वाली भोजपुरी के श्रेष्ठ नियमित मासिक पत्रिका **'भोजपुरी माटी'** में प्रकाशित करवले बाड़न । सचहूँ एह प्रकाशन के देखत में भोजपुरी का शक्ति के अनुभव होत बा । खाली पुस्तके ना, पत्र-पत्रिकनों से भोजपुरी-संसार बहुत भरल-पूरल बा ।

ऊपर **'भोजपुरी-माटी'** के चर्चा भइलि बा । ई एगारह बरिस से भोजपुरी हा भाई लोगन का सेवा में जुटलि बा । पं० गणेश चौबे का सर्वेक्षण विवरण का मोताबिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रैमासिक, द्वैमासिक, मासिक, साप्ताहिक, मासिक आ दैनिक कुल्हि मिलि के एह भाषा का पत्र-पत्रिकन क संख्या सई का पास तक चोंहपि गइलि बा। **'कोइलि'**, **'भोजपुरी कलम'** आ **'हिरामन'** नाँव के पत्रिका भी हाल साल से छपे लगली ह स। **भोजपुरी अकादमी** (पटना) **पत्रिका, भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका** आ **भोजपुरी-सम्मेलन पत्रिका** अपना-अपना संस्थानन से छपेली स। बोकारो का सम्मेलन का अवसर पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पत्रिका 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' का ओर से एगो सम्मेलन अध्यक्ष विशेषांक के प्रकाशन भइल रहे। एह विशेषांक में एह संस्था का भूतपूर्व अध्यक्ष लोगन का जीवनवृत्त आ कृतित्व सम्बन्धी लेख प्रकाशित बाड़न स। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन के पहिला अधिवेशन इलाहाबाद में 8-9 मार्च 75 के सम्पन्न भइल जवना के अध्यक्ष डॉ० उदयनारायण तिवारी जी रहलन। दूसरका अधिवेशन पटना में 15 मई 76 क आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का अध्यक्षता में भइल रहे। एही तरह से तीसरा सीवान मं (76), अध्यक्ष डॉ० भगवत शरण उपाध्याय, चउथका देवरिया (77) अध्यक्ष डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, पाँचवाँ मोतिहारी (80), अध्यक्ष डॉ० देवेन्द्र नाथ शर्मा, छठवाँ जमशेदपुर (1981), अध्यक्ष डॉ० रामविचार पाण्डेय, सातवाँ अमनौर, सारण(82), अध्यक्ष, ईश्वरचन्द्र सिन्हा, आठवाँ विलासपुर (म०प्र०) अध्यक्ष डॉ० विवेकी राय, नउआँ राँची (85), अध्यक्ष पं० गणेश चौबे आ दसवाँ ई बोकारो स्टील सिटी वाला।

एह सम्मेलनन में एगो स्मरणीय सम्मेलन अमनौर (सारण) वाला हो गइल। उहवाँ खुला अधिवेशन शुरू भइल त एगो आवाज उठलि कि एकर आरंभ मंगल गीत से होई आ माइक पर आ गइली गोरखपुर आकाशवाणी के कलाकार मैनावती देवी। ऊ मंगल गीत सुर भरि के उठवली -

'गाई का गोबरे महादेव, आँगन लिपाई।
गजमोती आहो महादेव, चउक पुराई॥'

अब का बताईं एह मंगलगीत का प्रभाव क हालि ? विशाल पंडाल में बइठल साठ हजार से ऊपर श्रोतागण एकदम सन्न, शान्त आ समाधिस्थ जइसन। सभा स्थल में अइसन सन्नाटा जइसे सुइ गिरे त आहट मिलि जाव। भोजपुरी का महाशक्ति के प्रत्यक्ष प्रमाण ओह दिन मंच पर मिलल कि जेतना देर ले मंगल गीत चलत रहे ओतना देर ले जइसे हवा थमि गइल रहे, समय के गति रूकि गइल रहे। उद्घाटन भाषण करे हिन्दी के सिद्ध विद्वान डॉ० नामवर सिंह ठाढ़ भइलन त भोजपुरी का रंग में अइसन रंगा गइलन कि डेढ़ घंटा भोजपुरी में भाषण करत रहि गइलन। कहलन कि उनका जिनिगी के ई पहिला भोजपुरी भाषण ह। भोजपुरी का मान्यता वाला सवाल ओइ सम्मेलन में उठल रहे।

डॉ० नामवर सिंह अपना भाषण में कहलन कि भोजपुरी के अष्टम सूची में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थान देके मान्यता प्रदान करे में दू कारण से दिल्ली में हिचक रहलि ह । पहिला राजनीतिक कारण आ दूसरा हिन्दी के क्षति, बाकी ई दूनो आशंका के कवनो आधार नइखे । भोजपुरी के ई आन्दोलन राजनीति से एकदम दूर शुद्ध साहित्यिक आन्दोलन बा आ एकरा से हिन्दी के कवनो हानि ना होई, उलटे हिन्दी के एकरा से बल मिली । बाति साँच बा । हिन्दी के विद्वान पं० बनारसी दास चतुर्वेदी के कहनाम ह कि भोजपुरी हिन्दी क सौत ना, महतारी ह । तब काहे आशंका उठति बा ? बाकी, अब त वक्त बहुत बदलि गइल बा । भोजपुरी सरकार के भरोसा छोड़ि के अपना बल पर ठाढ़ होखे लागलि बा । ओकर सेवा करे वाला लोग बिना लाभ-लोभ के रचनात्मक योगदान में जुटल बाड़न । ई योगदान खाली प्रचारात्मक नइखे, बहुत ठोस बा । एकर एगो उदाहरण लेईं -

भोजपुरी -सममेलन का एह मोका पर बोकारो में स्वागत-समिति का ओर से एगो विशाल स्मारिका प्रकाशित भइलि । एह स्मारिका का अन्त में अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सिंह के लगभग बीस हजार शब्दन में एगो मौलिक लेख छपल, **'मानक भोजपुरी बर्तनी'** ! एह तरह से सिद्ध होत बा कि भाषा के सँवारे बढ़ावे क प्रयत्न गंभीर भाव से हो रहल बाड़न स । एह सम्मेलन में पतरातू (हजारीबाग) से छपल **'भोजपुरी परिवार पत्रिका'** के बहुत प्रशंसा भइलि । कृष्णानन्द कृष्ण आ अविनाशचन्द्र विद्यार्थी के टटका कहानी-संग्रह **'रावन अबहीं मरल नइखे'** आ **'डागा बाजि गइल'** हाथे-हाथे लउकत रहलन स । नया मंत्री **डॉ० अनिल कुमार राय आंजनेय** चुनइलन ह । ई बहुत जोरदार आ हहासी भोजपुरी सेवक हवन । अब ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना के सम्मेलन कार्यालय के चहल-पहल उमेद बा कि बढ़ि जाई । कुछ ठण्ढा परल भोजपुरी आन्दोलन में गरमाहट आई । उत्तर प्रदेश आ बिहार का अठारह जिलन समेत नेपाल, सूरीनाम, गायना, मारिशस वगैरह के कुल्हि दस करोड़ से ऊपर बोले वाला लोग अपना एह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का बढ़न्ती पर काहे ना खुश होइहें ? ✪

(च) अ० भा० भो० सा० सम्मेलन 11वाँ अधिवेशन (रेणुकूट)

संस्था के आन्दोलनात्मक रूप उभरे के चाहीं

तवाठी भइल जेठ के महिना कवनो तरह का सांस्कृतिक समारोह लायक ना होला बाकी अपना धुन के पक्का भोजपुरिया लोग घाम-बतास के परवा नाहीं करत एही बीच पछिला 26-27 मई सन् 1990 के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के एगारहवाँ अधिवेशन **रेणुकूट** (उत्तर प्रदेश) में सम्पन्न करा लीहलन ह । सम्मेलन क इन्तजाम तनी बहुत तड़ातड़ी में भइल एह से सदस्य लोग आ भोजपुरी के नेही-छोही भाई सभ के समय पर नेवता ना ही दीहल जा सकल । एह संस्था के महामंत्री डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' का ओर से 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' में कार्यक्रम छाप के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निहोरा करे के परल कि एही अपील के नेवता मानि के सभ भाई सम्मेलन में जुटि जाये के कृपा करसु ! मारे जल्दीबाजी के कवनो तरह के पत्र-पत्रिकन में पहिले से प्रचारो ना भइल । तबो अइसन ना कहल जा सकेला कि ई अधिवेशन विफल भइल ह । ठीक समय पर विद्वानन आ प्रेमिन के भरपूर जमावड़ा हो गइल । उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश आ प० बंगाल के सदस्य आ सम्मानित लोग जुटि के भोजपुरी भाषा आ साहित्य का बढ़न्ती के प्रमाणित कइलन ।

एह अधिवेशन के अध्यक्षता हिन्दी के प्रसिद्ध ललितनिबन्ध लेखक आ सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के कुलपति डॉ० विद्यानिवास मिश्र कइलीं । ललित निबन्ध नियर मोहक शब्दावली में अध्यक्ष जी के नरम-गरम आ विस्तृत भाषण में विश्लेषण का संगे-संगे आगे रचनात्मक सुझाव भरल बाड़न स । एह भाषा के बोले वाला लोगन क गुन गावत अध्यक्ष जी कहत बानी कि 'भोजपुरी बोली वाला आदमी देश-परदेश कहीं भी जाव अपने सांस्कृतिक धरोहर के साथ जाला । अपने क्षेत्र के वाचिक् साहित्य के, सुभाव के, चाल-ढाल के, धरोहर के साथ लेके जाला, साथे राखेला, आ कवनो कीमत पर कवनो चमक-दमक में हेराला नाहीं' । अपना भीतर का तेज से भोजपुरी भाषा वाला आदमी केतना प्रगति करेला, एकर बयान भाषण में भइल बा, 'भोजपुरी क्षेत्र के आदमी केतना आगे बढ़ि सकेला एकर सबूत चाहीं त इहे देखीं कि मारीशंस, फिजी, ट्रिनीडाड, गयाना, वर्मा, थाईलैंड आ सिंगापुर क दलदल आ जंगल के नन्दन कानन बनावल भोजपुरिये लोग न ?'

भोजपुरी भाषा में जोड़ेवाला आ दूसरा के आपन बना अपनावे वाला गुण होला, एह तथ्य का ओर विस्तार पूर्वक ध्यान खींचत अपना भाषण में अध्यक्ष जी कहत बानी, 'छोटानागपुर के आदिवासी भाई नागपुरिया, भोजपुरी अपनाइ लिहलन, मोरीशस मे तमिलत्रवी के लोग रहन त ऊ लोग बोलचाल में भोजपुरी भाषा के अपनाइ लिहलन ।' एह तरह से देश-विदेश मिला के एकरा पास बहुत कीमती धरोहर बा । एह धरोहर का रक्षा खातिर लक्ष्य बना के आगे बढ़े के प्रेरणा देत विद्यानिवास जी आगे कहत बानी कि 'ई लक्ष्य अगर आप लोगन के रूचे त एके उजागर करे खातिर एक ओर त अपने वाचिक परम्परा के अइसन संग्रह तइयार कराईं जवने में एक दूसरे के मिलावे वाली आ जिन्दगी के हर एक घड़ी के कवनो-कवनों अर्थ देबे वाली बात हो । ओकर व्याख्या करीं । ओकर तुलना दूसरे लोकसाहित्यन के अइसने सनातन मूल्य वाली पाँतिन से करीं आ अपने के जाँची कि एह मूल्यन के जिअत बाटी कि नाहीं ?' आगे अध्यक्ष जी भाषण में भोजपुरी-प्रयोग-कोश बनावे के सुझाव देले बानी । 'ई कोश बनि जाई कि ऊ शब्दवा हिन्दी के भी कामें आई । भारतेन्दु, बदरीनारयण चौधरी 'प्रेमधन', हजारी प्रसाद द्विवेदी, रूद्र काशिकेय, बलदेव प्रसाद मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, विवेकी राय, कुबेरनाथ राय के साहित्य में अगर लोकतत्व के विलक्षण प्राण-प्रतिष्ठा भइल बा त ओकर मंत्रवा भोजपुरीये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से आइल बा । ओइसन बाँकपन खातिर दूसर लोग ललचत बा ।'

रेणुकूट का एह अधिवेशन में दूसरा-दूसरा अधिवेशन से अधिक गरमाहट के आभास भइल ह । भोजपुरी प्रेमी लोगन के एह बात के लेके बहुत क्षोभ रहे कि सम्मेलन का ओर से हर साल प्रस्ताव पर प्रस्ताव भेजल जात बा बाकी सरकार का कान पर जूँ नइखे रेंगत । युवा सदस्य लोग बहुत उग्ररूप में एह तरह के विचार प्रगट कइलन कि सरकार तोड़फोड़ करे वालन के गैरवाजिब अनुरोध मान लेति बा आ संवैधानिक भाषा में प्रस्ताव आ अनुरोध करे वाला पन्द्रह करोड़ भोजपुरी भाषा-भाषी लोगन के उपेक्षा करति बा । सरकार का एह उदासीनता के तोड़े खातिर रेणुकूट में एह अवसर पर आन्दोलन करे खातिर घोषणा भइलि ।

एह भोजपुरी सम्मेलन के आन्दोलनात्मक रूप कबो ना उभरल रहल ह बाकी पहिली बेर ई मुख्य रूप से दूगो मुद्दा ले के सामने आ रहल बा । पहिली बात त ई कि भोजपुरी में सामर्थ, शक्ति आ संख्या बल अछइत एकरा के मान्यता नइखे मिलति । दूसरकी बाति ई कि सरकार का प्रतियोगी परीक्षण में भोजपुरी के एगो विषय बनावे खातिर प्रस्ताव पर प्रस्ताव भइल बाकी ओकर कवनो नतीजा ना निकलल । सांस्कृतिक साहित्यिक संस्था का रूप में विकसित आ राजनीतिक सोच से बहुत दूर ई अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन के मंच जब आन्दोलन करे के घोषणा कइलसि त उम्मेद बा कि भोजपुरी भाषा आ साहित्य के प्रगति के अवरोध दूर हो जाई । लड़ाकू प्रकृति के भोजपुरिया लोगन का आगा सरकार का झुके के परी ।

सन् 1990 का एह अधिवेशन में एगो बहुत महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव एह रूप में पास भइल ह कि 19 जून के हर साल **कबीर-जयन्ती के भोजपुरी दिवस** का रूप में मनावल जाई । ई प्रस्ताव केतना कीमती आ प्रभावशाली बा एकर अनुमान एही बात से लगावल जा सकेला कि पटना आ लखनऊ में एकर तत्काल 'प्रदेश हिन्दी संस्थान' आ 'भोजपुरी लोक' पत्रिका का संयुक्त तत्त्वावधान में ई भोजपुरी दिवस मनावल गइल ह । एह समारोह के समायोजन श्रीमती रारजेश्वरी शांडिल्य, सम्पादक 'भोजपुरी लोक' का ओर से भइल रहल ह । पटना में प्रो० रामवचन राय की अध्यक्षता में अ० भा० भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन का ओर से ई भोजपुरी दिवस गत 19 जून के मनावल गइल । महामंत्री डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' का ओर से एह आयोजन के सफल बनावे खातिर बहुत समय से चारू ओर नेवता घूमि गइल । कर्मठ, तेजस्वी आ ईमानदार महामंत्री भइला का पुरस्कार रूप आंजनेय जी के दूसरी बार फेरू महामंत्री बना के सम्मेलन सूझबूझ वाला काम कइले बा ।

डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' का ओर से सम्मेलन का एगारहवाँ अधिवेशन (रेणुकूट) में प्रस्तुत करे खातिर जवन कार्य विवरण पुस्तिका छपलि बा ओकरा से एह संस्था के प्रगति के ठीक-ठीक अनुमान हो जात बा । फिलहाल सम्मेलन का ओर से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबन्ध, नवगीत, उपन्यास, नाटक, लघुकथा, ललितनिबन्ध, कविता, कहानी आ भाषाई समस्या पर कुल 9 गो पुरस्कार दीहल जात बा । सम्मेलन के कुल आय 85, 406. 29 रूपया देखावल गइल बा । एकरा आजीवन आ स्थायी सदस्यन के संख्या लगभग 200 आ वार्षिक सदस्यनों के संख्या लगभग एतने बा । रेणुकूट अधिवेशन में एकरा विस्तार पर गंभीर विचार भइल । पाण्डेय कपिल के एह सम्मेलन के प्राणतत्व आ केन्द्रीय व्यक्तित्व घोषित कइल गइल । लोकनृत्य, लोकगीत, एकांकी, कवि सम्मेलन, गोष्ठी संगोष्ठी से भरपूर सम्मेलन के ई दू दिन के अधिवेशन के सफल बनावे में महाकवि आचार्य गणेश दत्त 'किरण' जी बहुत पसेना बहवले बाड़न आ अइसन लागत बा कि ई परिश्रम अकारथ नइखे गइल । ✪

(छ) भोजपुरी के बढ़ंती भइलि

बलिया जिला के एगो स्वतंत्रता संग्राम-सेनानी किसान का हाथे बहुत प्रशंसनीय काम भइल बा । ऊ प्रबुद्ध किसान श्री रामनगीना राय अपना गाँव सोहाँव में अखिल भारतीय साहित्य-सम्मेलन के अंगीभूत इकाई का रूप में, बलिया जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिला अधिवेशन करा के अपना परिवार का ओरि से एगारह हजार रूपया नकद दान कइलन हँ । ई रूपया स्थायी रूप से बैंक में जमा हो जाई आ एकरा एगारह सौ सूद वाला रूपया के हर साल अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से भोजपुरी भाषा में प्रकाशित कवनो स्तरीय पुस्तक पर ओकरा लेखक के प्रदान कइल जाई । ई पुरस्कार-राशि हिन्दी का प्रसिद्ध विद्वान लेखक डॉ० विद्यानिवास मिश्र का हाथे सम्मेलन का अध्यक्ष के सउँपाइलि । अध्यक्ष जी बतवलन कि अ० भा० भो० साहित्य सम्मेलन का ओरि से दीहल जाये वाला पुरस्कारन में ई नउआँ पुरस्कार होई । आठगो पुरस्कार अब तक ले दियात चलि आइल बाड़न स आ कवनो गाँव का किसान का नाँव पर शुरू भइल ई पहिका पुरस्कार होई ।

ई आयोजन दू दिन में गत 18 आ 19 फरवरी सन् 1989 के सम्पन्न भइल । अध्यक्षता कइलन वयोवृद्ध साहित्यकार आचार्य कुलदीप नारायण 'झडप' । उद्घाटन कइलन अ० भा० भो० सा० सम्मेलन के वर्तमान अध्यक्ष आ अनुग्रह मेमोरियल महाविद्यालय के प्राचार्य आचार्य विश्वनाथ सिंह । खुलल अधिवेशन में दिल्ली, हबड़ा, धनबाद, बोकारो, लखनऊ, गाजीपुर, बलिया, भोजपुर, भागलपुर, गया, पटना, छपरा, सीवान, आ बनारस वगैरह के प्रतिनिधि लोग आइल रहे । एह मौका पर एगो बहुत बढ़िया बाति खुलि के सामने आइलि । अ० भा० भो० सा० सम्मेलन क ओर से भोजपुरी भाषा अउर साहित्य के लेके जवन आन्दोलन हो रहल बा ओकर उद्देश्य का बाटे ? कवना लक्ष्य के लेके ई अतना-अतना संघर्ष हो रहल बा ? ई सवाल उद्घाटन भाषण में आचार्य विश्वनाथ सिंह उठवलन । उद्देश्य क तीन गो विकल्प ऊ सामने रखलन, पहिलका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी-प्रान्त बनावे खातिर, दूसरका भोजपुरी के पठन-पाठन के माध्यम बनावे खातिर अउर तीसरका भोजपुरी भाषा आ साहित्य का रचनात्मक विकास खातिर। अब सवाल ई बा किं एह तीनों में कवन उद्देश्य उचित बा ?

आचार्य विश्वनाथ सिंह अपना भाषण में कहलन कि भोजपुरी प्रान्त बनावे वाला राजनीतिक लक्ष्य से ई **अ० भा० भो० सा० सम्मेलन** के साहित्यिक लक्ष्य शुरूए से अलगा बा। बहुत पहिले 'भोजपुरी' पत्रिका में एगो नकशा छपल जवना में बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश आ नेपाल के ऊ जिला देखावल गइलन स जवना में भोजपुरी बोलल जाले। त एह अठारह जिलन के नकशा देखि के लोगन का भ्रम भइल कि ई लोग अलगा प्रान्त बनावल चाहत बाड़न। बाकी जल्दिये सभ का समझ में आ गइल कि ई आन्दोलन शुद्ध साहित्यिक आन्दोलन बा आ अलगा प्रान्त वाला सवाल उठा के राजनीतिक जोड़तोड़ एकर उद्देश्य नइखे। एही तरह से दूसरका उद्देश्य कि भोजपुरी के पढ़ाई-लिखाई के माध्यम बनावल जाव' विश्वनाथ जी का राय में उचित नइखे। देश का तमाम क्षेत्रिय भाषन के शिक्षा के माध्यम बना दीहल जाई त शिक्षा चौपट हो जाई। एकरा से देश के एकता नष्ट हो जाई। कवनों साहित्य के कदम अइसन होखे के चाहीं कि ओकरा से देश के एकता मजबूत होखो। अइसना हालत में तीसरा उद्देश्य कि भोजपुरी भाषा आ एकरा साहित्य के रचनात्मक विकास होखो, ई उद्देश्य सर्वोत्तम बा। भोजपुरी में उच्चस्तर के उपन्यास, कविता, कहानी आ निबन्ध वगैरह तमाम विधा के पुस्तक अउर व्याकरण, कोष वगैरह के ग्रन्थ जेतना प्रकाशित होके सामने आइल बाड़न स ओह पर सन्तोष कइल उचित नइखे। भाषा-साहित्य के विकास भइला पर उच्च कक्षंन में ब्रजभाषा-अवधी नियर भोजपुरी के साहित्य पढ़ावल जाई। ओकरा साहित्य पर खड़ीबोली हिन्दी का गर्व होई। दूनों में कवनो अन्तर ना रहि जाई। एह तरह से भोजपुरी भाषा आ साहित्य के सम्बन्धित आन्दोलन के उद्देश्य बहुत पवित्र बा। पठन-पाठन के माध्यम बने खातिर ना, ओकरा में विकसित आ स्तरीय साहित्य प्रदान कइ के गुणवत्ता ले आवे खातिर एह आन्दोलन के डेग आगे बढ़ि रहल बा आ इहे उचित बा।

एक मौका पर बलिया जिला भोजपुरी सा० स० के जवन विधिवत गठन भइल ओह में श्री त्रिभुवन प्रसाद 'प्रीतम' के महामंत्री बनावल गइल। अध्यक्ष 'झड़प' जी आ उपाध्यक्ष का रूप में तीन व्यक्ति चुनल गइलन, श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर', प्रभुनाथ मिश्र आ डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी। श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी (इलाहाबाद), रामप्रवेश शास्त्री (लखनऊ), मुहम्मद इसराईल अंसारी (कलकत्ता) वगैरह एगारह व्यक्ति प्रवर-समिति के सदस्य चुनइलन, एकर संयोजक श्री राम नगीना राय के बनावल गइल। बलिया जिला का तीनों तहसील में एक-एक गो क्षेत्रीय मंत्री लोग चुनल गइल। बावजूद एह चुनाव का ई सोच कि निछान नाँव धइले आ पद बँटले असली काम ना होई। जवन समाज में एगो गंभीर उसादीनता आ निष्क्रियता आ गइलि बा एकर व्यूहभेदन कइसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होई ?

दूसरा दिने जवन 11 बजे विचार गोष्ठी आयोजित रहे ओह में विषय राखल रहे 'भोजपुरी आन्दोलन के भावी स्वरूप' आ एकर अध्यक्षता कइलन सम्मेलन के भूतपूर्व महामंत्री **प्रो० ब्रजकिशोर** (पटना)। विषय का प्रवर्तन में **डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी** (बलिया) एह व्यापक उदासीनता वाला सवाल के उठवलन आ कहलन कि भोजपुरी का एह आन्दोलन से जुड़ल लोगन का एह उदासीनता के तोड़े खातिर कुछ त्याग-तपस्या करे के परी। सुराज का बाद जवन स्वार्थ आ भोग के भाव बढ़ि गइल बा ओकरा से तमाम सांस्कृतिक मूल्य नष्ट हो गइल बाड़न स। नतीजा ई भइल बा कि आम आदमी एकदम निष्क्रिय आ उदासीन हो गइल बा। आधुनिक राजनीति ओकरा के बहुत निराश कइले बा, बहुत तोड़ले बा। अब साहित्ये ओकरा के बचा सकेला। त्रिवेदी जी का एह विचार प्रवर्त्तन के आगे बढ़ावत प्रो० ब्रजकिशोर जी कहलन कि आगे भोजपुरी का आन्दोलन के अइसन रूप दीहल जाव कि खुद जनता का पास चोंहपि के ओकरा के छू सके, प्रेरित कइ सके। भोजपुरी भाषा-भाषी हर जिलन में अ० भा० भो० सा० सम्मेलन के अंगीभूत इकाई का गठन के ईहे असली उपयोगिता बा।

साहित्य का प्रचार-प्रसार से जनता के उदासीनता कइसे टूटेले एकर उदाहरण एह सोहाँव गाँव का सम्मेलन का मौका पर मिलल। एह गाँव में 34 बरिस पहिले एगो 'साहित्य सभा' बनलि जवना के प्रेरक खुद श्री रामनगीना राय सहित श्री रामप्रवेश शास्त्री आ श्री रामनगीना त्रिपाठी रहलन। एकर उद्घाटन डॉ० भगवतशरण उपाध्याय कइले रहलन, तवन ई संस्था एह मोका पर आपन एगो बहुत उत्साहबर्धक संकल्प पूरा कइलसि। अपना चौतीसवाँ वर्षगाँठ पर ई सभा क्षेत्र आ बाहर के डॉ० विवेकी राय सहित कुल चौतीस विद्वानन के दुपट्टा वगैरह प्रदान कइ के जवन सम्मान कइलसि त ऊ दृश्य बहुत भव्य आ हुलास भरल हो गइल। डॉ० विद्यानिवास मिश्र का हाथे सम्मान-सभा के ई कार्य सम्पन्न भइल। एकरा से पहिले बलिया जिला भो० सा० सम्मेलन आ साहित्य-सभा सोहाँव का ओर से डॉ० विद्यानिवास मिश्र के सम्मान कइल गइल आ अभिनन्दन पत्र अर्पित कइल गइल।

एह मोका पर अपना भाषण में डॉ० मिश्र कहलन कि भोजपुरी लिखे वाला लोग सोचि ले कि ओकरे शक्ति से हिन्दी के शक्ति बढ़ी। जातीय स्मृति वाला साहित्ये कवनो समाज के जिन्दा राखेला आ अइसन साहित्य भोजपुरी का माध्यम से बहुत सहज रूप में प्रस्तुत कइल जा सकेला। जब भोजपुरी का साहित्य में शक्ति आ जाई त ओकर माँग अपनहीं बढ़ि जाई। अपना डेढ़ घण्टा का भाषण में देश का एकता, दिल्ली आ कुर्सी का छाया में नष्ट होत साहित्यकार लोग, भाषाहीन आं लक्ष्यहीन युवा पीढ़ी अउर राष्ट्रभाषा के दुर्गति वगैरह विषयन पर बोलत अन्त में कहलन कि भोजपुरी का साहित्य के अब क्षेत्रीयता से ऊपर उठे के चाहीं। ओकरा में पूरा हिन्दुस्तान के परछाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परे के चाहीं ।

पहिला दिने भोजपुरी साहित्य का बारे में कुछ अइसने विचार अ० भा० भो० सा० सम्मेलन क सूत्रधार संचालक **श्री पाण्डेय कपिल** (पटना) का ओर से प्रगट कइल गइल रहे । ऊ बहुत जोर दे के कहलन कि अब हिन्दी का ऊँचाई का संदर्भ में भोजपुरी का बारे में सोचे के चाहीं आ ई सवाल उठावल बन्द कइ देबे के चाहीं कि भोजपुरी का साहित्य का बढ़न्ती से हिन्दी के हानि होई । भोजपुरी हिन्दी का बाहर वाली भा ओकर प्रतिस्पर्द्धी भाषा ना ह । ऊ हिन्दी के एगो अंग ह ।

गाँव में आयोजित भइल एह दू दिन का सम्मेलन में कुछ चीज चिरस्मरणीय हो गइली स । एगो किसान का हाथे भोजपुरी का बढ़ंती खातिर पुरस्कार राशि प्रदान वाली चर्चा से उत्साहित हो के गाजीपुर से अत्यन्त वयोवृद्ध कवि आ पूर्वांचल के कविगुरु महाकवि **श्री कृष्ण राय 'हृदयेश'** कवि-सम्मेलन के अध्यक्षता करे खातिर अइलन । एह सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री रामनगीना राय के भाषण आ डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' (महामंत्री अ० भा० सा० सम्मेलन आ संयोजक तदर्थ समिति बलिया जिला भो० सा० स०) के छपल प्रतिवेदन चिरस्मरणीय हो गइलन स । दूनों में गँवई मन के जवन नेह-छोह आ उछाह छलकल ओकरा से श्रोता लोगन के हियरा भींजि गइल । इहे हालि भइल आकाशवाणी पटना, बनारस आ गोरखपुर का लोककलाकार लोगन का कार्यक्रम में । दूसरा राति में ई लोग शुद्ध भोजपुरी गीतन के प्रस्तुत कइके लोगन के भोजपुरी साहित्य का रंग में रंगि दीहलन । भोजपुरी अकादमी, पटना (बिहार सरकार) का सेवा में रत पटना के कवि, कहानीकार आ लोककलाकार **ब्रजकिशोर दूबे** के गीत-रंग त एकदम जादू के काम कइलसि ।

हम के जनाइल कि जिला-जवार पर एह जादू के असर बहुत दिन ले रही । भोजपुरी का एह बढ़न्ती से भला केकर मन ना अहगरि के दूना हो जाई ?

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

24 'जलधारा में दिअना' : प्रो० सतीश

(लोकार्पण भाषण)

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद मुजफ्फरपुर का एह दूसरका अधिवेशन (मोतिहारी) में हमके कवि सतीश्वर प्रसाद सहाय वर्मा सतीश का भोजपुरी गजलन के संग्रह **'जल के धारा में दियना'** के लोकार्पण करे के आज (21-12-96) अवसर मिलल। हम बहुत आभारी बानी। काहे कि एगो निष्ठावान रचनाकार का रूप में सतीश बाबू का कवि-कर्म से हम ओहघरी से परिचित आ प्रभावित रहली हँ जबसे हमहूँ कुछ रचे-वचे लगलीं। वाराणसी का 'आज' में हमनी का दूनो जाना खड़ी बोली में कविता लिखीं जा। परिचय अबहीं ना रहे । ओह आरंभ का बाद हमनी के धारा बदलि गइलि। हम हिन्दी कथा साहित्य आ निबन्ध का ओर मुड़ि गइलीं आ सतीश बाबू भोजपुरी साहित्य खातिर समर्पित हो के गजल का साधना में जुटि गइलीं आ ओह में अइसन बुड़लीं कि एह विधा का स्थापित शैलीकार का रूप में रेखांकित होखे लगलीं। बाद में हमहूँ भोजपुरी का सेवा में जुटलीं त भेंट-परिचय भइल।

उहाँ के सरल साधुस्वभाव आकर्षित करे वाला रहे। आपन नाँव करे के कोसिस उहाँ का ना कइलीं बाकी नाँव-जस अपनही बढ़त गइल। जीवन भर उहाँ का प्रकाशन आ प्रचार-प्रसार से उदासीन मौन साधक का रूप में अपना गजलगोई के बढ़ावत गइलीं। ढेर सारा मूल्यवान साहित्य रचा गइल। आज खुशी बा कि ओह पूरा सामग्री का भीतर से एकावन गो मणि-कांचन-योग नियर रचना चुना के **'जल धारा में दिअना'** का रूप में लोकार्पित हो रहल बाड़ी स। चुने आ सम्पादन करे के काम ओह सिद्ध कवि-पिता के युवा कवि-पुत्र अम्बदत्त गुंजन कइले बाड़न । इनकर अग्रज गुप्तेश गौरवो कवि हवन आ एह प्रकार से ई साहित्यसेवी बन्धु पिता का कीर्ति-विस्तार में जुड़ि के एगो आदर्श उपस्थित कइ रहल बाड़न।

प्रो० सतीश का एह गजलन का संकलन के पांडुलिपि देखे के मोका हमके मिलल रहे आ देखला का बाद सम्पादक का चयन-दृष्टि के मन ही मन हम बहुत बखान कइले रहलीं। काहे कि एह संकलन में कवि के पहिलकी प्रसिद्ध रचना **'तोहार नयन सहज प्रेम बैन बोल गइल, हमार नींन के किंवाड़ रैन खोलि गइल।** पहिले नम्बर पर लउकति बा। एह रचना से लेके ऊ कुल्हिये मशहूर चोटी के चोटीली रचना आ गइल बाड़ी स जवनन के संवेदना भा दर्द चोट सुनवइयन के भीतर से कबो गुदगुदा दे, कबो झनझना-पनपना दे आ कबो रोमांचित कइ दे। एह संकलन में ऊहो उछलल गजल देखे में आइल जवना में सतीश बाबू अपना रचना-प्रिया गजल कुँवारी के संबोधित कइले बाड़न आ उनकरा सोझा हथजोरी कइले ठाढ़ होके उनकर स्तवन करत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़न –

'हमहीं नइखीं सगरी दुनिया तोहरा पर दिवाना बा ।
गजल कुँवारी तोहार मिसरा सुई जस चुभ जात बा ।।'

ई गजल त बस पढ़ही लायक बा । दीवानगी का इजहार का संगे-संगे गजल विधा से जुड़ल अपना रचनाधर्मिता आ रचना प्रक्रियो के उहाँ का संकलित कइले बानी । अन्त में ओह 'अरथ दुधारी नयन कटारी' वाली कुँवारी गजल का आराधना में अउरियो दीवाना कवि लोगन के नाँव उहाँ का गना देत बानी, **'तेगअली, सैदा, सतीस, रिपुसूदन, जगन्नाथ, प्रभुनाथ; कपिल, विरल केतने भोजपुरिया खाड़ तोहार पैताना बा ।'**

एह सोरह पंक्ति का गजल में सोरहो सिंगार वाली गजलकुँवारी का प्रणय संवाद से एगो बात साफ हो जात बा । ऊ ई कि प्रो० सतीश का गजलन के मूल संवेदना प्रेम बा । होखही के चाहीं । प्रेमे गजल के पहचान ह । अब ई सवाल झमेला भरल बा कि कवन प्रेम ? प्रवृत्ति मूलक कि निवृत्ति मूलक ? इश्कहकीकी कि इश्कमजाजी ? ई बाँट बखरा बँटवइयन का समझ का मोताबिक ठीके बा बाकी हमरा देखे में प्रेम जे प्रेम बा, गहराई से उठल बा, साँचे बा त ओह प्रेम के रूप अखंडे होई । सतीश बाबू हमार हामी भरत बाड़न–

'प्रेम में बाँट-बखरा बा कइसन ?
के दो खिंचले दीवार बा कि आप ?'

'आप' नाँव के जवन असीम तत्व बा ऊ अपना के टुकड़ा में ना बाँटी । बँटबो करी त ओही घरी ले जबले ऊ ससीम बा । एही ससीम के कवि 'के दो' कहत बा । एह 'के दो' से आगे बढ़ि के कवि अपना रचनन में स्वतंत्र प्रेम डगर पर बढ़त जात बा । ओकरा शिल्प में त गजल के रूढ़ि बा बाकी वस्तु में बहुत स्वच्छन्दता बा । प्रेम ओकर पीड़ा आ चोट-कचोट के अभिव्यक्ति बहुत मार्मिक बा । इहे केन्द्रीय तत्व बा । 'उर्दू हिन्दी शब्द कोश (हि० संस्थान, लखनऊ) में गजल के एगो अर्थ कइल गइल बा 'अपना प्रेमिका संगे बातचीत, संवाद ।' प्रस्तुत संकलन में ई संवाद निखार पर लउकत बा ।

कुरूतुल ऐन हैदर का प्रसिद्ध कथा कृति 'ऐवाने गजल' में गजल विधा के एक जगह बहुत दिलचस्प चर्चा भइलि बा । कहल गइल बा कि गजल में ओइसने पीड़ा घुलल होले जइसन पीड़ा बधिक का निष्ठुर छुरी से बध होत हिरनी का आँखिन में झलकेले । (गजल का मूल शब्द गजल के एगो अर्थ हिरनी होला ।)

हमके बहुत खुशी बा कि अइसन मार्मिकता से भरल पूरल गजलन का संकलन के, जवना का रचना में प्रेम का सहज गंभीर आ खनहन सबदन में भीतरी भाव-सम्पदा भरल बा, लोकार्पण करे के नेवता भाई प्रभुनाथ सिंह भेजलन आ हमके खींचि के इहाँ चोंहपा दीहलन । एह सबदन का संगे **'जल धारा में दिअना'** के रउआँ सभ का रसज्ञ हाथन में सँउपत परम प्रसन्नता के अनुभव करत बानी । जयहिन्दी: जय भोजपुरी ! ✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

25 भोजपुरी साहित्य का शुक्ल पक्ष

(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आठवाँ अधिवेशन, बिलासपुर के अध्यक्षीय भाषण)

आदरणीय स्वागत समिति के अध्यक्ष महोदय, सम्मानित प्रतिनिधि गण, भोजपुरी प्रेमी श्रोता लोग आ बटुरल सभ बहिन भाई लोग,

सबसे पहिले आभार । सचहूँ हम बहुत-बहुत आभारी बानी । एह अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन का आठवां अधिवेशन का अध्यक्ष पद पर आप सभ हमके बइठा दीहलीं । भीतर भारी सँकोच बा । सवाल बार-बार मन के कोंचि रहल बा, एह पद का अनरूप का कवनो सार्थक सेवा हमरा से हो पाई ? पद का गरिमा के निरबाह होई ? बहुत कठिन बा जवाब । हमरा खातिर आसान ई बा कि निबाह के भार रउआँ सभ क संउपि दीं । अब उबारिं लीं भा बुड़ा दीं । भोजपुरी के नइया सचहूँ मजधार में बा । किनारा निगिचे लउकत बा । बाकी भेंटात नइखे । कइसे कहीं कि जोर कम लागत बां । ई बिलासपुर अधिवेशन एगो ऐतिहासिक जोर-बल हो गइल । भोजपुरी प्रदेश का बाहर इहां ई जवन सात्विक सनेह आ भावभरल लगाव लउकत बा ऊ बहुत उत्साह बढ़ा रहल बा । साँच त ई बा कि ई उत्साहे भोजपुरी भाषा का पास पूँजी बा जवन ओकरा के अतना तेजी से बढ़ा रहल बा । पिछला चारि-पाँचि बरिस का भीतर भोजपुरी में जेतना मूल्यवान रचनात्मक साहित्य तइयार हो गइल बा उ कवनो भाषा के समृद्ध आ प्रतिष्ठित भाषा बनावे खातिर पर्याप्त बा ।

आप सभ का सोझा हम पहिले एही विषय के चर्चा कइल चाहत बानी । भोजपुरी के महत्ता के गीति आ मान्यता ना मिलला के रोवल त पुरान बाति हो गईल । जवन सर्वमान्य तथ्य होला ओकरा खातिर का सबूत जुटावे के बा ? भोजपुरी के साहित्यकार बिना सरकारी मान्यता मिलले-ओकरा वर्तमान के खून-पसेना एक कइ के संवारि रहल बाड़न । भविष्य खुद आपन चिन्ता कइ लेई । कवनो भाषा के सबसे पहिली मान्यता ओकरा साहित्यकारन से मिले ले । भोजपुरी के सेवक, कवि, कथाकार, नाटककार, निबन्ध लेखक, समीक्षक आ पत्रकार तमाम-तमाम तरह का बाधा के अंगेजि के ओकरा भंडार के भरि रहल बाड़न । बोली का घेरा के तूरि के भाषा का, साहित्यिक भाषा का आसन पर आसीन भइल आसान काम ना रहे । अपना आन्तरिक शक्ति का बल पर ई भाषा एह गौरव के पवले बा । कवनो भाषा के केहू बनावेला ना, ऊ अपने से बनि जाली स । भोजपुरीयो अपना भागि के अपनही बनवले बा । कवनो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन छोट मोट कमी जवना से अब तलक ले तनिक संकोच होत रहल ह, ऊ हो एह साल दूर हो रहल बा। ऊ कमी बस इहे रहलि ह कि देखे लायक कवनो गौरव के एगो कवनो बहुत बहुत ऊंचा शिखर ना रहल ह। अइसन शिखर जवन 'रामचरित मानस', 'सूरसागर' भा 'कामायनी' नियर दूरे से धाहे लागे ।

आप सभके जानकारी होखे के चाहीं कि बिहार सरकार के भोजपुरी अकादमी दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती, जेकरा के भोजपुरी साहित्य के प्रथम कहानी-लेखक होखे के गौरव मिलल बा, के महाकाव्य **'बउघायन'** के प्रकाशित कइ दीहलसि। एकर प्रकाशन भोजपुरी साहित्य का इतिहास में एगो घटना बा आ ई एगो मानक मील के निर्णायक पत्थर बा। भोजपुरी त का, सम्पूर्ण भारतीय महान महाकाव्यन का परम्परा में ई रचना एगो ध्यानाकर्षक कड़ी हो गइलि बा। एह विशाल ग्रन्थ में कुल एकतीस सर्ग बा जवना में चालीस हजार से अधिक रसगर-दमगर पंक्ति खपलि बाड़ी स। कविता का लपेट में तथागत के जवन करुणा-मैत्री के विचारोत्तेजक सन्देश मिलि रहल बा ऊ एह उखड़ टूटन आ विध्वंस का युग में केतना मूल्यवान बा ? ओह प्रज्ञा पुरुष का चरित्रांकन का संगे-संगे भारत, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, ऊ सब अइसन जोरदार शिल्प में प्रस्तुत भइल बा कि एकदम आकर्षित कइ लेत बा । अब एह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा भोजपुरी का गौरवशिखर के देखि के केहू निर्णय करो कि भोजपुरी बोली ह कि भाषा ह ? भारतीय साहित्य में इहो गौरव भोजपुरिये के मिलल कि बुद्ध भगवान का जीवन पर पहिलका महाकाव्य एतना व्यापक पृष्ठभूमि पर लिखाइल। विचित्रता ई कि ई काम भइल एगो संन्यासी का हाथे। जेकरा कलम के कमाल देखिके डॉ॰ उदयनारायण तिवारी 'भोजपुरी के इलियड' के उपाधि दे दीहलन ।

आप सभे का सोझा हम चाहत बानी कि भोजपुरी का गौरव-शिखरन के ई चर्चा कुछ और क्षण तक चलो। एगो किस्सा ह कि कहला बिना हक-पद रोवेला । भोजपुरी के हक मारल जा रहल बा। हो सकेला कि अनजाने में ई अन्याय होत होखे। हमार निवेदन बा कि अब त आंखि खुले। भारत का कुल आबादी का दसवाँ भाग के लोग जवना भाषा के बोलत बाड़न, जवना भाषा के जीअत बाड़न ओकर उपेक्षा काहें ? ओकरा में का नइखे जवन कवनो स्थापित भा समृद्ध भाषा में होखे के चाहीं ? दस-बारह बरिस भइल एह भाषा के शब्दकोश भोजपुरी-संसद वाराणसी से छपल। अब त कई-कई गो शब्दकोश प्रकाशित हो गइले स। सबसे ताजा बा **'भोजपुरी शब्दसागर'** शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी का एह छह सौ से ऊपर पृष्ठन वाला कोष में बीस हजार से अधिक भोजपुरी शब्दन के अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से सम्मिलित कइल गइल बा। एह 'भोजपुरी शब्द सागर' का संगे संगे **'भोजपुरी शब्दानुशासन'** के चर्चा कइल जरूरी बा। डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानक व्याकरण के तइयार करे में बहुत श्रम कइले बाड़न । ओइसे एह बारे में एगो बहुत मज़िगर जानकारी आप सभ के हम दे रहल बानी । भोजपुरी का शक्ति आ महत्ता के कुछ अनुमान एह बाति से लागि सकेला ।

हिन्दी में अबहीं तलक ले **कामता प्रसाद गुरु** के व्याकरण ना निकलल रहे कि एगो भोजपुरी के व्याकरण सन् 1915 ई० में तैयार हो गइल रहे । **पं० शिवदास ओझा** का एह ऐतिहासिक व्याकरण के भोजपुरी अकादमी अब बहुत भव्य रूप में छापि देले बा । शब्दकोष आ व्याकरण का साहित्य का संगे-संगे अइसन जनात बा कि भोजपुरी संस्कृति आ जीवन का समग्र रूप के पचाके, ओकरा जबरदस्त आन्दोलन नियर ई भोजपुरी साहित्य आगे बढ़ि रहल बा । 'भोजपुरी व्रत कथा', 'भोजपुरी संस्कार गीत', 'भोजपुरी नीति कथा', आ 'भोजपुरी होरी गीत' आदि नाँव के ग्रन्थ त एह बात के प्रमाण बटले बाड़न स, भोजपुरी लघु उपन्यास आ भोजपरुी लघुकथा के लहरि साल भर से आइलि बा । साहित्य का संगे-संगे अपना संस्कृति के सहेज-बटोर के चलत भोजपुरी साहित्य का डेग-डेग में बहुत गंभीरता बा । एह गंभीरता के अनुमान एह बाति से हो जाई कि भोजपुरी शौर्य के प्रतिमान बाबू कुँअर सिंह पर पाँचि गो महाकाव्य एह भाषा में प्रस्तुत हो गइल बाड़न स । सबसे ताजा बा **डॉ० सर्वदेव तिवारी राकेश** के ग्रन्थ **'कालजयी कुँअर सिंह'** । एह महाकाव्य का साढ़े तीन सौ पृष्ठन में पनरह गो सर्ग बा ।

एह महाकाव्य के चर्चा करत एगो भोजपुरी के खण्डकाव्य **'निरधन के धन राम'** याद आ जात बा । अपना 'किरनमयी' महाकाव्य का बाद एह खण्ड काव्य में कवि रामवचन शास्त्री अंजोर एगो बहुत ध्यानाकर्षक प्रयोग कइले बाड़न । वस्तु रूप में कृष्ण का आधुनिक लोकवादी रूप के त निखरलहीं बाड़न, ऊ भोजपुरी भाषा में दोहा, चौपाई, सोरठा, चौबोला, सवैया, बीर छन्द आ मुक्त छन्द वगैरह के प्रयोग कइके एगो सहज शिल्प-चमत्कार उपस्थित कइ दे ले बाड़न । ध्यानाकर्षक आ सहज शक्तिमान शिल्प का दृष्टि से भोजपुरी में कवि **अविनाश चन्द्र विद्यार्थी** का प्रबन्ध काव्यन के स्मरण कइल जाला । बाकी हमरा पास कहँ मोका बा पूरी तरह से एह विशाल होत जात भोजपुरी-साहित्य का संसार में आपके घुमावे के ? हम त बस नया-नया उठल कुछ शिखरन का ओर जल्दी-जल्दी इशारा भर करत चलत बानी । हमरा टेबुल पर नन्दकिशोर मतवाला, अरूण भोजपुरी, सीताराम पाण्डेय प्रशान्त, रघुनाथ प्रसाद गुस्ताख, विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव, महेन्द्र गोस्वामी, मोती बी० ए०, केदार पाण्डेय प्रशान्त, योगेन्द्र प्रसाद सिंह, प्रिंसिपल श्रीधर दूबे, कुबेरनाथ विचित्र, मैनावती जी, जुगानी भाई, अवध बिहारी कबी, रामनारायण उपाध्याय, श्री निवास मिश्र, विश्वरंजन, कैलाश कमरपुरी, विश्वनाथ प्रसाद शैदा, व्रजभूषण मिश्र, विपिन बिहारी चौधरी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजबल्लभ प्रसाद सेवक आ रामबिहारी रमेश जइसन भोजपुरी के समर्पित रचनाकारन के पचास से ऊपर एकदम टटका साहित्य, कविता, कहानी, उपन्यास, व्यंग्य, लघुकथा, नाटक आ निबन्ध आदि का रूप में आदर का साथे समीक्षार्थ रखल बा ।

मन हैरान हो जात बा भोजपुरी का रचनाकारन के अइसन उत्साह देखि के । बिक्री का साधन आ संभावना का कपार पर लात धइके, व्यवसायिक दृष्टि का चश्मा के आँखि पर से हटा के ई जवन शुद्ध साहित्य सेवा-यात्रा हो रहलि बा ऊ निष्फल होखे वाली नइखे । एह यात्रा-मार्ग पर राहुल सांस्कृत्यायन, आचार्य शिवपूजन सहाय, प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिंह, महेन्द्र शास्त्री, रघुवंश नारायण सिंह, चतुरी चाचा, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ', आ आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी वगैरह वगैरह के अमिट चरणचिन्ह अंकित बा । कवि रामविचार पाण्डेय, सुन्दरजी, भोलानाथ गहमरी, स्वर्णकिरण, आंजनेय जी, डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी, झड़पजी, अक्षयवर दीक्षित, विप्रजी, सहृदयजी, विजय बलियाटिक, ईश्वरचन्द्र सिन्हा आ डॉ० उदयनारायण तिवारी जइसन सिद्ध लोग कबीरदास से ले के भिखारी ठाकुर तक के बनावल एह साहित्यिक-यात्रा का मार्ग के प्रशस्त करे में जुटल बाड़न, मंजिल के बिना कवनों चिन्ता कइले ।

आप लोग कहीं अइसन मति सोचीं कि सरकारी मान्यता जइसन चीजे भोजपुरी साहित्य के मंजिल बा । अइसन सोचल एगो भारी भ्रम होई । साहित्यिक आन्दोलनन के मंजिल अतना सस्ता आ सामयिक ना होले । जातीय, राष्ट्रीय आ मानवीय जीवन के अभ्युत्थानमूलक सपनन का सँगे ऊ मंजिल जुड़ल होले । सरकारी मान्यता के ओह ऊँचा लक्ष्य का भीतर एगो उपयोगी पड़ाव कहल जा सकेला । बाकी एकर अर्थ इहो नइखे कि एह पड़ाव के चिन्ता हटि गइलि बा । चिन्तो बनलि बा । हर साल एह मोका पर सरकार के दरवाजा खटखटावल जात बा । पिछला साल अमनौर वाला सम्मेलन में त तनी ढेर जोर से दस्तक दीहल रहे । डॉ० प्रभुनाथ सिंह आ स्व० श्री केदार पाण्डेय सहित कई गो प्रतिष्ठित सरकार के मंत्री लोग त रहबे कइलन, डॉ० नामवर सिंह आपन बहुत समय दीहलन ।

मान्यता का सवाल पर डॉ० नामवर सिंह अपना उद्घाटन भाषण में बतवलन कि अब तक भोजपुरी के अष्टम सूची में जगह दे के मान्यता प्रदान करे का सवाल पर सरकार राजनीतिक कारनन से आगा पीछा करति बा । दूसरे डर ई बा कि एकरा से हिन्दी के धक्का चोहँपी । आगे डॉ० नामवर सिंह साफ शब्दन में कहलन कि राजनीतिक कारन महज एगो भ्रम बा । एकरा बढ़ंती में तमाम सरकारी आदमिन के मदद बा । खुद बिहार सरकार भोजपुरी अकादमी बना देले बा । विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम में एम० ए० तक भोजपुरी स्वीकृत बा । तमाम रूप त साहित्यिक आ सांस्कृतिक बा, कहाँ बा रंचमात्र कबनो राजनीतिक रंग ? रहल सवाल हिन्दी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षति के त ई ओहू से भारी भ्रम बा। हिन्दी से ओकर कवनो विरोध होइये ना सकेला । मैथिली, अवधी आ व्रजभाषा जइसे हिन्दी माननि जाति बाड़ी स, ओइसहीं भोजपुरियो हिन्दी के अंग बा। जइसे हिन्दी का नीचे ओह भषवन के साहित्य शोभा बढ़ावत बा ओइसहीं एकर साहित्य बढ़ी त ओकरे बढ़न्ती कहाई। भोजपुरी में कहीं हिन्दी का विरोध के स्वर हइयो नइखे । भोजपुरी के कवि सीताराम पाण्डेय प्रशान्त त हिन्दी का उपेक्षा पर जइसे तड़पि के रहि जात बाड़न। उनकर तीन पंक्ति देखीं –

'हिन्दी के हुरपेटल छोड़ ऽ !
ऊ चउदहो में दुलरूई हिन्दी,
मां भारत के ह ई बिन्दी।'

अब के नालायक भोजपुरी भाषा प्रेमी होई जे भारत माता का एह बिन्दी के मद्धिम करे के सोची ? एह लोकतंत्र में केन्द्र आ प्रान्तन का भीतर जइसे सह– अस्तित्व बा ओइसहीं केन्द्रीय भाषा हिन्दी आ ओकरा छाया में विकसित होत बोलियन के स्थिति बा। विघटन के प्रवृत्ति ना, भोजपुरी आ भोजपुरिहा लोगन में संघठन के प्रक्रिया होले। इतिहास एकर गवाह बा। ऊ लोग देश का एकता के इतिहास बनवले ह आ ऊहे लोग हिन्दी के जन्मदाता से लेके ओकरा साहित्य के बढ़ावे आ उत्कर्ष पर पहुँचावे वाला का रूप में खपि के ओकरा राष्ट्रीय रूप के निखारे में मूल्यवान योगदान कइले ह ! हिन्दी राष्ट्रभाषा का छत्रछाया में महज ऊ लोग अपना मातृभाषा का साहित्यिक रूप के संवारे खातिर छटपटा रहल बा। दूनों के ई रूप एतना साफ बा कि तनिको कवनो आशंका के गुंजायश नइखे। दूसर आशंका प्रगट कइल जात बा कि जनगणना में यदि मातृभाषा भोजपुरी अंकित करावल जाई त हिन्दी कमजोर होई। बाकी अइसन काहे होई ? भोजपुरी हिन्दी आ खड़ी बोली हिन्दी में आखिर दूनो त हिन्दीये ह। एह तरह से भोजपुरियो वाला लोगन के मातृभाषा हिन्दी ह । आशंका जवन बा तवन महज मनोवैज्ञनिक बा। ढेर लोगन का मन में भोजपुरी का गंवारू बोली वाला हीनता के रूप अबही तलक ले जड़ जमवले बा। अइसना लोगन से निहोरा बा कि अब तनी एकरा लिखित साहित्य के देखो। अब त हिन्दी का तपोनिष्ठ ऋषि **गणेश चौबे** का हाथे एकरा सम्पूर्ण प्रकाशित साहित्य के एगो विवरणों पुस्तकाकार प्रकाशित हो गइलि बा। पुस्तक एकरा रचनात्मक साहित्य का संदर्भ में एकदम चौंका के आँखि खोलि देबे वाली बा।

हम अपना भाषण में घूमि फिरि के भोजपुरी का रचनात्मक साहित्ये पर आ जात बानी। का करीं ? मजबूरी बा। हमरा दृष्टि में इहे ओकरा तमाम–तमाम तरह का समस्यन के हल बा। जइसे अंधकार का समस्यन के एकमात्र समाधान प्रकाशे होला ओइसहीं कवनो भाषा आ ओकरा साहित्य से सम्बन्धित समस्यन के हल ओकरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशित मूल्यवान सृजनधर्मी साहित्ये का भीतर से निकलेला। भोजपुरी का मान्यता के सवाल, ओकरा एकरूपता के सवाल भा ओकरा मानक प्रयोग के सवाल आ ओकरा प्रचार-प्रसार के सवाल, कुल्हि सवालन के लड़ाई त एही साहित्यिक समृद्धि का केन्द्र में लड़ल जाई। ई केतना अच्छा बा कि हासिया के लड़ाई छोड़ि के भोजपुरी के साहित्यकार लोग असली केन्द्र में जूझि रहल बाड़न। उनके भारी सफलतो मिललि बा। भोजपुरी-काव्य का समृद्धि के एगो संक्षिप्त झाँकी आप के हम देइ चूकल बानी ।

आप शंका कइ सकीलाँ कि एह प्रतिस्पर्धा का युंग में खाली काव्य-साहित्य ले के कइसे भोजपुरी जीवन्त बनी ? ब्रज-अवधी नियर कहीं ऊहो न गति-शून्य हो जाउ। हम आपके विश्वास दिलावत बानी। भोजपुरी के गद्य साहित्य ओकरा काव्य-साहित्य से समृद्ध बा। हम गद्य-साहित्य में सिर्फ भोजपुरी का कथा-साहित्य का बारे में दू शब्द कहे के आप से इजाजत चाहबि। कवनो जमाना रहे कि काव्य सम्पूर्ण साहित्य क केन्द्रीय विधा रहे। अब ओकर स्थान कथा-साहित्य छोरि ले ले बा। भोजपुरी के कथाकार लोग एह तथ्य के भरपूर मौलिकता आ मानक रचानात्मक प्रतिभा का साथे प्रदर्शित कइले बाड़न। अपना पुस्तक **'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास'** में हम हिन्दी आ भोजपुरी का कथा साहित्य के तुलनात्मक विश्लेषण करत एह नतीजा पर चोंहपल बानी कि भोजपुरी के कथा-साहित्य हिन्दी कहानी का विकास के कुल्हिये मंजिल एके सँगे पार करे बदे सरपट्ट समानान्तर चालि बढ़ा रहलि बा आ ओकर लक्ष्य बा आधुनिकतम शिल्प-विकास का मेल में आ गइल। एह बाति के एह तरह कहि सकीलां कि भोजपुरी के कहानी-साहित्य के क्रमिक विकास नइखे भइल। ई एकबारगी उछाल ले लेले बा। रामेश्वर सिंह काश्यप, उमाकान्त वर्मा, वीरेन्द्र नारायण पण्डेय, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, ईश्वरचन्द्र सिन्हा, डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरीचाचा), रामवृक्ष राय विधुर, ब्रजकिशोर, पी० चन्द्रविनोद, रामनाथ पाण्डेय, कृष्णानन्द कृष्ण और जितराम पाठक आदि के कहानी कलात्मक उत्कर्ष और युगीन जीवन का संश्लिष्ट अंकन का दृष्टि से एक बेरि पढ़ला का बाद फेरू भोर ना परि सकेली स।

उपन्यास-साहित्य में सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का रूप में **'फुलसुंघी'** (पाण्डेय कपिल) के निःसंकोच हम आपका सामने राखि सकी लाँ। ऐहिकता, प्रेमादर्श, लोककथात्मकता, वीरत्व, त्याग-भोग, भाग्यवाद, संयोगवाद, संगीताकुलता, आंचलिकता, आदर्श चरित्र सृष्टि, भोजपुरी संस्कृति के निखार के चित्र, मिथकीय प्रभाव आ कुल्हि मिला के रोमैन्टिक सृजन, के जइसन कलात्मक शिखर 'फुलसुंघी' में उभरल बा ओइसन खड़ी बोली हिन्दी में दुर्लभ बा। अइसही चार उपन्यास के और नांव हमसे धरवा ले ई। राही मासूम रजा का 'आधा गाँव' जइसन सघन आँचलिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयोग का दृष्टि से **'घर टोला गांव'** (पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह), रेणु का 'मैला आँचल' जइसन आजु क बदलत जात गाँव के तसवीर वाला भोजपुरी के सब से विशालकाय उपन्यास **'भोर मुसुकाइल'** विक्रमा प्रसाद, मैथिली का खट्टर काका जइसन प्राध्यापक अंचल के उपन्यास **'सुन्नरकाका'** आ चतुरसेन शास्त्री के 'वयं रक्षामः' का स्वर आ स्तर के छुअत **'रावन उवाच'** (गणेशदत्त किरण)। बाकी उपन्यासन के चर्चा का करीं ? चर्चा कइल उद्देश्य नइखे। उद्देश्य बा ई बतावल कि अपना लक्ष्यसिद्धि का दिशा में भोजपुरी-साहित्य तेजी से बढ़ि रहल बा। ओकरा में नाटक, ललित निबन्ध, रेखाचित्र आ रिपोर्ताज जइसन साहित्यिक विधन के प्रतिष्ठा बढ़ि रहल बा। **'भोजपुरी माटी'**, **'झकोर'**, **'अकादमी पत्रिका'** आ **'दिअरी'** जइसन ढेर-ढेर पत्रिका ओह के बढ़ावे में मदद कइ रहलि बाड़ीस। ओकर सोरि भोजपुरी भाषा-भाषी उत्तर प्रदेश बिहार का जिलन का जमीन में बहुत गहराई से त गड़ल रहलि ह, ओकर डाढ़ि-पात देखीं, हई फइलि के एह मध्यप्रदेश तक चौहपलि। आप लोगन का एह स्नेह-सद्भाव का प्रति अन्त में केतना आभार प्रकट कइल जाव ? मारीशस, सूरीनाम, ट्रिडीनाड आ गायना वगैरह में एह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के प्रसार के सुख त निर्गुण ब्रह्म का स्वाद नियर बा बाकी बिलासपुर के ई प्रकट स्नेह-सुख त एकदम सगुण साकार का रोमांच से भरि देत बा। आप सभ लोग प्रणम्य बानी कि भोजपुरी के अतना नेह भरल हाथन से उठवले बानी।

जय हिन्दी ! ***जय भोजपुरी !***

संत कबीर नगर
बिलासपुर (म० प्र०)
30-12-83

-विवेकी राय

✪

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिचय

डॉ॰ विवेकी राय

१९२४ ❑ जन्म – भरौली (बलिया, उ॰ प्र॰) ननिहाल में।
❑ पैतृक गाँव – सोनवानी, जि॰ गाजीपुर, उ॰ प्र॰।
❑ पिता – शिवपाल राय
❑ माता – जबिता देवी
१९४०-४१ ❑ मिडिल और उर्दू मिडिल उत्तीर्ण (संस्थागत)
१९४२ ❑ अपने गाँव के लोअर प्राईमरी स्कूल में अध्यापक।
❑ स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी।
❑ काव्य-रचना का आरम्भ।

१९४३ से लेकर सन् ६४ तक के बीच-

❑ व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में क्रम से हिन्दी विशेष योग्यता, विशारद और साहित्य-रत्न (हि॰सा॰स॰), साहित्यालंकार (स्वर्णपदक प्राप्त: हि॰वि॰ देवघर), हाईस्कूल, इण्टर, बी॰ ए॰, एम॰ ए॰ (हिन्दी) सर्वोच्च स्थान प्राप्त।
१९४५ ❑ पहली कहानी 'पाकिस्तानी' वाराणसी में 'आज' (दैनिक) में 'प्रकाशित'।
१९४८ ❑ गवर्नमेन्ट नार्मल स्कूल गोरखपुर से द्विवर्षीय एच॰ टी॰ सी॰ परीक्षा उत्तीर्ण।
१९४९ ❑ श्री धर्मदेव राय जूनियर हाईस्कूल, नरही (बलिया) में अध्यापक।
१९५० ❑ सर्वोदय हाईस्कूल, खरडीहा (गाजीपुर) में अध्यापक।
१९५१ ❑ प्रथम काव्य संकलन 'अर्गला' का प्रकाशन।
❑ अन्तर्ग्रामीय सुहृद साहित्य-गोष्ठी (बलिया-गाजीपुर) का संयोजन- संचालन।
१९५२ ❑ प्रथम कहानी संग्रह 'जीवन परिधि' का प्रकाशन।
१९५६ ❑ 'किसानों का देश' (निबन्ध) नामक पुस्तक प्रकाशित।
१९५७ ❑ 'गाँवों की दुनियाँ' प्रकाशित।
१९५८ ❑ 'आज' (वाराणसी) में 'मनबोध मास्टर की डायरी' का प्रकाशन प्रारम्भ (सन् ७० तक चली)।
१९६२ ❑ 'फिर बैतलवा डाल पर' नामक ललित निबन्धों का संकलन भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित।
१९६४ ❑ 'अध्ययन आलोक' नामक निबन्ध पुस्तक प्रकाशित।
१९६५ ❑ 'नयी कोयल' 'धर्मयुग' में पहली रचना प्रकाशित।
❑ डिग्री कॉलेज गाजीपुर में अध्यापन शुरू।
१९६७ ❑ 'बबूल' (उपन्यास) राजकमल दिल्ली से प्रकाशित (नया संस्करण हिन्दी प्रचारक वाराणसी से)।
❑ 'ज्ञानोदय' (कलकत्ता) में पहली रचना 'खेदू' रेखाचित्र।
❑ 'सारिका' (दिल्ली) में पहली रचना 'दंतरवा' (कहानी)।
१९६८ ❑ 'के कहल चुनरी रंगा ल' (भोजपुरी ललित निबन्ध) का प्रकाशन।
❑ 'कहानी' में पहली रचना 'माँग' (कहानी)।
❑ 'हिन्दुस्तान' में पहली रचना 'अन्तरिक्ष युग की माता मइया' (ल॰ नि॰)।
१९७० ❑ पी-एच्॰ डी॰ की उपाधि मिली।
१९७४ ❑ उत्तर प्रदेश सरकार की 'हिन्दी समिति' (लखनऊ) का सदस्य मनोनीत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- ❑ 'स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य और ग्राम जीवन' (शोध प्रबन्ध) प्रकाशित ।

१९७५
- ❑ 'नयी कोयल' (कहानी सं॰) प्रकाशित ।
- ❑ 'पुरुष पुराण' (उपन्यास) भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित ।

१९७६
- ❑ उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा शोध-प्रबन्ध पुरस्कृत ।

१९७७
- ❑ 'कल्पना' का २५ वर्षीय सर्वेक्षण प्रकाशित ।
- ❑ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना) की प्रवर समिति का सदस्य मनोनीत ।
- ❑ 'गूंगा जहाज' (कहानी सं॰) प्रकाशित ।
- ❑ 'बेटे की बिक्री' (क॰ सं॰) प्रकाशित ।
- ❑ 'लोकऋण' (उपन्यास) प्रकाशित ।
- ❑ 'जुलूस रूका है' (ल॰ निबन्ध) प्रकाशित ।
- ❑ 'भोजपुरी निबन्ध निकुंज ' (अ॰ भा॰ भोजपुरी सा॰ स॰, पटना) का सम्पादन ।
- ❑ 'भोजपुरी साहित्य मंडल' (बक्सर) द्वारा सम्मानित, प्रशस्ति-पत्र प्राप्त ।

१९७८
- ❑ भोजपुरी अकादमी पटना (बिहार सरकार) का सदस्य मनोनीत ।

१९७९
- ❑ 'श्वेतपत्र' (उपन्यास) प्रकाशित (पराग प्रका॰, दिल्ली) नया संस्करण सन ८४ में (हिन्द पाकेट बुक्स) ।
- ❑ अन्तर जनपदीय परिषद् बिहार राज्य (पटना) द्वारा सम्मानित ।
- ❑ 'लोकऋण' उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत ।
- ❑ हिन्दी विभाग पुणे विद्यापीठ (पूना) में आयोजित सूर-संगोष्ठी में निबन्ध पाठ ।
- ❑ काशी विद्यापीठ, वाराणसी में आयोजित सूर-संगोष्ठी में निबन्ध पाठ ।

१९८०
- ❑ 'गंवई गन्ध गुलाब' (भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से प्रकाशित) ।
- ❑ 'साहित्यायन' (गाजीपुर) द्वारा सम्मानित ।

१९८१
- ❑ 'ओझइती' (भोजपुरी कहानी-संग्रह) प्रकाशित ।
- ❑ 'वन्देमातरम्' शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार (बीकानेर) का कहानी संकलन सम्पादित ।
- ❑ 'श्वेत-पत्र' उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत ।
- ❑ सन्त कबीर जयन्ती समिति (लखनऊ) द्वारा प्रशस्ति पत्र ।

१९८२
- ❑ 'कालातीत' (कहानी सं॰) प्रकाशित ।
- ❑ 'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास' प्रकाशित ।
- ❑ 'पवहारी बाबा' (सम्पादन) प्रकाशित ।
- ❑ अंचल प्रकाशन एवम् विचारमंच देवरिया (उ॰ प्र॰) द्वारा प्रशस्ति-पत्र ।

१९८३
- ❑ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष मनोनीत । अधिवेशन विलासपुर (मध्य प्रदेश) ।
- ❑ 'सोनामाटी' (उपन्यास) प्रकाशित ।
- ❑ 'हिन्दी उपन्यास: उत्तरशती की उपलब्धियाँ' प्रकाशित ।
- ❑ अखिल भारतीय लेखक संगठन (दिल्ली) के उपाध्यक्ष मनोनीत ।
- ❑ अखिल भारतीय अन्तर जनपदीय परिषद् (उजियार, बलिया) के अध्यक्ष मनोनीत ।
- ❑ गाजीपुर संघ कलकत्ता द्वारा सम्मानित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- ❑ उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन (इटावा अधिवेशन) द्वारा प्रशस्ति पत्र ।
- ❑ बड़ी बाग की सड़क का नाम 'डॉ० विवेकी राय मार्ग' हुआ ।
- ❑ पटना विश्वविद्यालय में 'आंचलिकता बनाम लोक चेतना' संगोष्ठी में भाषण पाठ और अध्यक्षता ।

१९८४ ❑ विश्व भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष ।
- ❑ 'विवेकी राय की श्रेष्ठ कहानियाँ' प्रभात प्र० से प्रकाशित ।
- ❑ 'नया गाँवनामा' (ल० निबन्ध) प्रकाशित ।
- ❑ 'मनबोध मास्टर की डायरी' प्रकाशित ।
- ❑ 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें' प्रकाशित ।
- ❑ 'जनता का पोखरा' (भोजपुरी काव्य संग्रह)
- ❑ विक्रमशिला विद्यापीठ, गांधीनगर (भागपुर) से 'विद्यासागर' की मानद उपाधि ।
- ❑ रोटरी क्लब, गाजीपुर द्वारा सम्मानित ।

१९८५ ❑ साहित्य संगम, सिकन्दरपुर, बलिया द्वारा अभिनन्दन पत्र ।

१९८६ ❑ 'हिन्दी कहानी: समीक्षा और संदर्भ' प्रकाशित ।
- ❑ पाठ्यक्रम विकास केन्द्र बी० एच० यू० (वाराणसी) विशेषज्ञ सदस्य मनोनीत ।
- ❑ हिन्दी विद्यापीठ देवघर (बिहार) द्वारा सम्मानित ।

१९८७ ❑ 'समकालीन हिन्दी उपन्यास' प्रकाशित ।
- ❑ 'सोनामाटी' पर हिन्दी संस्थान लखनऊ (उ० प्र० सरकार) द्वारा प्रेमचन्द पुरस्कार प्राप्त ।
- ❑ 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल: रचना और दृष्टि' का सम्पादन ।
- ❑ अखिल भारतीय लेखक संगठन का उपाध्यक्ष ।

१९८८ ❑ 'चित्रकूट के घाट पर' (कहानी सं०) प्रकाशित ।
- ❑ 'समर शेष है' (उपन्यास) प्रकाशित ।
- ❑ 'आम रास्ता नहीं है' (ल० निबन्ध) प्रकाशित ।
- ❑ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दिल्ली के दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम में लेखक मनोनीत ।

१९९० ❑ 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास: विविध आयाम' प्रकाशित (समीक्षा पुस्तक)
- ❑ नागरी प्रचारिणी सभा बलिया द्वारा प्रशस्ति-पत्र ।

१९९१ ❑ 'श्री पर्व' लखनऊ के अवसर पर सम्मानित ।

१९९२ ❑ 'यह जो है गायत्री' (काव्य) प्रकाशित ।
- ❑ 'आस्था और चिन्तन' (निबन्ध) प्रकाशित ।
- ❑ 'गुरु गृह गयउ पढ़न रघुराई' (निबन्ध) प्रकाशित ।
- ❑ 'गंगा यमुना सरस्वती' (भोजपुरी संस्मरण, ललित निबन्ध और कहानी) ।

१९९३ ❑ हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि प्राप्त ।
- ❑ 'मंगल भवन' (उपन्यास) प्रकाशित ।
- ❑ हिन्दी संस्थान (उ० प्र० सरकार) द्वारा 'साहित्य भूषण' सम्मान प्राप्त ।

१९९५ ❑ 'जगत तपोवन सो कियो' (ललित निबन्ध) प्रकाशित ।
- ❑ दूरदर्शन गोरखपुर द्वारा वृत्त चित्र निर्माण ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- ❑ 'राम झरोखा बइठि के' (भोजपुरी फीचरों का संकलन) प्रकाशित।
- ❑ 'श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ: विवेकी राय' प्रकाशित।
- ❑ 'गण देवता से गुडअर्थ तक' (समीक्षा) प्रकाशित।

१९९६
- ❑ 'श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ' प्रकाशित।
- ❑ 'नमामि ग्रामम्' (उपन्यास) प्रकाशित।
- ❑ 'जगत तपोवन सो कियो' पर आचार्य शिवपूजन सहाय पुरस्कार बिहार सरकार द्वारा।

१९९७
- ❑ 'अमंगलहारी' (भोजपुरी उपन्यास) प्रकाशित।
- ❑ 'श्वेतपत्र' का नया संस्करण प्रकाशित।
- ❑ 'दीक्षा' (काव्य) प्रकाशित।
- ❑ 'राष्ट्रीय शरद जोशी पुरस्कार' (मध्य प्रदेश शासन भोपाल द्वारा)।
- ❑ 'सोनामाटी' का नया संस्करण प्रकाशित।

१९९८
- ❑ 'कथुली गाँव' (भोजपुरी लघु लोककथा) प्रकाशित।
- ❑ स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज (दिल्ली) द्वारा स्वामी सहजानन्द सेवा पुरस्कार (सर्वेक्षण)।

१९९९
- ❑ 'कल्पना और हिन्दी साहित्य' प्रकाशित।
- ❑ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना) द्वारा 'अमंगलहारी' पर अभय आनन्द पुरस्कार।

२०००
- ❑ 'अमंगलहारी' (भोजपुरी उपन्यास का खड़ी बोली हिन्दी अनुवाद) प्रकाशित।
- ❑ दूरदर्शन मऊ द्वारा वृत्त चित्र निर्माण।

२००१
- ❑ 'लौटकर देखना' (काव्य) प्रकाशित।
- ❑ 'बबूल' का तीसरा संस्करण प्रकाशित।
- ❑ 'फिर बैतलवा डाल पर' का नया संस्करण प्रकाशित।

२००२
- ❑ 'देहरी के पार' (उपन्यास) प्रकाशन।
- ❑ 'वनतुलसी की गन्ध' (ललित निबन्ध) प्रकाश्य।
- ❑ 'आँगन के वन्दनवार' (संस्मरण) प्रकाश्य।
- ❑ 'जीवन अज्ञात का गणित' (ललित निबन्ध) प्रकाश्य।
- ❑ 'संगम का साहित्यिक सिद्ध'- प्रकाशित
- ❑ 'भोजपुरी साहित्य:प्रगति की पहचान- प्रकाशित

❑ पुरस्कार-सम्मान

अनेकानेक सरकारी-गैरसरकारी साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं ने डॉ॰ विवेकी राय को पुरस्कृत कर अपने आप को सम्मानित किया है। कुछ प्रमुख पुरस्कार-सम्मान हैं-

● हिन्दी संस्थान: उत्तर प्रदेश शासन द्वारा उपन्यास **'सोनामाटी'** पर **'प्रेमचन्द पुरस्कार** ● केडिया सांस्कृतिक संस्थान (देवरिया, उत्तर प्रदेश) द्वारा **'मंगल भवन'** पर **'आनन्द पुरस्कार'** ● मध्यप्रदेश शासन द्वारा **'राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान'** ● बिहार राजभाषा विभाग द्वारा **'आचार्य शिवपूजन सहाय पुरस्कार'** ● हिन्दी अकादमी (दिल्ली) द्वारा पुरस्कार-सम्मान

❑ विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा विद्यासागर, विद्यावाचस्पति, साहित्य महोपाध्याय, भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भास्कर, साहित्य भूषण, भोजपुरी रत्न आदि की मानद उपाधि ।

- ❑ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना), भोजपुरी साहित्य मण्डल (बक्सर, बिहार), साहित्य मण्डल (श्रीनाथ द्वारा, राजस्थान), हिन्दी विद्यापीठ (देवघर, झारखंड), अखिल भारतीय लेखक संघ (दिल्ली), साहित्य संगम (सिकन्दरपुर, बलिया), अखिल भारतीय अन्तरजनपरीय परिषद् (उजियार, बलिया), आदि द्वारा सम्मान-अभिनन्दन ।
- ❑ गांजीपुर नगरपालिका द्वारा बड़ी बाग की एक सड़क का डॉ॰ विवेकी राय मार्ग नामकरण
- ❑ दूरदर्शन लखनऊ और गोरखपुर द्वारा वृत्त-चित्र निर्माण ।

❑ डॉ॰ विवेकी राय पर शोध

1970 से अबतक लगभग चालीस शोध कार्य पंजाब विश्वविद्यालय, गोरखपुर वि॰ वि॰, आगरा वि॰ वि॰, बम्बई वि॰ वि॰, रुहेलखण्ड वि॰ वि॰, उस्मानिया वि॰ वि॰, पटना विश्व विद्यालय, विक्रम वि॰ वि॰, मगध वि॰ वि॰, दिल्ली वि॰ वि॰, पूर्वांचल वि॰ वि॰, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय (तिरुपति), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ (वाराणसी) आदि में हुआ है । **कुछ शोधों के शीर्षक हैं**- हजारी प्रसाद द्विवेदी की परम्परा में ललित निबन्धकार विवेकी राय, विवेकी राय के गद्य साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन, विवेकी राय के कहानी- संसार का कथ्य विश्लेषण, विवेकी राय का उपन्यास साहित्य, विवेकी राय के साहित्य में सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक चेतना का विश्लेषण, लोकऋण में आंचलिकता, विवेकी राय का व्यक्तित्व और कृतित्व, ललित निबन्धों की परम्परा में विवेकी राय का योगदान, विवेकी राय के कथा साहित्य में युगबोध और मूल्य संक्रमण, डॉ॰ विवेकी राय के निबन्धों का अनुशीलन, विवेकी राय के कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ की पहचान, ग्रामीण यथार्थ और विवेकी राय का कथा-साहित्य, विवेकी राय के उपन्यास साहित्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन, विवेकी राय का कथा साहित्य: शिल्प संवेदना, विवेकी राय के कथासाहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, उपन्यासकार विवेकी राय के कथा साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, उपन्यासकार विवेकी राय, आंचलिक साहित्य की अवधारणा के सन्दर्भ में विवेकी राय के कथा-साहित्य का अनुशीलन विवेकी राय के कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ की पहचान, औपन्यासिक संसार में ग्राम्य बोध और विवेकी राय का कथा-साहित्य, भोजपुरी साहित्य की वर्त्तमान प्रगति के सन्दर्भ में विवेकी राय के भोजपुरी साहित्य का अनुशीलन, विवेकी राय की रचनाओं में अभिव्यक्त चिन्तन और लोकबोध का स्वरूप, सोनामाटी: कथ्य और शिल्प, विवेकी राय के कथा-साहित्य में ग्रामीण संस्कृति की अभिव्यक्ति, आदि आदि ।

❑ **डॉ॰ विवेकी राय:** व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1. **माटी की महक :** सं॰ डॉ॰ सत्यकाम
2. **टूटते हुए गाँव का दस्तावेज:** सं॰ डॉ॰ सर्वजीत राय (लोकऋण: बनखंडी मुक्त है)
3. **सृजन यज्ञ जारी है :** सं॰ डॉ॰ अनिल कुमार 'आंजनेय'
4. **अक्षर बीज की हरियाली:** डॉ॰ वेदप्रकाश 'अमिताभ'
5. **भोजपुरीरत्न डॉ॰ विवेकी राय:** व्यक्तित्व आ कृतित्व (प्रकाशनाधीन) : सं॰ प्रो॰ ब्रजकिशोर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

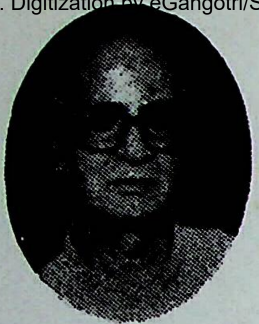

डॉ॰ विवेकी राय

हिन्दी और भोजपुरी के कथा-साहित्य को समृद्ध करने वाले बहुचर्चित, सुप्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ॰ विवेकी राय ने उपन्यास, कहानी, ललित निबन्ध, रेखाचित्र, कविता, व्यंग्य, संस्मरण, फीचर, रिपोर्ताज और शोध-समीक्षा के क्षेत्र में समान गति से अपना कीर्तिमान स्थापित किया है । इनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में चालीस से अधिक शोध प्रबन्ध प्रस्तुत हो चुके हैं । ग्रामीण जीवन एवं संस्कृति के इस महान रचनाकार का निश्छल, सहज, ग्रामीण व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक है । इनकी सत्तर से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और सृजनयज्ञ अनवरत जारी है । 19 नवम्बर 1924 को जनमे डॉ॰ राय स्वाध्याय के बल पर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर में हिन्दी के प्राध्यापक बने और 1988 में सेवानिवृत्त हुए । उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और बिहार की सरकारों तथा अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित इस नैष्ठिक, विद्याव्रती और समर्पित महान साधक से हिन्दी और भोजपुरी को अभी और भी बहुत कुछ पाना शेष है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.